પ્રવાચન નૃપનીત

( ભાગ-૨ )

[ પુ. ગુરુદેવશ્રીની
પસંદગીના ભાસ પ્રવાચન ]

પ્રકાશક:
શ્રી વીતરાગ સત્ સાહિત્ય-પ્રસારક ટ્રુસ્ટ
ભાજપનગર - ઉદ્યમ ૦૦૧
પ્રાસિસ્થાન:
શ્રી વીતરાગ સત્ સાહીન, સાહીન-પ્રસારક ટ્રેસ્ટ
પટો, શુભી માણેલરાજી,
માથનગર-ઉડ્ધર ૦૦૧

શ્રી દીગંભીર જેન સ્વાધ્યાયમંડળ ટ્રેસ્ટ
સૌનાગડ-ઉડ્ધર ૨૫૦

પ્રથ્માયુક્ત : 
પ્રત ૨૯૦૦
વીર નિર્માણ સંપત ૨૫૨૦
Thanks & Our Request

This shastra has been kindly donated by Zaverchandbhai P Shah, London, UK (to mark the 21st anniversary of his son, Vidyut, passing away on 26 July 1981) who has paid for it to be "electronised" and made available on the internet.

Our request to you:

1) We have taken great care to ensure this electronic version of Pravachan Navneet Part - 2 is a faithful copy of the paper version. However if you find any errors please inform us on rajesh@AtmaDharma.com so that we can make this beautiful work even more accurate.

2) Keep checking the version number of the on-line shastra so that if corrections have been made you can replace your copy with the corrected one.

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
## Version History

<table>
<thead>
<tr>
<th>Version Number</th>
<th>Date</th>
<th>Changes</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>001</td>
<td>2 June 2004</td>
<td>First electronic version.</td>
</tr>
</tbody>
</table>

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com


Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
कथा है। छत्रा तेम्ना एड गूड ज्ञान तो सुजनोने ते तर अम्बु ध्वनि खेन्या नम विनंति है। ज्ञाती द्वितीय आपूर्तियाँ अने बायकी बायो तेजार क्रियामा ते अम्बे सहस्युप अस्त्र।

आ प्रवचनावृति ‘श्री निम्नलिखित’ परमावना मूर्त ऋण-प्रदेशा श्रीमद भगवद्कुंडलायापदेव; टोल्डार मक्खुनिराज श्री पवनप्रभालायादित्व; उद्वत श्वेत-विश्वेश्वरकी श्रीमद अमृतवंद्रायार्थ अने श्री पवनकीअमृतवंद्रायार्थ आहिनी स्वरेणारी पश्च नूः गुरुदेवश्रीसे प्रवचन कर्या अया अे सवर बलगोपाने; तेम्स प्रवचन दर्शमाण जे मक्खुनिराजासा वयोनाने उद्वत कर्या अया मक्खुनिराज श्री पीलश्वरावांमूळ, श्री संतभद्रावांमूळ, श्री पूर्णावालावांमूळ, श्री शत्रुक्यावांमूळ, श्री योगोद्वीपावांमूळ अने जनवेशावांमूळ आर्थ आधारनियोजकांनाते; तथा स्वायत्तविभूत सवर श्री महेन्द्र वंशायन, विश्वानंद सोगानी, पं. बनारसीदासजी, श्रीमद रज्रंजक, पं. रज्रंजक, पं. जयरंजक, आमार्कुल पं. टॉमसरंजक आर्थ सवर संपूर्ण मक्खुनिराजांने उद्वत्तकारी वंशित जनें चारी हैं।

वरी, श्रेणी दाती जनमंत्री प्रसंगे आ अंश प्रकाशन कर्यानु मक्खुनिराज सांपुसूऱ तेवा प्रामार्बुली स्वात्मकविभूति भववती मा मृत्यु महेन्द्र वंशायन श्रेणी अने आत्मादान रकित नूः गुरुदेवश्री प्रत्येकी बलित तेम्ना समग्र ज्ञान दर्शमाण अद्वैत राणी समाज समाज एक मक्खुन आर्थिक रंगांना तेम्नी चारी पत्र उद्वत्त्वाच सत्त वंशित जनें चारी हैं।

श्री दिगंबर जेन स्वामिमंदिर दृष्टना तेक्षण विवाह तर्कभी तेक्षण उत्तराण संशोध कर्यानु अर्थ पत्र आ प्रसंगे महत्त उपयोगी तमो ने ते बदल तेना स्वापक प्रमुख स्व. श्री नवनीतभार जरीवे तथा तेक्षण विवाहाना वर्धकरोणा पत्र अतत्त्त आचारी है।

उका संशोध माते तेक्षण उपस्थि अवशेष: उत्तराण ने गुरुवती भाषांतर करी आपणा बदल श्रीमती सरोजश्री अशङ्कामाण गांवी; तेनी बलिव्याना कर्या बदल श्री हरीनाथ सुनिवाळ शाळ; तथा तेना संशोध कर्या बदल श्री विवेकानंद जेन; तथा संशोध भेटने प्रमाणपत्र पाठवानु अर्थ कर्या बदल माननीय श्री प्रामाणकर जी. आम्दार; अने तेने अंतिभि आपणा बदल माननीय श्री शदीपानी मा. शेक पर्यंत टॉस्ट अतत्त्त आचारी है।

आ प्रस्तुतानु प्रकाशन कर्या माते जे जे मुम्बूलो तर्कभी आर्थिक सच्चयोग प्राध वेळा है तेनोनी नामांकल साहार अतत्त्त प्रकाशत कर्यामा आती है।

अथवा मुंबूलो संडर अर्थ करी आपणा बदल शास्त्र भूमिकालय तथा भववती मुन्त्रालयानी पत्र आचार माननीय चारी। तद्वरित्तां ता संशोध प्रकाशत कर्याना आर्थमाण सक्षमाणी बनार बायकी सर्वसा पत्र अमे आचारी चारी।

टूक्षमाण जे देव संडर छे ते सधुपण्य पू. गुरुदेवश्री अन्तर्भावांमूळ प्रतापे छे। तेनां ही निम्न पंजिनेश्वरी वंशित करी अत विरमियो चारी है।

“सत्त हेतुधारा परसात जैत-यज्ञ प्रेम-प्रेम शरीर बायकी बायोत्तक पृथ्वी पृथ्वीवर हेतु अत्यन्त वनितावाच नमस्कार!” (पू. श्री औरंगाबादजी)

सत्पुरुषादेश प्रथम योग जयकर्ण पत्र?
-नित्रकण जयकर्ण पत्र?

भावनागर,
तार. २३-८-१९८४
(प्रामुख्य पू. वेंडेनश्री वंशायननी
8भी जनमंत्री)

* Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
‘પ્રવાન નવનીત’ ભાગ-૨
શ્રી ‘નિયમ્સાર’ ઉપર પુ. ગુજરાતીશ્રીની પસંદગીના આસ પ્રવાન

અનુકૃષ્ટક

પૂજાસંખ્યા

* ગાથા ૩૮ ઉપર પ્રવાન 1  ઠી  ૨૫
* શ્લોક ૫૪ ઉપર પ્રવાન  ૨૫  ઠી  ૪૧
* ગાથા ૪૦ ઉપર પ્રવાન  ૪૩  ઠી  ૮૪
* શ્લોક ૭૪ ઉપર પ્રવાન  ૮૫  ઠી  ૮૮
* ગાથા ૫૧-૫૬ ઉપર પ્રવાન  ૮૮  ઠી  ૧૧૭
* શ્લોક ૩૪ ઉપર પ્રવાન  ૧૧૬  ઠી  ૧૨૧
* શ્લોક ૧૦૮ ઉપર પ્રવાન  ૧૨૨  ઠી  ૧૨૮
* ગાથા ૭૭-૯૪ ઉપર પ્રવાન  ૧૩૧  ઠી  ૧૭૪
* શ્લોક ૧૧૧૮ ઉપર પ્રવાન  ૧૭૫  ઠી  ૧૮૨
* ગાથા ૮૨ ઉપર પ્રવાન  ૧૮૩  ઠી  ૧૮૭
* શ્લોક ૧૯૦ ઉપર પ્રવાન  ૧૮૮  ઠી  ૨૦૦
* ગાથા ૮૩ ઉપર પ્રવાન  ૨૦૧  ઠી  ૨૧૦
* શ્લોક ૧૧૯ ઉપર પ્રવાન  ૨૧૬  ઠી  ૨૧૩
* ગાથા ૯૪ ઉપર પ્રવાન  ૨૧૫  ઠી  ૨૨૪
* શ્લોક ૧૧૨ ઉપર પ્રવાન  ૨૨૫  ઠી  ૨૨૮
* ગાથા ૮૫ ઉપર પ્રવાન  ૨૨૮  ઠી  ૨૩૭
* શ્લોક ૧૧૩ ઉપર પ્રવાન  ૨૩૮  ઠી  ૨૩૮
* શ્લોક ૧૧૪ ઉપર પ્રવાન  ૨૪૦  ઠી  ૨૪૬
* ગાથા ૮૬ ઉપર પ્રવાન  ૨૪૭  ઠી  ૨૪૮
* શ્લોક ૧૧૫ ઉપર પ્રવાન  ૨૫૦  ઠી  ૨૫૧
* ગાથા ૮૭ ઉપર પ્રવાન  ૨૫૩  ઠી  ૨૫૮
* શ્લોક ૧૧૬-૧૯૩ ઉપર પ્રવાન  ૨૬૦  ઠી  ૨૭૨
* ગાથા ૮૮ ઉપર પ્રવાન  ૨૭૩  ઠી  ૨૭૭
* શ્લોક ૧૧૮ ઉપર પ્રવાન  ૨૭૮  ઠી  ૨૮૧
* ગાથા ૮૯ ઉપર પ્રવાન  ૨૮૩  ઠી  ૨૮૪
* શ્લોક ૧૧૯ ઉપર પ્રવાન  ૨૮૫  ઠી  ૩૦૩
* શ્લોક ૧૨૦ ઉપર પ્રવાન  ૩૦૭  ઠી  ૩૦૪

*
श्रीमद्भगवतःकुदंकुदायाठ्यसूत्रम्
श्री नियमसारः गाथा ३८
श्री विद्याधिशास्त्रिकृत संस्कृत तीक्ष
[शुद्धभाव अधिकार]
‘नियमार्थ’ गाथा-२८, अधिकार ग्रीषैे. शुद्धदाय अधिकार. आ शुद्धदाय अटिके शुद्ध अने पापना शुद्धदाय तेनाशी रहित, ते ‘शुद्धदाय’. अे पर्याय नथी. आ ‘शुद्धदाय’ निकाणी वात छे. शुद्ध अने अशुद्ध भाव अशुद्ध छे; अे अपेक्षाके आमाली सम्पर्क-शान-यारित पर्याय अे शुद्ध छे; पण अे आ शुद्धदाय अधिकार नथी. आ शुद्धदाय अधिकार तो निकाणी रवस्यकामें कडे (–रश्य्रे) छे. अे (सम्पर्कशान-यारित) शुद्धदाय, ते (तो) पर्याय छे; निर्दिशस्मर्कशान छी! व्यवहार (सम्पर्कशान) तो अशुद्ध (भाव) म्हा गयो. अर्ध्यात तो अत्याता शुद्धश्रुद्धदाय, अने शुद्धदाय कडे छे. अने अधिकारी शी निष्ठाददाय-सम्पर्क-शान-यारित (धृ) निर्माणशान्य, सुदृढ्यांश, मोक्षीश भार्ज (प्राव्यो) अे (पण) अर्ध्यात (शुद्धदाय) नथी. अर्ध्यात तो आ शुद्धश्रुद्धदाय पण देय छे, अधिक वर्धा लातक नथी–अे तत्काल छ? आताह... झा! निमित तो देय छे. निमित तत्काल शुद्धश्रुद्धदाय, (अे) पण देय छे. उदयभाव तो (अशुद्धा) गयो. पण अर्णी तो द्यना आधिकारी पर्यायाने शुद्ध भोक्षणी भार्ज-उपशम, क्षोपशम अने आधिकारी (धृ) ‘सम्पर्कशान-चारिन्यालीमार्थ’ –अे निर्माणशान्य–उपशम धात, अने पण देयमाझे नामे छे! (अने उपाधियान्तनास) अअधिकार नथी. अर्ध्यात तो शुद्धदाय (अधिकार) निकाणीप्रस्तु, अे शुद्धदाय; (अने) अधिकार छे.

टीला:- “आ, केव अने उपाधिय सत्तना स्वाभावूण वात छे”– छीवा वावळ झूँ छे? अधिकार वर्धा लातक झूँ छे? अने उपाधिय (अटिके) अधिकार वर्धा लातक झूँ छे?–अने अर्णी वात छे. को! सुदृढ्यांश वात, भगवान! “अपलित सत्तनासुमूह परत्य वावाने दीवी देरेर उपाधिय नथी.”–अनी व्याप्ता: जाव्यालित सत्तना शे, आ कठा? (क्षे) व्यवस्थाय. व्यवस्था जाव! उदयभाव-पुप्पा-पापना भाव तो अशुद्ध छे, अे तो आधारतष्ठ छे. पण अर्णा शुद्धश्रुद्ध, शान, यारित, श्रुद्ध आनंदनो स्वात्त्व (आयो) अे ज्ञानी पर्याय (षण) आधारतष्ठ छे. अे अशुद्ध पर्याय, आधारतष्ठ छे. निकाणी आमाछा ज अंतततष्ठ छे. आताह... झा! समाजातू काळ? “जाव्यालित सत्तनासुमूह”–अर्णी ज्ञानी पर्यायी ज्ञानांतर वेवी. पणी (बाले) पर्याय उदयानी हो, उपशमानी हो, क्षोपशमानी हो शे आधिकारी हो–अे आधारतष्ठाना जाव छे. आताह... झा! अे ‘जाव्यालित सत्तना’–संवाय, निर्माण अने मोक्ष, अे पण आधारतष्ठाना जाव छे. कारणे के अने आधार कर्ता लातक नथी. अधिकार कर्ता लातक तो (भाव) निकाणीभाव छे. ज्ञानी मोक्षीश उपशम धात अने निकाणीभाव, अे एक (क्षे) उपाधिय छे. उदय, उपशम, क्षोपशम, शाक्त अने परशालामिक–अने पांच भाव(माने) एक परशालामिकभावुप निकाणीभाव (अंतततष्ठ छे); अनी शिवाय के उदय, उपशम, क्षोपशम, शाक्त–अने आर भाव झे ते जाव्यालित आधारतष्ठाना जाव छे.

आताह... झा! जीवी वात छे, भगवान! आताह... झा! ताँ उप तो भगवान छे ने... नाथ! परमात्मस्वप्न छे!

“घट घट अंतर जिनां से, घट घट अंतर जिन; भलि–भलिहारे पानीं, भतवणा समुे”
श्री नियमसार आशा उ-३ न.” । आ (होड़े) ‘समस्तार नाट्क’ नो छै। ‘घट घट अंतर जिन बसै’ । आत्मा जिनस्वाधीन ज छै, निर्धारी दीर्घराज आश्रयमूर्ति प्रशुँ छै। अर परमपरिशिलाविकाव धरो, शायकाभाव क्यो, दुर्बलाभ क्यो, सामान्याभाव क्यो, अदेकपकाव क्यो-�ने अर्घ्यं ‘शुद्धाभाव’ केलमां आवे। अनंती आ ‘जवाद्वार आबाटाव देय’ (छै), भिन्न छै।

आँख... बै! निमित तो देय छै, जे केमे, ते परद्व छै। परद्व तो द्वारे पोताने (आत्माने) सघु नभी। अने पोतानी पर्याव, परद्वने द्वारे रघु नभी। पछाणे पर्यावमां रघु छै (जे) रागादिवाव, विकार, व्यवहारतक्तुनो विकाल, ते अशुद्धाभावां जाय छै। अने आ ‘पाप आबाटाव ब्रह्म (छै)’।

विकाल (आत्मा) पूर्णांकनो नाव जिन प्रशुँ! ‘घट घट अंतर जिन बसै, घट घट अंतर जैन’ । जे पूर्णव्रीढ अंतरमा छै। अर स्वभावना आधिये, अने अनुभव तथ्ये, अना आश्रयथय पर्याव दीर्घराज त्यसे जेनपाउँ। अर जेनपाउँ पछाणे पर्यावय छै (छा) अने (अर पर्यावने) अर्घ्यं ‘जवाद्वार आबाटाव अने देय केलमां आवे। ब्राह्मण... बै! समजाय छै काँ? ‘जवाद्वार’-अनेनी पर्याव-ठड़य, उपशीम, ध्योयभाव अने धाा्ि, अर ‘जवाद्वारय’।

अंतरण-कर्म आहि, शरीर आहि। बुझ-पाप-आश्रय, बंध-राग-कर्मक्षुप। अने रंगप्र, निःप्रा ते मोक्ष। अर बधाम ‘जवाद्वार तत्त्व। अर्घ्यं बुझ-पापने जुझ नभी पावणो, आश्रमार्घ्यं नाम्यं छै। अर ‘जवाद्वार (सात) तत्त्वनो समूह परद्व बोवावे लब्धि’-आँख... बै! अर ते परद्व छै; स्वात्त्व नभी।

आँख... बै! आ धनी तो जुओ। दीर्घराजी संत स्वाव, आ वात क्ष्वाए नभी। अर अंतरणी वात छै। अर्घ्यं तो जुझ सम्बन्धदन बिना, अनुभव विनाना वात ने तप-स्वच्छर रत्नस्थ, अर सावह छै। अने अनंती निश्चय साध्य तथ्य प्राप्त छै (अथ लोक ब्रम्ही माने छै!) शास्त्रमां आवे (पछाणे) छै: ‘भिन्न साध्य-सावह।’ अर ते समावनी नीज कृती, निमित्तु जान दारायं के त्यामें भो भव को।

अरे प्रमुः! अर्घ्यं तो देय छै के: धाधिझ्मूलक ब्रह्म अने क्षणावाने ब्रह्म, मोक्षतत्वी पर्याव भासिद्धावं बोय-अर पछाणे जवाद्वार तत्त्व, परद्वमां जाय छै। आँख... बै!

“जवाद्वार सात तत्त्वनो समूह परद्व शोवाने लब्धि” आँख... बै! छोड़े देक्ष्ये आवे छ। आरांपां देक्ष्ये छ। (जवाद्वार सात तत्त्वनो समूह) अर ते परद्व छ। अने के अभावी नवी पर्यावय उपन्य सत्ती नभी। अने परद्वमाणी जोतानी दीर्घराजी-निर्माणपर्यावय प्राप्त न थाय, तेन पर्यावमाणी (पछाणे) निर्माणपर्यावय प्राप्त न थाय; तथ्य से पर्यावणे अर्घ्यं परद्व शोवामां आवे।

-शु! कहूँ? इरीशी: जेन पोतानी द्रम स्वाव, परद्वमाणी श्रेष्ठ पोतानी निर्माणपर्यावय उपन्य सत्ती नभी, श्राव के परद्व भिन्न छै; अभ पोतानि निर्माणपर्यावमाणी नवी निर्माणपर्यावय उपन्य सत्ती नभी, अने अनंत (पर्यावणा) आश्रयथय उपन्य सत्ती नभी। आँख... बै! समाजां कार्य?

निश्चयमोक्षमार्गी पर्याव, निर्वाद्य दीर्घराजीपर्याव, अर तो ‘उपाय अने अरु उपेय’

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
जलासादान: आप की जिंदगी के मूल्य के लिए परामर्श माँगें।

समाधान: आप (समय) बिंदु, तत्व परवर्धन आप की जिंदगी के मूल्य के लिए परामर्श माँगें।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री निम्नसर गाथा ४८ - पाण्डव पद्माय कळी (छ). कारण औ, आ ‘शुद्धाव अधिकार’ छे ने...! जानो त्रिकाणी शुद्धात्मनो पिले प्रभुने ‘स्वर्ग’ छे तो अा अपखाने प्रयासितमने भालत्व कळने ‘पद्माय’ कळु छे।

आऊ... या! यांवे (तहव) छे, प्रभु! आरे... रे! आगा! दोनी साधे शर्य कढीये, वाह कढीये? आ (तहव) लोंके समजे नहीं अने फूल मनी दे (सोनांग) अकार्त छे। कढीये, बापु! तमे भगवान छण. आंदर तो भगवान छण, बापु! आंदर भगवानस्वप्न छण. तारी (के) भूल छे अने तो परिचाम छे। अने ते फूल अंक समय छण? अंक समय (अंकटे) अंक सेक्षनो अस्मायात्मो भाग, अणमा भूल छण. भगवान! त्रिकाणी तो तिर्मूल-भगवानस्वप्न छे। -आ शुद्धावाय!

जिखासा: मूलनो समथ शोको पा शोक एन्तो![

सामान्य: जोर अंकटे, अंक समथ ज रहे छे. संसारीन स्थवर अंक समथ ज रहे छे, बीजे समय बीज. बले अंकी ने अंकी रहे पाण बीज (छे). अरे! केवली पाण अंक समये जे उपन्न धाँ छे ते बीज समये नहीं. अंक (ने अंकु) पाण (तेनु) ते नहीं. आऊ... या! अंक अंके पयाबने भालत्व कढी हीळु छे. आऊ... या समझायु कळे�?

शृगाल पड़े, प्रभु! पाण शृगाल कळे? मार्ग ते जे हळे ते (केवल). समझायु न आये अने (अन्तारे) न चाले अंकटे मार्ग शोक बीज बड़ा धाँ (अणमा अने). आ अना अंकटिकाणी, अनती तिथिका (धाँ प्रस्थोळो छे)। त्रिकाणे जावावाणो विरंग ना धामन्माय कुरायभ कोते नथी. -शृ गळे? त्रिकाण तो गळे अनेछे. तो ‘त्रिकाण-वस्तु’ हळे छे ने...? तो त्रिकाणे जावावाणो विरंग त्रिकाणामाय कुरायभ कोते नथी. अनाधिक रस्त्व। अनाधिक त्रिकाण छे। त्रिकाणे जावावाणो विरंग त्रिकाणामाय नथी! सर्वह प्रागत (हळे छे) हें। ‘आ वाढी’ अने सर्वह पर्यायामाणी छे। आदे तो त्यमायन भगवान हळे, आदे तो भूतवाणा भगवान हळे दे आदे तो पवित्र्याना हळे-ते फूल कळु छें। (कळु छे अने कळे ते ‘वाढी,’ आ ज छे!)

हळणां शोकी तंत्राण था था कोती ने? अंकी आपडे ‘गमो लोए सव अरिहांत’ सृं ने...! अणमा अंक (डिग्गर) साधुने भूल धाँ (छे) के-आ ‘गमो लोए सव अरिहांत’ उताधी दुः? पाह्माने तो ‘गमो अरिहांत’ छे! आज अणमा आयु छे। (पाण) ‘धाँ’ मा अंको पाळ छे: ‘गमो लोए सव त्रिकालवत अरिहांत’ आपडे छे तो बोलीं बीं: ‘गमो लोए सव साहूण (पाण) आभारी (‘लोए’ अने ‘सव’) बोलता नथी. (‘लोए’ अने ‘सव’) अन ‘बने’ अनु-दीप्तक (के) पांड्य (पहने) लागु पड़े छे। गमो लोए (-लोक) अने ‘सव’ (सर्व), (तो अणमा) भीज बधा (अंकटे) जे दिके सिवायना अन्य साधु पाण आवी धाँ के-अणमा नथी! अन्यमा तो दीक्षा मार्ग ज नथी ने! प्रभु! शृगाले? अन्यमा (तो) सम्यक्षण ज कळु नथी; (बधा) गृहीतमिथार्यां छे। शृ गळे? लोंके दुः लागे, वाह! शेषांसें पाण गृहीतमिथार्यां छे। (बूढा) जेनधर्मना कळेरी गोल हेदूवी नायण्या छे। ‘भोक्सार्य (प्रकाश)’ मां (अने) अन्यमत्माना नायण्या छे। (ने लोंके) दुः लागे मारे (सत्य जाहेर न दरुं, अणमा) नथी. आ तो सत्य छे, प्रभु! तुं आमा छो. प्रभु! तने दुः लागे (अणमा अने उक्तता) नथी। पाण वस्तुस्थिती आवी छे! ‘भोक्सार्य (प्रकाश)’ मां पांड्यो अवधाय छे ने? - ‘अन्यमत अधिकार’ अणमा पेंटांत,
ह-प्रवचन नव-नीति: भाग-2
वैशिष्ट्य, सांप्य, छस्त्राम, स्थानकवासी, शेतांतर-बढ़ाने अन्यमातिया नाम्या छे. आहाँ... या! आ तो वस्तुस्थिति छे! दिगंबर धर्म छोड़ संप्रदाय नवी. वस्तुतः स्वरूप अनादि छे-पर्याय अने द्व्य. निमित अने उपादान. जेंवू वस्तुतः स्वरूप छे तेंू ज्ञान, अेंवू पारसी आयु! अने संतों अनुसार करीने वे रीते (शाष्ट्र) संहा करी (छे). आहाँ... या!

येलाक लोडी अेंवू ये गुडो! (कान्ज्यमानी) बढ़ाने शेतांतरमां ध ज्ञाने. अर्घ... र! प्रमु! तुूं शुं करे छे, भार! अरे बहावण! तुूं शुं करे छे? भार! अेंवू शेतांतरने अने बढ़ाने ज्ञाने. (तर्क करे) पोते (कान्ज्यमानी) वश सहिष्ठि ने? पशा भार! अेंवू मूनि या छिं? ‘बढ़ाने शेतांतर ज्ञानी हेले.’ —नेवा तर्क ने शेय, बहावण! आहाँ... या! आ तो वस्तुतः स्वरूप छे, प्रमु!

‘समस्थार’ नी २२-गाथा, कर्त-कर्मनी. अेंवू तो अेंवू वीलुं छे: पुष्य ने पापभाव अशुचि छे. अेंवू वीलुं थेड़कार बहावण अमूतरतःसारां अेंवू वीी-बहावण आला निमित छे. थेड़कार विज्ञान ‘बहावण’ कहूं छे. बाह (खोने) बहावण कहा छे. संस्कृतीकळमा अंग बोल छे: (आसावो) अशुचि छे, जह छे, हुळ्ला कळा छे. पुष्य, पाप, व्यक्तम रत्नजय अशुचि ने मेल छे. अेंवू सामे कहूं बहावण आला नियाध निमित्तांड प्रमु छे. —आ ‘शुद्धमव’ छे. बीले बोल अेंवू लोडी डे-प्रमु! पुष्य अने पापने भाव अं रह बे. डेर्मे गे राजगऺमा, थेल्याना आटनां अंत्रानो अभाव छे. आहाँ... या! प्रमु! थेल्यार सांक्षेपतो परो! राज आके तो अं व्यक्तर रत्नजय बारे तत्त्वानो शेय पशा अं राज जह बे. डेर्मे, बहावण आला थेल्याव-विश्लेषण छे. अेंवू बीज बोलमा पशा बहावण कहूं. (राज) जह डे? —बहावण (आला) जान अं अर्णतःसुप अं रह तो अेंवू अं अंत्र (–रागमा) नवी. सूर्यना दिक्षळमा सूर्यनो प्रकाश आके हे तेम आलामा दिक्षळमा निमित्तांड शेयी केह्चोने. (पसा) आ (रागमा) मलिनता छे (तेई) अं जह नवी; अचह जह बे अं बहावण (आला) तो विश्लेषण ने ने... प्रमु! ते तो थेल्यार छे अं व्यक्तर तो अरेतन-जह बे. बीले बोल पुष्य-पापना भाव, द्या-दन-रत्नाधिना भाव, अं हुळ्ला छे. (अं बहावण आला तो संध्यन निराधारवाही छे). अेंवू अमूतरतःसारां तो ‘बहावण आला’ क्डीने रोलेवे छे. आहाँ... या! २२-गाथा ‘समस्थार’ जोगे लेवी.

अके डेरे छे डे: बहावण (आला) छे निकायी स्वरूप छे, अं लिअा “क्रवाढि शाय तततमो समूह परद्वीर बोले लोडी”–क्रवाढि तत्त ‘पर्यय’ बे! आ वात पर्ययी छे-परेसर, वस्तरमा, पथारमा उपादेय नवी. आहाँ... या! देवज्ञानी पर्यय उपादेय नवी! देवज्ञान छे, अेंवू तो अकीयां वात नवी. आ तो साधक (डे) जेने नय बे, अेंवू वात बे. नय तो शुद्धतानीने शेय छे. निथाय अेंवू व्यक्तर तो शुद्धताना भाग बे. शुद्धप्रमाण ‘अवयस्वी’ बे अेंवू अं ‘अवयस्व’ निथाय ने व्यक्तर नय बे. अकी देवज्ञानी वात नवी. देवणी तो पूर्व कह गमा. पशा नीवेहावणे देवज्ञानी पर्यय पशा बाहयत्व बे. डेर्मे, अेंवू (साधकने) अनुं (पर्ययनुं) जह जङु नवी, तेई (ते) उपादेय नवी!

(अकी अेंवू डेर्मा आहे छे: “हेयोपदेशतित्तलस्वरूपाख्यामनेतात.” “जीवादि समस्थारान परद्वीरावल हुपादेयम!” अं संस्कृत (टीका) छे.

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
आँख... ला! पक्षप्रभावमाधुर्य मुनिराज भाविलिंग संत! भाविलिंगनुं वन्य शं? -
तीब्र आँखयुं ग्यांवेदन जेनी मलेश्वरप्राप्त छ. अरं भाविलिंग मुनिनुं छ. द्रव्यलिंग-पंक्त महाप्रत; 
नवप्रणाली मो श्रेष्ठ छ. श्रेष्ठ तो अंधु र श्रेष्ठ, श्रेष्ठ दोन्त नथि. पणा (भाविलिंग विन्यास द्रव्यलिंग) 
अं वस्तुकी स्थिति नथि. समजायें छा?

अश्रुवाया (अनेक) 'परमतमहादेश' मा पणा झरुं छ: 'भाविलिंग' अरे (पणा) आत्मा 
नथि! निन्याणी (अतमानी) वात बेही छ ने...!

अश्रु क्षे क्षे क्षे: “(झालिँ जात तत्पूणो समूह) परवय देखाने दीवी”-अंग दार्श 
आयूं. “परिपत उपायद नथि.” आखा... ला!

ब्रह्म मत अश्रु (वोके) सम्बन्धित विनाप विषयक-राजवी झाँसने उपाध्य भवावी 
छ! प्रलु! अरे (वीतरामगार्गी) विश्रेष्ठ छ. तारी वीतरागता, अंमानाया (राजमानाया) उपाध्य 
दी नथि. आखा... ला! तु वीतरामस्वापणी श्री (तारु) स्वप्न वीतराग छ. तो अंमानी 
वीतरागता उपाध्य दी. (तु) जिन्सवुपणी छो. तो परिष्करणो जिन्सवुपण-जिन्सपत्य प्रस्त 
उपाध्य छ. बहश्ची कोई श्री आदेश नथि!

पणा अश्रुवाया मत त्मां सुवी क्षरुं क्षे: जिन्सवुपण जे निजः; अंतनो सुवृथ्य थयो, अरे 
पणा पवाय छ; अंतनो आदेश करवा लाक नथि; अरे आश्रु (अंतनी वृष्टियाँ) पणा (उपाधय 
नथि! आखा... ला!

समजणुँ छा? भापा तो सादी छ, भवावन! कोई संस्कृत ने विकारण जेनी आदेश 
करे नथि. आर गोपी बघेलो श्रेष्ठ तो पणा भापा आदेश जय. अंतनां कोई विकारण ने संस्कृत 
(बघेलानी) जहुँ नथि. आखा... ला! अंतता संस्कृतानी (कोटी जिसालानी) जहुँ छ.

ब्रह्म क्षे क्षे क्षे: “सवज्ज वेदायुक्ती मदेनला शिक्षरो जे शिष्यभाविः” (अरे ऊँचा?) 
-मुनि पोते! पोते मन्त्र छ ने...! अंतनेसुणिय वात दीवी छ. ‘मन्त्र’ देखा दीवी? अथवा 
मुनि क्षे क्षे क्षे (के) अंतने देखा दीवी? के: ‘सवज्ज वेदायुक्ती मदेनला शिक्षरो शिष्यभाविः’.
शिष्यभाविः अर्थात तोष उपरुँ रतन; शृंगारस्य; मध्यगी रतन. वेदायु-परमेश्वर उदास... उदास 
उदास (के). उदासीन (के). उद+आसन, उद+आसीन. जेनु आसन दूसरमाँ (के). (जेनी 
दूसरमाँ) हृद हरीं छ!

आखा... ला! सम्भवति पणा पवाय उदास छ. पणा (अनेक) क्षुद्र जल दृष्ट (शोकी) 
नु अस्तित्व छ, अने मुनिने तो जल दृष्ट (शोकी) नो अभाव छ. अंक संज्ञान दृष्ट 
(शोकी) नु अस्तित्व छ. पणा (अरे) तो अनेकी पणा उदास छ.

‘सवज्ज-व्यावासिक वेदायु’ कोने श्रेष्ठ छ? के-जेने सम्प्रदायन-शान-याति श्रेष्ठ छ, 
तने व्यावासिक वेदायु श्रेष्ठ छ। आम (कष्ठी-कण्ठसी) वेदायु कने वेती, करी, क्षुद्र 
कोई दीवी बाले वेदायु छ, अंतनी नथि. (समस्तत) नुष्पूज्य तापनया अविदिकाओऽ तो अंक क्षे 
के: अंमे वेदायु कोने करीमे हीवी? के-नुष्पूज्य अने पापिय विरक्त बोषी, अे नास्ति; अने 
स्वभावमा स्वत श्रेष्ठ, अे अस्ति!-अने वेदायु करीमे हीवी. समजणुँ छा? आखा... ला! 
आदेश बोषी छ!

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

8 – प्रवचन नवरीत: भाग-2

स्वामालिक– (सरकर) वैराज्यपरी महेश, एनू शिवर, (संघो शिवाधार्मिक) शिवर
उपरनु रतन, यूजीम्मि-नेमा (मुनीराज भै), “परदर्शिया के पराक्षण छ्।” मुनीराज तो परदर्शिया पराक्षण छ। आहार्या।

जे पेप्लां परदर्शिया कहुं नें...! श्वादित सात तत्व परदर्शिया रोपाने लीवे ररेमर उपाहेत
नती। तो अर्नी भो नासिद्ध कहुं छ-परदर्शिया तो अंू (मुनी) पराक्षण छ। अने असिद्ध अंू के-परदर्शिया (जेनी तीक्ष बुद्धि छ)। आहार्या। इंदुर्म्मिया जे पर्यावर भेट-प्रकार
pादो अंू परदर्शिया खोपाने लीवे उपाहेत नती। (तेठी) परदर्शिया पराक्षण छ।

आ उपकृष्ट अनुभूति धमात्मा संतो (ने) छ। समभदीने अनुभूति कोण (पशु) ते
नीवेना हरज्जनी छ। थोषा गुज्जरावना अनुभूति छ, आल्नो अंद छ। पशु ढँह हुशा जे
पांडमनानी जोरांने ते नाथी अने मुनिने जोरांने ते नाथी। अिलेले उच वेसाजी तो अने
(मुनीराजने) गाड्यामां आयच्छ। आहार्या। इंदुर्म्मी। समाजां छंदो?

स्वामालिक वैराज्यपरी महेशना शिबरसने जे शिवाधार्मिक-दोयें उपरनु रतन, यूजीम्मि,
क्वरीनु रतन-छ, परदर्शिया के पराक्षण छ। परदर्शिया-श्वादित सात तत्वो। गरज वाह कडे छे
नें...! आहार्या। इंदुर्म्मी तो अने ढींवने, अंरे। समभदी पशु अने ढींवने (के-)
परदर्शिया के पराक्षण छ। !परदर्शिया (के) समभूम छ अने परदर्शिया पराक्षण छ। आहार्या। इंदुर्म्मी।
आल्नी शरटे छ। आल्नी शरटे समभदीन ने मनिनपूरी शाप छ। आहार्या। इंदुर्म्मी। समाजां छंद?

स्वामालिक वैराज्यपरी महेशना शिबरसने शिवाधार्मिक (के), परदर्शिया के पराक्षण छ।
-अं सवर, निजहर अने मोहनी पर्यावरने, अर्नी परदर्शिया ढींवने, (अं) परदर्शिया (के) पराक्षण छ,
अं कडे छे। प्रभु। मुनीराज अथवा सम्भदी पशु परदर्शिया पराक्षण छ। आहार्या। इंदुर्म्मी।
आ शुभदवाय अविद्मार एने नें...! शुभदवाय जे किला ठ्वुव, (अं धूमीनु) लक्ष। जेना लक्ष, अनुवत लक्ष
उत्तर कुंतु नती, अंतु लक्ष (के)। आडे तो शुभदवाय आयो, अशुमु राज होय (तो) पशु,
धुपाना ध्वाणना ध्वेयमां अनुवत लक्ष कुंतु पशु घुटु नती। आहार्या। इंदुर्म्मी। अं आरें अर्नी कडे
छे: मुनी, विशेष वैराज-मन्य अर्नामणि (बंट) (के)। आहार्या। इंदुर्म्मी। मुनीराज तो अंतरमां
अंतिन्म आल्न, प्रथर आल्नना वेदनमां मशगृह छ। (ते) तो परदर्शिया पराक्षण छ।
आहार्या। इंदुर्म्री।

‘समधसार’ गाभा-रजना, इंदुर्म्मी ‘अयक्त’ न आपणे आपणी गाया नें...! अेमां
अेक ‘अयक्त’ अेम कठूं के: यव (अर्हत) पपणू। अयक्त (अर्हत) पपणू। अेम तू मा
समबाबे आपणे चतुं पशु वक्तपने, (अयक्त) सुरा नती। अं आरें अेम अयक्त डोपमां
आणे छे। अेम पांडमां बीलो।

हमारा अेक अेक तवाक भर्या १०९ वैराज धर्म शूम्स छद गया। कज नयें, कज
शावत, २० अविवाहलक्ष, ४ अयक्त, १० बोल श्रीमान्य-अेम १०९ वैराज छद गया। अेक
साये बया वैराज छपणे। बोटे पुस्तक ठ्वे। आ उमी गाया (विष्यो) अेम आले नक्की डू।
(अर्नी कठूं के) “परदर्शिया के पराक्षण छ, पांड छिर्योनणा इंदी रक्त इंदमाञ्च
जेने परिवर्त छ,” आहार्या। इंदुर्म्मी।

‘समधसार’ उज-गायेमां आयं छ नें...! “जो इदिए जिलिता”-अेमी वैराज शुं?

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री निमेंसार गाथा ३ - ८  
संस्कृत टीकामा अें वी हु छ क: तं द्वन्द्विसो-इ; तं भाविदित्रो-अंक अंक विषयने जाधवालारी; अनें चिन्द्रियोना (विषयमूल ठाणो) -बगवन्न अने बगवाननी वाळी, श्री- 
कुंड-परिवार (अभिमा आवी जाय छ);-अं चिन्द्र कदि छ। (अं) च्येयने चिन्द्र कदि छ। अभुतवंद्र आवार्य संस्कृत टीकामा च्येयने चिन्द्र कदि छ। (अं) अस्वचिन्द्र बगवान आतमा छ। आखा... आ। तं चिन्द्र; भाव चिन्द्रिे अंक अंक विषयने पंक पंक जाे (अड़ा के ) अं पशु चिन्द्र; अनें चिन्द्रियोना (जे) विषय छ अनें पशु चिन्द्र कदि छ। “जो इंदिये जिनिता”-के चिन्द्रियोने जली, (अथवात्र) द्व-भाव चिन्द्र अनें चिन्द्रियोन विषय, (अं) च्येय (चिन्द्र); अनें जली अंके बलक छरी, च्येयनु बलक छरी ने ‘अधिक जो आमने।’ मूर्त पार आ छ। “जो इंदिये जिनिता जानसहायिचिं मुणिद आद” चिन्द्र जली, ‘जानसहाय’ जानसहाय बगवान, जिज्ञास वैतन्य अभ्य भ्रमु; (अं पड़े) ‘अधिक मुणिद आद’ अन्य द्वितीय आधिक आमने जली छ। अनें च्येन्द्रिय कठवामां आवे छ। चिन्द्रियोनी विषय न वीधा अने शरीरार्य भक्तयथ पशु-अं चिन्द्रीकरण (च्येन्द्रिय) नथी। अं भक्तयथे नो अतान्तवार पशु-छ।  
  
अं ‘छो धरा’ मा आवे छ ने...! “मुनिप्रात धार अनंत बाँर गीवक उपाध्यो; पे निज आतमशाल बना, सुप लेस न पायी।” ‘मुनिप्रात धार’ –नक्सुन, दिएंबर मुनि पंक महान्त धर चार, रत मूर्त गुण पानारा, ‘अंतर बाँर गीवक उपाध्यो; पे निज आतमशाल बना, सुप लेस न पायी।’ –नेमो अर्थ शु थयो। दे: महाक्रत हे रत मूर्त गुणानो भाव, अंहुँ छ। विकन्य छ। राग छ। हुँष छ। आतमशाल विना सुप पायी नथी। आखा... आ। ‘मुनिप्रात धार अनंत बाँर गीवक उपाध्यो।’ 
  
अनें ‘विंगाजु’ मा तो अभं कहुँ छ दे: द्वन्दिया धारा डरीने कीक केन बाँक नथी दे ज्ञां अंके अनंत जन-मरण न कर्षा केह। कारण दे अंकी शीर नथी। अंतर सम्प्रदात्श-स्वार्थना अनुभव-विना अनां आवतो नथी। अने अं स्वाध्यात्म अनुभव विना, पंक महाक्रतना परिधाम, महाक्रतना विकन्य अं भवुँ परदक्ष्य छ। पंक महाक्रत अष्टि ( नो विकन्य ), अं तो हुँषकप्स छ। आवै... आ।  
  
अं भूमिकार्याचे ‘देय’ करो, अं हुँषकप्स वात नथी। पशु अनें आश्रय इरवा लावक नथी मारे (देय) करो। (पशु) पुल्स-पापना भाव तो हुँषकप्स छ। महाक्रतना परिधाम आसप छ। ‘तत्वार्थनु’ ना छो अनुभवधाम (कहुँ के ) आसप छ अं हुँष छ।  
  
आखा... आ। आवै वात छद्द!! मालाने आकुं दागे अनें पषी ठीक करे। (आधारणी) ठीक अनें न खोजे अंको अभं करे। अभंमा छांय (नथी)। प्रमु! तुं पशु भागवान छी ने...! अभंने टारा प्रत्ये किंग वें-विन्यो नथी। (तुं) भागवान छ। ‘सलेवू मेंजी’ –वाक्य आत्मा तो साध्यभी। आत्माना स्वायत तरीके डरें दयाव साध्यभी। प्रमाणामा भूल छो, अं तो अंक समयभी, (अंके) तारे नाप्सो, तो अंकी ओड़ना प्रत्ये वें-विन्यो इरवा ( रद्देके ) नथी।  
  
अं दे छे छे अंकि मूत तो परथी सध्य परमाणु छ। ‘पांच चिन्द्रियोना ईवा डिक्क’ –अनें पांच चिन्द्रो तरंगु वस ज नथी। ‘हेमते जे ने परित्वत छे’ –मूलने अंक शरीर (छे छे) छहंतू नथी। अं सिवार भीक किंग शीर होती नथी। साथा संत-सावट्यी; अंक अखनो हुँषुँ
उस अवसर पर जिन्होंने कहा था, उसे माफ करना चाहिए। मेरे पास कोई दूसरा स्रोत नहीं है।

हमें विशेष ध्येय है जीवांद में भूमिका निभाने से। हमें ऐसे अनुभव नहीं है कि हमें कुछ मिलेगा।
श्री नियमसार गाथा उक - ११
परज्ञ कही, (अनाथी जे) परासुण (छ) अने स्वद्यामा (जेनी) तीखा बुड्डि (छ) (अनेकी बुड्डि) सम्यक्षेत्रवनी (छ)!

‘छहदाना’ मा आवे छ ने...! “मोक्षमल्ल की परशम सीढी, या बिन सान चरिता.” -
धर्मी (अंतरे) मोक्षश्रवणी पहेड़ी सीढी सम्यक्षेत्रण छ, एना पिना, सान-सारित्र बघु वधृ व्यस्त छ।
आखा... बा! अंतर्भुम द्वी वीज, परस्वनार, धारकनार, ध्वननार, नूतारुवार, परस्वप्राणिकनार (उन) के क्रम (छ) - (अनेक) पयारम स्पर्श्चर ज ननी। आखा... बा! पयारब द्रवने सर्वनी ननी। ताहे तो पयारम शाक्तिभावनी शैये! (केम्के) पयारम, एने तो व्यस्त छ, प्रत्यय छ अने वस्तु अव्यस्त छ। पयारवनी अपेक्षामै (वस्तु अव्यस्त) पण वस्तु अपेक्षामै (तो वस्तु) व्यस्त-प्रत्यय छ! आखा... बा! पयारब द्रवने सर्वनी ननी (ते कारे) पयारमात्र द्रवनमै ननी! सम्यक्षिनो विनाश-ध्येय, जे द्वी... द्वी द्रवनमात्र; एमा अने साधिक (आय) यार भाव छे ज ननी। पुंस-पाप, द्वार-हणसा विकल्प-व्यस्तनार तो दीध; पण उषाश, क्योक्षाश, शाक्तिभाव पण परस्वनारनारमात्र ननी!

‘जयविंद’ मा एक अपेक्षामै तो अन्न मा कहूँ छे: जे राज-हेष छे एने परस्वप्राणिकम्बित्र (सीज) छे। (लान) परस्वप्राणिकम्बित्र (के) राजान्ति (उन) पयारब छे, (तेनेक) परस्वप्राणिक गणामान आवी छ; परस्वप्राणिकम्बित्र ननी। परस्वप्राणिकम्बित्र तो अंतर्भुम द्वी छे।

(अर्थ तो कहे छे: के पयारम सत्यमुिता छे ते पर्यव्यधिक विमुिता-परहसुणता कही, जे अन्तर तीखा बुड्डि द्रवने अनुभवे छ, एने सम्यक्षिन, अथवा शाननी अपेक्षामै आलमबानी कहेवामा आवी छ। शारदानी अपेक्षामै सम्यक्षिन अने शाननी अपेक्षामै आलमबानी। तो आलमबानीनी झु अथ थेयो? -आमा जे (उब्य-उिघाामत) यार नालय रुबल छे; एनउ शान (जेने छे ते आलमबानी) छे। निमितन शान ने राजङु शान ने परय्यिनुँ शान-अभेम ननी लीकुँ, (पण) आलम्बान लीकुँ आखा... बा! आमा जे परम पिंड, आन्त्यक प्रमु (छ), (अनेकी अन्तर) हुष्ट तीखा कहीने (अनेक) अन्तरमा लगावी, अने परदेर अर्थात पयारम (भान) ठी परहसुण थुँ!

(कहे कहे छे:) “अवा आमाने ‘आलमा’ परेशर उपायेछे।” आखा... बा! तेवा आलमा जे: पर्यायमात्री के परासुण (छ), स्वद्यामा (जेनी) तीखा बुड्डि (छ). तीखा बुड्डि अथ: स्वद्यामा शुद्धारोग लगावी छीयो छे। “अवा आमाने ‘आलमा’ परेशर उपायेछे।” आखा... बा! (केम्के) आलमा? (छे) परढतरी (छे) परासुण (छे). स्वद्यार सत्यम अथवा रक (छे) अने (जेनी) बुड्डि तीखा छे। आखा... बा! (केम्के) पयारिमाके परखोने शुभम करीने, शुभम द्रवनमान लगावी छे। लगाविनो अथ: ते तरह जूतव। पण अे पयारब, कह द्रवनमा अंद थाह जती ननी। पण पयाविनो-तीखा बुड्डिौ-जूतव त्या द्रवनमाना चूडे गयो-अवा आमाने, ‘आलमा’ परेशर उपायेछे। आखा... बा! आवो मार छे!! ए आलमा त्रिकचणी शालकान, नूतारुवार (छे). अे ‘आलमा’ -पर्यायमात्री परासुण जेनी हुष्ट छे अवा आलमा-उपायेछे।

आखा... बा! समभज छे क्षाल? जीवी वात छे। भगवान! वात तो अन्नी छे! पण।
१२ – प्रवचन नव-नीति: भाग-२
क्यों न हेच (वात) साधारण प्राणियों ने बेसे रंदे कहा वस्तु (स्थिति) पत्ताच जय?

आला... बाबा! ‘शेषा आत्मा’ अंथम कहा न...! केवल आत्मा? क्षे: परशुरामवी (क्षे)
पराशु अने अने स्वयम्भूं जेती तीक्ष्ण बुद्धि छै, “शेषा आत्मा ‘आत्मा’ बहेबार उपाधिय
है!” आला... बाबा! उपाधियों अर्थ: ‘कह अने कहा कहा’ अनेक बेह तान नरी. पण जयम
पराशुण वरह देखा अंदर गड, अने आत्मा उपाधिय है, अने दश गदू. ‘आ आत्मा है’ अने ‘कह उपाधि कहा है’ –अनेक बेह बल तान नरी. समजाय कह दाँह?

अनावा वांछनेतरे अंथन नाते पांच वर्णणो छोटे बोलतो भोलो ने...! “बेहसुद्रित अं विकृप
छै, राख है. अने अनेकसुद्रित अं आत्मा है.” देवी: गृह... बाधु! भाषा तो छन पण भाव जूनी चीज
छै, भाषा जूनी चीज छै अने भाषायी शास्त्री अं पण बीज चीज छै. समजाय कह दाँह?

असिध्या तो (कहुँ): अम्बर प्रतु श्रृंवन; अंथम तीक्ष्ण बुद्धि लगावीने, अनेक आत्मा
‘आत्मा’ आधारीय धृष्ट, उपाधिय धृष्ट, अर्थत दर्शावादय आयो, अं आत्मा’ अनुभवण आयो!

आला... बाबा! थोड़ी शृंखल वात है. बीमाधी सांभवणुः. देवीमा भाषा अंथम है के:
“आधिक आदि चार वायांतरो अंगोत्तर शृंखला”–अम्बर प्रतु आयो है!! समकालिनना
विषय, शासनो-आम्हाशानो विषय-रितिकातृि आत्मा; (अंथमे) पोतानी पर्यायांमा केव बनावणे
शान दृशू अने पोतानी शासनी पर्यायांमा आपै वस्तुनी प्रतीति करवी-जेनी प्रतीति करवी
के आत्मा अंथम है, अंथम शान दृशू प्रतीति करवी-अं समकालिन. अं समकालिननी पर्याय
उपस्म, ब्रह्मोपाय, शापिक (बावे) है. रागादि अं उदध्वाय है. (दर्शनमोक) अने
बारितमोकनो उपस्म, पोताना उपस्मावधी धृष्ट है; अं उपस्मावध (ने उपस्म) समकालिन
(क्रेडयां आयो है). (अंछी अंथम कहे के: आत्मा), अं (उद्ध, उपस्म, ब्रह्मोपाय, अं)
शापिक–) चार वायांतरो (अंगोत्तर है. अं (आदि) चार, शुद्ध क्रयस्तवाव जे परम पारिशिधक
शाक्तवावधी वायांतर है, अंथमा भाव है. (पाइयां) ‘बायांतर’ शब्द पडयो है. ‘भाव’ तो आ आत्मा पूर्णनां गज़वान (के) समकालिनना विषय (के अं छे). अने चाय है अं (अनाधी) पार-वायांतर है.

आला... बाबा! थोड़े समय पण सत्य आ है! आ चाल बुद्ध धातुश्रेणी शीतल
नै. धाल बांधन धृष्ट ने जपळ मारे, अने जेने बालो माणस (सांभवणा) भेजा धृष्ट (तो
त्य सत्य पात केह है, अं नरी है) आ भी शीतल है.

आला... बाबा! ‘समाधितन्त्र’ मा तो त्या सूची हल्फे के: ‘कह बीजने समजाय है’ अंथम
विकृपण, पाणलपहुँच है. आला... बाबा! राध है ने...! आम के: ‘कह पर्णे समजाय है’ अंथम
विकृपण है! पण प्रभु! अं विकृपण तो तारी शीतल नै. अने अं वैद्यनच वस्तु तो
विकृपणमय है! अंनाधी हो (ते) गम्य नै, पण उपस्म-ब्रह्मोपाय-शापिक (बाव) थी
(पण) गम्य नै.

अंथम पाँह है: “आंगोत्तर शृंखला”–अंथम अर्थ है: अं (आधिकारिक) चार भावना लक्षे
पारिशिधकस्तवावध अनुभवांना आयो नै. वायांतरोश्री अगम्य (छे) तो अर्थ अं के: आ (के)
चार भाव है अंना आधारश्री (आत्मा) गम्य नै. बाजी गम्य तो उपस्म, ब्रह्मोपाय,
श्री निर्मसार गाथा उ ० - १३

शास्त्रीय भाषामां थाय छ। समजाय छ कार? वस्तु को दूष छ मित्य छ, अणि के पयाम
उप्वाम, सनोप्वाम, शाचिकतावथी-सम्मक्षन-सामनी कहा? अणि को अे ( वस्तु) गम्य थाय छ।
पा अणि अणि के रचन के अने शाचिकतावथी बापोणी मन्त्र थाय बात भाचोर नन्दित कहा छ। अणि बाथा-हरवी टीकाम छैम्बे छे: “पुरोक्त वात भाचो
आवर्वसंबंघन शिवाथी ( मुक्तिनुत्क वाहः नन्दित)।” -वात भाचोने आवर्व ( संयुक्त) कहा;
अनेक वाता (भाभ) मारे आवर्व नजनुं निमित छ, पा (उपस्वामि) नजनां निमिततनो अभाि छ; अटकी अदेशा जाँतिे, शाचि भाचो आवर्वसंबंघन कहा छ। आहा...
क! सुक्षम दात के। भाच। (अणि) शाचिकतारथी तो गम्य के पा शाचिकतानना आचरणी
गम्य नन्दित। पयामां आचरणी गम्य नन्दित। पयामां तो गम्य के। गम्य तो पयामां थाय छ।
घुवां (गम्य) उचाव थाय छ? दूष दूष छे।

समजाय कार? सुक्षम दात के। भाच। वीरराजण मार्य प्रयु! बुध सुक्षम के। प्रयु के प्रताडि पा, अे ‘तेन्धरम’ नन्दी-अणि कहु।
अणि तो अणि कहु ने...! के: (अणि), वात भाचोर अंगोर छ। वात भाचोर अणि। अणि अणि अणि के-वात भाचोना आचरणी-वक्षी स्वभावभावनूं बान वनुं नन्दी। समजाय कार? वात के आही छ, भाच!

“(अणिढिकारि)” वात भाचाधरोने।” अणि कहु ने...! भाचाधरो पर्वत अच्छाबायो।
पंथम शाचकाबाव, सुखाबाव, नित्याबाव, सामान्याबाव, भौतिकाब्र; अणखी अन्याब्र-
(अणिढिकारि) वाते थाय भाब, अणि भाब छ। जुमू, टीकाम नीवे (३गनरमों) अर्थ छ: अणिढिक, अणिढिक, शाचिकताब्र अने शाचिक-अणि वाते परमपरिशाविशिष्टाब्र अणथ
बोमने विदी तेमने भाचाधरो कहा छ। परमपरिशाविशिष्टाब्र जेनो स्वभाव के अणिे
अराधनामा अ वाते भाचाधरोने अंगोर छ।
आहा... क! व्यवहारवनना राजसी तो अणि (अणि) शान वनुं नन्दी, पा (जे) उप्वाम, सनोप्वाम अने शाचिक (जूप) निर्मणपरिपि वह अणिे वक्षी अणिे अणिा
शाचरणी (पा आतानो) अनुपम वनुं नन्दी।
आहा... क! समजाय छ कार? (अे वात) छे के नन्दी? प्रयु! अंदर छ, वाबाण जुमू। आहा... क!
के अ तो शाचितो मार्य छ, भजनवान! आ कार पंडाटानो रे धामधुमनो
(वष्ट्टरि नन्दी)। बोटा गजरब बलावे-स्वातांजन कदे हे मोटी (तीर्थ) यात्रा माने (संद कहे) -
अ बोही राज छ। राज छ ए पुख्य छ, अणिे पुख्य छ अे तेन्धरम नन्दी। तेन्धरम अे कोडी
संप्राय नन्दी। ‘वस्तुनं स्वपुर’ अे तेन्धरम छे।

कहु बतु ने...! “घट घट अंतर लिण बसे, घट घट अंतर लिण।” आहा... क! ‘लिण’
छे अे पत्यां छ। ‘लिण’ छे अे दृष्य छे लिग्रीकी। “घट घट अंतर लिण बसे, घट घट अंतर लिण”-ले, “घट घट अंतर लिण बसे” अे दृष्य छ, वस्तु छ, परम स्वभाव-शाचकाबाव-
भूतार्थावथ (जे)। अणिे “घट घट अंतर लिण” अंगित अे जिनस्वभावनो, (परम) परिशाविशिष्टाब्र आचरण वदने जेने रागानी अंक्रा तोडी नाँपी छे अे लिणपणु; (अे)
घटां-अंदरम छे, लिणपणु कार तनाना दियारांमा नन्दी। आहा... क!
अहस्य, आंतरिक आदि यार भाव द्वा। अने बीजे स्थाने अने यार विनयावनाय पता
क्या छे। धार्मणे विनयावनाय क्या छे। आत्मामा अंक वैद्यविश्वादकत छे ने...! तो अंक
वैद्यविश्वादकानां अर्थ ‘विनय के’ अंक नयी। आत्मामा अक श्या छे, आनंद छे, शांति
छे, स्वास्थ्यात छे, विलुप्त्यात छे, कर्म-अर्थ आदि अनंत शक्तात ध्वान छे, एम अंक
अंक वैद्यविश्वादक्षण पता छे, जे झिम्मा पता छे। पता वैद्यविश्वादकानां अर्थ 
अंक जन्म नयी के विनय के माते वैद्यविश्वादकत। वैद्यविश्वादकानां अर्थ अंक: (दश-अधभुति)
यार क्रयामां नयी अने ज्यव अने पुरुष (दश्य) मां छे, अंक अपेक्षाकें विशेषनायावन
विनयावनाय क्रयामां आदि। विनयावनां अर्थ अंकोऽ नयी ने वैद्यविश्वादकत छे तो विकार 
करे छे। (जे विकार के) तो वैद्यविश्वादकत तो झिम्मा पता छे। एतं तो शुद्ध परिसंचरण 
छे। वातावरण परिसंचरण छे। अतिशय आनंदपुर परिसंचरण छे। आत्म... खा! समजाय 
छे संगठि?

शोधि (समजय); पता प्रमुृ! सत्य तो आ छे। अरे! होकने अंकां वाणे छे। अहस्य
अंक जन्मनां आये छे ने...! कें व्यवस्थित (निश्चय प्रास) न ध्या। निमित्ती (उपादतः 
अर्थ) न ध्या! क्वाशा (अंक मोटी विद्या) अंक वातयो क्वाशा छे ‘क्षमण छे’। प्रेक्षा
जन्मनां निमित्त ध्याः। २६ वर्ष ध्याः। संवतं २०१३नी साल। सम्मेदिक्षांमां परीणा 
साधी ध्याः ध्याः ध्याः ध्याः ध्याः ध्याः। परीणा क्षमण नस्कर छे। (नयी) अंक 
क्षमण नस्कर (कें) ‘क्षमण नस्कर’। (पत्र्यय) अंक पत्र्यय, अंक (क्षमण) ज ध्याः छे, एम 
नस्कर। अंक पत्र्यय अंक ध्याः। पता आ पत्र्यय आ ज अने आ पत्र्यय आ ज (पत्र्यय) ध्याः, 
अंकुण क्षमण नस्कर-अंक क्षमण नस्कर। ध्या अंक शंखुण ध्याः। क्रमण-प्रदुष्ट-ध्याः। 
प्रेक्षण पत्र्यय आ साधी, जे क्षमण उपन्यासनी ध्याः। ध्याः (ते नयी) ज्ञितण-उपासनां धार
छे, एतं नाम ‘क्षमण’ छे। पता क्षमणां निर्धारण उपासणानी इति क्षमणपरम्य उपर नस्कर छे。

अहस्य तो हर वर्ष पहला अंक वर्ष संस्करणां बाणी ध्याः ध्याः। (प्रेक्षा) अंक अंकमा 
(स्थानकासीमां) बनना ने...! संवतं १९६० मा दुइने छोटी धीरी धीरी। अंकमा 
(संस्करणां) अंक जन्मने ने अंक ‘धीरी धीरी’। धीरी तो धीरी धीरी? अंक गुरुवार धाता। ते तो वारंवार 
अंक धाता के ‘क्षमणानिः क्शुं तेम धाता। आप्ने शुं पुरुषार्थ धाता। आप्ने कांश कृृत
धीरी अंकन।’ के ध्याः तो सांभुः। पत्र्यय १९८०मां साल। जन्मण माः। सूच तेशा। कृृत 
धीरी धाः। क्शुं के: क्शुं अनन आ धाता छे? क्शुं नाम धाता आ धाता छे? अंकुण क्यां क्यां छे? (तमे 
क्यों छे) अंकुण वेनी रीते छे? क्षमण ध्रुव धरतमा छे। अंक संस्करणां सागरसुः अंक पत्र्ययां 
अनंता क्षमण जन्मण छे। अंक पत्र्यय जन्मण छे। अंक पत्र्यय जन्मण छे अनन सतनाबे 
(तमना) पहला स्त्रीर छे? ‘क्षमणाने क्शुं धरती (तेम धारा)” अंक पत्र्यय धाता!

‘क्षमण (ज्ञान)’ धात ज्ञान (क्षमण) अंक रेक्षेत्रां अभिमानमां भागमां-अंक संस्करणां 
अनंत क्षमणां ने, अनंत सिद्धां, अनंत निगराणं अपने जयने जयने छे। अंक जयने छे अंक रेक्षेत्र ध्वान 
ध्रुव धाता। पता पौतानी पत्र्ययां अंकी ज्ञानानी तातक छे।–वक्षजामन-वक्षजामन, अंकनी 
अनंतजामन धृष्टो तो पता (तेम) जयने रेक्षेत्र छे। अंक ‘परमात्मप्रश्ना’ मां आप्ने छे: वेनो मंडकप 
खेर सेर तो वेल तो मंडकप धृष्टर्त्य द्वा सुधी जयने छे अने मंडकप न खेर तो पता वेल आम 
उपर रेक्षेत्र छे। वेल आप्ने छे जयती नस्कर, मंडकप खेर द्वा सुधी जयने छे। अंक क्षमण, 
मंडकप धरातलुः

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री नियमसार गाथा उत - १७
लोकावलोकि त्यां सुधी जाए छे, पण (धे) अनेकां अनन्तगणा हृदय तो पण जाणे छे. आहे...

बज्ञानि! अध्यात्म आंध्यानि परिच्छ. भावि! आ तो १८२० वार जाणि. आहे... आ! अंतरस्विर्त आयूं कुंतु ने...! आहे... आ! सिद्धांतपूर्वि कोने कह्ये!! आत्मानि स्वाभाव ज सर्प-ज है! सिद्धांतकिंतू के नहीं? ज्ञाति तमां (अक) सिद्धांतकिंतू है! तो (आत्मानि) स्वाभाव सर्पस्वाभावी है. अनेक जने अनुभव धृष्टि के सिद्धांतपूर्वि जगतमां है; अने पोतां जानस्वाभावानि अनुभव धृष्टि अने प्रतिति धृष्टि, ते ज 'पुरुषार्थ' है. अने द्वेषानि है, अमें मानुषु ते ज अंदर पुरुषार्थ है.

अक दिवसे तो (अमे) अपि संप्रार्थ छोटी धीमी कोंतो. धीमुं (के) अमे तो सत्यमा शोधक छी.अपि आसान्यावाणि अमे मानि शक्ति नाति. अमारे संप्रार्थ न जोड्ये. अने गुरु न जोड्ये. अने शास्त्र न जोड्ये!

प्रेतु! अपि (पुरुषार्थदूत्त) वात कर्दी हि? तारे (शु मानि) धार्मिक कर्दी हि के: देवणि हि अने देवणींहि हृदि तें मथि हि... बसि! (भार! अमे न धृष्टि)

आहे... आ! द्वेषानि स्वाभावी प्रेतु (आत्मा); (अमे) पोतां अक शान्तिगुष्ण; (अनेि) अक समयनि पृथ्य (द्वेषानि); अनेि आत्मानि अनति पृथ्यो शान्तिगुष्णां है! तो अक समयनि (द्वेषानि-) पृथ्यिनु असतिति है. (अपि) सति जगतमां है. -अपि जनें स्वीकार हृदि तो तेनि हृदि द्रूप उपर आलि जय है; तान रहि जय है. ते हि' अंतुं धृष्टि (भावां) नकुतुं, द्रूप उपरिनि (पात) नकूति, पण अंतुं कुंतु के: द्वेषानि है. अपि गुज्ज-पृथ्यिनो स्वीकार कर्दानि (हृदि तो) पृथ्य शान्ति जय है. अनेि (पृथ्य) शान्ति तूसि जय है अनेि भव नाति. अमारे आत्मा भव दीक्षा ज नाति. अनेि भव हि ज नाति.

मोटि वर्षा थांत कंती. अमे तो नाती उमरना. रप वर्ष्यनि उमर कंती ने! बड़ी गड़कंत रहि. गुरु शांत कंता. धरण मंद कंता. आ (तत्त्व) तो राम्य कुंतु? वस्तु ज ज हि ने...! शेतांबर अने स्थानकवासी भेदमां तो अने वस्तु ज ज हि! गुरुमे पखिवा कबूल कूहु. मारी वात अने सत्य जागी. पण बीजे हिवे अने शंका हिकी. (मारी वात) सति जागी (पण) मेन विनानि (जागी). (के) के कुदा अनि (अनेि) कुंतु के, 'अनेि (भावां) आवे' तो पांच समवाय सिक्त ज हि! पुरुषार्थ, नित्यति, स्वाधि, स्वाभाव, अम-पांच समवाय हि ने...! (पण अे लोडे) पांच समवाय मानता नाति. ते हि' अे प्रश्न उिहयो. अे तात्सार पति.

'मोक्षमर्गप्राधार' नवमा अध्यामा कुँ छे के: अक समयनि (धे) अक कर्ण हि त्यां (बीजा) वारे कर्ण साठि है. पांच समवाय अक समयनि है. 'मोक्षमर्गप्राधार' मा वाणि सृष्टि कुँ छे. दोषरमवाणे शाठ रत्ना साृष्टि वाणि बोली हीमुं है. लोडे न माने अंतें कुंन (स्वस्थिति बड़वानी कंती).

क्वटनां पुरित लोडे अंवु बोल्या के: 'दोषरमवाणे अने जनार्ददासश्र अध्यात्मानि बांज पीने नातवा बंता'. -अपि मक्खली सरि! अरि... २! प्रेतु! शुं करो छो तें भार्य? तने तुक्षान हि, भार! 'अध्यात्मानि बांज' क्वेवाण प्रेतु? बांज पीने नाथि. मादे अने वात कबूल नाति. पखिवा विवेर्तिपूर्णां अमें धृष्टि हि. के दिवसे तो (अमेि) अनेक अपि हि वात कर्दी हि?

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
है – प्रवचन नव-नीति: भाग-२

प्रमु भारग हुड़ (क्षे) नाथ! (वीर-राजा) मारा, अंतर्मुख हरि क्रम विना, व्यायाम क्रम आने नहीं। आब... है! ‘छलछाला’ मा आये ने...! “लाव भाव मै भाव यही, निश्चय उर लाओ; तोरि सकल जग डू-डू, निज आत्म ध्याओ।” आब... है! अक (क्षेत्र) केटलू भरी डूबू है! गागराम सागर भरी डूबी है। लाव वात भीष, क्षेत्र वात भीष के अनंत वात क्षेष, पण निश्चय आत्मा, अनंतनो नाथ अंदर है; भेंसी बंद छोड़! आ गुजी है अने अमन अंतत्गुण (क्षे) अबीं बंद-देत पण छोड़! आब... है! ‘निज आत्म (ध्याओ)’ –निज आत्म... पाँचु; परम्परावने ध्याओ, अम नही। अंतो परिवर्त्य है। आब... है! ‘निज आत्म ध्याओ।’

अर्थीया तो अं कदे छे के (आत्मा) आर भावधी गय नथी! (पणा) शाकिकभावमां- देवप्रक्षालामा तो आयू द्रव्य ज्ञासापाँ आये है। अने उपशम-क्षयोपशामामां पण आत्मा ज्ञासामां आये है। क्षयोपशाम, (अं) समक्षितनो क्षयोपशाम श्री! अथा अशानीनो खानो ख्यातो नही। समक्षितमां तो आत्मा प्रतीतमां-भालामा आये है। अर्थी तो (अने पणा) केव कहू?

“आर भवान्तरोने अजोधर होधाद्”-नेनं अर्थ आ के: आर भाव-पर्यथायन लक्ष्यी अज्ञम (अजोधर) है।

आब... है! समजू छे कढ़? सूक्ष्म वात है, भगवान! भगवान अंदरहां विसंज हे। प्रमु! तु पूर्णांनो मान है ने... भाव! पर्यथायी पाठरता तारी नथी। आब... है! शाकिकभाव पण पर्यथाय (क्षे) अं तो अनंतमा... अनंतमा... अनंतमा... भागनी अंक समयनी पर्यथ है। अने अंधी शाकिकपर्यथाय साध-अंतंत (क्षे)। जयारे देवप्रक्षाल धार है तो अं (केटेला) अं पर्यथाय नथी रहेती; (नयी प्राप्त है)। (अं) पडेली पर्यथायी मुख अंक समयनी है। तो देवप्रक्षाल अंक समय, (पणी) बीचुं देवप्रक्षाल बीजे समय (छे, अंम) बीचुं... बीचुं अंवू साध-अंतंत देवप्रक्षाल; अंधी पर्यथायोनो पिंड है ‘शान्तुण’ है। एंवा अनंतशुणनो पिंड अं ‘आत्मा’ है। आब... है!

(अंधीया) अं आलामे आर भावधी (अजोधर) अज्ञम दही। तो (कढ़) अंदो अर्थ है (क्षे, आत्मा सर्वथा अजोधर है, तो) अं अंकने आशय आखिरनो है ज नयी। (आ) पर्यथमभवधववनी (संस्कृत) दिखा है! (अंदो) ब्र. शीतवसादहाने (जे कंडी अनुवाद कर्ण है अंधीया) उनो अर्थ ज कर्ण नयी। जम भाषा है तें मुडी दीवी है। पणा भवान्तरनो अर्थ है: जे स्वाधीनता निलय प्रमु, अनंतक्ष, अतिरिक्त खानो रसक दृष्ट, सूचन, नित्य, निश्चात, अंकशुप स्वभाव; अनंधी (अजोविकढी) आर भाव भवान्तर है। अं (स्वभाव) भावधी अनेका भाव है। समजू छे कढ़?

(‘समसार’ मा अमृतप्रत्येकायं पदेला खोळा कहूं के:) “नम: समसाराय स्वानुभूत्या चकासाते। विस्मायाय भावाय सर्वभावान्तरछिदै।” –आवे है ने...

“स्वामान्तरछिदै”-अं शोधा पक्का आयू है: ‘सवर भवान्तर’ – पोवाना सिराय बीज भाव है। भजने अजोधरणो छे।

अर्थीया कदे है: “अंधिक आदि आर भवान्तरने अजोधर होधाद् है (अजशरप्रक्षाला)”
आँख... ठीक! अभी कार्यप्रयुक्त!

अंक कण्ठवाली वृक्षी क्षा. दानिनाओं अने हिंदुर (शंकरो) पढ़वावेलो अभ्यास. अंतरी दीक्षाओं अं प्रथा डुके: तेम आत्माने कार्यपरमाणु कडे थे. तो कार्य शैव तो अंत्य याद आयूं जोड़ते. पता कार्य तो आयूं नरी! तैसूं प्रयुक्त! डॉने? (ऍ) जैन अं कार्यपरमाणु ने अंत्य-प्रथात्मक तथा विना रके नरी! पता ज्ञान कार्यपरमाणु ने अंत्य प्रथात्मक नरी त्या शास्त्री-पाठकी धारी लेवू छे?

वात समजू माहे? वात तो अंत्य हे, भव्यान! बुद्ध सूक्ष्म, बापू! अंत्य ‘कार्यपरमाणु’ वापू छे ने...! वापू वार आवेश. आपा ‘नियमसार’ मान तो कार्यपरमाणु ज़गा गावा गावा छे.

आँख... ठीक! अभी साधे ‘कार्य (शुद्ध) परियो’ आवं हे ने...! ‘नियमसार’ मां ज़प्पमि गावा. अंक कार्य (शुद्ध) परियो छे वृद्ध. वृद्ध... ठीक! जे कत पुस्तु शून्य छे, जे गुण शून्य छे; तेम अं कार्यपाद्ध शून्य छुए पुस्तु 2000नी सावतां बसू विस्तार आयूं तब. १ थी १८ गावा सूतीत अभ्यास (पुस्तकप्रेण प्राकृतिक ठा गळेला छे)। ‘कार्य (शुद्ध) परियो’ सूक्ष्म हे. जे गरूरस्त, अध्यात्मिक, आदश अंतर वार प्रयुक्त छे, अंतरी तो पारीमेंताळवानी परियो अंदारणी हे. शंख ज्ञान अंत्यहुँ? (अंतरी) आयूं करु गुण तो अंदारणा ज़छे; पता अंतरी परियो पता अंदारणी (छे), ओश्चार-विषयक अंतरी ज़छे नरी. परमेंताळवानी परियो वायु अंदारण (छे). लागू तो अं करु गुण-परियोको वायु गुण्य धारा छे. तो आत्मामा वायु अंतरी शून्य पुस्तु छे। पता जे परियो रागहूँ छे अंतरी गाँव अंतर वथार प्रधारे धारा छे. रागनो अभाव चर्चने सम्मित धारा छे. अंतरी मोक्षराज्यकी परियोको पता आपाव धर्मने भोक धारा छे. तो परियो अंदारण न रेखे. (अंतरी धारा) आयूं (व्यवस्था) परियो अंदारण छे. तो अंतरी (आत्मामा) पारीमेंताळवानी (परियो) अंदारण बेली ओडोणे के नरी? तो अं उद्ध, उपलब्ध, वस्तिरण अंतरी वानिक (परियो) स्वायत, अंतर (अंतर) कार्य (शुद्ध) परियो (छे). अंतरी विस्तार १प्पसमी गावाना (अभ्यासमा) डङो हे. वायु अंतरि स्निग्ध वायु, अंतरि स्निग्ध सामा, अंतरी परियो विशेष. विशेष (अंतरी) उंपाद-वायु नरी. उंपाद-वायु विनाई ‘कार्यपाद्ध’ शून्य कार्य सदि अनाजिनांत प्रधार हे. जे देवा अंतर परमेंताळवानी परियो अनाजिनांत अंदारणी हे अंतरी अंदारणी शून्य-कार्य (शुद्ध) परियो अनाजिनांत अंदारण छे. आँख... ठीक! मे 2000नी सावतां अंतरी नक्रो पता बनावयहूँ छोटो. पता (अंतरी अंतरि मोटा पंडितां) कहुँ तो ते समझना नरी. पतझने कहुँ तो अंतरी के ‘कार्य (शुद्ध) परियो’ अंतरियुँ छे नरी. पता इंसनु अंदारणी के, मोटा पंडितां य समजता नरी तो (बीजे तो) समझने नरी. (अंतरी) नक्रो बरक नरी पाउँञु. अंतरी (विषय) सूक्ष्म छे, भाल! विनाई नरी, अंतर (शुद्ध) परियो; अंतर परमेंताळवानी ज्ञाते छे. अंतरी (अंदारणहुँ) अंतर परमेंताळ आवेश नरी. अंतर परमेंताळावनी परियो ‘कार्य (शुद्ध) परियो’ छे. आवेश भाल छे! अंतरी कदे छे.

अंतरी हे (वायु) बालने परमेंताळवानी लेवू छे. तो अंतर (शुद्ध) परियो, वायु अंतरी गुण्य-न्रोणे ‘कार्यपरमाणु’ वायुमा आवेश छे. अंतर (शुद्ध) परियो; अंतर (अंदारणहुँ) आवेश नरी. अंतर परमेंताळावनी परियो ‘कार्य (शुद्ध) परियो’ छे. आवेश भाल छे! अंतरी कदे छे.

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
वैदिक आदि आर्थिक वाल्यांचे अनेक अनोखे उपायजिन्त विवाहगुणधर्मांत विनायक न होते. अन्य विषयानुसार अनेक अनोखे उपायजिन्त विवाहगुणधर्मांत विनायक न होते. उपाय ने! इंक या केस के: कारापरम्परा के तो कर्न कम नाले? पढ़ो कुंने? वीहुँ: ‘कारापरम्परा के’ अनेक अनेक नई प्रक्रियाएँ है। कारापरम्परा के तो है, (जने अंतर्विश्वसनीय) जने तो नहीं। दृष्टिकोण, शासनों अनुसार प्रतीतियाँ तो ‘वस्तु आ छ’ अनुष्क या कर्ने। वायु, वायु पर्यायांत अल्पुता नहीं, अन्य शासनों आवश्यक प्रतीति आवश्यक नहीं। तो प्रतीति आवश्यक ‘कारापरम्परा’ अनेक है, अल्पुता क्या नहीं?

न्याय समर्थ छो। आ तो वार्ता (न्याय) है। वानरानो भारा नो न्यायसुद्धा छ। न्यायाः ‘नी’ हाला है। ‘नी’ अनेको शासन वह जनवरी है। वायु पर्याय विनायक है। जने सात होते। अनुष्क होता न्याय है। अल्पुता तो सर्वशरीर भांविला है, अल्प है। आ तो वाक्य विवाहकालाय मित्रसाधनाः (न्याय) है। आलखा... हाँ! कारापरम्परा के देवी है। (के) “इन्द्रकर्म, वायकर्म अने नोकरक उपायसूत्र श्रीनि विबाहगुणधर्मांत विनायक होते।” आलखा... हाँ! अल्पुता साधन, शेष सम्मस्ततिनु ध्यय, ध्ययतनु ध्यय, सम्मस्ततिनु विषय, आमीरनानी पर्यायों विषय-अर्थ, इन्द्रकर्मे निभत है। वायकर्म अर्थित पुलिप-पाप, द्वा-धन आर्थित निमत है। अने नोकर्म (अर्थित) शरीर, धारी, मत (आर्थित) शेष (निमत है)। -अनुष्क उपायसूत्र श्रीनि (अर्थित निमत) विवाहगुणधर्मांत रहित है। अल्पुता अल्पुता अर्थित श्रीनि रहित है। अल्पुता अल्पुता अर्थित श्रीनि रहित है। पर्यायों आवश्यक धूम नहीं।

विशेष केवळे... * * *

प्रवचन तारा १-२-१९७८

‘मातमसार’ गाथा-उ. पंजाबप्रमाणसाहित्यावली टीका। “रोहिक्षिक आदि आर्थिक वाक्यांतर्दर्शना अग्रोह भेदवादित्रि जे (कारापरम्परा) इन्द्रकर्म, वायकर्म अने नोकर्म उपायसूत्रित्व विवाहगुणधर्मांत विनायक होते,” अल्पुता सुधी आपले आलखा होते। अल्पुता केवळ “तथा अनाधी-नांतं अमुर्त आतिनिर्देश स्वाभाविको” (के)।

आलखा... हाँ! (के) वानरानो जने वातानी, जे सम्मस्ततिनु विषय छे। जे ध्ययने अवश्यक सम्मस्ततिनु ध्यय छे, अल्पुता आतिनिर्देश स्वाभाविको आलखा... हाँ! (अल्पुता अनाधी-नांतं) अमुर्त आतिनिर्देश स्वाभाविको छ!

केवळे, अल्पुता विशेष केवळे: “शुक्ल” शुक्ल पवित्र पिंडः। “स्वप्न-स्वप्न-रात्रिभाषिकाभाव

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री निरमसार गाथा २० - १८
(जेनो स्वाभाव छ)
“जेने (‘समसार’) छही गाथामा ‘बाध’ द्वारै। ९९मा, जेने ‘मूलाध’ द्वारै। अनेक अर्थला “परम पारिशालिमकाल” द्वारै (छ)। आखर... छ। समझ्छौं धैर्य? सुकम वात छै। बाहै।

आखर... छ। ‘परम पारिशालिमकाल’ अर्थला (ओटिलिया) शासन द्वारा भाष्मीलो छो। कल्य (भाव) भने तो कमनु निमित पार्दै छ । अनेक ज्योतिषमका उपशम (उत्पाद, क्षयोपसाम अनेक शालिमकालमा फर्नु) निमित भाष्मीली अपेक्षा अत्यन्त उच्च छ। (तेधी) अनेक (शासन) अघिेकत भाष्म छ। त्यसै अनेक (शासन) निर्माण निरापदमकाल (छ) अनेक (परम) पारिशालिमकालहरू छै। अनेक परम पारिशालिमकाल जेनो स्वाभाविक सुदृढ स्वाभाव छ। आखर... छ। जेनो परमपारिशालिमकृ थुर स्वाभाव, अनाहं-अनाहं शुद्ध अतिरिक्तमा आन्दोल्यम है।

परमानुभुद्र छो (तो) अप्रणी धीर अस्वसित है, विद्वान है।

‘पंडितजय’ गाथा-१३२ती दिक्कमा अघ हीमू छे। जारे अनुयोगीो ‘सार’ हू? (अम के) देशवासयोगो अम हीमू ने देशवासयोगो अम हीमू ने देशवासयोगो अघ (ने देशवासयोगो अघ)। जारे अनुयोगीो तापत्य तो ‘वीररागता’ है। जो वीररागता तापत्य है तो वीररागता देवी वीरें उपचार ताप्त। अपूर्ण अघ काहेदौ है। तापत्य है, पशु अन्य शासक तापत्य वीररागता है। जेनकर्णना जा शासक तापत्य वीररागता है। तो अं वीररागता तो पशुचच ताप्त। तो वीररागताली वीरें वीरें उपचार ताप्त?

ढे आपले अर्थला म्यो पन्ने ने...? आखर... छ। अं वाद अर्थला कहे है। सूक्ष्मसूक्ष्म अं पशु वीररागी पशुचच है। विधिनी वीरस्रवहाम वाले पशु मूह, ते ज उपादेय कहूँ; अपूर्ण धातान्तर अर्थ पन्ने, अनेक धातान्तर अर्थ पन्ने, अनेक (परमात्म) सूक्ष्मसूक्ष्म-स्वतन्त्र उपचार श्रृंग ते वीररागी पशुचच है। अं वीररागी पशुचच, जारे अनुयोगीो श्रृंण है अनेक अं वीररागी पशुचच, परमपारिशालिमक भाष्मीली अथर्वेक उपचार ताप्त है। समझ्छ है धैर्य?

आखर... छ। अं टो गरजनी टो है! अप्रणी टो (प्रणी) ज्योति नती। भुविन परमप्रभावजातिके नती। नती है। पायने है अघ प्रफु भुविन्है। जेम गाथ अनेक अं वाद अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने। अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने। अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने। अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने। अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने। अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने। अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने। अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने। अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने। अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने। अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने। अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने। अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने। अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने। अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने। अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने। अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने। अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने। अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने। अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने। अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने, अर्थ पन्ने।
रत्ने भाजन नवन्तित: भाग-२
अभी तो ‘पूर्णम इदम्’ –निर्णय करवावाणी परिपूर्ण तो छ. परिपूर्ण छ! परिपूर्ण नथि, अभी नथि. (पढ़े) (‘सम्भवसार’) १२८८ गाथामातो अभी कहुँ के: परिपूर्ण अभूतार्थ छ. व्यवहार अभूतार्थ छ. त्या व्यवहार अटो परिपूर्ण छ. ‘परिपूर्ण अभूतार्थ छ, जूठे छ,’ अभी कहुँ? (के) प्रयोग सिद्ध (माटे)! (तो) अं प्रयोग सिद्ध, ध्वजने मुख दरीने निश्चय करीने (अनेको) आश्रय करे तो घाय छे. अं कारो मृण्यने निश्चय करीने उपादेय कहुँ अने परिपूर्णने गोष्ट दरीने, व्यवहार दरीने देव दरी. देव दरी अवधा असत्यार्थ करी. आख... छ!
आख... छ! गोर यात्रा छ छ! दिज़्ज़ेर संदेशा अंदे शंक्यमां अन्न आधम बय्या छ. श्रीमद रज़्ज़ंद्र (पत्रकः १६५ अभा) कहे हे “सत्युर्धुषा अंदे काल्यमां, अंदे शंक्यमां, अन्न आधम रहा छ.” आख... छ! पढ़े अं वातो नुमासो तो सम्भवशेष बिना वर शके नये. समस्या छां छां?
अंदेयां कहे छे के: “अंयो कार्यशेषमाला ते परेषर आला” छे. भाषा ‘कुसो’! परिपूर्ण आ अलम छे अरो नकार कर्यो. आख... छ! शुरु कहुँ के हे “अनाह्य-अन्न अभूत अनील्यध्य स्वामाग्दाणी शुद्ध (सहज) –सरस-पारिशिकानावध (जैनो स्वाध्य छे) – अंयो कार्यशेषमालाने परेषर आला” छे.” परिपूर्णे अलमा न कहो, निर्णय करवावाणी परिपूर्णे अलमा न कहो. कार्या ने निज्य दे छे हे अं परिपूर्ण हे, तेने अभूतार्थ कही अने मृण्यने निश्चय करीने (भूतार्थ कहुँ). निज्य दे छे परिपूर्ण. बिजेद रीते कहीने अती निज्य अनित्य दे छे. आख... छ! नित्यो निज्य, नित्य-ध्वज शुद्ध हे के? समस्या छां छां? नित्यो निज्य अनित्य दे छे. अनित्य कहे के ने परिपूर्ण. परिपूर्णां निज्य शुद्ध? (के) कार्यशेषमाला। आख... छ! सम्भवशेष-सम्भवशेष-आलमानां; अनेको “निषेध” ते परेषर “आला” छे. (कार्य-परेषर्माला) ते ज आलम कहो. ते ज परेषर “आला” छे.
परिपूर्णे व्यवहार दरीने अनान्य कहहे छे. जय शंवितिं शांयणो! कार्या के, परिपूर्णे अभूतार्थ कहीने, असत्यार्थ कहीने, अं ‘अनान्य’ छे अभी कहुँ. व्यवहारयतनो निषेध है! अने वस्तु ने निजात हे ते ज परेषर आला छे. पढ़े, परेषर आला छे “तेनो निजात” सम्भवशेषानी परिपूर्ण कहे छे अने सम्भवशेष कहे छे (छांता) अं शांयणा ‘कार्यशेषमाला’ आलमो नये. अं शांयणिनी परिपूर्णां ‘कार्यशेषमाला’ आलमो नये. पढ़े कार्यशेषमालानु जेटलं साध्यं छे अंदेतहं साध्यं अने प्रतितिमां आली जाय छे. आख... छ! शुरु अनेकी गंभीर शैली!
आख... छ! बिजेद अंदे वाते के: होट वस्तु ‘क्रमबद्ध’ छे. जे समये जे परिपूर्ण उपत्य अवधान थवायणी छे ते ज समये (ते) ‘उपन्व’ थहे! (तो) त्या पुरुषार्थ उप्यां रहो! अं प्रएक हर वर्ण पदेलां, संवत्त १६७४ मासो धिको भरो। (सम्भवशेष) सर्वबिश्ववाणी अवविधामां पदेली गाथा: “द्वियं जं उपजार्षु गुणेद्वितीयं तं तेतहं जाणुसु उपजार्षु”–जे द्वियं जे परिपूर्णी निर्णये छे ते परिपूर्ण क्रमबद्ध छे. (अर्थात्) जे समये जे परिपूर्ण उपत्य थवायणी छे ते ज समये (ते) थहे. अंयो अनाह्य-अन्न परिपूर्णो क्रमबद्ध छे. ‘प्रवचन्त’ आला-८४ (नी टीका) मां “आयत समुदय” कहुँ छे. (कां- अपेक्षित प्रवास। अं गढी अं प्रवर्ततो, कामानी समुदय-). “आयत समुदय”–अं गढी अंक. अं गढी अंक. अं गढी अंक. (परिपूर्ण.). जे ज्ञानमां भोती छे, ते अं गढी अंक क्षय छे. आवां-पात्रां नये. तेम भववान्यमाना, ध्वज, कर्णशेषमाला; अनेकी
श्री निम्बुसार गाथा उत - २१

पर्याय अंक पढ़ी अंक, अंक पढ़ी अंक-कसर थवावाणी होय ते ६ श्रेणी। पड़ अंक कमबर तात्यः? (केवल: पीतारंगावा।) तो पीतारंगावा केवल सीते उत्पन्न थाय? अंक पड़ आवी गयु अंडर कमबर मा के: द्रव्यो आश्रय लेयो! आश्रय... आ! जूरी सूक्ष्म (वात) छै! भगवान! वात तो अन्याथी (पड़) वयी गंभीर छै।

'प्रवत्यासार' गाथा-१०१ मा तो अंक पड़ छुँ (केवल: उत्पाद आश्रय उत्पाद छ। व्ययना आश्रये व्यय छै अंक छुँ आश्रये श्रव्य छै? परना आश्रये तो (उत्पाद-व्यय) नथी (केवल: पड़ अंक उत्पादना शवे उत्पाद थाय छ ते) कमबर छै (तोपणा) उत्पादनां व्ययनी अपेक्षा नथी। व्ययना उत्पादनी अपेक्षा नथी। श्रव्यमा उत्पाद (व्यय) नी अपेक्षा नथी। उत्पाद उत्पादना आश्रयबी छै। अंक तत्र छै ने...! जोरे तत्र छे ने...! समाज छे उत्कृ? मजनां तो वयी सूक्ष्म वातो छै। अंडनी अंकें अंकें अंकें तो (लोकोसे) कड़ा पड़ी जस्म।

'sमस्यासार' मा ४२ श्रद्धातो-गुणो (वीर्यं) छै ने...! अंकां अंक उत्पादवधुलवत्शक्ति गढ़ी छ। आतमां जेम शानगुण छै, आनंदगुण छै, शांतिगुण छै, (शांति) अंडले वीतारंगावा; अंक अंक उत्पादवधुल नामनी गुण छ। अंक गुणनां काशक नवी पयण्य कमबर आव्यवाणी आवे छै, पूर्वी नवी पयण्य व्यय थाय छै अंक द्रव्य छ (अंक द्रव्य रहै छै)। अंक अंकेमा अंकेमी-कोडने (कोडनी) अपेक्षा नथी। जोरे तत्र छे। माते अंडनु छे। माते कोडनी अपेक्षा नथी।

आश्रय... आ! जस्म वात छै!! कवी लोकोसे व्ययां आठबुं हरु (समाज)? (वयी,) 'प्रवत्यासार' १०२-गाथा (नी ठीका) मा अंक छुँ (केवल: अंक जन्मकश्च छै! आम तो अंकी 'तत्त्वात्सुत्र' मा आधारण आवे छे ने...! “उत्पादवधुलवी गुणत सत। सत द्रव्य लक्षणम्।” (अन्ये) अंकी तो (४२-शरदिमां अंक छुँ (केवल: अंडरमा (आतमां) उत्पादवधुलवत्न नामिनो तो गुण छ। अंक गुणनां काशके समय समयमा जे पयण्य उत्पन्न व्ययवाणी छे ते उत्पन्न भरे जे। तो कमबर पण्य (सिद्ध) तथा गयु। अंक निमित्ती पण्य भरु नथी अंक (पण्य सिद्ध) तवा गयु। (अंके) निमित्ती क्रोण छे। निमित्ती शीर्ष छे।

अंक तो कम्रणा (अंक मोटी विक्राने) 'वैनसेह्ना' मा तो वात कमबर द्री: कमबर छ अंक सोनगां निमित्ति छै अंक माने छे पण्य निमित्ती परमा थाय छे अंक नथी (भान्ता.) - अंक बने वात पथार्य छे।

२१ वर्ष थाया। व्ययी साथे, 'पा०क्ताक्यान्' न दर्शी गाथा (वि०) अंकी तो वयी वात छै। अंकां कदृः छे: विकार जे थाय छे ते पोताना नवकारकी थाय छे। अंक मरकारकी अपेक्षा छे ज नथी। -शुः कहूँ? पोतानाथी उत्पादनी जे पयण्य कमबर मा उत्पन्न थाय छे (अंके) कोणी अपेक्षा नथी। विकारने हौ! विकार जे थाय छे-मिथायतनो, रागनो, हृदनो, ते अंक समयमा पयण्यमा नवकारकी थाय छे। अंक द्रव्य-गुणानी अपेक्षा नथी अंक निमित्ती अपेक्षा नथी। (अर्थात् निमित्ती क्रोण पण्य) अंकी (निमित्ती) अपेक्षाथी, अंका कारकी अंक विकार उत्पन्न थाय छे, अंक नथी।

छन्दोक्रमणा (अंक पंक्तिज) (आ.) हर्मी गाथा 'धौलता कंठा, पण्य अंक (अर्थ) लोकोने न बेली. अंक तो 'अविनय' नी वात छे, (अंक अंक लोके मान्ता कंठा). पण्य 'अविनय' नो अर्थ शुः?

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
राजेश को संपादित करें ।
श्री निर्मलसार गाथा उत - २३

अम्मू हो (कमबख्त) पर्याय ने सिद्ध करवी छ ने...? आ सम्जशीर्षनी पर्याय, अनेको आश्रय त्रिकालं बगवान! –अनेको आश्रय लीली ईश्वर हो तो अ (सम्जशीर्षनी) पर्याय, कमबख्त मं उत्पन्न यथा छ. अने तें पर्याय उत्पन्न ध्वामां कर्मना अभावानी अपेक्षा नथी. पूर्णी पर्यायिनी अपेक्षा नथी. (पर्याय,) द्वर-पुत्रानुं लब करे छ तो (पर्याय) आश्रय द्वरे, (अनेको देवख्वे छ.) पङ्ख इवने दाध्मे से पर्याय लब करे छ, (अनेको) नथी. अ पर्याय पोतानी सत्ताना-ःस्थलाना कर्मे सप्तानुं लब करे छे. अ पर्यायिनु शामथ्र छे! आजः बा! आमी वात!!

सम्बन्ध है छाँ?

त्यां (‘प्रशासिकाय’ मा डॉक्मां) पट्टङकली (आत्मामां) विकार उत्पन्न यथा अनेको नकार आवो छ. अने तो अ बर्दु अपनी सावधी फडी हो छी. फडेली वात अपनी सावधानेमां बड़ीमा बनोरे व्यापारामां मूँती बनी. भजणाना बढ गयो. आड़े मे कम विकार यथा छे?

केहुः : कम विना विकार यथा छे! विकारातुं परिश्रमण पट्टङकलीकेथिङी पोतानाधी छे. विकार जे यथा छे (ते) परनी अपेक्षा विना यथा छे! (ते) परनी अपेक्षा विना यथा छे! ‘अर्थी विकार थतो नथी’ भजनाना...! पट्टङकलीपरिश्रमण (बिनेनी स्पर्श) ते की’ अनेकी फडी नकोरी. अ पात कडी बनी. तें वषने सुखकसा फडों होते. इटक फडेला नकार के आ शुन वातः करे छे? गुरु बकार बना सामंजना करा. बुझ बिल्कुल बना. शांत बना. अउन्नयणां माणा पाका बना. हाँ तो कडी ज दुःखाः? आ पसुः (त्याः) करस्त ज न नहीं?

शु नकार छे? कम विना विकार यथा छे. (कमकेठे) कम पदक्त्य हो. पोतानी पर्यायिमा विकार स्वतंत्र पोतानाधी छे, अनेको निर्थिङ तृक्ते यथा तृक्ते अपनी पर्याय, द्वर(नो) आश्रय द्वरे छे. उर्वा भै, विकार माराथी मारा दाध्मे यथा छे ते तो दु:खः(उप) छे. तो अनेकी यथा दृष्टि पवताय छे तृक्ते हाँ, आरामकलमानो आश्रय लाते समझ्य यथा छे. —अनेको यार आवी गयो! वीरराजुतानो सार आवी गयो. कमबख्त पङ्ख आवी गयु. निमित्ती हथी तूनु, अ पङ्ख आवी गयु!

(केठे) निमित्त हो. इहाँ पर्यायिना उलित निमित्त यथा ज छे. उलित हों! उलितनो अर्थ? के-अनेको योग्य योग अबु निमित्त होय. पङ्ख निमित्ती (उपानाना कर्भ) तूनु नथी! आजः बा! अं होण माने? ध्वजः याणे छे अं पवण्यी यारणी नथी, अम कङे छे ध्वजाना परमाणुणी अं पर्याय, अं समझे पोताना पट्टङकली परिश्रमणां अम याणे छे. (अं ध्वजः) वाणुने तो स्पर्शं ज नथी. पङ्ख (वाणुने) निमित्त देववां आवे छे. (ध्वजः), निमित्तने स्पर्शी नथी; अने पोतानाधी परिश्रमण द्वरे छे, बगवान!

अनेके बगवानआत्मा; (अनेके) पोतानी विकारे हे अविकारी डिमां भरनी दुःख अपेक्षा ज नथी. आ अविकारीपवयिमा परनी अपेक्षा नथी.

बगवान आरामकलमा, नित्यानंद भ्रमु; अं मने उपाय छे! ‘अं मने उपाय छे’ -
अंनेके भन्यह पङ्ख त्यां नथी!

पङ्ख द्वरे कर्कु शुं? सम्जशीर्षना आवे छे ने के: बरेजर अं आत्मा... अं आत्मा-अभे. नित्य ते आत्मा! अनेके निज परमात्म-संसारानी डिनानो जने अति नणुक आवे छे (अर्थात् जने अल्प कानां मृत्यु-व्यवस्थण वसी ने वसी, अवे “अति आसान भक्त्योजने” - (उपाय छे). (शुं दुःखु! -) अनेके निज परमात्मा (जे) दुःख अत्यन्तीत्ववामानो, त्रिकाली भ्रमु (छे) -अनेके निज परमात्मा; पर परमात्मा नथी, निज परमात्मा; अं अं पङ्ख उपाय छे;

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
र२ - प्रवचन नव-नीति: भाग-२
(अ) सिवाय (बीज़ू) काँटा उपायें नहीं! आख.. बाँ! ल्यां तो अंगी विकल्पणा नहीं।

ज८ पर्व ध्यानं। संवत् १९८५-१९८६ वालं छ। मोटी समा कति। फ़ंदर-फंदरसो माइलस ते ही ' 
व्याख्यातमां। अवसारांमां माइलस समाय नहीं। संग्रहायमां पहेचेथि (addock) प्रतिष्ठा वाली कति 
नै...! बलें (पहेलान स्थानकर्फाऱी) संग्रहायमां कता। (पड़ भरेणर) अंगे तो केह संग्रहायमां 
कता पण्ड नहीं। अनमे तो केह संग्रहायमां हस्ति नबस्ती। जबं दुःख के: जे भावे तीर्थकर्गों अंगाय, 
अं भाव धर्म नहीं। भाव शुभ के ने! उत्तमाव छ। सत्य अने सरंग-सीधी भास्मां डबीजे तो 
केहु-अं अंग्र छो। जे भावे तीर्थकर्गों अंगाय, अं भाव, उत्तमाव-विकार छ; धर्म नहीं।
(केमे) पर्मस्त्र बंध भोग नहीं। जेनाथी बंध भाव, अं धर्म नहीं! आ तो सत्य (वाल) छ 
प्रलु! आख.. बाँ! आ तो अंगरथी वाल आवी कति। (पणी) अंगे बीज़ू वाल करी कति: पंभं 
मजहरात, अं आवाय, राग छे अं वंंथु दरा छे; अं संवर-निर्माण नही। ज्ञणमणट 
वाल गयो कती। ही तो बाँ! प्रलु! भाँर तो आ छ, भाँर!

अंगीयो तो अं दुःख: “कादारपरमाना ते भरेणर ‘आत्मा’ छ।’ ‘भरेणर’ अंगे 
‘आत्मा’ शजह पुष्य छै नै...! आ तो आकं आकं शब्दनी तित्त्रत्र छै! समाज छे बांहं? अनि 
आसन क्षेत्रियोऽने “अवा निज परमाना सिवाय (बीज़ू)” (अर्थात्) निज परमान्ताथी नित्त-पयजक 
जे राग के कोटा नित्त-“कांटा उपायें नहीं।”

जिखासा: उपवास करवा परे ने?

समाधान: कोटा केर उपवास? उपवासनी व्यात्या जरी सूक्ष्म छे। उप=आत्मा 
माण्डरसुपृ. वास=अंवी समीफ्मा वसूं। अं उपवास छे! व्यात्या बीछ छे, भाँर! आ ( 
संग्रहायमां) जे उपवास करे छे ते तो अपवास छे! राजनी मंडता करे तो करो, अं तो भाँही 
वास छे रागये।

आख.. बाँ! आयो मार्ग!! प्रलु! आकरो तो परे। शुं वाला? उदारधरसम्बायचा पण्ड 
बंधतु दरा छे। अने आवाय क्वसो अं अंगह क्वसो? (राग) वाल छे। झानीने (पण अंवा 
भाव) आवे छ। (झानीने) अनुभव-मृदु वोका छता पण्ड, वितरणाता अने कादारपरमाना 
उपजे वोका छता पण्ड, पूर्व वितरणाता नै वाल त्या सुधी अंवो (राग) भाव आवे छे। पण्ड 
छे (अं) रेव। अंगी दुःख ने के: “(बीज़ू) कांटा उपायें नहीं।”

जिखासा: कादारपरमाना, पयावने (समूह) कोटा दे छे?

समाधान: नसी. नसी. अं तो पहेला कोटा ने के: पर्वय पोते ज (पर्वयनी) दत्ता छे। 
(दरा) परमान्तानो आदर-उपादे करवामा पर्वयनी अंडर ढटारक पुष्य ह। द्रव्य छे अं 
पर्वयने कांटा आपतो (निधी)।

शुं वाला...? मार्ग तो आ छे! अनंत तीर्थकरो, अनंत देवानीयोऽ, अने महा विन्देमां 
पर्मनां विलंकानां बिहारे ने-ने (भूषा) आ जो करे छे। छन्द अने गड़म्मणी वाले 
समाया ना करे छे। भाँर! मारकरो आयो कोटा सूक्ष्म छे। आख.. बाँ!

भाँरो शुं पृथ्वी? अंगे के: अं जे सम्पूर्णती (पर्वय) वाल अंगे द्रव्यं मदन करी 
नै...? द्रव्य दत्ता वथू ने नसी? नसी। (अं) परिशिष्टन पर्वयनी (पोतनां) ढटारक्षी छे। 
द्रव्यां ढटारक्षी ते तो द्रव्यमृत्त ह। कादारपरमाना जे ते भरेणर आत्मा क्वसो अंवां ढटारक
Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री निममसार गाढ़ा उं - २प गुल पड़ा है। ऐसे ज्ञान-दर्शन-आनंद आदि जू हारणात्मकों वर्तन कर्नू, अथवा अनंत शांतिमयो है, अथवा पद्याकरक्षित है; पण अर्थ तो देख नहीं, अर व्यक्तता नहीं। आम... छ। 'प्रत्ययस्य' गाढ़ा-२०१९ में छू नै... 'उपायस्य' आश्रये उपाय यहां है। ज्ञान तो व्यवस्था समझनाके आते, त्याते अथ आते 'क्रय-व्यय' आश्रय कर्नू तो पयाय सूह वहा। पण अथ अथ अथ छू नै। आश्रय की जाय कमप्र्रि पयायनी ताकातसी आश्रय कर्नू है के क्रयानी ताकातसी आश्रय कर्नू है। प्रभु! आपी वायो है!! शु कर्नूं! अर्थी अम कर्नूं है ने...! " (अर्थ) 'आमा' परर्वर उपाय छ।" आकाश... छ! परर्वयर ते ज आमा अनेन ते ज उपाय छ। पण (करे? के?) केले पयायनां उपाय कर्नू (अनेन)। अर पयाय क्रय वहा आपी नाथी। जव तो त्रिज्ञातवी है। (जो) जव आपे तो त्रिज्ञातवी उम आपतु नाथी? समजाणू क्रय? ज्ञानसा: पयाय के जवन्तु शरण आवा गह, ते (जव) उपथ करे ने...?

समाधान: अर शरण योद्धानी अर्थ शुं? अर कर्नूं बतू ने...! आम (बाबा) उक्क (छ), (तेन पलटने ज्ञानपुण) करे छे। अर बाबा, (पयाय) पयायनी ताकातली करे छे; क्रयानी ताकातली नहीं। आम... छ। समजाणू क्रय? 'योगसार' -अभितत्त आचार्य। अर्थम अथे पाट छे: पयायनो द्वत्ता आमा नाथी। आम... छ। आ ते क्रय वाय है? --निमाती ते वटन नाथी, पण आमा (पयायनो) द्वत्ता नाथी! अम दे: पयाय सत है असे सत है असे शोधनो जेत नाथी, कीथनी अपेक्षा नाथी। अनुत नाम 'सत' करेवामां आवे छे।

सम्भारस्यानी पयाय, आत्मानु अवलंबन करे छे ते परेरसमा पोताना साम्भारसी करे छे। भवे, जवन्तु (पोतानु) साम्भार छ; पण अर जवन्ता साम्भारनी श्रव्या, (पयायना) साम्भारसी पयायमा आपी जय है। जवन्तामा जेटिवु साम्भार छ अटिवु पयायमा ज्ञान आपी जय है। पण स्वात्ना आश्रय, पयायना साम्भारसी पयाय लीनी है। आम... छ। नूह जीसुं आ तो... बापु! आ गाढ़ा ज अपी है!

आश्रयनो अर्थ शुं? बापु! आपी निवालिकाणार (सोजानी) अपी वाय गया ने...! अर ते आश्रयनो (अर्थ) वरी नूह विशार दराता बता। 'दरव्यनिधित्वश' अर सोजानी-तुं। अथे अर्थी (सोजानात) सम्भारने धुं धुं। अर्थी अनुभव धुं धुं। (पडेलां) ल्यानो अटिवु के: आपानो, भौवीनो, शांतनो ने जैनसाधुमो बाढ़ो परिवह्य कर्नू, धुं धुं धुं धुं धुं धुं धुं धुं, अने पड़ी अर्थी आपा। (मे) अटिवु धुं छूँ 'प्रभु! आ रानो हँस उपन्त ताय छू ने... अपानी आ प्रभु अंदर बिनम किन छे.' (साँभरनी) अर आपानु रसो छे ने रसो छूँ ल्याना गया। विशारां मूह से यही गया। धुन धुतमा... वटदां... उदतां, राने सांज्ञी सवार सुती, बेद पातां... पातां... पातां, सवार विज्ञा पडेलां अनुभव वाह गयो। सम्भारसी अर्थी (धुं) धूरी शक्तित कृति। धूरी ताकात!

सम्भारस्यानी क्रोध विहस्तानी जल नाथी। गृहस्थाश्रमां पण ताया है। नार्दारीमा पण ताया छू ने...! नार्दारी नरकां मिथात वहां जय छू ने मिथात वहां नीको है पण्यो वमो समक्त कृत है। नार्दारी नरकां समक्त वहां क्रोध जतु नाथी। मिथात वहां (ज) जय छू ने नीको है त्यारे समक्त रखेतु नाथी। छता (ल्याना) अंदर समक्त उपन्त ताय जय छू ने। आम... छ। छू नूह प्रतिकूल संयोग! (पण) संयोजनी शुं? अनेन अकत्तपा नाथी। पोतानी
रू - प्रवचन नव-नीति: भाग-२
पर्यायमां, पोतानो परमात्मा-आत्मा अनो आत्मयु उपायेय करीने दीधो ते पर्यायमां, डीक परनी अपेक्षा नरी।
(अंद्रीया कळे छे: ) "अेवा निन्द्य परमात्मा सिवाय भीगुं डांगः"-व्यवहार, पर्याय, राग, निमित्त-"उपायेय नरी।"
आकुँ लागे! ( पड़ ) प्रभु! सत्य तो आ छे, भाऊ! मार्ग तो आ छे प्रभु! आ ( पात् ) डीक मंत्र ध्वनी वे मोटा ( हेमाद्वानी ) नरी, भाऊ! हृदयांमां हेमाव डरने के अमे विद्यान श्रीने अमे व्यागी श्रीने...! परी मार्ग तो मिथ्यान्नी मार्ग ते मार्ग छे। पढ़ें तो आ ( कार्तिकरमाला ) उपायेय ध्वन तो मिथ्यान्नी मार्ग ध्वन छे! बीज भावांने डीरीने तो मिथ्यान्नी ध्वन ध्वन छे। समाजनी उपलब्धि ध्वन छे। (अने ) अेवा उपायेयां मां उपायेय 'आत्मा ' छे।
समजू छे डांगः! पात तो जरी सुक्कू छे। अंदरिया सुधी आत्मू। धों भाई (छे ) नीवे अंदरो ज कलश छे, अश केदळे।

* * *

प्रवचन : ता. २-२-१९७८
[क्षे उत्तमि आधानी दीक पूर्ण करता दीकार सुनिराज श्री प्रभुग्रन्नवलधारीक श्लोक कड़े छे:]
(मालिनी)

जयति समयसारः सर्वत्तत्त्वाकताः
सकलविलयदूरः प्रासात्वारिमारः।
दुर्रितफलकुटारः शुद्धबोधावतारः
सुकुजलनिघिपुरः कलेशावयाशिपारः।

[श्लोकार्थः- ] सर्व तत्त्वमां जे अंक सार छे, जे समस्त नास पांमायोय्य लाहोधी दूर छे, जे कुक्ता करामने नग कर्धी छे, जे पापकृप वृङ्कने छेड़नार कुड़ो छे, जे शुद्ध शाननो अवतार छे, जे सुप्यसागरानु पूर छे अने जे क्वेशोडिनो डिनारो छे, ते समस्यासार ( शुद्ध आत्मा ) जयंति वर्ण छे। पृ.

(‘निम्नसार’). उत-आधानी दीक पूरी वष. अंदरो आ रवस। "क्षे उत्तमि आधानी दीक पूर्ण करता दीकार सुनिराज श्री प्रभुग्रन्नवलधारीक श्लोक कड़े छे।” शु ड़े छे छे? -
"सर्व तत्त्वमां जे अंक सार छे।" भगवान (आत्मा) नित्यानंत प्रभु, श्रुवस्वप्न, त्रिकाणी स्वप्न प्रत्यय छे, जे पर्यायथी दूर (छे)। पूर्ण-पाप आदिन्नी (तो) दूर छे ज. पाप अे जे संवार, निर्धार, मोक्ष आदि पर्याय; अनाथी पूरा दूर छे (अंदं) जे तत्व अंदं दूर (छे), ते सम्प्रज्ञातनो विशिष्य छे। अे सर्व तत्त्वमां-सर्व तत्व अंदे पूर्ण, पाप, आश्रय, बंध, संवार, निर्माण अने मोक्ष-अने सर्वतत्त्वमां ‘सार’ अंक त्रिकाणी वस्तु छे। जेजे,
‘निम्नसार’ मां ११-१२ आधानी

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री निम्नमार्ग श्लोक ५४ - २७
(दीधको) 'स्वप्नप्रत्यक्ष' कल्याणे श्री. निर्धारी वस्तु छ. (अेष) स्वप्नप्रत्यक्ष छ. स्वभाविक प्रत्यक्ष छ. स्वप्नप्रीति प्रत्यक्ष छ. वस्तुतत्त्वणी अपेक्षामें निर्दिष्टी वस्तु प्रत्यक्ष छ. अहः... श्री. अेष वस्तु अॅहो तत्त्वणीं - नवतत्त्वणां पर्यायमां भेक्छ अेषं - अयो निर्दिष्टी वस्तु अेष शार वस्तु छ. 

सीमामानी वाक्यको शरणे भालु साधारण लागू होि छ अेषं वहेये धीको-पादो अेको शार होि छ. अे धारीनल भिध्यं अेष तत्त्वणां अपेक्षा राख्यं छ. अेष अेष भीज भवनामार्म, पृथु-पाप, अास्क्रण-बंध, संवर-निर्धार अनेमी भीक (उप) पर्यायी भिन्न, शार तत्त्वणी अहः... श्री. अेष अेष अेष वस्तु अर्थो छ. 

अहः श्री. श्री वात्छ छ. "सवर तत्त्वणां ज अे शार छ." पर्याय-तत्त्व तो अेक्छ छ. संवर, निर्धार अनेमी भीक; पृथु, पाप, अास्क्रण (अेष बंध) -अेष अेक्छ पर्यायमां अट अेष निर्दिष्टी श्री ज छ. अहः... श्री! द्वु शवस्य शार (छ.) सर्वस्य अनांत गृहनां विकृष्ट्य सार प्रस्तु, जे श्यम अनालिन्त अंदुद्य रहेछ अेष, अेष सवर तत्त्वणां अेष शार छ. अहः... श्री! 

(अहः) मोक्षने पाप शार न द्वु अेष तो पर्याय छ. संवर-निर्धार उपाय छ (अेष) मोक्ष उपेय छ, पाप बन्ने तत्त्व पर्याय छ. तो सवर तत्त्वणां, (अर्थात्त) अेक्छ प्रकाशनी पर्यायमां तत्त्वणां, द्वु जे पर्यायी माहिमां (छाना) अंदुद्दु द्वु अेष तो पाप अाभो। 

शिखासा: आपे तो ‘समीप’ छुँ?

समाधान: द्वु अेक्छ पर्यायी माहिम छ, पाप पर्यायी भिन्न छ. अेष अपेक्षामी द्वु छ. पर्यायी माहिम तो द्वु? जे केच्छ पर्यायी तो अेष केच्छ पाप (अर्थमिर तो) द्रव्यना केच्छ भिन्न छ। अहः... श्री! अंदु भवनाम श्यमन्त्रप्रभु (छे) अेष शार छ, (ते) पर्यायी माहिमां ज छ। माहिमां बन्ना छाना पाप पर्यायी अेष द्रव्य मित्र छ। (केच्छे) पर्यायमां द्रव्य आवतन नधी अनेम पर्याय द्रव्यामां वन्तती नधी। जे पर्यायमां द्रव्य आवी जाय तो (द्रव्य) शर्दिक धर्म जाय। (अनेम) पर्याय जे द्रव्यामां वन्ती जाय तो (शास्त्र) तत्त्व पाप (शर्दिक) धर्म जाय...! अहः... श्री! जीवी वात्छ छ, प्रमु! मार्ग तो अंदु आवो। 

अंततत्त्व (कार्ण प्रभामां छे) अनेम (छवाकृत तत्त्व) बाह्य तत्त्व (छे) अरे पलेलां द्वेक्छाचं गयु छ। 'संवर-निर्धार' 'उपाय' अनेम भीक 'उपेय' -जे 'सम्बाज' मां छेले आवु छ, पाप अेष बाह्य पर्याय छ। अेष बाह्य बाह्य तत्त्व छ। पापमाने अनेम निर्दिष्टी तत्त्वमां-सवर तत्त्वणां-अंदु शार अेष तो जे जे हि द्वु अपेक्षामी आनंद शिष्ये छ। अहः... श्री! 

सवर तत्त्व शिष्य कर्मों। सवर तत्त्व छे तो चफा। वेदाणीं पेखे पर्याय ज नधी, अनेम अेक्लो सर्ववार्तक आमा ज छे-अनेम नधी। सवर तत्त्व छे! पाप अेष लोको पर्याय मानता नधी। अध्यात्मिनी वातो वेदाणत वन्ती रुहे। इ-अभिम अंदुत्त!

अहः तो द्वु छे द्: अेष पृथु, पाप, अास्क्रण, बंध पर्यायमां छे अनेम संवर, निर्धार, भीक पाप पर्यायमां छे! जे जे ('सम्बाज') नेमी गधामा अपूर्तार्थ द्वु. अनुसार्मात्र अपूर्तार्थ छे। पर्यायमात्र असत्य छे। (अहः भिध्यं नहुं छे.) त्यानी देवाचार वेदाणत रुहे। भुविष्यां नामंद्रम प्रेमी अन देयता बन्ना अेष 'हुआवार्थ' सम्बाजचारने वेदाणत ध्रामां द्वु। अहः... (पाप) अभी वात ज नधी। वेदाणत उप्य ने अ उप्य? वेदाणत तो पर्यायमे मानता नधी। निष्फायानसी

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
रत - प्रत्येक नवीनत: अव-र (चैं)। ओक ज (आत्मा-सर्व) व्यापक माने अने व्यापको निर्धारित कर्मावृत्ति धीर श्रोता?
-तेने तो माने नरी! पडेला व्यापक मानता नरीता अने पढ़ी व्यापक माना, (तो ) ते शेंमा भास्या?
-अने वानु पर्यायां (के) के कोई धुवा माणे? (शु) कटा (समथाणा) ? ज्ञान अने पर्याय न माने तो तो अने सप्त-नो ज़बर नरी!

आखा... शा! अथी (अथी) 'के' शक दीघे के-सर्व तत्त्वों जे... अंतो सर्व तत्त्वो
चे परं! आस्थाह छे, संवर छे, निर्धिर छे, मोक्ष छे। -अने छे प्रारं! पल “सर्व तत्त्वों जे अई 
सार छे.” (अभे) बे अति सिद्ध करी। पर्याय तत्त्व छे; पल अभे मार अई रिकारी, 
शायकभाव, ध्वन्यभाव, भूतविभाग, सामान्यभाव, अक्षभाव, सहसम्भाव, स्वरुप प्रतिभाभाव (छे).

आखा... शा! स्वरुप प्रतिभ प्रारं छे। अनेक अनेक नो प्रक्र नरी के (तेमा पर्यायां स्वरुप 
आवी जय) अं 'स्वरुप प्रतिभ' अंतो स्वभावानी अपेक्षाओ वस्तु अंतर प्रतिभ छे। छती 
सीज छे। अंतर छे!

'समस्यासर' गाथा-जत। ‘अव्यक्त' नाना तो व्याप्ति थर गया छे। त्या तो किबू के-
व्यक्त अने अव्यक्ततु अक्षाये शान बोझे छता पल व्यक्तने अव्यक्त अत्याव द्रम स्पर्शतु नरी.
शु कटा? करी: व्यक्त अर्थात् के पर्याय प्रारं ते व्यक्त छे। अने द्रम छे ते अव्यक्त छे। अभे कटा छे। 'अव्यक्त' के के 'व्यक्त' छे ते आव-प्रारं छे। अने अपेक्षाओ अथी (द्रमने) अव्यक्त कटा।
पल अथी तां तां (द्रम) पोते प्रारं छे। पर्याय (अभे) अव्यक्त तां तां अभे शीर द्रम बिद्यां, 
अ सम्मडानो विषय छे। त्या ते नकर धुवु के के नरी, अभे नरी। ('समस्यासर') 99भी 
गाथामा पर्यायो नकर धुवु को नया! अं कट अपेक्षाओ? - (पर्यायने) गोळ दीरो असत्यार 
धी कती। (पर्यायने) आभाव दीरो असत्यार-अभूतार नरी कती।

पल अथी तां कटे छे के: सर्व तत्त्वो छे। भले अं संवर-निर्धिर होय के पुष्प-पाप होय, 
पल अनो अंश पर्यायां छे। अनुं पल असितत छे। उत्तर जे धार छे, व्याप (जे) धार छे 
ते पर्याय छे अने अभे मां के द्रम शीर छे ते अई सार छे, अभे भतापुरु छे। आखा... शा! जे 
द्रम छे ते नो निर्धारित कर्मावृत्ति तो पर्याय प्रारं अने भुवनु वेडन (तो) धर्म नरी। वेडन तो 
पर्यायतु धार छे। तो पर्याय छे-अंशु सिद्ध कटा। समझु छटा?

आवुं तो आपणे आवी गमघु छे। सार-सारता बंधा व्याप्ति, 90प उपर गमण वाळ 
गया। अभे 'अतिःर्जुःक्ष' मां शच 20मो बोल आयो को: प्रतिभाविष्यां अर्थात् आ छे...
अ छे... आ छे, अंशु प्रतिभाविष्यां नो विषय हे निकालक्षम सामान्य, जेने अथी हे 'सार' कटे 
छे। ते द्रमने पर्याय स्पर्थती नरी। 'अ दीं इंग सु 9 प्र' अं छे अकसमांधी वीस अर्थ आढाय 
छे! जेने आपणे 14 व्याप्ति वाळ गया छे। अवां दग्धाशी।

शु कटा? के जे अंतर पर्याय छे तेना त्या (अतिःर्जुःक्षां) अव्यक्त कटे। अथी हे 
पर्यायने नाशधार कटे। पही (त्या) कटु के पर्याय छे जे जे आमा छे। शु कटा तो 
पर्यायतु धार छे। मारे ते जे आंकदनु वेंडन आयु अं कुं छे, अभे त्या पर्यायने आता कटे 
छे। अ निकाली आमा, ते वेंडनो स्पर्थती नरी। त्या तो पर्यायने जे आमा कटो! अस्थ के 
वेंडमा आंकद आवे छे ने...! तो वेंडमा आंकद आवे ते मारे तो वेंडमा आवे ते 
आमा। आंकद धुवु धुवळो आवतो नरी। धुवु-धुव वेंडमा आंकद नरी! आपणे बहुं स्पर्श 
वाळू वाळू घरू गमघु छे।
श्री नियमसार श्लोक पृष्ठ - २८

व्यक्त-अव्यक्त बनेंगे अक्खाये शान होवा छता पश्चिमे पर्याप्ते स्पर्शी, सामान्ये स्पर्शीतो नथी. जने अर्ध ‘सार’ कहु अशा... बा! त्यां कहे के अनेक-सारे पर्याप्ते स्पर्शीती नथी. वातो जीवे बहु, बापु! अदर आनंद, अतीनिव जान, अनंत शांति, अनंत स्वस्थता, घातका आहौनी पर्याप्ते जे व्यक्त छे ते ज वेदना मा आवे छे. वेदना मुख्य आवतु नथी. तथी त्यां अभं कहु के: घुपने आत्मा स्पर्शीतो नथी; अ आत्मा पर्याप्त छे.

समाज छे काँटू? काँटू अपेक्षाके कथन छे हे समज्या विना, अखांत ताले-अने न ताले, भाव!

आ तो मह परमात्मा त्रिकोणात्म सर्वज्ञापूर्वी ज प्रलु आत्मा हे! आत्... हौ! दरेको आत्मा सर्वज्ञात्मावानी प्रलु ज छे. दरेक भगवान्य स्वरूप हे.

अ पशु अर्ध व्यापारमा आगाय आपी गयु. (श्री जीवनसार सर्वत्र ‘तात्पूर्वूत’ टीका बंध अহिंस ‘समयसार’ गाथा -२००६ थी २००६. आलु-भावना.) सर्व ज्ञ सर्वत्र चन्द्रपुरी चन्द्रपुरी हूँ. अर्धी व्यापार धर्मी साम्प्रदायक त्रिकोण होते. कमंड़ा बहु जीवां, १०२ सक्रिय, व्यापार (ढ़ह गया है) बादी जीवां है, सूक्ष्म है. २० शास्त्रीही शास्त्र क्था बाचतो ते अर्धी सूक्ष्म आत्मू है. अर्धी आमा प१० लेखाना है.

त्यां ‘अलिघा’ मा अभं कहु: आत्मा सामान्य ध्रुव है. अर्धीया छँ: अल सार (छे), ते पर्याप्ते स्पर्शीते नथी. आत्मा जे सामान्य, छे ते सामान्य, पर्याप्ते स्पर्शीते नथी. पर्याप्ते वेदन पर्याप्ते मयां छे. वेदन तो अनेक परिलक्षित है. त्रिकोण वाणिज्यविधान-सार्वज्ञान जे सर्वज्ञानी विषय है अल वेदना मा आवतो नथी. वेदना मा तो सर्वज्ञान, शान, शांति आहिं धर्म पर्याप्त आवे. आत्मा सामान्ये सर्वज्ञान करतो नथी, अवो पर्याप्त शुद्धता है-अभं आ वात कडी है. आत्... हौ! समाज है काँटू? अ अर्धी कहुँ.

त्यां पशु भे वात सिद्ध करी-पर्याप्त पशु है अनेक सामान्य पशु है. आत्मा (अर्थात् पर्याप्त) सामान्ये स्पर्शीतो नथी. तेम के वेदनपुरी पर्याप्त भे आत्मा. अभं तो आत्मिय आनंद हे वेदना माहो, पर्याप्त माहो आप्ने ते हुँ?

आत्... हौ! अर्धी कहे है: ‘सर्व तत्त्वामा’ सर्व तत्त्वो तो सिद्ध कर्या. पशु ‘अल सार’ -त्रिकोण वस्तु अल सार है छे, त्यां हरि पवारी आप्ना आमानी प्रतीति अनुभवमान थाय है.

आत्... हौ! आ तो बुढ़ पेटवा समन्वितनाथी वात छे. आत्मी मोही, आवी मोही रीज मोहूँ है! छे तो सत. तो सत है (ते) तर्क, सुसंदर, सर्वत्र जया ध्वनि त्या सर्वत्र (छे). (तो) ध्वनि तो सर्वत्र मोहूँ है ने...? (छे), पशु अ तर्क वक्तनो ज्ञान अन्ततकामां धार्मिक धार्मिक धार्मिक (मुनु हर्ष) संग्रहां मा, पंच महात्म विधान, २८ मूँ ज्ञान पावना, नन्द हिंदूर (मुनि हर्ष) संग्रहां मा, पशु पशु आत्मा हूँ रीज है अर्धी धार्मिक (आमादान) न धरी; अ लिणा, वात प्रति ते प्रति विरस्थ कर्या. विरस्थ अवतरण है आत्मस्वरूप. (अर्धी) सर्वत्र तत्त्र सिद्ध कर्या. सर्वत्र तत्त्रो नथी, अभं नथी. शून्य है, अभं नथी. वेदांती ने पेट पर्याप्त शून्य है अभं ने पर्याप्त छे ज नथी, अभं नथी. समजाँ है काँटू?

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com


Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री निमन्दासर श्लोक पह - 31
आपु हुँ (अथवा मान्यता बोध) तो ते मिथ्यात् छें। द्वारा के अशाभ आत्मानि छें ज नभै। पण्ड अशाभ भैरवी शीर्ष नभै, अथें मावी तीर्थ मम्भा बौं तेनां मम्भा मंद कर्दी द्वारां लाभ-धे लाभ आपु हुँ (अथा) ते परिक्षण पण्ड शुभ (भव) छें, पुरुष छें, आश्रय छें, तेज छें, नाथ पात्रवा योग् छें। शुल्लानने तेज कहु (ने...) भगवान (आत्मा) तो अद्व अमृतस्वरुप । अथ (अथ) अन्तःद्राम आधारा नाथ आत्मा राग तो तेज छें। अथें (आत्मा) स्वाभाविक (राग) विषयीत् छें। आहा... छ! (अरोधः) मही मेंज लागें छें? (उत्तरः) तेज मींडु नभै; अथो अथानी मानें छें। बृही तेज छें अथें मीठक द्वारा आविष्ट छें अथवी वात छें, भाव! नातोभमां (समर्पणां) 'कल्याण ठीक' श्लोक-चरण वांवं छें नेः... अथें आर बोल कहें: “प्रस्थां अर्जने निर्धक्षमता वस्तु (निर्दिष्टी व्रय. जेने अधीनां ‘सार’ कीहो तेः) स्वस्थत्र अर्जने आधारामत वस्तुनान प्रेत्या। स्वस्था अर्जने वस्तुमात्रानी भूत अवस्था। स्वस्था अर्जने वस्तुनी भूतानी संक्षबंधित। प्रस्थां अर्जने निर्धक्ष बेक-कल्पना। प्रक्षेत्र अर्जने जे वस्तुनी आधारपूर्त प्रेत्या निर्धक्ष वस्तुमात्रानुष्ठो बोलो बोलो ते ज प्रेत्या सदिष्ट बेक-कल्पनानि प्रक्षेत्रो बुद्धिसंक्षिप्तरूपे कर्देयायः छें। प्रक्षेत्र अर्जने द्रव्यनी भूतानी निर्धक्ष अवस्था ते ज आभ्यस्तानि-बुद्धिसंक्षिप्तरूपे प्रक्षेत्रो बुद्धिसंक्षिप्तरूपे कर्देयायः छें। प्रेत्या अर्जने द्रव्यनी सङ्क्ष शक्तिति पर्यावरण अनेक अंश द्वारा बेक-कल्पना, तेनेपर्यावरण कर्देयायः। आहा... छ! प्रस्थां तो प्रस्थां छें; पण्ड पोतानी अंकुप शीखीं भेककल्पना कर्दीं तेः (मैंधः) प्रस्थां छें! अथवी प्रस्थां अर्जने शरीर, वाणी, मन, भर्ती अथवी अनेक अंश वेक-कल्पना, अथवी तो ‘सदिष्ट बेककल्पना’ अथ प्रस्थां (दीवाँ हें)। अथवें जे ‘सार’ (तत्त्व छें) अथें भेककल्पना कर्दीं अंकुप छें... आ छें, अथें विकल्प ते प्रस्थां छें।

जितासारः प्रस्थां कें? छ? अथवें विकल्प उच्चारी ते प्रस्थां छें। अथवें वात छें बाुख! जीवी वात छें, भाव! जितासारः छ द्रव्यमानी सातमुं द्रव्य छ? अथवानां: (भेककल्पना-विकल्प, अथ) पोतानुं स्वस्थ नभै। अथ (तो) निर्धक्षप्रवृत्त छें, अथें विकल्प उच्छारी ते प्रस्थां छें। अथवी वात छें बाुख! जीवी वात छें, भाव।

जितासारः सातमुं करोग? अथवें विकल्प उच्छारी ते प्रस्थां छें। अथवी वात छें बाुख! जीवी वात छें, भाव।

सामायनां: सातमुं करोग? अथवें विकल्प उच्छारी ते प्रस्थां छें। अथवी वात छें बाुख! जीवी वात छें, भाव।

सामायनां: सातमुं करोग? अथवें विकल्प उच्छारी ते प्रस्थां छें। अथवी वात छें बाुख! जीवी वात छें, भाव।

प्रस्थां कें? अथवें विकल्प उच्छारी ते प्रस्थां छें। अथवी वात छें बाुख! जीवी वात छें, भाव।

प्रस्थां कें? अथवें विकल्प उच्छारी ते प्रस्थां छें। अथवी वात छें बाुख! जीवी वात छें, भाव।

प्रस्थां कें? अथवें विकल्प उच्छारी ते प्रस्थां छें। अथवी वात छें बाुख! जीवी वात छें, भाव।

प्रस्थां कें? अथवें विकल्प उच्छारी ते प्रस्थां छें। अथवी वात छें बाुख! जीवी वात छें, भाव।

प्रस्थां कें? अथवें विकल्प उच्छारी ते प्रस्थां छें। अथवी वात छें बाुख! जीवी वात छें, भाव।
उर – प्रवचन नव-नीति: भाग-2
परमार्थना भाव ‘परमार्थ’। (गीता) राजकी ‘परमार्थ’ अनेक (गीता) निर्देशन वायुक अन्तर शक्तिना अंकोपर्यंत भावना करती है “परमार्थ” ना आया तथा प्रारंभ करे च. आक... या! परमार्थना भाव तो परमार्थना है ज ‘परमार्थ’. राजकी भाव वायु छ ए माहा ‘परमार्थ’. (गीता) “परमार्थ” अनेक तो निर्देशन शक्तिना अंकोपर्यंत अभिन हवामान; अनेक बेव-विकल्प विचारों, अनें ‘परमार्थ’ (करे है)!
आचा... या! अनें तो सिद्ध करूँ-सूँ? के: ‘समस्त नाश पामवा योज्य’ –जोय? अंत योज्य तो नाश पामवा योज्य. परमार्थ-आपको आपत है, ते आ! ‘समस्त नाश पामवा योज्य भाव’... भाव तो, अनें भाव तो दो; पाव अं नाश पामवा योज्य भाव (छ, अनें) भगवानभामा हुर छै. पथ्यियां द्वै आदायुं ज नति. आचा... या! परमार्थे हुर छै हुर!
अनेस्म्य द्रष्टां केन्त्रां परमार्थस्य उपपत्त भाव छै अंकस्त्रेत भाव; अनें आ वाणुः लेख अनेंैः हुर छै. पर्यायिन्स्त्रेत पाक्य द्वन्त लेखर्यिन्स्त्रेत भिन्न छै! आचा... या! जीवी वात छै! पर्यायिन्स्त्रेत ज्ञान-परमार्थ, अं स्वयंवर्यिन्स्त्रेत भिन्न छै! पर्यायिन्स्त्रेत भाव ज द्वैर्यावभावे पर-भिन्न छै अनें द्वैर्यावभावे अनें(पर्यायिन्स्त्रेत) भिन्न छै!
आवी वात छै! आ तो मृण जीव छै, प्रबु! ‘घर्म’ आ! आ ‘घर्म’ अंत भाव छै ए: निर्देशन द्वैर्यावभावे (जे) सार छै अनें हृदय कर तो सम्बन्धर्य भाव छै. भक्ति भवान्त शोभी-शोभा छै. मार्त ‘आ’ छै! “अंक वेष नल धार्मिमा, परमार्थस्त्रेत शंक” (‘आमोन्दिन’ आया-उद). परमार्थस्त्रेत शंक तो ‘आ’ अंक ज छै. आपवर्य तो ब्रह्म नति पाव आहमाभावे पाक्य निर्मय बाथ सति. बस्ते छै छाँ?
जिज्ञासा: आपे द्वैर्य पर्यायिने भिन्न करी तो पर्याय नाश (यथ) पामीने गा ज्ञान?
समाधान: क्या भाव? अंदर गह! आ तो परिणाम डुङ्कु छे. आ वात बड़ी बाप आवी गा छे. जता शातिरी सांभिणेजे जे पर्याय रहनी छे (ततो) वय बढ़ गयो, तो अं पर्याय गा ज्ञानया? राग तो अंदर द्रव्यमा जतो नति, पाक्य अनें योज्यता द्रव्यमा जम छै, तो अनें पारिभाषिकमाइ बाध्य! अथवा अनें अंकर्यता ज्ञानो. सम्बन्धर्य अंक सम्पनी पर्याय छे. (अंक) नाश तथा योज्य छे नें...! तो अं पर्याय वय धरने गा ज्ञानया? –अंकर्मया (जद). पाक्य अंक सम्बन्धर्य-नल पर्यायया (जे) उपषामध्य, स्वयंपर्षामध्य द्वारा विभिन्न ततो, पाक्य (ते) ज्ञान अंकर्मया गा त्या (ते) पारिभाषिकमाइ बाध्य गयो!
आचा... या! जीवी वात छै, प्रबु! मार्ग शुं छें (ते अंकी) कड़ीने (छीने). आ तो जिज्ञासार्तको मार्ग छे! अंको (छीने) वधाय नति. क्वा तो पेक्षा भार्यता र मानता नति! भक्ति वात-आ... करो... ने... आ... करो... ने... आ... करो... सांभिणेजे भणे. प्रबु! मार्ग तो (आ छे). जन्म-मरणाभिन्न-मथविकारने नति तो ‘आ’ छे.
जिज्ञासा: आपूं सांभिणीने पाणी वत-अथ करा कोजा ज्ञान?
समाधान: प्रत-अथ करा कोजा! भूमिकाने योज्य अंत विकल्प आवे छे; पाक्य अं पर छे, बढ़ छे. विकल्प आवे छे पाक्य छे दुहा, देह, पश. पूर्ण वीरराज न भाव त्या वृक्षी वयावर
श्री नियमसार श्लोक ५४ - ३३
आवे छे; पण अं शान छै, हुजूम छै, केह छै. वात तो आवे छे! (प्रश्) तो पहिली देम आवे छे? (उत्तर:) कृतज्ञी छै तो आवे छे. पण अं उपाध्य नरी. आदर्शीय नरी. ते ते (आणणा) कली गरा ने...! “निज परमात्मा सिवाय बीजुं कांड (उपाध्य नरी.)” (राज) आवे छे पण उपाध्य नरी. (उपाध्य) नरी तेने उपाध्य कें देने?
प्रश्: व्यवहार तो आवे छे ने?
उत्तर: व्यवहार न शेष तो दीर्घतांग वह जन! मिथ्याभिनवने पर्यायमां अनन्त हुँ छे, सुप्तनो अंश नरी. कृच्छर्यानीने अनन्त सुन्न छे, हुजूमनो अंश नरी. (पण) साधकने आनंदनो अंश पण छे अने हुजूमनो पण अंश छे. -बेहेच छे. नरीतर (पूर्ण वीरतांग वह जन.). (पण) पूर्ण तो नरी. पूर्णांकत नरी. शोनु दुग्ध छै. रागाणि आवे छे (तत्त्व) हुजूम छे. पण (साधक) अने केह जाले छे. समझानु? वाग्वानने पूर्ण अनन्त छे. मिथ्याभिनवने पूर्ण हुँ छे. साधक-समयर्थिने पूर्ण अनन्त आवो नरी. अपूर्ण आनंदनें वेदन छे. जय पूर्ण नरी त्यां थोरे राग आवे, हुजूम पण आवे. तो छे तो पुरु, पण अं केह तरीके छे, उपाध्य तरीके नरी. अं तो कहुं ने...! “बीजुं कांड (उपाध्य नरी.)” तो बीज शीर्ष छे तो जनी. नरी अं के छे नरी... जरेसंग तुश (जेनेने) स्वाध्यनो अनुशासन थो, समयर्थिन (थुम्युं) अने, जे राग आवे छे तेने व्यवहार कदेवां आवे छे. जे प्रियर द्रोष तो व्यवहार कदेवां आवे छे. प्रियर समयर्थन न शेष त्यां व्यवहारभानसे व्यवहार कदेवो, अं कल्याणतां छे. वस्तु छे ज नरी. व्यवहारना अर्थ छे ज नरी.

बाहेर शेष कहीं ते व्यवहार जे शुभरता छे ते आवींद्रो छे. कारण ते, राग गोपाने जानतो नरी अं आयकने जानतो नरी. ते करोडी वाग्वानने अने आंध्रो अने जह दुबो अने बगवान (अलाम) जानतो अने वीरतय (दुबो), अं बे वस्तु विनत्र छे. अं कहीं बतावतुं छे. नरीतर अं वस्तुः शेष विधि नरी.

‘आसमिसाता’ न्यायना अथंमां अं कहुं: धर्मिः अने धर्म-ने विन्न गल्ल्यां छे. धर्मिः अने धर्म-ने विन्न छे. अं अं कहुं नरी. अं केह तो (अंवा) अं नाम पुरे नरी. अं वाणि न शेष (तो) अं बाणि न शेष. पही व्यवहारी कदेवां आवे छे डे-आ धर्मिः अं आ धर्मिः अं धर्मिः. पण अं केह विन्यास विन्न स्तत् छे. आहा... डे! अं तो बगवानना शार्त छे, प्रत्यु! (अंवो) पार नरी. अं केह शाषना अंतां आगमना रक्षम भर्यां छे डे पार नरी. अं तो संतो पुरु डे गाणे हुजूम पुरु डे डे. आहा... डे! पार नरी, अंची वात छे! संतो अंतबे साखा वात बो! भावांभंगी वेश अं.

अंचीं अंत हुं के के: “जे समस्त नाश पामा योर्ज भावांभी हुए छे.” डे दुर छे अंतबे के पर्यायमां द्वय आवे उत्तर नरी. पर्यायिकः द्वय विन्न रहे छे. डे दुर नरी अर्थ अं आहा! अं तो ‘समयसार’ संवर्त आविकामां दौसी छे ने...! पुषु-पापना भाव छे अं परवस्तु छे, परंतु अने परवाम्य छे. अंचीं परवस्ते छे. जेतामां विष्णुखालवस्ता उपपत्त थापे छे, अं परवस्तु छे तो असंभिकमः पण अं असंभिकः प्रेस्मां जेतामा-छेका अं असंभिकः विद्वृत्त के अविद्वृत्त-निरविद्वृत्ती अवस्था उपपत्त थापे छे-अं बेसुं केण्य विन्न छे. आहा... डे! समजाव छे जांचिः?

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
उ 4 - प्रवचन नवनीत: भाग-२
‘तिमिलिप’ मात्र दीपंकरजे लिखि। चक-चकूलिपित क्षेत्र प्रमुख है। पर्यावरणो क्षेत्र अने क्षेत्र स्वाभाविक है। अने द्वयनू विक्षेत्र प्रमुख है। पर्यावरण स्वाभाविक (व) प्रमुख है।

अखिलवते तो रखे रखे के पढ़ाने (भाव) नाश पामपि योग्य है। अनाथी वस्तु दूर है। (कई, कई रखे) “जेथे दुर्गार्थ अमने नर दर्पण है।” काम अफमा छ ज नदी। अफ रखे रखे के “जेथे दुर्गार्थ” (अवृत्त) के निवारी नदी शके, दाढ नदी शके अनेक (दुर्गार्थ) विधयवासू (उ) विधुद्धाय; (अ) “अमने नर दर्पण है।” (अवृत्त) अमा (वस्तुमा) छ ज नदी। अनेक आव्यय करे रखे के (काम) नाश चपार छे, तो अनेक नाश दर्पण अम क्वेयामा आवे छे। समाजानु चाओ? नीजा (चोलना) विषय विष्टार छे।

(विशेष दंडेय..)

* * *

प्रवचन: तारा. 3-२-१८७८

(‘निम्नसार’ श्लोक-पृ.४). थोिी रही। आ शून्याम आधार छे। शून्याम (अनेके) त्रिकीय ध्वयवसू, जे त्रिकीय अनेक रेखेवायो, अतिहासिक अनेक पिड़, अने अखिलवते शून्याम क्वेयामा आवे छे। आ शून्याम, “नई सर्व तत्त्वोंशे एक सार है।” राहे तो सब्ये, निजीये, मेहक शेय व पुष्प-पापि परिशेय शेय, अमा ‘सार’ आ धी पछि प्रमुख अभिर्दस्तयों विषय अनेके के भेय (अ) ‘सार’ (छ) सम्मर्षन अल पर्याय है, अल तत्त्व है पछि अने तत्त्वानु सारत्व तो त्रिकीय-ध्वया है! आवा.. छे।

(श्रोता:) समाजानु नदी। (उतर:) समाजानु नदी? दर्शने सच्च दर्शी: वस्तुमा पवयि अने धर्म-भने प्रकार छे। पर्वता सब्यानी काँटे लेखेदिया नदी। अ भवनी एक सब्यानी पवयिमा जे भेय पदे छे-एक सब्यानो पुष्प-पापि भाव. एक सब्यानो आव्य, सब्यान, निजीये अने मोक्ष-अने भवनो पवयि तत्त्व छे। (अ) भवनो तत्त्वों मा ‘सार’ एक धी पछि प्रमुख छे। ज्ञान दृष्टि कर्वायी सम्मर्षन भाव है। अने मुक्ततु प्रमुख शाद छे गये।

श्रीलिंग राजा। (अनेके) शालिन नबूदू। प्रतिहार नबोदा। पछि धनंजय तमसिद प्रजय बय।! पढेका ती समक्षि कदु पछि पछि धायिक तो भगवानना सब्यीमा पोतानी योजयताथी उत्पन पछि अने तीर्थकर्त्ताओ बांधू। (समक्षि) पढेका (सत्मी) नरकवू आयू धंथाय गसे कदु। ते घडी गये। आयुष्य बय छूटु नदी। जैम लाखदाती भी दाढु झाडी अनी नदी पूरी भनी शके नदी, तेम आयुष्य धंथाय गसे शेय (तो) ते क्यो तरती नदी, पछि ध्येयिमा तेर पदे। ते नरकवू आयू तो धंथाय गसे कदु। ते पछि समक्षि प्राम कदु।! आ आमा आनंदक धुप बय।! अल छे। -अेिे अनुमय, (अनेकी) प्रतिहार आनंदना अनुमयनी साथे, अनुमृतनी साथे सम्मर्षनमा धर। पछि धिकिल आवो ती तीर्थकर्त्ताओ धंथाय गसे। अन्तारे नरकवू छे। आयुष्यनी स्थिति वटी गद। (भाष योपली दुशा वर्णनी स्थिति रही गद.) पढेका दह आवो धंथाय कदु। पछि आत्मान्त धंथ, (समक्षि) धर्म धंथु। तो अम भान धंथु रे: अन्तारकमा अन्तारवर पंथमंत्रत पवयां छां आत्मान्त भिना लेश सुभ न पायो। “मुनिप्रत धार अनंत
श्री नियमसार स्थळ पृष्ठ - उप भार श्रीवक उपजीवि। अंद तो आभार विनाशा अक्षयो विकासः छेद, शुभरागः छेद; अं दो अन्धकार नही अन्तवाचः द्विः छ। अं दो दरिणे तो पावी अन्त पुष्पावार्त्तनस्वरूपः अने नरकः भूः हृद। अंदः व्र! नरकी गति तो न बक्ष्यात वः इसे स्थिति धारी गः। नरखे तो गः, पाव आजाधी राजः पद्धेन तीर्थाकर यशे। अंदः व्र!।
अं दो अर्थे कहे है। अं दो सारः। अंजनो हर्वः। अं दो निम्नाभिधेये ते सारः। "अं समस्त नाश पाम्याभृत्य व्यापृत्यृ दूरः हृद।" — आ प्रयोगः द्वृत्य दूरः हृद। हृदनां अर्थः प्रायःमां ध्रुव आवः नाश। ध्रुवान प्रयोगः स्वर्णः नाश अने प्रायःमां ध्रुव स्वर्णः नाश। — अं अपेक्षादी प्रयोगः द्वृत्य दूरः हृद। अं दो देवामां आवः हृद। अंदः व्र! प्रयोगः, मोक्षान पारः। अं प्रयोगः, दन्ते पृथ्वी करती नाश।

'सम्यक्षार' गाथा-४८ (‘अव्यक्त ना’) च बोधमां अं दो आवः हृद। ध्रुवान प्रयोगः स्वर्णः नाश अने प्रायःमां ध्रुव स्वर्णः नाश। (अने) गाथा-१७२, ‘आङ्गितायार’ च पाव आजाधी हृद। क्रमः बभः सारः। सारः श्वाप्यावः वहः गः।
अं दो अर्थे कहे है। "अं समस्त नाश पाम्याभृत्य व्यापृत्यृ दूरः हृद।" अं दो आवः हृद। प्रायःमां ध्रुव आवः हृद। आवः हृद। अं दो आवः हृद। अं दो आवः हृद। अं दो आवः हृद। अं दो आवः हृद। अं दो आवः हृद। अं दो आवः हृद। अं दो आवः हृद। अं दो आवः हृद। अं दो आवः हृद। अं दो आवः हृद। अं दो आवः हृद। अं दो आवः हृद। अं दो आवः हृद। अं दो आवः हृद। अं दो आवः हृद। अं दो आवः हृद। अं दो आवः हृद। अं दो आवः हृद। अं दो आवः हृद। अं दो आवः हृद। अं दो आवः हृद। अं दो आवः हृद।
ढ़ - प्रवचन नव-नीति: भाग-2
पूजना (भाव) करतो आयो छ। अनालिङ्क क्यू? के-अेवा भाव तो अन्तत्वार कर्य। अन्तत्वार नवमी श्रेयेक गयो, तो अन्तत्वार क्यू, केह नवी जीव नरी!

बिंदू रूटे केहांतो के निगोदमां-वेचन्द्रयांपं शुभमाव धात्य छ। निगोदनो ज्व छ, क्यारेय नीक्यां नरी, तस धौथ नरी, अेवा निगोदवव अन्तत्व पुरवा छ। अेने पप्पा त्रज्ञां शुभ ने त्रज्ञांहू अशुल्क धाम काम राज्य छ। –यू कहूँ? के अेवे कर्नक छे ते निगोदमां पप्पा शुभमाव पप्पी अशुभमाव, पप्पी शुभमाव... अेम, अनालिङ्क राज्य छ। (तेम ज) अन्तत्वार शूक्लोलेश्या (पुर्वक) नवमी श्रेयेक गयो। शूक्लोलेश्या... दो! शुक्लोलेश्या छह। शूक्लोलेश्या-विन्नावो राजनो भाव, तो अभिनवे पप्पा कोय छ। मिठार्डिनेप पप्पा कोय छ। अे तो अन्तत्वार मुलिकत धार नवमी श्रेयेक गयो। (अेने) तो ल्यां ('समयसार,' गाथा-२१उमा) अनालिङ्क क्यू। अे तो अनालिङ्क छे, अवाकर्मवृत्त छे। दार्श के (अेम) अवाकर्मवाला (छे) अेने आमानुभव-सम्बिन्दजून नरी। ल्यां अवाकर्मने मूढ़ क्यू। दार्श के, अवाकर्मने अज्ञावासणी ज्यो नरी, अे तो मूढ़ छ। आयी वात्य छ। आकारी पाइ, पप्पा शुष्क धात्य? शुभमाव तो अनालिङ्क-अनालिङ्क धात्यो आये छ। नवमी श्रेयेक गयो तो पप्पा शुभमाव। निगोदमां गयो। ल्यां पप्पा शुभमाव। अेम अन्तत्वार (शुभमाव) क्या। अेमा नवी जीव शुष्क छे? अज्ञानी-अनालिङ्क, अवाकर्मवृत्त क्यू। दार्श के आमा ज्ञात धात्य नरी अनन्य अनुभव धात्य नरी। राजनी-पञ्चमावतालानीढिया जेटीव पाये छे ते धान्ये मूढ़ क्यू।

धामने नह धर्य छे अर्थांते ते पवस्तुमा नरी। अनालिङ्कनो अवाकर्म अे (पप्पा) अेमा नरी। संस्कृतमां (टिकमां) नज़ शब्दे छे: तेजनासिद्धववहारमूज़ा: प्रोहविवेक निश्चयमनारुहा: प्रोह विश्वकाल निघाय (निघायन) पर (ल्यां) अनालिङ्क छ। प्रोह विश्वकाल (अर्थां) विश्वधरी (रागती सातने) निग्न द्रूपुं। मंड़ा वेद्विज्ञान। अतिशय रागती वेद्विज्ञान द्रूपुं। अेवा प्रोह विश्वकाल निघाय (निघायन) पर (ज) अनालिङ्क छ; (ते) राजमां आउँ छै, अनालिङ्क छे, अवाकर्मवृत्त छे (अेमे) निश्चयमा अनालिङ्क छे। संजय छे पाइ? 

अर्थांमा के छे: "जेने दुर्बल धामने नज़ धर्य छे" अेने अर्थ अे के: अेमा (पवस्तुमा धाम) छे ज नरी। अर्थौं तो निकादीने बतावी छे। (अे) धामने नाश कश्यावाणी क्या छे? पप्पा अेना अवाकर्मनथी क्यामो नाश धात्य छे (तेमी) अेमा त्वालिना आये छे के: निकादीवस्तु धामादा नाश कश्यावाणी छे।

(देव, के छे: ) "जे पापनुव पृथ्वी चेन्नार क्षयूरो क्षयूरो।" 'कुड़ार: ' (अेटवे कुड़ारे।) पप्पा शहदमा पृथ्वी-पप्पा भेष छे। पृथ्वी-पत्र, धन, त्रज्ञान परिशिष्ठ; पप्प-दिष्टा, जुत (आदिस्त परिशिष्ठ); अे भेष पप्पा छे।

‘योगसार’ (–गाथा: जामां) योगी-द्वेवे (कहूँ छ ने...!) "पापमुद्ये पप्पा तो जावेज जग सघ्न केह; पृथ्वतन्त पप्प धात्य, केह अनुसत्य बुढ़ जेकै।" पप्पाने तो सो पप्प केह; पप्प अनुसत्य मजी, सम्यक्ति खन तो पुस्तने (पप्पा) पप्प केह (छे)। अे आये आवी मग्नु- "आप" के छे। पृथ्वी अनेप पप्प-भेष अव छे, पप्प छे। आखा... दूर! आकारी पाइ पुष्कर। शुरु केहे?

सम्यक्ति खन जीव केह अेवी छ पृथ्वी अनेप पप्प जेमा नरी अेवी जीव (भावनाव-
श्री नियमसर क्लोक ५४ - ३७ 
आत्मा) नो, अंतुल रत्न कर्णे ए अथवा पुज्य-पाप (अथ) पूजनें छठ्यालिंगथां। निर्धारिणां अवलंबनसारी पुज्य अनें पापान्तुं छठ्यालिंगः। अंतुल रत्नरत्न कर्णे जात् कर्णे।
आत्मा... वा! समर्पणं कर्णे

तनं अनं कर्णे: पापानें छठ्यालिंगथां अनें पूजनें रामचारिणां अनं (ता, अनं नद्यः)। पापानं पुज्य-पाप अभो आत्मा ज्ञात्। ‘अभ’ कर्णे नै...! पुज्य-पाप अभो अद्व-पाप कर्णे।
आत्मा... वा! पोतातुं स्वप्न पुज्य विन्दुत्वं विन्दुनारेण, अद्व-पापानें विन्दुत्वां। पुज्यनं अनादित्वं ज्ञात् ज्ञात्। शुद्यनं असम्यं प्रक्षां। अशुद्यनं असम्यं प्रक्षां। अनं पेशाक्रेन रत्ननम् कर्णे अनं अनं प्रक्षां।
सत्तुतं अनं नात्तिक्रियां भीत्र (पुज्य-पापं) ए ज नत्ती। नात्तिक्रिया (प्रबोधक) तो पर्याप्तं कर्णे योग्य ज्ञात्। पाप अनं (सत्तुतं) अवलंबनसारी नात्तिक्रियां। तो अंतुल रत्न कर्णे कर्णे: निर्धारिणां भीत्र पुज्य-पाप नात्तिक्रियां ज्ञात्। आत्मा... वा! समर्पणं कर्णे

अं तीर्थं तथा नै...! ‘अनुमुखप्रकाश’ कर्णे, ‘विशिष्टविलास’ कर्णे, अनं ‘अनुमुखप्रकाश’ बनात्मं च पापानें अद्व-पापानें ज्ञात्। अनम्बं तत्त्वां बदलं च पापानें अद्व-पापानें ज्ञात्। अद्व-पापानें ज्ञात्। अनं तत्त्वां बदलं च पापानें अद्व-पापानें ज्ञात्। अद्व-पापानें ज्ञात्। अनं तत्त्वां बदलं च पापानें अद्व-पापानें ज्ञात्। अद्व-पापानें ज्ञात्। अद्व-पापानें ज्ञात्। अद्व-पापानें ज्ञात्। अद्व-पापानें ज्ञात्। अद्व-पापानें ज्ञात्। अद्व-पापानें ज्ञात्। अद्व-पापानें ज्ञात्। अद्व-पापानें ज्ञात्। अद्व-पापानें ज्ञात्। अद्व-पापानें ज्ञात्। अद्व-पापानें ज्ञात्।
उ - प्रवचन नव-नीति: भाग-2

इति निश्चयन्यापेक्षाया पापम्।” - द्वारा, धर्म, प्रति, भक्ति आदिनां परिष्कारम् निश्चयन्यात्मी पाप

छ. क्रि अथवा यह रहे? अर्थः तो भाव आकलम् शेषः।

अद्वैतां देखि: अष्टु पूर्ण अने पाप गोपय- (उप) वृक्षने आत्मा छठवायणो छे

अथवा अभान्मा (आत्मानं) तस्य। माते पूर्ण-पापना वृक्षने छठवायणो कलो अने अनेको आश्रय लेवायी पूर्ण-पापना छे धारि है माते छठवायणो कलो।

(हंगे हंगे छे: ) “जे शुद्ध शाननो अवतारे हे” आशा... खा! अग्रां (आत्मा) तो शुद्ध शानसङ्गी छे। अवतार (अंतवे) जन्म दे छे ने! तो अवतार दीवी। आ शुद्ध शान अवतार जे छे। निर्देशी शुद्धशान अवतारी जन्म है। अग्रां नवो उपत्त धारि है, अभान नवि। शुद्ध शान अवतार-निघाणी विश्व में शुद्ध शाननो जजन छे। शुद्ध शाननी। अभान उपवति (अर्थांत, दिनमानता) छे। उपवति पर्यायवर धारि है, अभान। (पाल) अने शुद्ध शान अनाश्चिदि जे छे। अने अद्वैत सम्मश्रजनी विश्व क्रीणे छीणे।

आशा... खा! “जे शुद्ध शाननो अवतार हे।” शुद्ध शान अवतारो अर्थः: शुद्ध शानसङ्गी छे। अग्रां तो निघाणी शुद्धसङ्गी छे। बजगान! पर्यायवर दूर छे। खड़ुने ने? संविकार-निघाणी पर्यायवर पड़ हूँ छे। अन्य शुद्ध सङ्गी छे। पूर्ण-पापना विकल्पवनी-राजकी (भिन्न छे)। व्रत-तपसना विकल्प शेष के उपासक कुड़ ने आ कुड़ ने ते कुड़-ओ अवा विकल्प छे; (अने) विकल्प, सबूत्तमा तो नाथी। गुण-गुणीनो भेद लक्ष्मा लेवो, अे पड़ अंक विकल्प छे, रा छे; अने राजकी लिन्त्रा, शुद्ध शाननो अवतार छे। शुद्ध शानसङ्गी निघाणी छे। आशा... खा! “जे शुद्ध शाननो अवतार हे।”

अनौषधार्य वाह दे छे। शान अने सुन। (तो कहे छे: ) “जे सुभसागरनु पूर छे” आशा... खा! सुन-सागरनी वर्ती छे। भरती बे क्राके छे-सम्मश्रजन-शान धार्मिक पर्यायवर सुन-सागरनी भरती आवे छे। पड़ अने वस्तु ज सुभसागरनु पूर छे; अन्तर सुभसागरनी भरती आवी छे। आशा... खा!

भाक! प्रभुनी मार्ग (आ छे)। अधरी तो भवना छेदनी वाह छे। जेतेमाधि बव बने अने अनन्तवार मूँनु अने अनन्तवार कूर्यू, अं कृती वीणा नाथी। आशा... खा! सामजागु शाक्र?

शु खड़ुने? पढ़ेवा शान दीवी पड़ी सुन दीवी। बेवी मुन्य दीवी है। “जे सुभसागरनु पूर छे” हरीयाणे कोडे जे भरती आवे छे, ते तो पर्याय छे। पड़ अधरी तो कहे के के “जे सुभसागरनु पूर छे”-अन्तर सुभसागरनी भरती पड़ी छे। आशा... खा!

शुभमानो अविवर्त आथे छे ने...! शुभमान (अर्थांत) धूप, निघाण। जे सम्मश्रजनो विश्व (छे)। कहे के के (अने) तो सुभसागरनु पूर छे। अतीतिय आनंदिनो पुंज छे, प्रभु! आशा... खा! अने हरियाणे हरियाणी उच्चरी वाह छाल न जूम तो (ते) साकरनी भीश्यानो पिंड छे। अने अद्वैत पर्यायने न जूमो तो वस्तु छे अभान तो अतीतिय सुभसागरनी भरती छे। (अभान) अतीतिय आनंद-सुभसागर पड़ो छे। ते शुभमान छे। धूपमान छे। नित्यभाव छे। सामाप्त्यभाव छे। अन्तरक्ताम छे। आशा... खा!

अने समयमानो अनुभव वाता आया संसारो अंत आवी जय हे, भापुः! अने सम्मश्रजन
श्री नियमसार श्लोक ५४ - ३८
शुँ श्रीज छे? अं देमन उपात्रा थाय छे? अं मलित थाय छे तो देवी दहा अंदेर थाय छे? तेनी
तो ज्ञान य नभी अंने बल्लवाती (श्रूक्षियावो) करे. अनभिकी करे छे. अंने नवमी श्रेयसह
जाय अंवा शुभलाव तो अतिरेि तो नभी. त्यां तो ज्ञातयमान, रट भूष अंवा
पापा दे अत्रेज उत्तरीने ख्याँ ठांगे तो नभी कध न करे. अंवा शुभ भाव कधो. शुेल देखा
क्ती. अंवी शुेल देखा तो अतिरेि थाय ती. आझां... छा! अं देश शुेल देखा अंने शुभतानो
शार ठिक छिमेत ती. आझां... छा! अंभीती शीर्षी ठिक (अनन्यख्याती छे)!
(‘सम्यसार ’ गाहा-उर्मा छे ने...!) “रणसाहायिन्य मुणदी आद” भागानी
आमां, रज अंने तर्मान पर्यावरणी नभी जिन्हे, शुष्मातांि थुँ छे, जाननो गंध (छे); अंने
अंवी शुभतानो, निश्चय आमां, भरेमर आमां ठेवावमा आवो छे. आझां... छा! “जे
शुष्मातांि थुँ छे”.
(ढळे, ढळे छे कः:) “अंने जे क्लेशोेविनो किनारे छे.” [ क्लेश (अर्धट) दुग्, उद्धि
(अर्धट) सागर ] हुंआपुि सागरो त्यां किनारे छे. क्लेशनी (त्यां) गंध नभी. राजगी,
क्लेशनी त्यां गंधे य नभी. तभ अंने ब्यवना ब्यावची अंमा गंध (पल) नभी. तमजम छे
शांछ?
(‘सम्यसार ’) निर्जवी आधिकार क्षत्र-१४सात अंमूत्ववाचाय शुक्ल छे: शुभ भाव करे
तो थरे अं क्लेश छे, रज छे, दुग् छे. [“विलयांतां च परे महापनतिमारण ममाकारिम”]
(अंवी ढळे छे:) क्लेशोविक-क्लेशपुि सागर; अंनो किनारे छे, अंत छे. जेमा अं छे ज
नभी. अंनवा जेना आधिकार्की क्लेशपुि सागरो अंत आवी जय छे. आमां आ अं अभ्रे
लेवा. संस्कृतमा “क्लेशवाराथिपार:” शांछ छे. समस्थर अर्थ दीवी “जे क्लेशोविनो
किनारे छे, अंत छे.”
आझां... छा! “ते सम्यसार (शुक्लाता) जयंत वर्त छे- ‘जयंत वर्त’ अंम नभी
कडे. पडेलो शांछ छे: “जयति समयसार:”-अं सम्यसार जयंत वर्त ‘छे’. (छे) द्वृक्षसुि
(छे ते द्वृक्षसुि) शामनी पासनाने नाश द्वृक्षसुिणी, पापुि बृक्षने द्वृक्षसुिणी, क्लेशोविनो
किनारे (छे) अर्थात अंमा अं छे ज नभी, अंनो शुभतानो जयंत वर्त पछे. जयंत वर्त पछे. निजःण
जयंत वर्त पछे! पछे दोने? के जेने अंनो अनुभव पयाचिमा थयो तेने ‘आ’ निजःण
जयंत वर्त पछे. शुँ कडुँ? -सुप्नसागर, ज्ञातयमान जयंत वर्त पछे. पछे दोने? जाननां
अनुभव आवो नभी, अंवू मान थयू (नभी) अंने (तो) आ शीर्ष (अंवी) छे अंवू (अंने)
उपाधी आवू? तर्मान ज्ञातयमानमा अंने पमुि मान न जेय तो ‘अं जयंत वर्त पछे’ अंनो
निजःण दोने? समस्तमुि शांछ? आवी वात पछे!
‘जयंत वर्त पछे’ अंम कडुँ ने...! “जयति समयसार:” पडेलो शांछ छे. “जयति
समयसार:” विशुभवाव समयसार निजःण... छी! अंमा. द्वृक्षसुि, भावबुि, नोक्षरविद
निजःण शीर्ष समयसार जयंत वर्त पछे! आझां... छा!
‘बल-श्रीमानुणि’ (कोल-उर्मा) मा अंनो शांछ पडुयो छे. “जगतो जय जिमो
छे ने ते धुँ जय?” अंनो अर्थ आ छे: “जगतो जय’ (अर्थात) श्रव्यनाश, द्वृक्षसुि,
निजःण, वीरश्रव्यनाशवाव अंनो जय ‘जिमो छे’ अंबवे द्वृक्ष छे. आझां... छा! आ जयंत
वर्त पछे.”

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
राष्ट्रीय नवनीत: बाल-रे
जगत (अर्थात्) सामाजिक. एयो ज्ञव द्वारा है। “ते क्या ज्ञ?” द्वारा क्या ज्ञ? आको... है! पण दीने? के जेने पथ्योंम भाषा द्वारा के ‘आ तो जगत ज्ञ ज्ञवंत वर्तन छे,’ अंतः सम्प्रभुर्वण तथा अने ‘जगत ज्ञव ज्ञवंत वर्तन छे’ एम भाषा माहूँ आव्युँ. जेने (अंतः) शीर्ष प्यालमां आवी नथी तेने ‘ज्ञवंत वर्तन छे’ –अये दी मां मेरी रीटे क्षेत्रयार्? समालाउँ खाँ! आँख... छा! अये जगत ज्ञघण अंदेलो सामाजिक अन्याख्या वर्ते तत्त्वोंमार सार, समस्त नाथ पाण्यो योज्य भावोत्थ दूर, हार्दिक दामने नथ डूर छे, (पानुपुष्पके छेनार), शुक्लपाण्यो अन्तर्वत, (सुभाषितूर गुरु, देशोद्धिन मिनारे) –अयो त्रिपुर (शुक्लमान), मांनी पथ्योंमांने अने सम्प्रभुर्वणनी पथ्योंमां, (ज्ञवंत वर्तन छे). अव्य द्वारा अदा नथी पण पथ्योंम तत्त्वो भ्याल आव्युँ दे-आ द्वारा अदा छे, ज्ञवंत छे, त्रिपुर छे, द्वारा छे, निव छे, शुक्लपुष्प प्रामु द्वारा, असिकण ज्ञवंत वर्तन छे. पडेलो नासित्ती मात डरी: समस्त नाथ पाण्यो योज्य भावोत्थ दूर, हार्दिक दामने नथ डूर छे, पानुपुष्पके छेनार छे अने असिकण: शुक्लपाण्यो अन्तर्वत, (सुभाषितूर पूर छे, ज्ञवंत छे). जेने अयो भ्याल आव्युँ अने अर्थ के दे छे के ‘ज्ञवंत वर्तन छे’ अदा भाषा द्वारा. पण शे पथ्योंमिनारे, राजबुड्धिमां, राजनी रचनां पर्यावर्तन छे अने (तो) ‘ज्ञवंत वर्तन छे’ एवी ज्ञ तो भ्यालमां आवी नथी तो अने ज्ञवंत वर्तन छे–अदा नथी. अने तो रा ज्ञवंत वर्तन छे. आँख... छा! भार्ज आयो छे, खत्ता!
अंतेला बाल कैने कैने अने बीवूँ: “ज्ञवंत सम्यकसर:” एअ ज्ञ छे अये ज्ञवंत वर्तन छे! अने पर्यायांने अनुभव थयो, शुक्लमान ध्यय्य भावादिने श्रद्धाथा छ, निर्दिष्ट अनुभव थयो, अने के के एआ ज्ञ तो ज्ञवंत वर्तन छे. आँख... छा! समस्त छा खाँ?
अम तो अन्तिवो अंगांनां ‘आत्मा नित्य छे, द्वारा छे’ (शुं) नथी आंशवण्युं? अनंत वार अन्तिवो अंग कदस्य तथा. अने आंशवणःणां पृर हर्ष पड़ छे अने अंक अंक पदमां पर 
क्रोधथी जातें राजको छे! तो अन्तिवो अंग भाषा एमा आ वात (शुं) नथी आवी? 
धारणां अने ज्ञवालां तो आ वात आवी बंती. पण अनो अनुभव नहीतो. आ ज्ञिछ अनी अनी अनुभव नहीतो।
(‘छपणा’) मा अंक क्षुँ ने...! “मृिनिद्र प्रार अनंतवार ग्रीक उपलव्याछयो; वे निज आत्मद्राङ्खं बिना, सुन देख न पायो.” –अनो अर्थ शुं थयो? के: पन्ह भशर्क आदि परिवर्त अने सुन नथी, द्वारा छे. मृिनिद्र प्रार अनंत पार ब्रेचेकांमा उच्चत थयो. पण आत्मद्राङ्खं बिना देख सुन पाप्यो नथी अर्थात ते द्वारा छुँ बंतुँ! 
आँख... छा! आकी वात छे, प्रामुँ ‘क्वाश’ मा पडेला अने आवी गयूँ छे. वात क्षुँ तो छे. अशक्त नथी प्रामुँ! तारी ज्ञ हे ने...!
अन्तिवो आवें छे: “बारी नजरने आवेंसे रे में नीवणया न नयाये झर.” आपणे ‘झर’ आशाने के के, ‘प्यावायी’ मा छे. ‘पापम आधम हरति हृति हरि’, ‘झर’ दीनें के के? ते (अथवते) झर के के ते नथी. (पण) जे पुथ-पापम भावें भृति-नास ददे; पायोम त्वमज्ञपी उत्तिष्ठ श्रेय, संप्यामां अन्तरज्ञ, बधा गुणोम अंक अंक भक्ति खोय; अंक आमाने नजरे जेणो. बारी नन्दानी आवेंसे रे, नोतानी नजरनी आवेंसे (अंदेलो) नजर पर्यायांने ने राजां रोक्षण गाड़, (तेथी) बजगानाने जोया नथी. त्यां (रागादिना) प्रेमान खसायो.
श्री नित्यमसार ज्योति पह - २१ 
आनंदवनज तो अम खड़े है, खेतांबर खे तो पशु। पाण्डवी दिगंबर शास्त्रों ठोंक वांन खड़े अम लागे खे। संभवनाश्नी सूतिमा अम खड़े खे—"देव अरोड़क भाव।" रागना प्रेमीने (अर्थात्) व्यवहार रत्नज्ञानी प्रेमीने स्वरूप प्रत्येक देव है। आनंदवनज्ञी रज स्तुति खे। वण मध्य परेला (संवत्) उत्तम बहुत जोशू। अमा खे। "संभवनेव ते भूर सेवो, सेवो रे, बधी प्रस्तु-सेवन भेष; सेवन-कारण परिवली भूयितता रे, अनुभ अदिश अपेत। १. भय चंद्रनाताकी जे वे परिलाभी रे, देव अरोड़क भाव; भेंद प्रवृत्ती हे करतं धारीजे रे, देव अनन्द लिखाव। संभवा २।" जेने धया, धन, प्रत, भारदाई राजनो प्रेम खे अने भज्जवन-आनंद प्रत्येक देव है। "देव अरोड़क भाव।" अने (भज्जवन आत्मा) ठुकी रही, अने देव है। अने (अन्य) राग ठुके खे। ताँदी प्रेम छोड़ने अर्थी (आत्मामा) प्रेम थयो, भान थयु तो कदे खे "उमानं वर्ष है।"

पूर्ण थयु बढ़े।

* * *

“जिव जिनवर खे ने जिनवर जव खे अेवी द्वित धाय तेने पर्यायबुद्धि छूटी जय खे। सम्प्रज्ञान प्राप्त करवा माआ। देष्टवाय गड आंगोनी अंदरमा जावाय खे। व्यवहारमा देष्टवाय प्राकारी लागकाल धीय, संसारवायो जावाय ठुके नमि, आत्मा... आत्मा... नी धून लागे त्याहे सम्प्रज्ञान धाय खे।”

-श्री ‘परमाणमसार’ /२८.

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
“બાધ! તાંદુર થું હું લગભગ સ્વભાવ છે ને...! પરમાલિક માનવ છે. જિન માનવું આતમ છે. ધીમું અર્થાત મૂર્ત જ આતમ છે. તેને પરમારિશાંખિક કરી કે જેણ સ્વભાવ કરી કે, અન્ય તેને શુભ્રસાધન કરી રહ્યાં આવી છે. તેનાથી સ્વભાવ તલ ભાવતાપો ભિંન છે. નિશ્ત આવે તો ભિંન છે જ પછી રાગતી અશુભ છે તે ભિંનિત છે અને પૂર્ણ સબર્યાપન આશ્ર્ય અને ધીમું ધીમું પરમ તલ ભાવતાપો ભિંનિત છે ને ભિંનિત છે તે હેઠ છે.”

-શ્રી ‘પરમાલિક સાર’ /રદ્જપ
श्रीमदभगवतं दुर्गायायितव्रूपः  
श्री नियमसारः गाथा ५०  
श्री पञ्चभ्रमभल्लादिरिविरिव संस्कृत टीका  
[शुद्धभाव अधिकार]  

पुन्वतसयलभावाः परदव्यं परसहायमिदि हेयं।  
संगद्वमुवादेयं अन्तरत्चं हवे अपा।५०।।  
पूर्वक्तसकलभावाः परदव्यं परसवभावा इति हेयं।  
स्वक्वद्वमुवादेयं अन्तत्वतं भवेदालमा।५०।।  

हेयोपादेयत्यागोपादानलक्षणकथनमिदम् ।  
ये केवलद विभावगुणपर्यायस्ते पूव्यं व्यवहारन्यादेशापुदाचदेवलेवेवनोतात्:  
शुद्धनिश्चयनययबलेन हेया भवति। कु: त्? परस्वभावत्वात्, अत् एव परदव्यं  
भवति। सकलविभावगुणपर्यायनिमुवत् शुद्धान्तत्तत्वस्वरूपं स्वद्वमुवाद्यम्।  
अस्य खलु सहजानिनां सहजदशनां सहजाचारितसहजपरमात्माग्रुतत्कस्य  
शुद्धान्तत्तत्वस्वरूपस्याधारः सहजपरमपरिभाषात्मकमभवलक्षणकारणसमयसाह  
इति।  

*  

शुजाती अनुवादः  
पूर्वक्त भावो परदव्य परभाव, तेषी केव से;  
आत्मा जे के आदेय, अन्ततत्वप् निजभ्रव्य छे. ५०  

अ-वपार्थः [पूर्वक्तसकलभावाः] पूर्वक्त सर्व भावो [परसवभावा:]  
परसवभावो छे, [परदव्यम्] परदव्य छे, [इति] तेषी [हेया:] केव से;  
[अन्तत्वतं] अन्ततत्व [स्वद्वमुवाद्यम्] अनुव: स्वद्व- [आत्मा] आत्मा- [  
उपादेयम्] उपादेय [भवेत्] छे।  

टीकः आ, देव-उपादेय अथवा त्याग-श्रवणा स्ववृपू धक्षण  
जे जैव विभावगुणपर्यायो छे तेऽत्थो रुवु (रधमी गाठामा)  
व्यवहारसयना धक्षण द्विरुपादेयपिरके केवामा आत्मा कुशा परंतु  
शुद्धनिश्चयनययबलेन वेन (शुद्धनिश्चयने) तेऽत्थो केव से। शा धर्मानी? धर्मा के  
तेऽत्थो परसवभावो छे, अनु तेषी ज परदव्य छे। सर्व विभावगुणपर्यायो धिकत शुद्ध-अन्तत्तत्वस्वरूप स्वद्वमुवाद्य इवी।  
परेषार सहजान-सहजस्वरे-सहजाचारित-सहजपरवितरायणसुपात्मक शुद्ध-अन्तत्: तपस्वृपू आ स्वद्वमुनो  
आधार सहजपरमपरिभाषात्मकमभवलक्षणः (-सक्ज परम पारिभाषात्मक भाव जेनु  
लक्षण छे अर्थवा कारसमयसाह छे।) ५०।।
प्रणवन: त्य. ४-२-१६७८

‘नियमसार’ गाथा-पाठ. भेदभावनी विशेष पाठ छ. तदन सूक्ष्म (विषय) छ. पढ़े लां जरी मूल पाठ (अन्वयार्थ) लक्षे: “पूर्वोक्त सर्व भावो”-निर्मल पर्यायंस्थ मारके राग अने निमित्त-अ-ब धृत परम्य छ. परम्य छ। “पूर्वोक्त सर्व भावो परस्परभावो छ, परस्पर छ, तेथी होय छ: अंतर्तत्त्व अंबु स्वदृढ्य”-निकायी शास्त्रकाव्, पूर्वस्त्रंस्त्रपूर्व, धृत-“आत्मा उपाध्येय छे.” आकार... हा! अ- स्वदृढ्य उपाध्येय छे!

[ टिप:- ] “आ, रेव-उपाध्येय अथवा त्याग-स्थलना स्वप्नुं कथन छे.”

पररथर अथवा पाठ छे! ते ‘कखशट्टीक’ कविश-पत्रमं दरी: “वापयसोः” ‘वा.’ अठो गाथी. ‘पयसोः’ अठो दृढ़. ते अने बिन्ध छे। पाठी कविश-हक्कमां वीरुः के: अनिलंसोगाही पाठी दिनुं थुँ, पाठ उष्णुं अनिन्तुं छे, पाठिनुं नहीं। पाठी तो स्वामाथी शीतल छे। स्वामाथरथ पाठीनो स्वामाथ छे। धृत अनुं बान स्थान थाय छ होने के-पाठी शीतल छे अने उष्णुं अनिन्तुं छे, पाठी अनिन्ता निमित्ते दिनुं थुँ छे? (‘दिनुं पाठी’) अपेक्षाकी कहरामां जायुं (चताः) उष्णता अनिन्ती छे, अनुं उपाध्येय होने थाय? अर्थात् अनुं धृतवर्ण आत्महानी होने आये छे? (के-) स्वप्नराही शानीने! आखार... हा! हूँ कहूँ? – ‘आत्मा आन्दंस्त्रपूर्व छे’ एवो श्रेणे अनुमान थयो, अने स्वप्नराहीा शान कहूँ छे। (‘अनुं हार्व-उपाध्येय स्वप्नराहीा शान थूँ। अने पाठी मीतन अने (अमाः) उष्णता अनिन्ता निमित्ते छे, (एवो) एवो भेक अर्थात् धृतवर्ण शान, स्वप्नराही शानीने थाय छे। हूँ कहूँ? समजै हूँ कहूँ? उष्णुं अनिन्तुं छे, पाठी स्वामाथी शीतल छे; अनुं पाठ शान्-यथार्थशान-जने आत्महानी थयुं होय (तेने थाय छे); अर्थात् तेने –स्वप्नराही शानीने-यथार्थशानुं सायुं शान थाय छे। एवम ने अमे पाठी मीतन छे अने उष्णता अनिन्ता निमित्ते छे, (सुं) एवो भेक, आत्महानीमां बेऽयः? –न बेऽयः! अमे कहूँ छे। ‘कविश’ हक्कमां जुगोः: “अनिन्ता अने पाठीनो उष्णपञ्चा अने शीतलपञ्चां भेक निजस्वप्नराहीशानी प्रत्य थाय छे.” –हूँ कहूँ छे? (के-) पर्वत वास्तविक शान पाठ, जने पोतातूं शान थाय छे, तेने थाय छे। आखार... हा! पाठी मीतन अने उष्णता अनिन्ता निमित्ते छे, एवो परद्यानो भेक पाठ जने पोतातूं आत्महानी थयुं छे (तेने ज थाय छे)। रागीलिनि श्रहने आनंदं अनुमान आयो, अ आनंदं अनुमानी झूँ, स्वप्नराही शानीने अने (–शीतलता अने उष्णताने) बिन्ध जाइ हे। (के-) कहूँ छे: (सुं) लोडिक (जनो) नहीं जानता? तो कहूँ छे: ना. पाठ अमाः (‘कविश’ माः) छे के नहीं? दर्श छे के नहीं? ‘मोक्षार्थिक्राशक’ माः (पाठ) द्वीरुः हे: अजानीने नास विपर्ययसी झूँ-काक्षविपर्ययसी, स्वप्नविपर्ययसी अने भेदभेदविपर्ययसी। अे तो आजानीने धृत ज हे। अमे कहूँ छे: अजानी, (अर्थात्) जने आत्मा आन्दंस्त्रपूर्व छे, शानस्त्रपूर्व छे, अनुं शान जने थयुं नही; अने (शान) रागीलिनि छे, अनुं शान जने थयुं नही; परद्याने जाणामां पाठ राध (विपर्ययसी) मांकी के ने के बूढ़ तो कहे ज हे। अतिशालुं कहे? पाठ (कविश) तो अमे हे: “जानादेव जवस्त्रपानसारीवंगृहाच्यावस्था.” अे शान अठोः स्वप्नराही [पाठम्य अर्थ लीडों छ-निजस्त्रपूर्व] शान- ‘इ शानस्त्रपूर्व छूँ; रागीलिनि छूँ! अनुं भेदशान-जने थयुं होय ते ज पाठीनी शीतलता अने अनिन्ता उष्णतानो यथार्थ धृत करी हड़े छे। अजानीने तो धां धां पाठ भूढ़ थाय
* परम दृष्टिक देव श्रीमद्द राजचंद्रज *
श्री निम्नसार गाथा ५० - ४४

(से) जव रणगी रथिमा पड़ो छ (तेने तो) अंतर अनन्दुप नौराय व्याप उपाय धूप नें! आला... शा! आली वालो छ!! वस्तविकताले तो घ्यान ग्रानी-श्रीरुपानी राजपालणु अने द्वारपालणु-परुनु-शान धाय छ। आला... शा! बढै तीरी वाल! शुं धुं? समझां? श्रुप जे वैतन्य आनंदक प्रभु छ, द्वु सजस्वस्वप (जेने) स्वासंविधानमा आँख छ, स्वस्वतु भेदनमा आली छ, स्वसंस्केत-स्व=पोताना+साम=प्रत्यक्ष+वेदन-मा आला आलो छ, अने जै शीतलपालणु अने उष्णपालणु शान-परुनु शान-वधार्य धाय छ। भे ठोल लीला छ। पानी ठीलु छ के: ‘भायु अंजन’ एनु जागरामा आलो ते झूठ छ। अंजनसिव विलक्षणा उद ‘आरो लवणो घनाव’ एनु जागरणू निर्ज्ञ्यपणा जागरणा द्वारा (प्राग) धाय छ। समझाय छ काँठ? अंजन वन्ते अंम धूले के, राजपुर पारे कदमतिया छ त्या श्रीमद राजवंश आल्या हंता। अं वन्ते श्रीमद राजवंशी (अंतर) स्थिति बढ़ै जिमी बती। ते वन्ते हिंदुस्थानमा एनो कोइ आला नही, एनी (तेनामि) स्थिति बती! पाप तेने गुरुस्त्वामा बताना। दोखी तो भाल त्यागने बाले छ नें...? अंम त्या अंजत गामामा रघु-भादु मालो अंदक थाय। (पीक्रस्वभा) शक आँखु त्यारे अमहो धुं के: (आमा) महु वधारे छ। आल्या विना बो! (धुं लोरे बालुके साक्षने तो) शक (वाहरात्ता) धुं नेली, बालु नेली तो देवी रीते धुं! त्यारे कढ़े छ दे, दल्लीनु जे शक छ अने जे पापिमा बाकी तो अना रेसा तूटमा नेली, पाप रेसा तूटी गया छ, तेली अमह बाल (महु) वधारे पड़ु छ। अम अमे जोठने धुं के: महु वधारे छ। (पश्चि जयरे) दोखीने आलुके तो (शक) धावु (धुं)। देवी रीते धुं? भाल! में मारा जाननी जामु! समजायु कांठ अमों? ते वन्ते श्रीमद राजवंशी शाक्त धारी बनी। पाप दोखी आवणी शक्त नही। बेरी, दल्ली धुं: पाप अमान समाचारने शुं? समाचारने शान्तारे अने दर्मयार बने बोल छ-आत्मावस्थाइने पाप बोल छ अने साथे रग पा बोल छ, अनुभव पा बोल छ (अनी) कर्मयार होय छ। बेर साथे (बोल छ)। जया सुधी (पूर्ण) वीतराजन न धाय त्या सुधी बने धाय बाले छ।

(अंदे धुं) अंजन धारु नेंही; पाप अंजनमा भाराश लवणी छ। शक छ ते बारु नेंही। (पारापहु) मित्र बीज़ छ। जुनो अह्री (‘क्वाह-कोमा’) अं धुं के: निर्ज्ञ्यपणा जागरणा द्वारा प्रागत धाय छ। ‘अंजन धारु नेंही अने धारु लवण छ’ अंदे भेद्यान-परुनु शान बो! -अं धु ‘ज्ञानु’ (अर्थात्) निर्ज्ञ्यपणा जागरणा द्वारा प्रागत धाय छ। आला... शा! गजन धायत्थै।! जेने पोतानु शान धूले धाय, जैतन्य ज्ञ-पराक्राष्ट्राना अआण्तु वेदन धूले धाय, रामी पन्नेत्था वहं रमणे रमणनु धूले धाय अने पारापहु लवणानु छ अने शाक अं धारु नेंही, अंतु शान पा स्वाप (अहरी) शानाने ज धाय छ। समजायु काँठ?

अहरी अप्सो ए बाले छ: ‘आ केब-उपाय’ (ना स्वापुत्रु धवन छ)। पाप ‘केब’ नु शान कोने धाय छ? बे शाक पटा छ नें...! ‘केब’ ‘उपाय’ पा पा ‘केब’ नु शान, यथार्थ दोने धाय छ? (के-) जेने पोतानु अनन्त-स्वाप, पूर्णिनु शाक्ताव, द्रुव उपादेयपोषी अनुभवमा आलो छ तेने रागहट प्रदर्श, पर्यथे आल्या (ना देखपालेनु यथार्थ धाय छ)। अहरी पर्याप्तपने पा पर्याप्तमा गाथामा आली छ। (जेके) निर्ज्ञ करे छ पर्याप्त; पा पर्याप्तनो पियम शाक-टिका।
जहाँ - प्रयत्न संविदा करें - भागे-रे। अनुभव करें वस्तु श्रद्धा (तत्त्वो) तत्त्व सृष्टियां सात्त्विक श्रद्धा छै। अनेक अनेक (ह) परदशक्ति अभिलहे करीब (ता वेदांसां सात्त्विक श्रद्धा तथा) यथार्थ यथा। आह्वा... हाँ! परमायग (भाग) परदशक्ति है! राग-प्रवाह ते तो परदशक्ति, क्यांत्सि रही गया! अनेक निर्मित परदशक्ति (अे पश्च) क्यांत्सि रही गया!

"आ जेहू-उपदेश अथवा त्याग-बजायता स्वभाव प्रकाशते कथन है।" जेहू अभिलहे असात्त्विक। आ रागसङ्ग प्रकाश अनेक स्वभावी उपदेशक अथवा उपदेशक अनेक अभिलहे के त्याग-बजायता स्वभाव प्रकाशते कथन है। आ भगवद गीतामाण स्वभाव प्रकाश है।

जयी सुब्रम वात छ, लाभवान! आ तो बीमान दाम छ! आभ तो नयभी वैये के गयो, पंच निरक्त धारीने साध वर्यो, निर्दिष्टारता-अनेक पश्च अतिरता नहीं, अनेक प्रति (पापं) छता मिथ्याविड़ित। दार्शण के (तत्त्वो) अंतरम वीड वीड अर रागसङ्ग अंशिन उपदेशकता (वर्ष) छे। तथा, तनी हरे त्या (राग उपर) पश्चि छे ने...! समझुँ धान? अनेक सममतिनें (तो पायभाग्येत केशे बसे हे)।

आह्वा... हाँ! क्षुँ ने...? श्रीकिंच राजाने माहूं क्षु़्र्द्वयु के गई ते (रीते) महा क्रु़ि ने...!

पश्चि अर रागवारा (छे, अनेकी) लिंत्र शान (धारा) छे। 'शान' अर परदशणो हीष छे। अर हीष सममतिनो नत्ती, आरियोण छे। आरियौषधी आश्र-सम्मतिरतनमां क्रोध हीष वागतो नत्ती! दार्शण के बने गुज़ भीतर छे। (जो आरियौषधी) सम्मतिरतनमां हीष लागे, तो आरियौषधी पूरा ताप त्यारे सम्मतिन (पूर्ण) ताप: पश्चि अनेक तो (सत्संविधित-तत्त्व) नत्ती! आरियौषधवी ताप त्यारे सम्मतिरतन पूर्ण ताप अनेक तो जनतत्त्व नत्ती! (प्रथम सममतिन पूर्ण ताप छे।)

'गोम्भूसार' मां क्षुँ छे: आविष्क (अभार) सममतिन (छे), तो दिन्दिबी (भिन्नीयो विषयी) अनेक हिंसाहिंस हिंदेक नत्ती। 'अं क्षुँ विकर्त नत्ती' अं क्षुँ अपोकाने? के-के 'आसाइरी अपेक्षामां' हिंदेक नत्ती। बाकी सममतिरतनरती अपेक्षांते तो ते दिन्दिवी हिंदेक छे!

'समसार' आया-उँ ( मां तो अनेक क्षुँ हे के: ) "जो इंदिये जिनिता जाणसहायविक वृद्धि आद।" अं छेत्र रहिबो छनी। ज्ञानी अर्थ शुँ? के-क्रम-विषय, भवाप्रियण अनेक दिन्दिबी विषयः (अं अलोचनें छनी)। दिन्दिवी विषयमूल पदार्थमां ब्राह्मणीं वाक्री (पश्चिम आधी तत्त्व, अभम क्रीणे छिरसे तो विषया लोकने आईहूँ पें बे के: ते सममतिरतन वाक्रीं दिन्दिबी बे छे? अर्थी तो (अनेक पश्चिम दिन्दिबीं नापी। जाहे तो जय दिन्दिबी विषय, जाहे तो भावाप्रियण विषय, जाहे तो दिन्दिवी विषयमूल पदार्थ विषय-ब्राह्मणीं वाक्री वेहरे विषय-अं अलोचनें दिन्दिबीं छिरसे। अं ज्ञानी दिन्दिक आजणी अर्थ के: वतकन्तु वक छिरसे, सक अतीतिनौ भाग्नामां वहित करवी, अनुभव दर्दों-अनेक (अर्थी) दिन्दिबीं छिरसे, अभम क्रीणामां आवे।

अं 'गोम्भूसार' मां जे क्षुँ के: 'सममती दिन्दिबी विकर्त नत्ती' ते (पात) आ नत्ती। सममती दिन्दिबों आसारत तो छे। अं राग पश्चि छे, ब्रित्याळ्प्रात पश्चि तत्त्व, वतकन्तु पश्चि तत्त्व। सममतीने, भवाप्रियणसममतीने वतकन्तु?! तीर्थाकाः तीर्थाकाः, भुँकुँकुँ अं आराम-अक्रिया, गाह शान, गाह हर्ष के अविद्वती सममती, अं तह क्षु़्र्द्वयु भ्रोणों वतकन्तु अं वतकन्तु! आह्वा... हाँ! जरी राग श्रद्धा छे। पश्चि (तत्त्वो) अं रागने कन्दाहारा जानीने, (स्वना आक्र छे। ते ते अनेक (राग)
श्री निःसमसार गाथा ५० - ५७

केवल तर्क की जाती है. अन्यथा मेरे लाब छ ने... मार्गाम्रं हे, अेम (तेमो) जागता नथी.
आक... भ! भे आंति मेरे अंतर िोने अभाष पढ़े? बारे मुहूँड़ही!

'समस्तार नाटक' मां तो बनासीदास तो हे मारुँ के: अेम समक्षिंने भगारी वांडा है. "बेंद्विजान जयो जिन्देड़ बट, सीताल मित भयो जिम बंडन. डेल के छिव मार्गम्रं, जग मार्डि जिनेसुर दे बचू नंदन. तस्यसुप दस हिन्दु, प्रागटो अवदात मिथ्यात-निंकड़न. सांतता निंड़ी पट्टियाती, डे कर जोरि बनारसं व्यंजन.' डे जोने बनासीदास वंिन के छ. सम्ज्ञनी सूति (मंगलायशानु हुई पढ़) है. रागधी निंत्रा जाय बेंद्विजान िूँ, जे रागमा आूँक्तात करि तेनाथी अपालुँ भव्यायानु बेंद्विजान धर्म त्यं जेम िंडन शीतण है तेम शाल (अर्थांत) अद्वापां अण प्रागट थयो. (ते) 'डेल के छिव मार्गम्रं, जगमार्डि जिनेसुर्दे बछू नंदन.' आ वात समक्षिं-शोथा गुप्तायानी है. पोत्तानो आत्मा अरवंस्वरुपमा डेल के है. अंतरमा अंतरह के है...! मले (अं क युक्तमा) राग िूँय.
'तस्यसुप दस हिन्दु, प्रागटो अवदात मिथ्यात-निंकड़न.' अंधे तो मिथ्यात्वो नाश कर्थे. 'सांतता निंड़ी पट्टियाती, डे कर जोरि बनारसं व्यंजन.' अेंतुं भागत्यात लीवूँ है!

मिथ्यादृष्टि नवमि ब्रेयेवक गयो. निःसत्तार फ्रत पाय्यो. ख्यासे राहीणो छेरी. कछ वार भागभवानीिाि हो, अंतििात पाणि िािो. (पाणि) अंमिुं शुं तथिुं? अे तो भारनी किढ़ा है.

आंति अंतर वस्तु जे धैिन्त्वन प्रलुँ; अेंतुं जिमे अंतरमा हिरि कर्थे, रागधी निंत्रा वचति िहने िान धर्म त्यं, ल्या अे समक्षिं मार्गायानु रागें डेल है. (अंमिुं) अेंतुं (रागानु) यथार्थ िान थाय छ अने अने कम्भारानु (पाणि) वातािवक िान थाय छ. आक... भ! सम्जद छ हंिंश? (विश्व) सुन्ति हो छ, प्रलुँ! शुं तरे? मार्ण तो आयो है! सम्जद्विश्न धर्म त्यं ल्या भरणो अंत आळी गयो. भरणो छेर बढ़ गयो. डेरे के, वस्तुमा व्या अने भरणा डरायानो अभाय छ, तेथी जम वस्तुनी हिरि धर्म त्यं भरणो छेर बढ़ गयो. अे (समक्षिं) इना (केः रीते निःसार नथी!)

'समस्तार नाटक' मां तो ल्या सुही करे छे डे-अे (समक्षिं) बाले छे तो पाणि समावि है. भोन छे अे समावि है. खोले छे अे समावि है. डेरे के, (रागाने) देयुँे जाये छे; तेथी अने रागानु स्वामीपण्युं नथी. अे डेरे करे छे डे, अने राग आये छे तो पाणि समावि है. रागानी नभी पाणि रागायी निंत्रा रे छे तेथी अंतरमा अने समावि है. आक... भ! खाले च्छ अंदर हेरि छ! राग थाय छ छ्तां अंदर समावि है. समक्षिं गृहयास्वूभा िानो िे बखर जंगवानो िानो, अे तो पोतानामा (ज वसे छे.) पोताना शांत स्वाभावणा स्वाम्या, द्यांं राग आये तो तेथी स्वात पोतानो ढेमातो नथी, जे ढेमाय है. शानी शुभरागने पाणि त्यां ढेमें छे. डालो नाम ढेमें छे. 'समस्तार नाटक' मां आये छ-दाणी सर्म. सम्जद छ हंिंश?

(अंतििां केः छे डे) जे अंतरमा भागभवानी विधान्दवन, ध्वनि, अे स्वात्विक उपायकृपा थाय है. उपायें अर्थांत आ द्व्रि उपायें छे अेंयो हिरि नभी, पाणि हिरि द्व्रि उपर जामे छ त्यारे द्व्रि उपायें थाय गयुं अेम ढेमेंमा आये छे. आ द्व्रि छे अने कु उपायें कूँ, अेंयो हिरि पाणि (त्या) नथी. सम्जद छ हंिंश?

अे तो अंदी पहेलाम मधायुं बाघ्युं छे: "आ, डे-उपायें अथवा त्यांग-श्रजाना व्यंजपुष्पुं
इस दस्तावेज को अन्य भाषा में अनुवाद किया जा सकता है। पूर्व विद्वान नवनीत भागैरे के वर्णन के अनुसार उन्होंने यह दस्तावेज लिखा है। इस दस्तावेज में उन्होंने साफ़ और स्पष्ट तरह से एक विवरण दिया है।
श्री नियमसार गाथा ५० - ४८
अटेले जाताययोज्य कढी गया हता; परंतु अर्थियां शुरुनिर्धारना बनायी, शुरुनिर्धारना बनायी तेयो
केव छे. -डोला? के: ते बाधिकसमितितीन निमदा समाधितपाली तेने अर्थी परदय, परमाव
कडीने केव कहुँ छे. व्यवहारसवारूण तो शुभवाण छे, ते तो केव छे, अन्य वत तो (दूर दूरी)
पह जेम सत्यमांधी (स्पर्धयनी) पयाय आवती नत्थी तेम अर्थ समये परमांधी नत्थी
पयाय आवती नत्थी.समयज्ञ थयु, अनुवय थयो, पह शुरुनी वृद्धि परदमांधी नत्थी
आवती. परदमांधा बढे नत्थी आवती. अने पयायमांधी पह नत्थी आवती. अर शुरुनी वृद्धि
द्रयमांधी आवे छे. पयायमांधी शुरुनी वृद्धि आवती नत्थी. जेम (शुरुव अने शुरुनी वृद्धि)
परदमांधी नत्थी आवती तेम पयायमांधी (पह) आवती नत्थी तेथी अर पयायने पह परदय
कडी ही. आ... ब! आरी जीर्णी वापो छे! वसुनी विभिन्न अंदरमां तो अंदी छे! गजन...
गजन विषय छे!

अर शुरुनिर्धारना बनायी तेयो केव छे. अर चार भयो छे ते केव छे. बाधिकबाव, उपजेमाव, श्रयोपजेमाव अर पह देण छे. कारश के आरे ज भयोने विभिन्नमाव कर्न छे.

त्यो, ‘पंचासिताघ’ गाथा-पतामा चार भयोने करमियनि (जुमा) कर्न छे. त्या पहली
हार लीयुँ के जो करमियनि धोश तो आतमाणे भु धुण्यू? तो कठे छे जे विकारमाव छे तो आतमाणा
ज अटणाणे. अर कुंड करमियनि धोश नत्थी. पह धुण्य कारनी-निमित्ती उपाय चछ छे. ते
कारशे अर भयोने कर्न छे जे चार भयो निमित्ती धोशा.

अर्थियां चार भयोने कर्न छे. बाधिकसमितिते पह देण कहुँ छे.

जिसाना: केवणजाने पह देण कहुँ छे?

समाधान: केवणजान तो अटणारे छे ज नत्थी अटेले में न कहुँ. भडी वत भ्यामाणे छे.
(अर्थी) केवणजान छे नत्थी, अटेले शुरुनिर्धारीने केव छे; अर तो अर नयी विचार करवायी देय
छे, पह वर्तमान तो छे नत्थी. वर्तमान जो (जोडी) बाधिकसमिति धोश; उपजेमाव धोश,
श्रयोपजेमावसमिति (झोपे); ओडिपंजेमाव धोश, अर तो ठीक, ओडिपंजेमाव तो विकार छे.
वर्तमानमाणे तो बाधिकबाव धर शकित नत्थी; पह अर बाधिकनी जोडी धर शकित देय.
भगवानी श्रीमुणे शाखिरणा ने भेट आय्या छे: अर मूण बाधिक अर (बीजुँ) अर जे
श्रयोपजेमाव छे ते बाधिक धारवाउी छे, परहाराउी नत्थी, अर जोडीलाइक्षिक. अर जोडीलाइक्षिको
अर भगवानी श्रीमुणे आय्या छे. बाधिक तो बाधिक ध छे. पह जेम श्रयोपजेमाव (अर्था
प्रकारे धोश ते जोडीलाइक्षिक कर्नेमा आरे)

‘प्रवचनसार’ गाथा-दरा (नी ठीकाणी) अभुतावारयार कडे छे डे: अरने मिथ्यातनो
नता, आगम्यशाळी अने आतमाणे ठीको छे. तैरी मिथ्यात करीय उपजन धरी ज नत्थी.
छे तो श्रयोपजेमाव समिक्षती, डे पह छे नत्थी. अरे पार छे. पह मृणु! तमे तो छांत घी.
भगवानी विदर्श परीडी छे. कुदार वर्ष पही धर ने भगवान राखे तो कुंवारायय धारा
क्षता. तमे तो गया नकोटा. (पह कडे छे) अरायो आतमा पोकर करे छे!

‘समाधान’ गाथा-उठामा छे. अर्थां (पह) अर लीयुँ छे डे: अरने जे समयज्ञ उपजन
धरी तो क्यारे पह पही नत्थी! कम? डे-अरायो आतमा पोकर करे छे. आ तो श्रयोपजेमाव (समिक्षती)
छे अर बाधिक ते. आ... ब! अरायो आतमाणी साही छे!
प्रवचन नवनीत: भाग-2

आख़ा... हाय! आपों श्रीयों बयों पढ़ो छे! 'समयसार', 'व्रतवनसार', 'नियमसार', 'पंथासिद्धात्म', 'गोमन्तसार' -कोठ पढ़ा शास्त्र ल्यो, अंदर गंभीर भाव भरों पढ़ा छा।

अभी प्रस्तुत (अमृतबलकालीं) कहों? शुरू कहों? (के-) आपके भविष्य नहीं थाय, अंदर कहे छे के विबदल नहीं थाय। अंदर शोषणमार्गी शाबिक देखों, देखों ने देखों छ। अभी अभिनव भाव छे, अंदर कहे छे। आख़ा... हाय... हाय! (आ वात) भी गुणाकृतमिहूँ आयो।

अभी तो कहे छे के: अंदर शोषणमार्गी है तो पढ़ा देय छे। शोषणमार्गी अभी निर्धार वयों है के, अंदर पढ़वायो नाथी। (आ कहे) अंतरारे तो शाबिक तो छे नहीं। भविष्य पासे जय तो शाबिक थाय है। (ते पढ़ा) अभीना जयने तो बतू नाथी; त्या (दिक्षेक्रिया) जयने थाय है। हुजुरासार्थ (भविष्य पासे ते) घया पढ़ा अभीने (शाबिक) बयुं नाथी। पढ़ा आ भव थयो कतो: अभीने जे मुनधिया आयुं, अंदर शाबिक तो हेना अंत सुधी रहेंही। स्वर्गमार्ग जशी त्या उपदेता कहे नाथी। पढ़ा अभीने जे सम्यक्षण छे अने सम्यक्षण छे तो अभिप्रतिकत छे, अंतो शाबिक ववने देवविषण ववने रहेंही ने रहेंही! आख़ा... हाय! आपी वतुस्थिति, बापू! समाजाय ह्र छे भी? अभीता तो अंदर पढ़ा देय क्या! आख़ा... हाय! सतो देवविषणिनी देवायों है, (आयो) दिगजन संतौनी पायी ते जो अंतमार्गी आपी छे। पढ़ा अंदर वालीनो मर्भ समाजयो ववने धन्य, प्रमु! अंदर पायी तो पायी छे, जद छे, अंदर (के-) ऐयन नाथी। अंदर देय छे। पढ़ा अंदर देयतु शान पढ़ा स्वर्गपन अनुसमिही थाय है।

कु शुद्र वैत्तिकान आनिहंद क्रमु हुं, अंदर स्वारण पुण्य छा है, त्या (सांस्कृत) ज्ञान है। शुद्रोहं, बुद्धहं... शुद्र हुं। शुद्र हुं। उदासीन हुं। शुद्र हुं। त्रिकुणा अंदरो हुं अने स्वर्ग ज्ञ, स्वर्ग ज्ञ अंदरा अंदरा अंदरा अंदरा अंदरा ज्ञ छे। अंदरा उपर व्याप्तयान ववह गया है। ('समयसार') बंध अधिकार अने स्वर्गिशुद्धान अविश्वास अधिकार है। अने ('परमाम प्रकाश') मा (पढ़ा) छेंहे हैं; अंदर (आ वात) गजा धेयाते है। कु उदासीन हुं, शाक छुं अने स्वर्ग ज्ञ अंदर ज्ञ है। प्रथ्यामाम वलो अने प्रारंभ न हृण; पढ़ा अमें तो धान जहां बजाने भविष्यवापन भीतेरी जीमें। स्वर्ग ज्ञ वर्ग ज्ञ (अंदर ज्ञ है।) केहाकर अमरी ज्ञानहरू छूठी गह अने द्व्याप्त हह तेती आमे तो परने पढ़ा क्याङ्कोटिशी जोरेन हुं, ते (अंदर) भविष्यवापने ज्ञ छे। प्रथ्यामाम भूत ज्ञय तो भत्ते ज्ञय अंदरी पासे। समजाय कांठ?

अभीता तो भुङकर पात छे-पाते भीतरे भावने देय क्या! शाबिक (शान), देवविषणाथी नीही (वालाने) नाथी। पढ़ा (शाबिक) समिद होने नीही (ना गुणस्मानमा पढ़ा हैं)। शोधे, पारमें, छहे शाबिकसमिद है अने शाबिकसमिद श्रीणी गडे है दोहे उपवशंक श्रीणी पढ़े है। दोहे शाबिकसमिद श्रीणी उपवशंक श्रीणी उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक उपवशंक (अंदर) तो कहे छे के-उपवशंक ज्ञय के शाबिक ज्ञय, (अंदर देय छे.) आख़ा... हाय! जे भाये तीसर्दारोट बंधाय ते भाव तो उपवशंक छे ते तो देय ज्ञ छे। परवशंकात्तिहा-विकल्प आये छे ते पढ़ा छे ते देय। जबारे शाबिक-उपवशंकाव देय छे तो उपवशंकावी पातुं
श्री नियमसार गाथा ५० - ५१

र्श्चति? समाजः छे कानः? (पदेवं के लाभिक आदिने) उपाधिक िदुं विति ते शृद्धिनिर्धारणं अभिनी देयं छे। आप तथा कारणं (तेने) देयं कहो छो? अनेने कों छो द्वीलं के न्याय छे के नहीं? तेने विशेष केडेवां आपशे...

* * *

प्रवचनः ताल. ५-२-१८७१

'नियमसार' गाथा-५०. टीका. इरने शौंक जाने. “आ देय-उपाधिक अथवा त्याग-वाक्यं स्वत: तुतः कथनं छे। जेन पर्यायं शानं ज न्यायः छे ‘पर्यायं छे ज न्यायः’ अनेने तो द्रव्यं पञ्च शानं धारांतः (ज) न्यायः। (अथवा) देय-उपाधिक एनो भें जातायो ने..? ‘छे’ अनेने ‘देयं’ पञ्च चीजं छे ने...! आत्मानी पर्यायं शाक्षिकाभवं, श्रमोपासनामायं, द्विवाक्यं, द्विवाक्यं आदि अभिनी पर्यायं छे,’ , ते व्यवसायनथं छे! आहं... छा! सूक्ष्म वातं छे, अभिनायं! व्यवसायनथं अेंटेके पर्यायंमद्धिक अने (पर्यायं) छे अने पर्यायंमां विकार पञ्चं छे। अेंटेके शानं जेने न्यायं तेने नीकाणी शाक्षिकाभवं शानं सायुं केतुं न्यायं! ‘छे’ अेंटेके आश्रयं करवा लायकं छे, अभिनी. समजः उँचः तेने अरुं वापसं छे ने...! देयं-उपाधिकं। अभिनी पर्यायंमायं देयं छे। अने आश्रयं करवा लायकं न्यायं। आहं... छा! उँच, उँचम श्रमोपासनां अने शाक्षिक-अने तार भावं छे, अने व्यवसायनथं विषयं छे। (अने) शानं जेने न्यायं तेनो तो द्रव्यं पञ्च शानं धारांतः न्यायं, अथवा (त्या) निर्देशारामः वचं यायं छे। वेदांतं छे ने...! ते पर्यायंने मानतां ज न्यायं। तेने तार अभिनी देय-उपाधिकं-अने भें वातं लीयं छे। ‘पर्यायं’ देयं करवा लायकं छे। पर्यायंमां विकार पञ्चं छे अने निर्दिकाणी पर्यायं पञ्चं उपन्तं यायं छे। (जो) अने ज न्यायं तो अने देयं देयं तीतो? देयं कों छरुं? समजः छे कानं?

अत्र तो तारे कहुं वितुं ने के-अभिनी उष्णं छे अनन्ते भागीं छुं छे अेंटुं परवहःतुं शानं पञ्चं सायुं कोंने थायं हे के जेने स्वदृषज्ञो स्वाभावं हे भें तेनो। स्वदृष्ट अर्थां निुकाणी शाक्षिकाभवं; जेमां तार भावं न्यायं।

आ ‘शुद्धवाक्यं’ अविकारं हे ने...! अने ‘शुद्धवाक्यं’ निुकाणीहुववं ज कोंछे, आ ‘शुद्धवाक्यं’ पर्यायंनी वातं न्यायं। अने ‘शुद्धवाक्यं’-परमशाक्षिकाभवं, भूतार्थवाभवं, परमपारिशुभिकाभवं; जेमां ‘पर्यायं’ छे ज न्यायं! ‘पर्यायं’ पर्यायंं मायं! (परतुं) अभिनी जो ‘पर्यायं’ पर्यायंं मायं ज न्यायं, विकृतार्थवाभवं छे ज न्यायं अने निर्मित अर्थवाभवं छे ज न्यायं, तो (अने निर्दिकाणी हुववं होसे?) अने निर्दिकारं करवायाणी तो पर्यायं हे, समजः उँचः कानं?

आहं... छा! अंतर भवानां पृथ्वींस्वतः स्वरूपं छ्व; जेमां तो शाक्षिकपर्यायं पञ्चं न्यायं। केवखायं, केववाक्यं, अतं आनंदं, अतं वीर्यं-अतं ब्रह्मवासं, अं पञ्चं वस्तुमं न्यायं। अने तो परमपारिशुभिकाभवं, शाक्षिकाभवं, स्वरूपमायं, भूतार्थवाभवं-अने समुक्षज्ञतां विषयं-अने आश्रयं करवायाणी शुद्धं उपन्तं थायं हे, अनन्त आश्रययथं शुद्धं टें हे, अनन्त आश्रययथं शुद्धं वृद्धं थायं हे अनन्त आश्रययथं ज आश्रययथं शुद्धं पृथ्वीं थायं हे। आहं अेंटुं ज सिद्धं! (परहुं) बले मोक्षवार्यी मोक्ष थयो अभिनी छरुं; पञ्चं अने ‘मोक्षवार्यी मोक्ष थयो’ अने तो व्यवहारं थयो। परेण हे निुकाणी परमशाक्षिकाभवं देहं अने अनुमवान थयां, आश्रयं थयां तो समभित-
पर - प्रवचन नव-नीति: भाग-२
मोक्षमार्ग-शाय छे. मोक्षमार्ग पण अे ध्रुवना आश्रये थाय छे अने मोक्ष पण ध्रुवना आश्रये थाय छे. निर्देशमोक्षमार्ग हुईं। ध्यानमोक्षमार्ग मे कौट वस्तु ज रही. अे तो विरूप छे. अे कौट मार्ग छे ज नहीं. पण निर्देशमोक्षमार्ग मे सत्मार्ग छे. (अे पण), जे परमपारिशाब्दिकमुन्नानानान, अतिरिक्तसंबंध, मध्यप्राण, बीत-भूमा, बीत-यन्त्रा अभूतना पूर्वी भरेदो भागान, अनंत अनुभवी शक्ति-सामग्री-मुन्नानाना वर्तः भरेदो भागान (छे) - एमां (नरी)! (एमां) तो अरे बायो य नहीं।
अंक भादने कर्तानापर्य हुणु वांछ्य छे एमांथी एम पूें के के जुहो-लिखिण आ (समिक्ष) थाय छे. पण त्यां लिख छे अे शुभमार्ण छे अने शुभमार्ण अंतर (समिक्ष) थाय छे (अे परेजर नरी). अत्रे भागान! जे पांच लिख छे तेने तो अर्थी धर्मोपास्मार्णां नापी छे, अने (के के के: ) अे धर्मोपास्मार्ण वस्तुमा नरी. अरे... रे! जेमां (छे) नरी तेना आश्रये समस्तर्म-जान थाय?
‘गोम्मटार’ मा क्षणलिखिण, तेजस्वलिखिण आडी पांच लिखिण आए छे ने...! पदेबुं समक्षिपत पढेबां पांच लिखिण आए छे. आमां (‘नियमसार’) नाथा-२९ मा आए छे. आमा जरी हेर कर्णी. तेमा जे ब्रह्मोपास्म लीरी तेने अर्थी क्षणिलिखिण लीरी छे. (अे हेलो छे. क्षणिलिखिण, क्षणिलिखिण, उद्भवलिखिण (अे तेजस्वलिखिण), उपशर्मार्ण अने प्रायोज्यतालिखिण-अे पांच लिखिण छे; पण अे पांच लिखिण वस्तुमा नरी. अे पांच लिखिण (समिक्ष) व्रत थाय अे पण व्यवहार छे. भाद ! आनी वातो छे!!
मुनाध्यं कुर्जनानुभुण-प्रकृत मृदा बता-आनू केम अने आनू केम? पण भाद ! आ वय्यां रिप थाय नरी, वाड़ने रिप थाय, भागान!
(अर्धीनं के के के: ) अंक समयसे पयाप आरे तो लवणानान सोय जे वांछे तो सिद्ध (दशा) दोष (पण) अे अंतर परमस्त्रमार्ण (व्या) नरी.
जिम्मार्णा:- अे लिपि आभी भीजमां अंक पयाप छे ज नरी?
समाधान:- अंक वीर (परमस्त्रमार्ण) समस्तर्म-नो रिप थाय. समस्तर्म छे पयाप, पण अंक पयाप नरमां नरी. नरमां (परमस्त्रमार्णाना) आश्रयथी समस्तर्म थाय छे. पण क्षणलिखिणी संधर्मर्ण उपवत्त थाय छे अने तो व्यवहारी केहाहां के आयुं छे.
अर्धी क्षणलिखिणने धर्मोपास्म (व्या) मा नापी छे. वे हेलो छे. (‘नियमसार’) नाथा-२५ मा छे: क्षणिलिखिण, क्षणिलिखिण, उद्भवलिखिण, उपशर्मार्ण अने प्रायोज्यतालिखिण-अे भेड़ क्षणोपास्मार्णां छे. अने आतमां नरी. अने बीजे हेलो नाथा-१५हां छे: गाणीजीवा गणाकम्भ्यण गणालिखिण हवे लड्डी. तम्हा वणयविवाद संघर्षसमेहि विकखुँडी।” -अेंमां (टैलामां) पण लिखिण पांच लीरी छे: क्षण, क्षण, उपशर्मार्ण अने प्रायोज्यताउप भेड़ने लीरी (लिखिण) पांच प्रकारनी छे. आला... वा! शुभ केहां छे? (अेंम केहां छे) के: अे क्षणलिखिण अने तेजस्वलिखिण पण देख छे. अेंम आयुं... ने, भाद! क्षणिलिखिण अर्थी धर्मोपास्म छे ने...! पांच लिखिणां अंक धर्मोपास्मलिखिणां अर्थी क्षणिलिखिण लीरी छे. ‘जे समये जे ध्रुवनु देखे ते देशे’ अे क्षणलिखिण. अर्थीनं अंक धर्मोपास्मवामां लीरी छे. छाणा अने क्षणिलिखिण वस्तुमा नरी. (वणी आधारविद्व इरमाये के के:) वस्त्रविवाद स्वस्वतयो अने परस्यो साधे करी नरी, भाद! प्रयुक्त! आ।
श्री नियमसार गाथा ५० - ५३
to अंतर्नी शीत छे. तने वादिवादके नहीं समजवाय. वादिवाद स्वसमयो साथे करीश नहीं
अने परसमयो साथे करीश नहीं. के ? ए ( वादिवादकी ) भनाइ ५.

त्रिज्ञानी छन्द ते ज परमपरिशिष्टक मुळ, पूर्वान्त अने पूर्वावधान, पूर्वाध्यक्ष भनाई बंधकाव;
जना उपर नजर करवाइ, अनुभव करवाई सम्बन्ध थाह छे. आँख... ला! ए शीतलो तो
प्याल नदी अने कहाँ नीचा आम को ने आम को ने आ करो. भाल! भज्जांत आ
पात तो अदी छे! तारी शीत अदी छे: एक समानी नेत्री पर्याय छे-केिवनाणाने,
रववरनने अने कहाँविष्ट अने पाण ( पर्यायनी जत छे, तारी जत नहीं ). तीथी ( ल्याङ )
( कहाँविष्टनी ) मानीने रववरनाने ( सुधी ) नी बड़ी पर्यायी देव है, ( अभि कर्य है ) पर
कोने? 'देव' तुम साथ दोने साथार थाह छे? अभि कर्य है.

आ तो गंगी ( विश्व ) हे, भज्जांत! आ विज्जान संगीती वाही ओहा सांडकर
नदी. आ तो रववरनाना केिवतोना ( अंतर ) अनुभवमाही आ वात आयी हे. आँख... ला!
"आ, देव-उपाध्यय अथवा त्याग-प्रक्ष ( ना स्वितसे श्यान है )." पर्यायने त्याग
अने प्यालुं श्यान. आँख... ला! पर्याय अने अदीवी भज्जांत शूष्य हे. भज्जांत
अने अथवे आत्मा. व्यू-वान-वान-वान ( =पांच ) =भगावान. अने शान अने आनंदने
पुर पूरुं छे, अ वानावान अभि कर्य है ऑने.

आँख... ला! समाज एस्टुं समझुं, प्रभु! आ भाले तो अदीक्छे हे, भापा! आ
शाक ( उपर ) उपायी श्यान आये एस्टुं नदी. आ तो औरं बलभद्रो भज्जांत पायो है.

देवता शान अने त्यागता शान. अदी बेझ छे ने... देव कड़े के त्याग कड़े, अने
उपाध्यय कड़े के अदी कड़े ( अदीश्च ) हे). एने अनेने-पर्यायने ( अदी नामयता हे के ) पर्याय
विकाळ है ज नहीं, अने पर्यायामे विकाळ है ज नहीं, अने तो आध्यात्मक पर
सायुं नदी.

अदी तो एने आध्यात्मक सायुं है. दोने? के: एने भज्जांत पूर्वान्त, परमपरिशिष्टकायवाय, रायवाय, 
रुधिराय, पर्यायी रहित भावनो पर्यायामां अनुभव
थयो, ( अथवात् ) पर्यायी रहित भावने पर्यायामां-अनुभवामां बीयो, ( तने आध्यात्मक सायुं शान सीय है).

आँख... ला! आयी वात छे, प्रभु! ताँदुं भज्जामुं छे, नाथ! तु नाथो नदी. ( तुं)
sित्र सहस छि! ए गाए आयी गइ ने।! सित्र सहस पर्याय सहस नहीं पर सित्र सहस.
श्यो व्याय सिरनो हे एने तारो उद्यवाय. ( 'सम्बन्ध नाटक ' मानो ) आये है ने...!
"अंतरुप अनुप अमूनति, सिद्धसमान सहस पद मेनी। भोक महात्म आत्म अंग, दियो
परसंग भक तम वेनी। आनंदवा उपस मन मोलि, कड़ें गुन नाटक आगमडेरी। जासु प्रसाद
सही सिद्धमार्ग, बदन हिदे महावास बसेरी।"

आँख... ला! आ घट ( शरीर ) मां-मांस ने जड़ा-जोमा रप्तुं, भज्जांत! क्वः
'गनेशाना संस्कर शामामा मेसूँ '! एक शेष नाञ्जानो लोट अने आर शेष दी, अने मेसूँ रप्ते
खे अने एक शेष बहुँ लोट अने आर शेष दी अने शकड़पारा दोके छे.

सकड़क ( शकरिया ) नी छालने न जुगो तो आ साक्षरी मीठसनो पिंड छे; तेम पर्यायने त
पृध - प्रवचन नवगीत: भाग-ि
जुमो तो अंदर आत्मामा पूर्णान्त-अपूर्णान्त बतायो छे. आािा.. भ. समजिय छे धाँि?
जीवि वात छे, प्रभु! मार्ग तो ब्याुल सूक्ष्म छे. आ पैसावापा अबिज़हति ने दूरापति भवा नियामा दुभि छे. ‘कला ठीक’ मा शंक छे- ‘वराका’. वराका अर्थत रांका-बिरामा छे.
पोतानी शीर्ष भवास (भग अर्थत अान्त ने झान.) पूरा... पूरा... पूरा... पूरा... पूरा वर्तू छे. प्रभु! अान्त अने झान ने शांतिवी वनालन बतायो छे. भवास हे जेमा पोती सोण आना नयि भेया भवासनो आश्रय देयो अने पार्यियो आश्रय कीयो. पश्चात आश्रय छोड़त्ता झान होने साथ छे? के जेके स्वाध्यो आश्रय लीयी अने झान धर्, अने ‘पयां भेय’ के अंदु यथार्थ झान धर् छे.
आािा.. भ! अंदर सूक्ष्म वात छे. आािा तो झट अटकु नैक्यो, अंदु छे! भाँ तो धर्मनी वाशी छे. बापु! अं धाक साधारण-पारमणु काम नयि. अंदरमाधी अं वात मुनियो-संतो करता झे अने सर्वस प्रभावाना श्रीमुखेशी विधायन आवती धे, आािा... भ!
श्रीमाद राजपंचजमे (पृािक-१६७) मा कहु छे: “सतपुरुषना अंकेक वाक्यामा, अंकेक शाक्तां अनंत आवम रहा।” आािा... भ! अंकेक वाक्यामा अनंत आवम! असत-नासत, पर्यां-सर्व, शुद्ध-शुद्ध आदि अंकेक प्रकार अंदरमाधी नैक्यो। भेय-उपाधिय वाक्य प्रकार अंकेक-अंकेक वाक्यामाधी नैक्यो!
अर्थी शुं कहु छे? ‘पयां ज नथी’ (अंदरी मान्यतावानाने) तो झेकु अने अपाहियतु झान पशा सावु नथी. अं तो नियामार्थी छे. आािा.. भ! पयां छे! निश्चित अवस्था पशा छे! नियामार्थना कार्यो अं रागनी अने पूर्णानी दियाने हु दुहु छु, अंभे मानवीने त (पोताना) स्वारुपरक्षामाने झान भूली गयो छी. राग, दया, झान, प्रत, भक्ति आदि शुद्धमान प र्यियो छे पशा अेटोवो झु दुहु छु अंदरी पर्यांशुद्धी अंदु मानोने संतोषाक गयो के, अंं दया वाणी, प्रत दया, अंदु दया.. अंदु दया-अंदु मानोने संतोषाक गयो (तथे ) अं नियामार्थत छे. अंरी तो अंं अं अने जानुं; पशा छे अंभे मानोने संतोषाक झु हु-अंकेक कीक, अंभे शुद्धमान धर्, अटां करुण, अटां करुण, अंतर्यम्य पायुं, महत्त्व पायुं, आत्म करुण ने तेम करु हु जेके भेय छे अंदु पशा अंभे यथार्थ झान धर् नयि.
आािा.. भ! भेय-उपाधिय अने त्यां-प्रकार-अंकेक ज छे. जुमो! ४८-गाडामा नीवे जटनोट छे:- “प्रभाववड झानमा शुद्धमानकानु तेमा झेकु तेमा पर्ययियो ने बतानुं समध झान धर् हु जेके. ‘पोताने द थित विधानविधायो विधानामां के’ अंको प्रकर ज केना झानमा न भेय तेमा शुद्धमानकानु पशा सावु झान केहे झे नवी. माटे ‘वज्जननां विपष्यरुं पशा झान तो अड्रा करवा योज्य छे’ अंदरी विधानां ज अर्थी वज्जनने उपाधिय दक्षि. (०-पृािकानी अपेक्षाकी), ‘तेमाँ आश्रय अड्रा करवा योज्य छे’ अंदरी विधानां नवी. वज्जननां विपष्यो आश्रय-आविर्भव-प्रकार-सम्भुता-स्थापना तो छोड़का योज्य ज छे अंभे वंशजपवि पृािक गाडामाणे वज्जनने स्पर्यिय केके भेय उपाधियो अाधारी. जें झानिमो अनिर्विधायाना शुद्धमानकाना आश्रयनुं अर्थी अने पर्ययियो आश्रयनो त्यामा भेय, तें ज झानिं झेकु तेमा पर्ययियो झान समध छे अंभे वंशजपवि, अन्यने नवी. ” समजिय छे धाँि?
अर्थी तो ‘भेय’ पशा छे के नवी? -छे. अं भेय जेने भेय तेने भेय हों के न हों तेने
I swear: Having known that these are my sadhanas, I cast them upon the earth, wishing to achieve the knowledge of the spiritual ideals. I will meditate upon the deeper meaning of the spiritual ideals. After the meditations in the earth, I will meditate upon the deeper meaning of the spiritual ideals. I will clear my mind of the distractions. After the meditations in the earth, I will meditate upon the deeper meaning of the spiritual ideals. I will clear my mind of the distractions.

The lord of the spiritual ideals is in the lotus of the heart of the great lord. The lord of the spiritual ideals is in the lotus of the heart of the great lord. The lord of the spiritual ideals is in the lotus of the heart of the great lord. The lord of the spiritual ideals is in the lotus of the heart of the great lord.

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
पहले - प्रयास नवनीत: भाग-2
(पहला) गुप्त प्रगति था नथी। गुप्त तो निवासी-द्रव्य के। प्रगति था के अंतःत: पर्याय के अने नाश था। छे ते पहला पर्याय के। वँगमान (अथा) उत्पादन-यथार्थ मिलने, द्रव्य के। अने अग्र गुहामय देवाया अन्यौ छे। आइ... खाइ। यू थाय। अं ‘विशालकुशपरम्परा’ - गुप्ता पहला पर्याय के देवाया अन्यौ छे। अं गुहामय तेन नथी, परंतु गूढ़ते दीधनित छे।

आइ... खाइ। (एक द्रव्य विवाहकुशपरम्परा है) “तेथौ पूर्व (78भी आयामा) विवाहनयना कदन द्वाय उपाधिपक्षे के देवाया आयामा कदन परंतु शुद्धिनिधनयनना बने...”
अं विषय २२-आयामाम छेंगे आयामा न्यौे। “आ बंधू, ते वँगमान परमाने शुद्धिनिधनयनाम बनें (–शुद्धिनिधनयना) नथी।” आइ... खाइ। (३८-३८-प्रथम-क्ष्योपपरम-शांतिक-) उड़ रात्र आदि, अंइ। शोट माजापा छे न्यौे। मत-शून्य-अवधि आदि अंइ बेन, अं उजःआयामा नथी। शोट ज्ञातमान, अं ज्ञामा नथी; शोट माजालीमान, अं प्रभु ज्ञामा नथी।-अं ज्ञामा कोड़ा? आ ‘शुद्धिता’, द्रव्य, अं ज्ञामा छे। पर्याया तो विवाह-अधूतार्थ आयाना था गयो। समझूं छाँट? अर्थ आयामा-२२ मा डेहु न्यौे !! “आ बंधू, ते वँगमान परमाने शुद्धिनिधनयनना बनें (–शुद्धिनिधनयना) नथी-अर्थ वँगमान शूद्धिता-नामूनाम अविभाज्य है।”

प्रथमनिद्धपरिवृत्ते दीक्षा मनुष्य है। छेंगे बुओः
“एततिन सर्वाणि च तत्स्य भगवत: परमालम: शुद्धिनिधनयनबलन न सत्तिति भर्गान तूनकृतामिधापि।”

आइ... खाइ। अंगे बीज रीते कोडी तो छेंगी आयामा-१८आयामा अम आयामा के न्यौे : “गियमााणाणिमित” कुजुड़ायार्थ देते छे के, निरक्षामाना निखिले-मारी भापना माने “में कद गियमाणाणानमसुद” नियमसार नामनु शास्त्र कर्क है। आइ... खाइ। कुजुड़ायार्थ जे शीर्ष नंबरे छे- “सांगन भगवानु विय विय गामान गणी। मागल कुंडुकुंडा माय निधिजसतु मागलम। अं आयामाम अं देते छे छे के, गुरु। आ शास्त्र में मारी भापना माने नामस्या छे, दाँत तमारा बाते नथी। आइ... खाइ। ले “गियमााणाणिमित में कद गियमाणाणानमसुद” नियमालय द्वायवरीयदोषीमान्यं॥ [-पूर्वार्थ द्रष्ट राखत जिनोपदेशने शामीने में निरक्षामाना निखिले नियमसार नामनु शास्त्र कर्क है।] में आलोकाना नाथ तीर्थकरा (उपदेशने शामीने आपणपाणयना द्रष्ट राखत- अवियोगपक्षे आपण कर्क है। आइ... खाइ। समझूं छाँट? छे न्यौे (पाकाौं)? आ शाख बीजे क्यांच आयामा नथी। ‘समयसार’ आयामा-१८ अंें आयामा- कविलुसुक्वचलविलिमिणिणयं।” लये तो प्रथौ दीक्षा में, अमूत्यव्यज्ञाय अं अर्थ आयामा-२२ अं शुद्धितबद्धी। पाकाौं में “शुद्धितबद्धीयं” अंें आयामा छे के अने ‘नियमसार’ आयामा-१८ अंें आयामा- "कविलुसुक्वचलविलिमिणिणयं।” आयामा के न्यौे। निमित्तुज जिज्ञासा वारे अन्तर्वरुणान्यानंसहायः वाच्यामि नियमसार कविलुसुक्वचलविलिमिणिणयं।” अंथौ शेष स्तंभ की धारा छे-देवी अने शुद्धितबद्धीयी सीखूं सांबंधाय है। न्यौे कर्क है। दोहुः छे छे दे शामी (अर्थ वाल) क्यांच नथी: पहले छे छे परं - “कविल” अने "शुद्धितबद्धीयं" अने (‘समयसार’ मा) अंें लुड़ौ लुडु दे "सुक्वचलविलिमिणिणयं।” पाकाौं तो अमूत्यव्यज्ञाय देवी अने शुद्धितबद्धी शेष बीजा है। अर्थौ तो कर्के: “कविलुसुक्वचलविलिमिणिणयं” - में कविली-अमूत्यव्यज्ञाय-पालसी शीखूं सांबंधाय है। अर्थौ तो कर्के: “कविलुसुक्वचलविलिमिणिणयं” - में कविलुसुक्वचलविलिमिणिणयं - अं प्रथौ-अमूत्यव्यज्ञाय-देवी अने शुद्धितबद्धी शेष बीजा है। अर्थौ तो कर्के: “कविलुसुक्वचलविलिमिणिणयं” - में कविलुसुक्वचलविलिमिणिणयं - अं शेष कविलुसुक्वचलविलिमिणिणयं - अं मारी भापना निमिने - “गियमाणाणिमित में कद गियमसारणामसुद” -(‘नियमसार’ नामनु)
श्री नियमसार गाथा ५० - ५७

शास्त्र कर्मु छे). आखं... छ! समजाणु काँटः?

अद्वीयाँ के छे कः: विवाहगृहपति तेऽः शुद्धिनिष्ठयनना भण्डी-शुद्धनयना भण्डी अन्यो अर्थः शुद्धिनिष्ठयनने- (कः छे). शुद्धिनिष्ठयन ते छे तो पर्याय, निश्चयन छे तो पर्याय; पल अद्वीय पर्याय-निष्ठय अन्य पर्याय रतने अंद करीने शुद्धिनिष्ठयनना भण्डी अमेक क्रेवामा आच्छाद छे. समजाण छे काँटः? क्रेव छे कः बतू नें...!

‘समस्तसार’ ११ भी गाथा—“भूतत्वो देसिदो दुः सुद्धाणो”—भूतार्थ ते शुद्धन छे.

“ववहारासूक्तत्वो”— पर्यायनाथ अभूतार्थ छे— “देसिदो दुः सुद्धाणो” भूतार्थने देवायु कु भनन, भो भूतार्थने शुद्धन छे. ‘शुद्धनयनो विषय भूतार्थ’ अमेक अंकु ल्य न बीतियु. अमेक अद्वीय पल अद्वीय रीते ज दीवुः. अद्वीय अमेक कः-शुद्धिनिष्ठयनने भणे, अंदले के शुद्धन तो शानी पर्याय छे पल अन्य शानी पर्याय-निष्ठय जे धूत-निकाटी छे अन्या भण्डी... आखं... छ! समजाण छे काँटः? जीवी बात तो छे, प्रातः!

अद्वीय शु! कः? के—“(जे कः) विवाहगृहपति छे तेऽः पूर्वी (जल्ली गाथामा) ववहारनना कदन करा) उपाध्येयपति क्रेवामा आत्मा उत्तर परतु शुद्धिनिष्ठयनना भणे (शुद्धिनिष्ठयने) तेऽः केव छे” आखं... छ! ववहारननी देवशान छे, दिश्यपट छे.

ववहारननी सांसारिक छे, बोक्ष्टी छे. --अनेव ववहारननी विषय छे. पल शुद्धिनिष्ठयनना भणे ते बता पर्यायो देव छे. उद्भाव-ववहारनननी विकार-ते तो देव छे ज; अनेव असंभूत छे. पल जे सद्भूत पर्याय-निमः संबंधित-शान-आररनी-उत्तर वच अन्य देव अद्वीयाः तो (शुद्ध) निश्चयना भणे-अंदले के निजानी ववजानना आश्रयना दर्जें, निजानी ववजानना आश्रयना दर्जें-देव छे. समजाणु काँटः? पलवां पुजारो दर्ज गयो हः. उद्भाव केटलाई बोल, बधोपशरणा, बधिकाना अनेव उपशरणा बोल क्रोने पली क्रो दीवुः के अनेव केव छे.

आखं... छ! ववजानन परिपूर्ण प्रातु, ववजानवधुः, साक्षात कित्स्वझुः के (श्रीमद राजपंचडोको ‘आय्यतर परिश्राम अवलोकन’ — श्रावण १४ मा वायुः छे के—“जिन सो जैः श्वास, अन्य सोः कर्म;;’ आवा अनेव (अनेव छे ते) जिनू श्वास नरी. (तेमह श्रीमद राजसंहदं पत्रांक-द्वजाने अनेव—“जिनक परित्याग भेकाय, भेदाव नरद काँटः,” आखं... छ! निजाप अनेव जिनप भने अंदको वच्चे छे. अनेक पर्यायां ने अनेक वस्तुमाः छे. ते वस्तुने उपाध्येय-अंदकाव कार्य माहे प्रथम दर्शनमा पर्यायमात्रे केव छे. पल ‘केव’ कोने धार्मी? ‘केव’ मुः शान कोने धार्मी? अनेक के छे के के-के शुद्धवधुः, युवाल, ववजानन; पर्यायां द्वितीया-अनुसरणमाः आत्मा केव तेने देवुः शान धार्मी धार्मी छे.

(पर्यायमा) आदर्शीय नरी; पल शान कार्य माहे तो ते शीर्ष (पर्याय) छे देव नरी? केव तो छे के नरी? — ‘ववहार’ केवुः केव छे अनेव ‘निश्चय’ उपाध्येयमा केव छे. केव तो बने छे. ‘केव नरी’ अनेय नरी. तेमह कः देव : शुद्धिनिष्ठयी (पर्यायमा) केव छे. आ तो जैवी धार्मी, बापु! पल ज्ये नरी अद्वीय धार्मी छे!!

जे देवो निमितती धृति छोडः छे, राग-ववहारननना विकार-नी हस्त छोडः छे, (तेने मा अ भारिः) परतु आ (लोके) के छे के: ‘शुभ करो. ववहार करात करता निश्चय धारो. ववहार सुधारो. अशुभी धारो शुभ करो तो शुभी लाम धारो.’ —विभुतुः नरी. अनिक्ष्मा शाय छे.

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
पट – प्रयत्न नव-नीत: भाग-2
मिथ्याधारण शल्य छ. ओ जिनमार्ग नथी! आहा... झ! भाग अेंयो छ, भाह!
अर्धी कडे छे के: ओ भाा (विभागुजापयीयो) बधा केव छ. “शा आरशी (डेक छे)?” आरश के तेमो परस्परभावो छे.’ ओ शन्त लीलो छे: ‘परस्परभावो छे.’ आहा... झ! डेन्जान परस्परभाव छे. -कच अेसापाळे? -त्रिकाणी शायकासारिणी अेसापाणो पर्याव (भाग) ने परस्परभाव केवांमाग अत्यो छे. समजांू काणू? ‘परस्परभावो छे.’ ल्यो! तपावना भाकने परस्परभाव कडे, रागने परस्परभाव कडे (ओ तो दीक, पण) अर्धी तो निभाजपयीयने परस्परभाव काणू! आही वात छे, प्रयु!
आहा... झ! निलोकाथाभै तैतत्त्व, पूरा भगवान-अेंक समयाम पर्यावपी पाणां-अंकर बिराजे छे. अेंनी हटि कर्नी. ओ सियाँ समुद्रिक्षण क्यारेच वात नथी. लाभ डियाकां करीने मरी जय.... ने, अने शानीतको श्योपशाम करीने ११ नंग अने नव पूर्व मरी जय, अेंमां शुं आयु? आहा... झ! अर्धी ओ परमबजावन, परमस्वाधमालावणी अेसापाणी पर्याव मात्रने परस्परभाव केवांमाग अत्यो छे.

... विशेष कडेशी.

* * *

प्रयत्न: ता. ६-२-१८७८
‘निथ्मास’ पै-गाथा. “जे कोश विभागुजापयीयो छे”-अर्धी शाक्तिकारणे पण विभागुजापयी कइ छे। अंक समयाम पर्यावपी तत्स्व अेंको जे त्रिकाणी शायकासार, पर्यावपी स्प्यास्तो य नथी. उदय तो राग-विकार के ओ तो ज्यांू रही गाया. परस्परभाव अेंको ज त्रिकाणी तैत्तरिसप्तक, अेंनी अेसापाणे अर्धी कडे छे के: शाक्तिकारणे शेव, उपशाम शेव के श्योपशाम शेव ओ बधा पर्यावपी विभागुजापयीयो छे.

अंक पडेलां जमामी आधामां यवकारणया कथन द्वारा (विभागुजापयीयोने) तपाइय आर्यय जाला लायक केवांमाग आत्ता विषयात. उपाधियो अर्ध ज्यांू रही कर्नो. अने ज्यांू नर्थ ज्यांू. आ विषय ‘मोक्षार्यप्रकाश’ तात्तमा अध्यामां निथ्मासास-यवकारणुसामां आत्ती गायो छे-यवकारणयांने ज्यांू रही कर्नो कइ छे ने...! त्यां ज्यांू नर्थ ज्यांू छे.

अर्धी कडे छे: “परंतु शुद्धनिश्चयनया भणी,” अंठी के त्रिकाणी शुद्धस्वाधमाना नय आर्यय नयातभ विषय, अंशा भणी ( तेयो (–विभागुजापयीयो) केव छे.)

नय तो शुद्धस्वाधमानो अंक भाग छे. शुद्धस्वाधम प्रमाण छे. भावशुद्धस्वाधम नृू! छे पयवी; पण तो प्रमाण छे, अवयवी छे; अने तेमा निथ्य अने यवकारणय बे अवयव छे. निथ्यनय पण अंक अवयव छे अने यवकारणय पण अंक अवयव छे. प्रमाण छे तो पयवी. जेमां त्रिकाणी यवकारण-आत्तो जालामाग आत्तो, यवस्वपूर्व-निर्दिप्तयात्तिमां-जेवांमां-ज्यांमां आत्तो, अने अर्धी भावशुद्धस्वाधम द्वारा अने भावशुद्धस्वाधम छे प्रमाण, पण छे पयवी. निथ्य अने यवकार अेंमा बे भेज-अवयव छे. अंक प्रमाणणा बे भेज छे. नय छे तो अवयव छे अने प्रमाण छे तो अवयव छे. छे तो बे पयवी. समजां छे काणू?

अर्धी तो शुद्धनिश्चयनय पण प्रमाणणो अंक अंस छे. अंस पण त्रिकाणीने पडरे छे. तेने
श्री निश्चयनय गाथा ५० - ५८

अब निश्चयनय कदेवां आत्मों छ। आत्म... झ। समाधूं अंक?

वां वर्ष पढेलां, ८नी सात पढेलां वात छ। ११ वर्ष पढेलां, अंक प्रश्न विकारो बतो। अंक शेष अंक कहुं के: आ मूर्तियु पूजन मो मिथ्याडिति कोस्य छ, सम्ब्रह्मण धारण पाच मूर्तियु पूजा कोती नवी। त्यारे (मे) अंक कहुं: झाड़! शालिक सांबन्ध। नव छे ते शृवङ्ग(शान) प्रभावानो अवयव छे। भाग छे अनेक निश्चय छे ते सेवनो भाग छे। अब तो अंकद्वीप वात आत्मी करी। अमेत तो (ते जवने) अंकमा (स्वनार्द्वानीय) करा ने... ते अंक उँचिये, आ अंकद्वीप प्रभावेय मानी। (पाण) अमेत केह संप्रदायानो वातीता। अमेत तो जाने ते बताता। अंक कहुं के: मिथ्याडिति कोस्य त्य सूची मूर्तियु पूजा कोस्य छ। मे कहुं: अपारे शृवङ्ग धारण छे-सम्ब्रह्मण धारण छे त्यारे नितापूरी श्वस्वभावानो अनुमा-अनंतनो भाग आये। ‘अनंतनो भाग’ ते वपने नहीं रोखे, पाण ते वपने आ शब्द बतो ते शृवङ्ग धारणें नितापूरी श्वस्वभावानो अनुमानो श्वस्वभावानो अनुमानें ने शृवङ्ग धारणें तेना बे बेंद छे-निश्चय अनां व्यवहार। अंकी अनेक अवयव खाने ने...! तेशी जे व्यवहारण धारणो आं सम्बदिनी व्यवहारण धारण छे अनेक आं सम्बदिनी निर्दिष्ट-शेयना नाम, स्थापना, धर्म अनेक भाग बार बेंद-व्यवहारनो निश्चय-‘निश्चय’-मूर्तियु पूजा कोस्य छ। अंकी तो मैदानी धर्म (डिका) नवी। झाड़! सत्ये तो आ छे! त्याम समाधिये? नाम, स्थापना, धर्म अनेक भागे जे निश्चय छे ते सेवना बेंद छे अनेक नव छे ते शृवङ्गभावानो भाग छे-शेयना भाग छे। आ (नव) शाननो झाड़ चने अनेक ते (निश्चय) शेयना भाग छे। जने शृवङ्ग धारणें धारण छे, (सम्ब्रह्मणां वीं! अंकुं शृवङ्ग सांबन्धक अंक नहीं), आ नयना विषय जे नितापूरी श्वस्वभाव छे अनुमान धारणे धारणें तेने भावशृवङ्ग उत्पन्न धारण छे; अनेक भावशृवङ्ग (शान) ने बेंद-निश्चय अनां व्यवहार छे; तेशी जे जे व्यवहारनो विषय जे स्थापना निश्चय छे, अंक सेवना बेंद अर्थात् व्यवहारनो अन्य विषय, ते अनेक (समंतिनी) छे। अंकी अनेक व्यवहारनो विषय होते नवी! आत्म... झा! आ तो ५०-५१ वर्ष पढेलां वात छे। झाड़! अनेक तो अंकद्वीप भावभासन धारण ते मानी शकी। अंक ने अंक अनेक मानी लज्जा, अंक नवी। अंक (पूर्ण धारणे की) संप्रदायानो आत्मी गाय, मुखपातीमारे, माते जे (संप्रदायी मान्यताःने) मानवी, जे अंक नहीं। अनेक तो अंकद्वीप धारणे शयान सत्ये धारणे, तो अंक अनेक मानी। परतु अन्य खान श्वानक्वानीय (आत्मी धारणे) छे तो ते (ते) प्रमाणेय मानी, (अंक नवी।) त्याम समाधिये?

अंकी कहुं: “निश्चयनया बणे” अनेक निश्चयनय पाण अंक पांश छे, अनेक अनेक विषय पाण अंक पांश छे घो! अंक कहुं के? देमे ते नव छे ते अंश छे अनेक प्रमाण छे ते अंशी छे। प्रमाण छे पूर्वावं। शृवङ्गशेयना पूर्वावं; पाण छे विषयी; अंक विषय धारणानो शृवङ्ग (शान) प्रमाण छे ने...! आना धारणे अनेक पूर्वावं बनने विषय करे ते शृवङ्ग (शान) प्रमाण छे। अंकी अंकद्वीपयनयनो प्रश्न नवी। व्यवहारनो विषय छे, व्यवहारनय पाण छे। आत्म... झा! पाण कोने? देमे-जने शृवङ्गनिश्चयनय (छे अनेक) नव छे, अनेक विषय अंश जे छे।

प्रश्न: ‘अंश’ नो अर्थ शुं?

समाधान: अंकी अनेक नितापूरी धारण कहो ते अंश छे। अनेक धारणाशाय आत्मी छे ते पाण।
60 – प्रवचन नव-नीति: भाग-2
अंक अंश था। तथापि ो शायदनाम आकृति थे ते व्यवहारन्यों नियम-अंश था।
अब तो बचक्कान! बच बचक्कान था। निर्देशनयथा तो अनुभु व्यवहारस्वरूप ज था; पण जे पण व्यवहारस्वरूप था। अनो है नय था अ नय पण प्रमाणणो भाग था, अनेक अनो विषय पण अंक अंश था। पर्यायंतर था तो अनो (निर्देशनयथा) विषय नथी। आख्या... हा! आइये तो नय भूवृत्ति करि देभे पण जे भूवृत्ति पण अंश था। कह अपेक्षाेः के-अनेक पयाप नथी आवती ओ अपेक्षाे। समज था कहा? भाषा तो सारी था, बचक्कान! पण जरी म्यामां राजे तो वस्तु तो अंद्र अंश था? आख्या... हा!
अब हे हे--“युद्धनिंदयन मन” पण आ निर्देशनयथा नय पण अंक अंश थे। अनेक अंश था। अंश अंश था। नय नय विषय ‘नयनो विषय’ अंश था। (पणने) अंश अंश थे। आपो ध्वनि अंश था, स्वरूप था। कह तो अत्य ओ लेशी। स्वरूपो याहार परमप्रायिकाक्षम था, अंधू पण लेशी। आ तो वीमे वीमे (विषय) लेशी।

‘नय’ समाजीने ज ध्वनि था। अनेक अंश ज व्यवहारन ध्वनि था। बनारसीदासे (‘बनारसीबिमा’ मा) ध्वनि था। “जिन-प्रतिमा जिन-सारणी” ओ आ अपेक्षाे कहु। “जिन-प्रतिमा जिन-सारणी, कहे जिनागम भाइ।” जेणे निर्देशनयथा वेंदन-अनुसार थयो ध्वनि, तेनेय ज्या सूची (पूर्ण) विद्याध्वनि न ध्वनि त्या सूची व्यवहार आये था। पण अ व्यवहारन, अनेक विषय, ओ पण व्यवहारन्यो विषय थयो। ओ विषय था! बचक्कान, हेक, ध्वनि, शत्रु, शत्रु, (अं) सम्बश्यवारश्चकारो विषय था। (‘समाचार’) उ भी गावामा तो त्या सूची ध्वनि: “जो इंद्रियो जिनिता” जे बचक्कान था अनेक बचक्कानी वाही था अंक इंद्रिय था। शान्ती शान्ती समझु। आ जै इंद्रिय, अनेक अंक इंद्रिय आये था अंक बाह्यिक, अनेक इंद्रियनो विषय-वशेषने खते था। आख्या... हा! बचक्कान तो अंक बिंधु। उभी गावामा बचक्कान कहे था के-अनेक पण तारी अपेक्षाये इंद्रियमा जरले थीकी; अति-इंद्रिय नथी। अंधू पण खत गने ने। जो इंद्रियो जिनिता”– द्रव्य, भाव अने इंद्रियनो विषय-नशेषने खते। खतेनो अर्थ ते तरक्कु लख छनी।

अब हे हे-हे ध्वनि परमर्थार्थानाम, जेणे ध्वनि गावामा श्यामकम थडो, जेने १६ मा मूलतर्थ धडो अध्यात्म पांशु (भाव), पारिशाहिकम धडो, तेहे भोला (उप-उपश्चायस्म-अश्विनि) द्वार भावी भिये। आख्या... हा! ओ द्वार भाव छ भरा। अनेक नय था अने नयनो विषय भे भरे; पण ओ आदरशी नथी; अश्वनाक था। (शतां) अनेक धडी नागी ओ अंकेंट थठ ज्ञे। समझु धाँ? 
अब हे हे हे-हे निर्देशन अंक अंश था। प्रमाणणो विषय बने अंश थारे छे-हद्य अने पयाप। आ निर्देशनयथा विषय तो अंक इंद्रियो श्यामकम, ध्वनि, पयाप विनायणो था; अनेक पण अंक अंश कडेमा आये थ। आख्या... हा! अ तो गंभी वात-भाया था, प्रभु! आ तो टीका भोली था!!
अनेक (बदेंश्री संपादने) ‘बदेंश्रीनां वयानामृत’ कोवै-१०रमा लग्यु छे–“आत्माने तो इंद्रिय अंक श्यामकमानो ज वेष परमर्थो धाराक रकरो थे। शाषक तच्छने परमर्थो केहर पयाप्येन नथी।”

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
हूँ - प्रथमन नव-नीति: भाग-२

द्वारा बताते हैं... संवाद १८५४-५७ श. अमारी दुःखा पालनमा छत्री। अभी चौ ११ वर्षीय उम्रमास। अभी दुःखा चर्चा छत्री। प्रेतानहु भाला पूजा गया बात। भाला लड़ लीयों। १८-२० वर्षीय उम्र। जाने नाटक जेखा गया। ‘अनुयुक्ता सती’ नू नाटक बतानू। मोटे नाटक बतानू। भार आननामे टिकट बताने नने पुस्तक भार आननामे भार। तभी यु बाबो छी अभी भाबन न पह अभी अने अभी अन्यमां आया दिना अक्षु केल्न शुं शुं? मोटे भार आना बीजा न्यायो अने पुस्तक आयो। पुस्तक बोनु। अ (नाटक) मा अक बाहर बताने लह दुक्षा विणा आर्यमा बताने तयारे आर्यमा नकार दुक्षा। वेदान्तमा देखे के ने... “अनुतत्त्व गति नासित!” आधुन क्षेत्र तेनी गति नदी। तो (आर्यः पुष्पयु के) पहोँ भार (मारे) छु शुं? (तया बुने के:) नैसे पढ़ अभी नैसे रत्न पढ़ तेनी साषे लहक दर। त्यालां नैसे अक आंधो आर्यमा बताने। तेनी साषे लहक शुं। अभार बोनी बताने शेषा। शुद्धसिस्... बुद्धसिस... निर्विकल्पसिस... उद्धवसिस... अभो शुं छी। वेदा शेषे दुक्षा एन एलता ज याथ रही गया छे-उदासीनोजः... शुद्धोजः... बुद्धोजः... एन अने तो एनता बर्ष रहा गया? हप नी साव। हट वर्ष। एन शेष बोलाना बताना, त्यां भान तो एन तुं काँहे?

जुह और, आपने शेष आबाद के हा...! ‘समवास्’ बंध अंडाकामा अने सर्वविश्वास अविकारमा छेदे तेम ३ ‘परमात्मकार’ मा छेदे आपे छे। ‘बंध अंडाकार’ संदृश्यकृत छे ने...! बमाणा आघान राखा गया है। “तस्य जगभूषणा विनाश्चत्र विशेषभावानामहस्यसैनिकानांदेवविकाविंशकः, निर्विकल्पकः, उदासीनोजः— शुं तो पर्यायमां पड़ रही शुं नहीं, बारू आशन तो धुव्रुमा। एहा... शुं! आपो के ‘अव्यक्त’ नाछु बोलामा आहे के: “पोते पोताथी ज भाव-अब्यंतर स्पष्ट अनुमानवाइ रहो देखा छतां पड व्यक्तप्रकृति उदासीनप्पो क्षेत्रकृतमां (प्राकृतका) छे बोते अव्यक्त करे।“ के एमराना प्राप्त पड उदासीन है, अजल्दु रमण छे अभी प्राप्ते पड उदासीन छे। अनें आवास अव्यक्तमां छे। समवास ‘गाया-जटमा छ बोल छे ने...! अनें उपर पड बमाणा आघान राखा गया है। अभी आत्मनु लेबुं छे भस! (‘उदासीनोजः’) बीजू तो याँ जा बत तुं काँहे! पड़ अठेला शेषे में ते वपते (‘अनुयुक्ता सती’ ना नाटकमा) साभांजः: अभो... शुं! शुं देखे छे आ तेनिर्विकल्पहं... शुद्धोह... बुद्धोह... अं ‘बंध’ तो आपने छे अभीयाः। त्या बोलाना बताना-शुद्धोसिस्... बुद्धोसिस... निर्विकल्पसिस... (उदासीनोसिस) -अभी बोलाना बताना। अभी आ पादातानामांने पड भाबर न भोने के शुं देखे छे आ।

(अभी छे-) “निर्जननिजशुद्धात्मसम्प्रदायशुद्धानानुसारनुरपत्तिश्वरत्रायकककनिर्विकल्पसमाधिसंजातीतयायसहायानां दुःखानुसारतास्रोतज्ञाननां अन्यमाननस्वस्वाभावानां स्वस्वाभावानां संवेदनो गम्यः प्राप्यः।” हुं तो स्वसंवेदनधी प्राप्य हुं। हुं तो अनात्मना नात्मा अनात्मना बंधनवेदी प्राम हुं। बीजू विती भारी प्राप्ति थाती नहीं। आहा... शुं! “मिष्टिविवशोहं”, अव्यक्त शेष पढ़ो। यहुँ पयाचि न बोली। अव्यक्त-अव+स्थ-भरेदी अवस्था, निश्चयी ‘स्थ ’-भारमा पूर्ण गुण ‘स्थ’, निश्चयी ‘स्थ’. “राग-ह्वेश-मोह-कोध-मान-माया-लोभ-प्रेमिक्ष्यमृद्र्याय, मनोविकारायाय, भावकर्म-श्रावकर्म-नोकर्म-व्याति-पूजा-लोभ-दृष्ट्रुतामूलमोक्षादिरुपनिदानांस्मायावस्थानिर्दिशिशुद्धाधिकारिका ध्वजार्तिमिथ्या स्वरूपस्वरूपविशेषिनिरंतरस्वरुपस्वरूपपरिमार्जितः। शूर्योहं, जनात्रेषु कालत्रयमेव मनोविकारायेव कृतकारिताःशुद्धिनिवेदन, तथा सर्व जीवाः इति निरंतरं भावना करतवः।“ आहा... शुं! ‘सर्वजीवाः’ - अभीष्ट क्षेत्र तो पड़ अभी
श्री नियमसार गाथा ५० - ५३
ब्रह्म. वस्तुमें तो वस्तु छ ने...! 'सर्व जीवाः' एक वात; नृत द्रव, भे वात; नृत द्रव, भे वात; पूर्ण आचा छे, अवे भलाना करवी. आहा.. तू! तू ज्यानन आचार्यानी टीका छे, अमृतंज्ञानार्थ्यानी टीका नथी. भे केलाये छे (एक आ अने भीजे) सर्वनिःशुद्ध (शान अविष्कार) नी पाणण.

अ अवी (कडे छे) जुयो: शुद्ध नियमानन्त्र तेनो ( -विभावुकपप्यातियो ) केव छे. शानतामा तो छे! ज्यानामा तो छे! शापिकस्तो वणरे छे! पण वेट तरीङे केव छे! व्यवहारी विषण अने व्यवहार न होय तो अंकल नियमफलास छ जय छे अने व्यवहारने आदर्शीय भाने तो भिन्नहिन्न छ जय छे. आदर्शी वात है! आहा.. तू! शुद्धनियमानन्त्र भेल है. "शा धर्माधी? दार्षा के तेनो परस्वमाफ छे." अवी सुवी अवले आवृत क्यू. तेनो-शापिकमार्य, उपशमबार्य, भोपशहमबार्य-परस्वमाफ छे. अ परस्वमाफ है. आहा.. तू! मातो त्रिज्ञ धर्माव पीय भीय दिय छे भने अनुभव थयो तो तु तू तू तू के -अ सर्व (शापिक आदिभानी) परस्वमाफ छे. दार्षा के मातो धानमा झोम्मातो तो ध्रुव आवृत है. ते तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू तू

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
है - प्रवचन नव-नीति: भाग-रे
अन विना तब समय धर्म नहीं. अन दार्शन, अन (विभाग गुरुपूर्वायो) परस्वभावो छे,
मात्र देव छे। -अनेम कहे छे. अन्यी वाक्यां पाठां, ‘देव’ पाण्य हो: “पुकारसयलभाव परदर्शन
परस्ताविमिद हैं” पडा टीकामा देव पदेलां लीघुं हो अने पली दार्शन बतायुं छे.
भूमाधुम पदेलां परदर्शन, पली परस्वभाव अने पली देव लीघुं छे। पडा टीकामा देव-पदेलां
देव कबुं अने पली अनु-दार्शन बतायुं कबुं दे, “तेघो परस्वभावो छे, अने तेघी ज
परदर्शन छे,” अनेम कहुं। समस्या है दार्शन? अनेक अनेक शब्दनी दिलछत हो। वाक्यांमा अनेक
अन्तर-हाना-माननी पदा कितना।

“शाराज़पी (देव छे)? तेघो परस्वभावो छे,” मात्र देव छे। - अनेक कबुं। अन्यी
(संप्रदायामा) तो शुभमाननेन देव माननामा परसेवे दिलछे। शुभमान करतां करतां शुद्ध नहीं
थाय? अवरे शुद्ध थाय हिँ तारे छेलो (भाव) शुभमान थाय हो। त्याशुभमानी बसीने शुद्ध
थाय हो। छेलो (भाव) अनुष्मान थाय अने त्याँभी बसीने शुद्ध थाय तेघ तो बनतुं नयी। छेलो
शुभमान थाय हो अने त्याँभी कटता शुद्धबाल थाय हो, तेघी अन्यी शो काँगी हो? (भाषा!) अनेम
नयी। समस्याहुं काँघ? तेघी अन्यी पदेला देव काँघी, काँघ कुं दे तेघो परस्वभावो छे। प्रलय! अन
परस्वभावानो अन्तर्गत करवा जरे तो ते राग थेो, विकल्प थेो, काँघ हे ते पुढ्दल।

भाषा! आ तो निस्पृक मानस भेष, जैन आरक नो भेष तेघी वातो छे प्रलय! आ तो
सत्य ज आतुं हो। त्याभेकावने कबुं, ते संतो-सुनिऊमो आतुं भर्जब कबुं। संतो कहे छे
तेघी ज शीर्ष हो। अनुभवमा आये तो अने अयालमा आये हो, आ धीर ज अन्यी हो। आक्र...
हा! समशय छे काँघ?

‘देव’ कबुं हो? निश्चयन्तना बने तेघो देव हो। धार्शन के तेघो परस्वभावो छे। पली
हदे छे हो: “अने तेघी ज परदर्शन हो।” आहा... हा! गनज वात छे हो। शायिक आहिद थार
भावने परस्वभाव कुं, पली कबुं? पदेला लीघुं के शा काँघे? के तेघो परस्वभावो छे, मात्र
परबाबा हो अने मात्र परदर्शन हो। आहा... हा! शायिकमानी परम्पर, परदर्शन हो! सांभाव्यः
काँघ पडे... मार्ग तो अन्यो छे, भाषा! अनति तीर्थकेदि, अनति देवांची अनंतांकाशी आम
केला आया हो! मोळी नयी शीर्ष नयी। आहा.. हा! निश्चयन्तना बनथी, स्वभावाना
आश्रयना बनथी, अनुं (विभागगुरुपूर्वायों) व्यक्ती ज्या हो-अनुं व्यक्ती ज्या हो मात्र
(तेघो) कबुं हो। ‘देव’ कबुं हो? हे: तेघो परस्वभावो वेशाभी देव हो अने परस्वभावो
छे मात्र ते परदर्शन हो। आहा.. हा! पदेलां ‘देव’ कबुं (पली कबुं के) शा काँघाथी? हे के
तेघो परस्वभावो छे, अने तेघी ज परदर्शन हो।”

आहा... हा! आ वात तो हुजो! अन दिगंबर संतो विद्याय आ वात भीद्वातांना
कुंयांभो मो अनेम नयी। दिगंबर संतो अन्यो अने ते देवर्जानीना डेवांपो. श्रीजे अने
देवर्जाने वेदनाना. त्याले परम्परानाम भुमि भेष। अन्यीसधे स्वघमा जो मात्र अने (त्यां पली)
मुनाऊ घराने देवर्जान प्रास करेची, अनेक ताहत।

आहा... हा! अनेक वार सामना तो परो नाथ! तारी धीर निकागी आंदों नाथ,
अनियम आंदों प्रलय! अनौं विद्याना बने, निश्चयन्तना बने, तेघो (विभागगुरुपूर्वायो)
कबुं हो। “शा काँघाथी? काँघा के तेघो परस्वभावो छे, अने तेघी ज परदर्शन हो।” तेवादर्म

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री नियमसार गाथा ५० - २४

नथी। समझय छ छाँट?

बजावननो मार्ग न्याय-लोकिकी है। अभिन तेस नथी। न्यायी है। ‘प्रवर्थनसार’
गाथा-२६४की टीकामा छाँट छ ने।! बजावननी वाली अर्थत आगममा जे पदरा-वस्तुतुं
स्वदृढ छाँट ते स्पष्ट तत्त्वी सिद्ध धार्म छ। अभिन ने अभिन मानी लेकुं अभिन नथी,
पण तर्क-न्यायी सिद्ध धार्म छ। आ ज दीक्ष छ। बीज (अन्वयी) कोटी दीक्ष नथी। आँख.. छ। कोटी
बुधु यात न रखे बुधु, पण आप न्यायमा छो।

(अभिन कँझु के जे विवादगुणपर्यायो छ तेहो धेर छ। “शा कार्यावती? कार्यावती तेहो
पर्यावरणो छ, अभिन तेसी ज पदरा छ।” अंतरुः कविन्दे जे स्वदृढ (विशेष) ते धेर। अंतरुः
tो-त्या शुमी (शायिकनार्थ) पदरा कोटी दीक्ष। धेर छ, पर्यावरण छ, पदरा छ।

अभिन भारवे कँझु के तेसी ‘समसार’ नै बुधु वगाला धेर छी, ‘मे तो पंदर दिवसमा
वाकी दीवुः,’ मे दीवुः, ‘बापु! (अभिन रीत वाकी जँवुः)’ अभिन आँक्ष नथी। आँक्ष.. छ। अभिन
अंतरुः अभिन शब्दमा, बापु! (वाली गंभीरता है)। आँक्ष! अंतरुः धेर, अंतरुः अंतरुः जलाना भाव,
अंतरुः स्पष्टीकरणो पार नथी, अभिन माध्यमूः मोटी धीर छ!!

अभिन धेरे धेरे धेरे: “सर्वबिवादगुणपर्यायो धर्मित (शून्य) अंत:तत्व (स्वदृढः)”
-कोषा छ। तेहो (विवादगुणपर्यायो) धेर छ। अभिन कविने, कँझु के: पर्यावरणो छ अभिन नेही
ज पदरा छ। ल्यारे स्वदृढ कोटी छ। स्वदृढ शुम छ। तेहे धेरे: भर्षेयर
“सर्वबिवादगुणपर्यायो धर्मित, शून्यांत:तत्वस्वदृढः” छ तेस ‘स्वदृढः’ छ, तेहे “उपायेह
छ।” शून्यांत:तत्वस्वदृढ स्वदृढ छ तेस उपायेह छ। आँक्ष.. छ। सम्जहन्ने-धर्मानी, अंतरुः
निकाह शून्यांत:तत्वचछ छ तेस उपायेह छ।

..... विशेष कहेशे।

* * *

प्रवन: ता. ७२-१८७८

‘नियमसार,’ हुँदुःआचार्य कहे के: आ शाल्त, मे तो मारी भावना माटे बनायुः
छ। आँक्ष.. छ। (गाथा-१८७८मा) छेको शब्द छ ने।! “माग कर्” अभिन शब्द क्यांग
(‘समसार’, ‘प्रवर्थनसार’ आदिमा) नथी। अभिन आ शब्द पदो छ: मे निजत्वानानन्मिते ‘नियमसार’
नामी। शाल्त कदृष्ट छ। ‘मे कदृष्ट छ।’ अभिन रमूः छ, तो
अभिनी धेर अभिन कहे, खुजो। शाल्तने अो कहे छ दे नथी? –अभिन नथी। अो तो अभिन कहे छ
de कदृष्ट छ,’ अो तो भाभाओ भाव छ। मे मारी भावना-अद्व आंत:तत्वस्वदृढ भावनान; अंतरुः
वार्तावर्ती अंत:तत्व-माटे आ (शाल्त) बनायुः। आँक्ष.. छ। छे ने छेके: ‘माग कर्।’
भावना माटे मे कदृष्ट, अभिन शब्द छ।

आँक्ष.. छ। आ पौरी माथा तो अलोकित है। पडेका आवी गयुः ने।! जे कहे पण
विवादगुणपर्यायो छ, ते व्यभिचारत्थी जागवाला छ, अभिन कहूः कदृष्ट। “पर्यंत
शून्यनिर्माणना भूः तेहो धेर छ।” जागवाला तो छ, पण धेर छ। व्यवहार आवे छ,
प्यार्य है, ते बृहु जागवाला तो छे पण धेर छ। समजाँकु दीक्ष? जे पर्यंतने न शालो तो
तो यथार्थ द्वर्या आध्यात्मिकी ज पदरा नथी। आंकांक कदृष्ट जशे। प्यार्य है, व्यवहार छे, ते
जागवा लायुः।

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
हृद-प्रज्ञान नव-नीति: भाग-२
पढ़ दोने? के-के ने पोलाना स्वभावनों अनुष्ठान, आंदोलन कूच बनाया (तो अनुभव वर्ते छे तेने). (अद्वैत के:) जेने आंदोलन कूच, द्रव्य, नित्यानंदनो अनुभव छे; तेने तो आंदोलनोत्तर निदिया द्रव्यो आश्रय अने अनुभव सेवन, अंक ज उपादेय छे; (बाइबल अनुभावो) एव पढ़े छे. आख... दू! शा कारहर? कारहर के: "(ते) परस्परभाव छे." आख... दू! अंकी तो पर्याप्त-आंदोलनो पढ़े परस्परभाव कहो! (अंकी) निदिया प्रक्रिया अधिकारी. अंको तो पर्याप्ते छे पोलानानां; पढ़े अंके पर्याप्ते द्रव्य स्पर्शं स्थिति नथी, अंको अपेक्षेप (तेने) परस्परभाव कहो. समझाणुं पढ़े? (के-के) अंक पर्याप्ते ते ते प्रवाह तो निर्देश दरे छे, अनुभव दरे छे; तेने छतो, ते पर्याप्त, 'प्रवाह' ने स्पर्शं नथी. ते कार्याणी तेने पढ़े की, परस्परभाव कहो. आख... हृद !

संस्कृत टीकामां अंक ने...! "कृति? परमाशालाता।" "अत एव परद्रव्यं मरगति।"
- "शा कारहर? कारहर के, तेने परस्परभावे छे, अने तेथी ज परद्रव्यं छे।" आख... हृद ! अंक तो परद्रव्यं छे! अंको अंकी अंकी पढ़ द्रव्य के: जेने परद्रव्यांतर मारी नथी पर्याप्त आवती नथी, राजमारं अंक आवती नथी, तेने पर्याप्त अंक नथी पर्याप्त आवती नथी, अंको अपेक्षेप मोत्यान क्षयोपसम्म, क्षयिक आदि पर्याप्ते पढ़े परद्रव्यं छे। हृद ! परम सत्य तो आ छे, त्र्यो! ते (पूर्वांक परस्परभावो) परद्रव्यं छे। नथी जे नथी (शुद्ध) पर्याप्त, जे मारी आश्रयी उत्पन्न तो अने अंकी ठेके छे अने अंका आश्रयी वृद्धिने प्राप्त यथा छे; ते पर्याप्तणा आश्रयी उत्पन्न तथी नथी, ठकी नथी, वृद्धि पावती नथी। आख... हृद ! अंक तो अंकी तथा छे, भाइ! समाधान छे कहं? आख... हृद! परद्रव्यं छे!

द्वे स्वदर्श कहे छे: "सर्व विभवशुशुपसयोथिर रदित शुद्धांततत्त्वसपुः;" अने स्वदर्श कहे, अने पढ़ी स्वदर्श आधार (विशेष) कहे। स्वदर्श ने...? शुद्ध अंततत्त्व तत्त्व अर्थात् भावा।

'तपार्थ' आखे छे ने...! "तत्त्वनादान सम्प्रदायनम्" (- 'मोक्षशाश्व' /अध्यात्म-१, दू२-२). त्यां 'अर्थ' अद्वैत द्रव्य, गुण अने पर्याप्त अने 'तप' अद्वैत भावा. अंक व्यक्तिक्षण 'मोक्षमार्गिकाशक' मा आयूं छे: तपा+अर्थ=तपार्थ। 'तप' शुद्ध अने 'अर्थ' शुद्ध? द्रव्य, गुण अने पर्याप्त अवलोकने 'अर्थ' देखे छे। अने अंकाने भावने 'तप' देखे छे। अंकी अंक शुद्धिली शुद्धी अंको स्वदर्श कहे।

शुद्ध कहे: "शुद्धांततत्त्वसपुः - शुद्धांततत्त्व-अंतत्त्वावस्थपुः। अंक तेहुः: अंतत्त्वावस्थपुः, शुद्धांतततत्त्वसपुः, शुद्धांतत्त्वावस्थपुः-अंक स्वदर्श कहे अने स्वदर्श ने आधार परमपराशास्मिकादेश कहे। आख... हृद ! गृह वात छे, भगवान! आख... हृद ! "शुद्धांतततत्त्वसपुः आ स्वदर्श" - शुद्धांतत्त्वावस्थपुः अंक स्वदर्श। शुद्धांतत्त्वावस्थपुः अंक स्वदर्श। अंकी अंकी द्रव्यने नथी द्वारा पढ़े पढ़े 'भावा' ने द्वारा छे। जारे क्षयिक, ओषधिमाणिक पर्याप्ते परद्रव्यं कहुं तो अंकी अंततत्त्व-वात्त्वसपुः स्वदर्श कहुं, ते पर्याप्तने जारे परद्रव्यं कहुं तो अंततत्त्व जे स्वदर्शभाव, निदिया भावा... हृद ! (अंस्वद्रव्यं) भावाने पढ़ी द्वारा। आख... हृद ! शुद्धांतत्त्वावस्थपुः अंक स्वदर्श, ते उपाधि छे, 'उपाधि' नागर्थ: अंक अनुभव कहा तपाहि छे। अंके अंका आधार।

द्वे कहे छे: "परेषस सहजाता" - अंक-अंततत्त्व-अंतत्त्वावस्थ ने...? द्वे अंके भावनी
हट – प्रवचन नवरीत: भाग-2
’फु’ पयारी जेती नथी, बादे औनो पश गर्व नथी. अाला... बा! सम्बंधितवच पोतानी पयारी अाला जुटे छे अने पूरे तांत्रिक (स्ववच छा) प्रापळ जुटे छे. अाला... बा! मुन्य तो ऐऩे (प्रापळ) अव जऩ ह। इति (पयारी) तो भाज्या लांपक शील छे अने अे पयारियाँ सम्बंधित अेम नाले छे, फु तो तूठपत छॅ (ऩोताने) तूठ साले छे.
अाला... बा! शु फु छे? फुऩे अाला जूडऩे भाष्याप्रापळ स्ववच्य पश ज्यां पयारी जुडऩे छॅ तो तूठतूठ लांग छॅ. अाला... बा! क्या आिर्तनी फयारी अने यां वीतारागे हेविनी फयारी! पयारियाँ पामरला जुटे छे अने स्वनुमां प्रस्तुत जुटे छे.
अाला... बा! भापा तो साडऩे छे, प्रापळ! समन्ध अेवी आ वस्तु छे. आ अलौकिक वाले छे, भापा! अस्तारे तो अेवी गठबाह छछ (छछ) छे के माणसने आडऩे पहे! फु तो मूऩ सम्बंधित अेने तेनो विषय अे शु शील छे? अने अनुमूण वर्तमान सम्बंधितमां शु अनुमूण याय? अने अे अनुमूण-पयारी छे दु गुऩे छे के द्रव के? (अनेनु दु बान नथी). (भाचॅ!) अे पयारी छे! अेवी ते अफऽके तने पादध्वमां ज लीले छे.
अाला... बा! (क्या अे प्रापळी अलौक शुद्धमाखय?) अने यां सर्नीनी पयारी? क्या स्वसंबंध-आिर्तनी पयारी? भुमि तो प्रापळ स्वसंबंध जेनो ट्रेकमाक (महोद्राप) छे. अेवी पाक ‘सम्पत्त’ गाधा-प मां छे. स्वसंबंधतवस्ती अस्तारे पोतानु + सम अस्तारे प्रत्यक्ष आनंदनु + वेढऩे, अे अमारा अलौक (नी) महोद्राप छे. जेन गागन (उपय) पोजऩना महोद्राप मारे छे तो गागन (पोर्टमा) वाले छे, तेम आ प्रापळ स्वसंबंध, अतीवय आनंद, अे अमारा अनुमूण नी महोद्राप छे. जि अेवी अने पश ‘स्वतन्त्र’ कह दी|ी छे. दाराने, स्वनो-दिक्षानीए आधुनिकऩे, जिक्रियानी सेवन करारामां ज सम्भव्यन्त; जिक्रियानी आधुनिक करारामां ज सम्भव्यन्त; जिक्रियानी आधुनिक करारामां ज शुद्धवच्य; जिक्रियानी आधुनिक करारामां ज कर्मशाला (प्रापळ बाप के)!
(अे वी सर्न पयारियाँ अेवीं ‘स्वतन्त्र’ कहऩे कहऩे!) आऩा... बा! आऩी वात छे!! अने स्वसंबंधिताबाहुल अलौक ‘शुद्ध मृत्तत्त्वस्वरूप’, ‘शुद्ध मृत्तत्त्वस्वरूप आ स्वतन्त्र’
क्या, अे (स्व) द्रव्यो पाती ‘आधार’ डेव्हे. आऩा... बा! भावो आधार! वानी स्वद्वनो आधार! अे ‘बाव’ ने तो ‘अनंतत्त्व’ दुऩे समजव छे जाइं? दिक्रियानी स्वभावभाव जे शान, दर्शन, आनंद अदाक अनंत गुऩे छ अने अंतत्त्व-‘स्वतन्त्र’ कहऩे. तो अे ‘स्वतन्त्र’ नो पाती आधार! आऩा... बा! अनंत अनंत गुऩे छ अनो अेक आधार परमपालितमादनाक छे! अर्थ अे अेकुप अहे न...? अे तो अनंत छ; सम्बंधान-सज्जनावाल वायु आया ने..! अने अंतत्त्व-अंतत्त्वस्वरूप स्वतन्त्र दुऩे छे ते स्वद्वनो आधार?! –आ तो बापु, अंतरामी वातो छे, बापु! शु बाप? अने द्रव्य नहीं, ‘बाव’ कहऩे. अर्थ स्वद्वना
श्रीनिवास गाथा ५० - ५२
आपने ते बावहे अंगरत अंगतबेचभावस्वरुप अंतररत स्वप्रतिविदेशक सघनान्तरतीर्थस्वरूपस्थानाधारः। आपने ते बावहे अंगराप्रतिविदेशभावस्वरूपस्थानाधारः। आपने ते बावहे अंगरत अंगतबेचभावस्वरूपस्थानाधारः। आपने ते बावहे अंगरत अंगतबेचभावस्वरूपस्थानाधारः। आपने ते बावहे अंगरत अंगतबेचभावस्वरूपस्थानाधारः।

“अनस्य खलु सहजज्ञान-सहजदर्शन-सहजचारित्र-सहजपरम्पराविपशोषणाविस्मायक स्वान्ततमतत्तथस्वलुकप्रथाधारः।” आपने ते बावहे अंगरत अंगतबेचभावस्वरूपस्थानाधारः। आपने ते बावहे अंगरत अंगतबेचभावस्वरूपस्थानाधारः। आपने ते बावहे अंगरत अंगतबेचभावस्वरूपस्थानाधारः। आपने ते बावहे अंगरत अंगतबेचभावस्वरूपस्थानाधारः।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अमारूँ मन परमाणु माती स्वधर्म परम पुरुष शरीरी त्रिते अन्तर्म वेदान्त है। (अे नमक नीति प्रथा द्वारे दृष्टि त्तत्त्ववृत्ति स्वाभाविक नामिन आ दीक नाम है)।” आहारम.. झ! आ मून-आ हिंदुस्तान संत, अतीतिय आत्मां मिलो वे जसे। अंदर अतीतिय आत्मां मिलो। इसे कहा है। जें हरियादं कहती आती हैं तेह हृदयने अतीतिय आत्माने भारती आती हैं। अभू तो सबकाहरेरे पड़ा आत्माको अनुभव छ पड़ा ते अंधे छ। अने अंधी (मूनिने) तो आत्मानी मोटी भारती आती हैं। अंदर अंतर्म विधन छ। आ तो टीका बनी गइ, नंतर अभू ते। पड़ा अभू अने अंधी विकास आता के छे ते ‘आत्म’ निःसाराती पुरुष जाही’, ते कार्ये टीका वषय जाय छ।

आहा.. झ! अंधीने तो जसीः “शुद्धांत:तत्त्वस्वपन आ स्ववधर्मो आधार” आहा.. झ! भारे वात, झाड़! चलों स्वधर्म आनंदताप स्ववधर्म छ। अने स्ववधर्मो आधार अने ‘स्ववधर्म’ देम कहूँ? केमॉडे, अने-पिसैने पिसैने क्यूँ ने..? तो अने अपेक्षाने आ भावने ‘स्ववधर्म’ छ।

आम तो “द्विती इति द्वित्ये”। ध्रुव देने बिशीचे? “पंशा:तुषायत्वमात्र भि ज्ञाती यहाँ। भि ज्ञाती रें उसें अजयमूद्र कु त सतादो।” १।। त्यथा ‘द्वितियत’ (स्त्रावपपरेणोन्यत्वमात्र विज्ञात ध्रुव छ) शुद्ध परिवर्तित विदीर्दी छ अने ‘गच्छदी’ (विज्ञात परिवर्तित विज्ञात ध्रुव छ)। विज्ञात परिवर्तित विदीर्दी छ। इह शास्त्रेनों बेह पाथूँ। ‘द्वितियदि गच्छदी’ तां ‘सम्बावत्पुरयाहु जन। द्वित्य ते भागते अण्णमूहू तु सतादो।” २।। त्यथा ‘द्वितियदि’ (स्त्रावपपरेणोन्यत्वमात्र विज्ञात ध्रुव छ)। शुद्ध परिवर्तित विदीर्दी छ अने ‘गच्छदी’ (विज्ञात परिवर्तित विज्ञात ध्रुव छ)। विज्ञात परिवर्तित विदीर्दी छ। इह शास्त्रेनों बेह पाथूँ। ‘द्वितियदि गच्छदी’ तां ‘सम्बावत्पुरयाहु जन।’ अने सहाराव (३४) पपरीण छ। भले विकास यो क्षण पण ऐं पर्यत्व तो अने छ ने..! अविलक्ष सिद्ध कर्मुँ छ ने..? (पपरीण)। अने अो अविलक्ष सिद्ध कर्मुँ छ। अने (अे) विकार पर्ना अविलक्ष सिद्ध कर्मुँ नथी। अन्यायुँ। भुजो: “ते ते सहबाहुपायोने इति इतिहास छा।” अर्थत मस्ताथै अक्षमेक छै। ध्रुव क्षण सताथी भिन्न नथी अंपत्तु हितरु। समस्तां अंपत्तु? (अंधीने कहूँ छे:) शुद्धादिने जे निकाश्य छै, अथैं स्ववधर्म; अने आधार “स्वधर्मपरमपरिपिलाभावालक” –स्ववधार्म परमपरिपिलाभावालकालक। आहा.. झ! भुजोः स्वधार्मपरमपरिपिलाभावालकालक। (अभू तो) परमाणुमात्र रण परमपरिपिलाभावावालकालक क्षण छ। पण अने भई आ शाक्तवाह वीदी (सहस्तर) छछ ग्रामात्मण। नंतर भतायैह छ तो परमपरिपिलाभावावालकालक। पण परमपरिपिलाभावालकालक तो देवद्रुप छ क्षण मात्र छ। पण अंधीने जे ‘परिपिलाभावालक’ रक्षे ता। (सहस्तर) ग्रामात्मण) रक्षे नथी पण त्या ‘शाक्त’ रक्षे। कारण जे जसे परमपरिपिलाभावालकालक अंदर शाखावालक निकाल छ। अने अंधी परमपरिपिलाभावालक रक्षे छ। अने भूसैनी भासा कर्ती नाथी। अने सहस्तर, सहस्तर अथि भाव वीदी तो अने भाव भीतर (व्यवहार) परमाणु वाणिज्यमात्र तो छ नथी। झु कः नथी? समस्तां अंपत्तु? त्या छछ ग्रामात्मण ‘शाखावालक’ रक्षे छ। अने परमपरिपिलाभावालकालक। पण परमपरिपिलाभावालकालक तो परमाणु आधि देवद्रुप छ क्षण मात्र रकण (सहस्तरी) शाखावालक तो परमपरिपिलाभावालक मात्र छ। भारे अने परमपरिपिलाभावालक क्षणा आत्मा न समझ अंदर आसाने शाखावालक रक्षे। अने अंधीने तो एते सहस्तर, सहस्तर, आधि भाव रक्षा अने अने ‘आधार’ परमपरिपिलाभावालक छ। अंधी जे सहस्तर, दृष्टि, आनंद आधि भाव रक्षा ते भाव चैत्यन्त्य छ।
श्री नियमसार गाथा ५० - ७१

अंतः अनो आधार परमपारिप्रधानिक-मांक द्वारा।

रिसाहार: आधार-आध्यात्मिक ने शरी गाथा के अंक २ छ.

समाधान.- आ अंक ३। पदेवा ने भेद कर्म। छे बे। पण प्रज्ञाम ने नसी। प्रज्ञाम आधार-आध्यात्मिक नयी। आधार-आध्यात्मिक तो बे छ। भाव अंक ४। पृष्ठ अंक ४। लघु 'भाव' आधार अने 'भावा' आध्यात्मिक छ। पण प्रज्ञा विषमाने ने भेद नसी। आशा... बा! जीवण वात छ। भाव! समज छ कांड?

अंकामा 'परमपारिप्रधानिक-मांक' कलो। अने त्या ('सम्यक-मांक-हमा') 'स्वभाव' कलो। त्या आत्माने ये छ तेधी स्वभाव कलो। अंकामा आत्माने ने लीडी छ पण (परम) परमपारिप्रधानिक-मांक कडेवा पदेवा अनो धारण, दर्शन (आदि) निर्देशानिक लीचा। अने भाव तो वीण (व्ययमाना) नसी। आशा... बा! आशा भरी टीका छ!

"सुद्धार्तस्तत्त्वसङ्गः सहजपरमपारिप्रधानिकमांकविकल्पकारणस्मुक्ताः" आशा... बा! "सहजसम्यकसर ड्वॉर, सहजस्वयंवर, साधयक, भूतार ड्वॉर, (अंकाक्ष्य छ।) पण अंका तो सुद्धार्तमांक शंक पुस्ती छ ने।।। तो सुद्धार्तमांक मांक ने त्रिकानी ने दो छ; पण अनो भाव सहजस्वयंवर पुस्ती सिद्धित्रिकाणीवान, अनो आधार परमपारिप्रधानिक-मांक छ, (अंक भरभर)। समज छ कांड? जूनो! 'स्वभाव' ने आधार परमपारिप्रधानिक-मांक (अंका सहजसम्यकसर) छे।

पर्यायेन पण परमपारिप्रधानिक-मांक छ। 'ज्योत्व' मा तो मिथ्याव-राजधानी प्रज्ञाने पण परमपारिप्रधानिकमांक द्वा; परमपारिप्रधानिक-मांक नसी। राग-देह, पुष्य-पापनी पर्याय परमपारिप्रधानिकमांकनी पर्याय छने अने अपेक्षायी परमपारिप्रधानिकमांक कड्डो। उपासकमांक; अने परमपारिप्रधानिकमांक; वेदिकमांक, अने परमपारिप्रधानिकमांक अने त्रिकानी अने परमपारिप्रधानिकमांक। अने अपेक्षाये राजने पण परमपारिप्रधानिक-मांक द्वा। 'ज्योत्व' मा राज छे।

पण, अंकामा परमपारिप्रधानिक देम लीडी? नक्सले तो परमपारिप्रधानिकमांक तो छे द्रव्योने छे। पण पदेवा भाव बतायो दे आ ढळ छ, अने अनो आधार परमपारिप्रधानिक छ। आशा... बा! समज छ कांड? जूनी (स्फुंण रेड) अंकी वात छ, भाव! "सहजपरमपारिप्रधानिक"... ब्यो! छे ने? परमपारिप्रधानिक, अने परमपारिप्रधानिक भरभर।

'पंतास्वत्तकाः' मा "परिशिष्टम्यवति पारिप्रधानिकः" पाड़ छे ने।।। पारिप्रधानिकमांकने परिशिष्टम्यवति। अंकामा तो सहजस्वयंवर, दर्शन, आदि भाव द्वारा अने अने स्वभाव भरभर। तो अने 'आधार' परमपारिप्रधानिकमांक, ज्योत्व, निर्देशिक ढळ! आशा... बा! अने शाखामांक छ। अपराधायाने भाव, ज्योत्व (छ।)

अंकामा आ जे सहजस्वयंवर निर्देशिक छ अनो आधार सहजपरमपारिप्रधानिकमांकविकल्पकारणस्मुक्ताः। केऊं लवणा? दे: काराघोषासरुं ने अङ्गमोशनोने विषय छ। त्या तो आधार-आध्यात्मिक, अंकामा भेद पण नसी। पण ज्यादेस समस्तवुं क्षेत त्या शु ह तापे? भेद पारीने समस्तवुं पें छे। समजानुं कांड? आशा... बा! सहज परमपारिप्रधानिकमांकविकल्पकारणस्मुक्तां अने लवणा आवी वातो छ!! शाखाः

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
आ ( पत्री ) गाथामां जरी आधार-आधिय ( कर्त्तवी ) बेवुं छ. आ जे गुणों छे-निर्देशन राखन, अंक, अन्तर त्वेतय-तेने अंकर्षण ‘आधिय’ कधां छ अने द्व्यने ‘आधार’ कधुं छ. पाठभुं छ ने...। “शुषुन्दातसत्तत्त्वस्वरूप स्वदर्श्यमुपादेवम्” – मू०-अंततत्त्व तो अंतत कर्षण-अन्तर्विदु गुणों छ अने अंततत्त्व कर्षने स्वदर्श्य कधुं। कर्षने क्ष्यारे पर्यायने पर्याय कधुं त्याचे गुणोने स्वदर्श्य कधुं (अं.) अंततत्त्व। त्याचे (केठे छ दे:) परमपरिशासिकामलकवलकव, अंक० (कर्षन) समयसार, निर्देशकीय, जे सम्यक्षरनो विशेष छ, ते गुणोने ‘आधार’ छे। अने अं गुण जे अंततत्त्व छे ते ‘आधिय’ छे।

(‘समयसार’) ‘संवर अविकार’ मा जे आधार-आधिय दीवुं छ ते आनाथी भीज शी छे। शाष्टीय सांभणे, छु शी छे? त्या तो अंबेकडूं छे: “उपयोगेः उपयोगः” अर्थत् उपयोगमां उपयोग छ। अंक० पाह छ। अंक० अंकव अंक० दीवी के: अंहुर आलमा शास्त्रसूत्र-अन्तर्विदु छ, अं वसुणः (ते) शान्तिकाया (अर्थत्) जे निर्मित सम्यक्षर-शान-आर्यतिनी दिक्या, तेनाथी शापामां आये छे। ते कर्षले, अं से सम्यक्षर-शान-आर्यतिनी निर्मितवितरजेशी ‘पर्याय’ छे ते आधारे छ अने ‘द्व्य’ आधिये छे। आखा... श्! सांभणे! आ (अंत्के) वातमां बइ छ दे? त्या तो आलम रागनुः क्रेत अं बाव निश्चय गणे छ। व्यवहारकर्षणयों जे राख छे, विकलचय कें, अंक० क्षेत्र पाष निश्चय अं बाव पान निश्चय (छ); अंनी साथे आधार-आधिय संबंध नये। अर्थत् ते रागधी स्वभावधी हस्ति वाय छे ने संवर वाय छे, अंम नये। त्यारे कडे छे: संवर-दहु (उपत्त) वाई देवी रीते? के: अं निर्मितवप्राय, वितरजेशी आलमाना आश्रयथी उपत्त वाय। (पाष) अत्यारे अं वाय (अंहुर बाजू) राघो। पाष वितरजेशी पर्यायमां-उपयोगमां उपयोग छ। उपयोग अर्थत् वितरजेशी पर्याय जे मोक्षार्थकें उपत्त वाय तेमां आत्मा छे। अं संवर अविकारनो आधार-आधिय जुठे अने अंक० (‘निर्मितवसार’) नो आधार-आधिय जुठे। -अंक०मां तहु उपयोग-आधियमां देव छे। त्या जे जुठे अं तो द्व्यने आधिय जुठे अने निर्मितवप्रायने आधार देव। जीवीत वाय छे, बापूं! आ तो अंहुरनो मूळ बइ जुठे सुवाम है। “उपयोगेः उपयोगः” अर्थत् उपयोगमां उपयोग छे। अंम जुठे ने..। पेशेला उपयोगमां, अंक० निर्मित-वितरजेशी-शोधिपयोगमां आत्मा छे। अंक० दे, अं आधारथी आलमा ज्ञानामां आये छे। समाजांतु जुठे। भेदात्मामां-रागधी निर्मित कटने-शुद्धसम्यक्षर-शान-आर्यतिनी पर्याय वे ‘आलमा शास्त्रसूत्री छे’ अंम ज्ञानामां आये छे। ते कर्षले सम्यक्षर-शान-आर्यतिनी पर्यायने

*आधार-आधिय’ विषे पूं गृहेकत्रियांके दृष्ट दरी कर्त्तवी विशेष प्रवक्त आयुं तेना विशेष अनुसंधानावर, अंही आत्मा प्रवक्ताना शेष भागां नूं. "८ उपर आपात्मां आयो छे।*
श्री नियमसार गाथा ५० - ७३
शुद्धिप्र्योग कहो अने अथामा आत्मा रहे छे; अद्भुत अनंत आ (द्रव्य) ज्ञानामां आस्यः ; उने दर्शे ‘समर्पणमन-हात-अनन्तिनी परिष्ठति’ ने आधार कही अने ‘द्रव्य (आत्मा)’ ने आधिक कहुँ; आदि वाता छै!! भाई, नृत्य आ तो थोडी थोडी आवे छे. रे आवे ते आवे. आ
विषय (ज) अथो (जगत्) छै!! बीचे देखले पण आवे छे. पण अथारे तेनु त्म तन्त्री.
(अथात् ‘नियमसार’ मा जुडें विषय छे).

‘प्रवर्तनरात्’ मा तो अम आवे छे: पर्याय ‘कार्य’ छे अने द्रव्य ‘कार्य’ छे त्यां
आ सिद्ध करुंते छे: पर्यायी द्रव्य वक्तमा आवे छे. तेथी ‘पर्याय’ कार्य अने ‘द्रव्य’ कार्य अने
पछी त्यां ने त्यां अम थां दीवृंते छे: द्रव्य ‘कार्य’ अने पर्याय ‘कार्य’. कार्य दे, इत्या
आधिकारी पर्याय उपलब्ध याय; तेथी ‘द्रव्य’ कार्य अने ‘पर्याय’ कार्य, अम थां अने
’पर्याय’ कार्य अने ‘द्रव्य’ कार्य-अने वस्तुनी (अर्थत्) अस्तित्वानी सिद्ध करवा माहे अम
कहुँ.

’(‘समासार’) संवर अविद्वारानां जे आधार-अविद्वार धन्यः— ‘उपयोगे उपयोगः’—
उपयोगानां उपयोग छे. अल… बा! आ शबद शुद्धिप्र्योगाध्यायः. शुद्धीतराजी शुद्धिप्र्योगानां
‘आत्मा’ छे. अर्थात् शुद्धिप्र्योगाध्यायी ‘आत्मा’ ज्ञानामां आवे छे. ते दर्शे, शुद्धिप्र्योगने
आधार कही द्रव्य शुद्ध के निश्चित छे तेने आधिक कहुँ. समज छे दाँडः? त्यां तो, (आत्मा)
व्यक्तिवर्तन्तनी ज्ञानामां आवती नन्दी; (तादात् तो) व्यक्तिवेदना, ध्या, दान, प्रति, भक्ति,
लाभ-क्रेडी-अनेक कहे, कोट लवृ थुंडी करें, तो पण ते तो राग छे, अनेकाली आत्मानून बाध
याय अम नन्दी; गे अतां पूरुं च अने (साधारान) बेदविश्वास-संप्रसंर (विविध पूर्ण प्रसार
कहुँ छे). (त्यां ‘कर्श’ – १३२ मां बेदविश्वासनून महत्त्व उपस्थित कहुँ छे:)

“बेदविश्वासत: सिद्धा: सिद्धा ये किल कचन।
अस्वेप्रमातो बाध बाध ये किल कचन।”

“[श्लोकार्थः] जे कोट सिद्ध थाये छे ते बेदविश्वासनी सिद्ध थाये छे; जे कोट बंधन थाये छे
ते तेना ज अभाय धुः थाये छे.]” – अद्भुत सुवृ जे कोटने मृित प्राप दरी छे, ते
बेदविश्वासनी. ‘बेदविश्वासत: सिद्धा: सिद्धा ये किल कचन’ निश्चित जे सिद्ध थाये छे ते
संघाचा, रागी भिन्न पवने, पोतानी अनुवृत दरीने सिद्ध थाये छे. ‘अस्वेप्रमातो बाधा’
बेदविश्वासनना अभाय धुः थाये छे; कर्मना कार्ये नन्दी. आला… बा! समजांतु काँड? माहे
त्यां पलकी ज गाथामां, अनेक ट्यार्मां, अम कहुँ छे:

आलाने, राग साथे आधार-अभाय संबंध नन्दी. त्यारे केनी साथे संबंध छे? के: शुद्धिप्र्योग
जे आलानी मनुष्य थाने थायो, (अनेक साथे संबंध छे). शुभायुष राग ते अशुद्ध
छे; तेनाची आत्मा, भ्यालमां आवती नन्दी; गेटेदे संवर थतो नन्दी. पण जे रागशिल
शुद्धिप्र्योग छे तेनाची (आत्मा) भ्यालमां आवे छे; माहे शुद्धिप्र्योगने ‘आधार’ कहो अने
द्रव्यने ‘आधेय’ कहुँ.

आला… बा! जीवी वाते छे, भाई! सङ्ग्रहानां अम ने अम थाले छे. अे बीते तो आ
(विषय) कहण पड़े अथो छे, बापु! अर्थी जे छे अे बीच वीज छे.
अर्थी तो अनंततत्त्व आत्मा (अे स्वकृत्); अने अंतर् जे भाव-परमाणुभावेने, अर्थात्
Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री निःयमसार गाथा ५० - ७४

उपवास, भार! भाज्यसने (अंतर्नो) परिवर्त्य स्थ:; अभ्यास स्थ:; अने आधारी (उपर उपरखी) मानने अनन्तरादशी रंजी मूर्ति छैसे।

‘संपर अधिकार’ मा पर्यावरणे ‘आधारा’ झड़ी; केम दे पर्यावरणे (द्रव्य) ज्ञानावां आवे छे। कांग द्रव्य वटे द्रव्य ज्ञानावां आवातू नथी। अने वीरराजीपिपयां व्य स्वस्थ्युप यह, अनेकाथि (अाला) अनुसरणामा आयो; माते वीरराजीपिपयां (उपयोग) द्वारे अने अभ्यास, उपयोग- ‘अाला’ छे; (अभ्यासे के उपयोगामा उपयोग छे); अने अनान (उपयोगाणी) ‘आधारप’ आयो; अनेक झड़ी। कांडे: अनेकाथि (उपयोगाणी ‘अाला’) ज्ञानावां आयो। ज्ञानावां न आवे त्या सुधी ‘आ आयो छे, अने आ गुष्ट-पर्यावरण छे’ अभ्य आयो कमायी? समाजांत कांडा?

‘समयसार’ गाथा: १७-१८ मा तो अभ्य आयो नेजः! भाज्यसना आयो आधारपोपाल सोने ज्ञापण शान्ती पर्यावरणामा ज्ञानावां आवे छे। आयो... भ! ज्ञानो स्वाभाव स्व-पर व्रुक्षक छे ते कार्ये जे शान्ती पर्यावरण के तेमा क्षेत्र जे स्वाधि छे ते ज आयो आधारपोपाल सोने (अंतर्न) आक्षेपा मार्डीने वृद्ध स्वाधि ज्ञानावां आवे छे। ‘वस्तु’ पर्यावरणामा आपती नथी; पपल (पर्यावरणामा) ज्ञानावां आवे छे। कांडा अभ्य; केम क्यों? सोने पर्यावरणामा द्रव्य आयु क्यों; अभ्यास पर्यावरणामा ज्ञानावां आवे छे। भाज्याने ज्ञानावां आवे छे; छतात, अभ्य क्यों? अभ्यास पर्यावरणामा ‘द्रव्य’ ज्ञानावां तो आवे छे छतात अशान्ती प्रवा बंधन वश छे, रागाने वश छे, ते कार्ये ‘पर्यावरण’ द्रव्याने जाहे छे’ अभ्य प्रवा, तेने (अशान्तीने) नथी। आयो... भ! आपी वही वापो छे!! समाजांत कांडा?

अभ्यासी तो जे आधार-आधिक क्भुम, अ शुभम वाते छे।

(गाथा: १७-१८ वार्षिक) शुभ क्भुम? केश: अशान्तीने पपल शान्ती पर्यावरणामा, पर्यावरण साधारण अभ्यास क्यों (अंतर्न) स्व-पर व्रुक्षक क्यों। तेथी (तेने पपल) स्वभाव-द्रव्य ‘पर्यावरण’ मा ज्ञानावां तो आवे त्या! अशान्तीने वस्तु क्यों! पपल अशान्ती-पर्यावरणामा स्वाधि ज्ञानावां आवातू सत्या छतात पपल तेनी हिंद राग-वशा, दान अने पिक्ष-उपर नप्री क्यों, अ बंध नदी (पपल) भावधार छे, ते भावधारना पश्चात पपलो क्यों; पपल तेने अपनीस्वाभाव ज्ञानावां तो आवे क्यों पपल तेनी हिंद बंध उपर छे; तेथी ते मिथ्याहित क्यों; माटे तेने (स्वभाव) ज्ञानावां आयु नथी। समाजांत कांडा?

आयो... भ! वही श्रुति छे, भापु! आयो... छे! पपल अने समाजांत पपले के नथी? सत्यने सत्य रीते (समाजांत जोड़ीने के) आ वात कर रीते छे? भापु! अधिकारी तो (वाजने साधारणी पपल) मुसेड़ल पैदे अवेदी (वात) छे। संरक्षकांना तो आ वात वालती व नथी। अ ते समयश्रृंगिन विधान, आ प्रत क्षो ने त्याग करो ने पत्तीमा लख व्यो नेः... आ वातो याथे छे। अ भागी वीरराजने नथी!

१७-१८ गाथामा (अ क्भुम के:) अशान्तीने जे पर्यावरण छे अभ्यास पर्यावरण प्रक्षेत्र स्व-पर प्रक्षेत्र देशातील द्रव्य ज (-द्रव्य पपल) ज्ञानावां आवे छे पपल ते तरक अनेनी ‘हिंद’ नथी; तेथी (द्रव्य) प्राणामा आवातू नथी। अंतर्न अशान्ती-प्रवा (स्वाधि उपर नथी); तेनी हिंद राग उपर छे, पर्यावरण उपर छे। अने संवर अधिकारां अ क्भुम के: निर्माणपीठ (शून्यपीठ) ‘आधार’ क्यों अने आल्या ‘आधिक’ क्यों अने आ (वालता) अधिकारां ‘गुप्त’ ने आधिक क्भा अने ‘द्रव्य’ ने आधार क्भुम। अने (‘प्रवर्णसार’ गाथा-१०३ मा) गुप्त अने द्रव्य वशे अत्युपवात क्भा। पर्यावरणो भाय, गुप्ताने भावामा नथी अने गुप्ताने भाय, द्रव्य (भाय) मा नथी; माटे (तेने)

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
जिवासा:- ७३ नयमा ‘आत्माने’ राजगो अधिधाता कधो छ ने?

समाधान:- त्या एम लींधु हे, भदु प्यालाम हे. आणु शास्त्र ब्याख्या छ हे. त्या तो एम लींधु हे: अनंत नय छे. माते अनंत नयास विषय अनंत छे. गुण-पर्याय-विकार, अविकारी पर्याय अने अविकारी गुण-अश्वान अनंत नय छे. अने पर्याय छे. अने र्वामी-अधिधाता आत्मा छे. ज्य जीवी वात छे. इसीले डबीः त्या साधकां वात छे, सम्भवानी वात छे; अवश्यानी नयी. त्या ७३ नय मींधु पदेवा भे प्रश्न छे. विषये प्रश्न क्यों रे, प्रश्न! ‘आत्मा कोड छे हे (— क्यों रे) अने क्यों रे त्राट क्रम छे?’ अनेक प्रश्न छे. आवश्यक एम क्यों हे: एम जेने अनंतरा जिवासा धे धे तो अने अनेक उत्तर आपीणे धीरे. साधकां प्राप्ती आपली वेळ पेक वाच सांभव्या आपि धे तो अने अतिरे उत्तर नयी. जुलो, संस्कुट टीका हे: “ननु कोडमाताल कध्य चालायतं इत्य चेत्” एम प्रश्ने हे विषयाला क्षयामात धेय तो, अने अने उत्तर आपीणे. “प्रश्न तो, आत्मा परेशन वैत-निषाणि प्रे व्याय अनंत धार्मिकी अधिधाता अच्छे प्रश्न छे. “तावैहित्यनिषाणियात्मासाने-नन्दगमिषाषीक.” एमी पाठ छे.

‘कर्ता-कर्म’ गावणा: ७५ भा, ‘अधिधाता’- “स्वामी” एमुं लींधु हे: विकारो स्वामी कर्म हे. अने त्या एक बतापवा माते कधु अने अर्थी तो जेंटली विकारी अने अविकारी पय्योळे, ते बढी पय्योमो स्वामी आत्मा छे, एमुं बतापवुं हे. त्या (कर्ता-कर्मां) इतिप्रायम धयान छे अने अर्थी शान्तप्रायम धयान हे. माते नयमा एम पुढ लींधु हे: आत्मा राजगो कर्ता हे. जानीनो (आत्मा) वो!... आदशानी वात नयी. सम्पूर्णे स्वातुपव धयों हे छता जेंटुं राजगुं परिषमण हे एमतो तने तेनो क्षत्रीयां हे अने भोक्ता छे तो तेने भोक्ता पुढ क्षत्रीयां. अने क्षत्रीय पुढ नयी हे अने लोकता पुढ नयी, अम पुढ क्षत्रीयां. (कर्तनय, अकर्तनय, बीकर्तनय, अबीकर्तनय) गेम धयान छे. बुध ७३ नय हे. त्या एम क्षयुं हे क्षत्रीय आत्मा हे तो अन कर्तननयो स्वामी आत्मा हे! परंतु अर्थी ‘समस्तार’ भा ना पाठे हे हे (आत्मा) क्षत्रित्ता नहीं! क्षत्रिता एपेक्षाहो आहे! (अने त्या ७३ नय पदेवा, विषयाला प्रश्नाला उत्तरेंमां एकुं क्षयुं हे:) अनात ज्या-नर्मां अधिधाता अंक प्रश्न छे. अम? एं: अनात धर्मांमां व्यामाणां भे अनंत नयो, तेमा तेमा आपनांरुं हे अंक शृंखलाधर्म प्रमाण ते अने (आलम्बन) जे. नव क्षयो हे अंक अटक गुणाने अने अंक अंक प्रयायपने जे. अने ते अनात नयों ना शृंखलाधर्म प्रमाण वीज, अने पर्याय विकारी अने अविकारी प्रयाय, ते हे समाधीतीत मे. पुढ थयो नयी अने साधका वात छे तो भेजा ना स्वामी आत्मा हे. अंक विकारो अधिधाता-स्वामी आत्मा हे! कारण ते विकार क्षत्रीय धयान नयी अने कर्मचारी छे नयी. जे (वात) आपेक्षे. ‘ऊष्ठ टीका’ भा आपेक्षे: ‘विकार अंक शेतना परिषमण हे!’ आहा... बाँ! अंकदीर क्षयुं हे विकार भे पुढवणा परिषमण हे. अंक ते नैकडी धयान छे अंक एपेक्षाहो. (अर्थात) स्वामाणास शृंखळांते (ते विकार) नैकडी धयान हे, माते तेने पुढवणा परिषमण क्षयुं. पुढ जे अने अम ज मानी ते क्षयुं (विकार) पुढवणा परिषमण हे, मारा नयी; (तो मिथ्या अंकदीर धे धयान). तो ७३ नयमा.
श्री निष्मासर गाथा ५० - ५७

कहने के: जैसी विद्वत् के अविद्वत् अवस्था यथा छे अने जे अनंत गुण छे-अने बधानी स्वामिः अत्मा छे। बधानी अविद्वयता अत्मा छे। समजायु कांचैं?

आकाः जै! आवी वातो। जैसी पड़े, शुं धाय? अः (संशोधाम्यां) तो (माने छे के) 'इच्छामी पतिक्षयामी' वो भो ने सामापिक थाय गछी! (पश्चा अंगमां) भूमय सामापिक नर्थी! आकाः जै! 'सामाजिक' कों कहीं? अं तो तने क्षुण भनर नर्थी। सामाजिक=सम्य-अप्य=वीतरजगातनां वाण। तो वीतरजगातनां वाण क्याये धाय? जे: जबारै पोतानी आर्यस्वप्नामां। स्वप्नां वेतन ध्यहु धाय। स्वप्नां धान अनेने क्षेत् पश्चा (अंगे), (अंगे के) त्यां पोतानी स्वप्नामां मृत्युभी ध्यहु धान ध्यहु धाय! 'अं क्षेत्' पर्यामयं आपतु नर्थी। पश्चा पर्यामयं 'क्षेत्' नु धान धाय छे। अनेन स्वार्त्ती पर्यामयं पूर्ण क्षेत् प्रतिित आवे छे पश्चा स्वार्त्ती पर्यामयं 'पूर्ण क्षेत्' आपतु नर्थी।

अंदेघी (निर्हृंहं) पर्यामं धुं, पर्यामयं, ('आल्मद्राय') जान्यामां आयुं माते तेने 'आवार' धुं। अं पर्यामं, अंगमां (द्रवम्यां) छे। माते (द्रवम्यāं) अनो स्वामी स्वाम। समस्याः छे अंदेघी? आवी वाताः! आपु, शुं धाय?

(अंदेघी जभ नन्मां छे के) "प्राच मो, आत्मा भरेखर वैष्ठ-सामात्य वेघ व्यास अनांत धर्ममों अविद्वयता (अंदेघी क्षेत् छे।)" अं राख पश्चा धर्मां छे। धर्म अर्थान्त धारी राण्युः पोतानी पर्यामां धारी राण्युः माते धर्मां छे। अंदेघी अंगे वो वीतराजीपर्यां अें नर्थी। अनांत धर्ममों अविद्वयता (अंदेघी क्षेत् छे।) समजायु कांचैं?

आकाः जै! समस्याः अंदेघी वेघु, आपु! भारी तो आवी छे, भार! सर्वस श्रीलोकानाथ परमात्मानी वाणीमां-दिश्यत्वनामां अंग आयुं छे। अं संतो क्षेत् छे। अनेन अंदेघी अनुयु स्वामिमां आवार्तु श्वानो।

अंदेघी विकारांमां निश्चित न लेवुं। अंदेघी जे अनांत नयोनत्तु-अनांत धर्ममों अविद्वयता कहुं पात्तामां मिश्यत्व न लेवुं। अंदेघी तो समजाहिंने, जेने अंतर विज्ञासा धारीने अनुयु स्वामिमां आवे। अंग धर्मस्वाम छे। अंदेघी तो 'नय! छे तेने? 'नय!' छे अं 'उन्न्इ' अंदेघीमां नीता नर्थी। 'नय!' अविद्वयतानी नीता छे। तो 'अविद्वयती' उत्साहे धाय? जे: त्यां अनुयु धामय ध्यहु त्यारे 'अविद्वयती' धाय छे। नय स्वामी मोहनी अविद्वय छे। अनेन श्रुत्त्रामामा अं अविद्वय पात्तामां अं आो अविद्वय पात्तामां अं आो अविद्वय अं आवे अं (अविद्वयती) व्रम्य-रहाण्डी-अविद्वय जान्यामां छे। समजाहिं 'पड़ा ध्यहु, धान, प्रत्त, भक्तिनाम परिश्राम आवे छे पश्चा (अंग जान्यामां ज्ञान-प्रामाण्यामां छे।) समजायु कांचैं?

अंदेघी अं कहुं: "[कर्तारे के अनांत धर्ममां व्यापनारे जे अनांत नयो तेनां ज्ञापातूसूं] जे अंदेघी श्रुत्तानस्वप्न प्रमाण ते प्रमाणपुर्वक स्वातुथ्व पड़े (ते आल्मद्राय प्रमेय धाय छे (-ज्ञाय छे))।" अनांत नयोमां विद्वत् अनेन अविद्वत् अनेन अवस्थाय आवी गछी तेनो स्वामी छे। कर्तारे के-श्रुत्त्रामामा त्याय अनेन प्रयोग एकांतुः धान आवी गपुः अनेन श्रुत्त्रामामामा श्वातुथ्वान्तरानुयु धर्मवाय (ते आत्मा) प्रमेय धाय छे। जान्यामां श्रेष्ठुः धान धाय छे। श्रुत्त्रामामा धाय छे तेनी विद्वत् अनेन अविद्वत् धारी पर्यामय अनेन गुण प्रमेय धाय छे (अर्थान्त) श्रुत्त्रामामामा विद्वयज्ञस्य पश्चा प्रमेय धाय छे, निर्बिद्वयज्ञस्य पश्चा प्रमेय धाय छे, निर्बिद्वय गुणो पश्चा।
उ - प्रवचन नव-नीति: भाग-२

प्रमेय थाँव छै अने आणि समुदाय-अकडूप द्वारा (पात्र) प्रमूर थाँव छे. आता.. खै! समजाणुं शांत? पतीत तो पुलासे ऑके के: ते आल्यांद्र द्रव्यने (सिद्धात्म) छे. कमाणूं बधी आपणां वाह गायं. अर्थी तो आपणे अटाऊं वेंचुं लहूं.

(प्रश्न:) आ परमप्रार्थतिकामूल 'लक्षण', अनु 'लक्ष' अर्क्षसम्बन्धाः अेयो भेंत छे?

(समाधान:) त्यां अेय केलेय शांती. त्यां तो परमपार्थतिकामूलाय अेय वस्तु; अने 'आधार' करी, अनंत सर्व शांत-द्वाेने के निष्क्रिय अनंत स्वाभावाभास; अने 'आदेश' करी, 'दृष्ट' अर्क्षसम्बन्धाः उपर वळ शांत? अे बतावपुं शांत? समजाणुं शांत?

'प्रवचनसार' जयसेन आर्थाचरी संस्कृत दीक्षा, अेयं अेयक-१३ (आखा) उपरसे नानी छे, मूलमाणे शांती. पता तेमने वाकाची भांवी छे. अे अंदर नानी छे. गायं:

“एदाणी पंचदस्वानी उदितायकलं तु अधिकाय ति।
मणिते काया पुण बहुपदेसां पचयतां।”

आ पंथासिद्धकाठ मधे ज्ञासितकाठ उपादेय. ज्ञासितकाठ शुद्ध धैतन्य लघुगानस्तुप विश्वास छे अे उपादेय छे. अेक धैव नानी. संस्कृत दीक्षा छे: “अन वार्तालायति जीवानित्वि उपादेयस्वतानि पर्यमेतिपार्यायावतेऽ,” (उपादेयभागी विशेष व्यो तो पंथरमेशी (छे). पंथरमेशीमाथी पता एक्ष अने सिद्ध (उपादेय छे.) अेमांी पता एक सिद्ध, अने अेमांशी पता अे एक (निघ शुद्धात्मा जु) उपादेय छे. अेयो सार अंदीने (कह्लड़ के: अे एक मूण तो ज्ञासितकाठ आपे लघुगानस्तुप पर्यांबनभूति (उपादेय छे.)

“वस्तुशंस मार्गदिनावतिकर्मनजपरिकर्तले सिद्धजीवस्था स्वकीयशुद्धतावस्थेति मातायः.” विश्वास बनाकाठमां ज्ञासितकाठ उपादेय छे अे अतुं. अेही (लोकां) अनंत धैव छे. बधा लघुगान. अेही अेक अंशुना अस्वस्थाना भागाना असंश्य निगोहवारी अने अेक शरीरांना अनंत निगोहना धैव छे अेवो आणि लोक (निगोहना धोळी) भवी छे. सिद्धगान निरांशः छे त्या पता निगोहना शांती छे. बधा लघुगान छे. ज्ञासितकाठ तरीके उपादेय छे, अेही करे छे. द्वारा तरीके ठीं! अेमां पता (उपादेयकु रे) पंथरमेशी लेहा; पता अेमांशी पता एक्ष-सिद्ध लेहा; पता अेमांशी पता सिद्ध लेहा; अने अेमांशी पता पोताना शुद्ध आत्मा लेहा. (श्रेणी:) सर्व धधािन्तु तात्त्वयुं शुं छे? (उत्तर:) आ तात्त्वयुं छे के: अंदरमा अंतुंश ठरी अने अतुंवन कर्यो. बाबी तो बधी वातो छे. समजाणुं शांत? ल्यो! आधार-आधेयांना आट्टां आयुं।

(... शेषांश प. २८ (उपर))

(... प्रवचन ता. १-२-१८७९ नो शेषपाचा)

ढे, ठीकसार मूल श्रीधराभासदेशी शेते आधार आपे छे के: अेही शीते (आधेयांव) श्रीमद् अमृतवंदनसूरीके (श्री ‘समवास’ नी आत्मण्यतिनानी ठीकांना१८पमा लोक हाना) कहुं छे के:

(शांदूलविक्रीदित)

“सिद्धोक्तसमुदायसंस्थिरतितः संयोगः
शुद्ध चिन्मयमोक्षवर्धमां ज्योतिः सदैवस्मः”

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री निषयमसार गाथा ५० - ७८

एते ये तु समुज्जसस्ति विविधा भावा: पृथवलक्षणा-
स्तेज्य नासिम यतोज्ञ ते मय परद्रव्य समग्रा अपि।।

“[क्लोम्बिर:- ] जेमना चित्रातु वरित उक्तत ( -उदार, ऊष्मा, ऊजावण ) छै अेका 
मोक्षर्को आ सिद्धात्तुं सेवन करो दे- “ई तो शुद्ध वैत-समय अेक परम अमोिि ज सकाय
छै; अनेआ आ जे निघ्न लक्ष्यवाणा विविध प्रकाराना भावो प्रागट थाय हे ते ई नथ, कारण दे
ते बधाय मने परद्रव्य हे।’” ]

“जेमना चित्रातु वरित” अर्थता जान्तु आयर्का अेटले दे, जान अर्थताः प्रभु आत्मा, अेनुं जने आयर्का छे; अेनो अविप्राय शूः? के: जेना जान्तु वरित अर्थता आयर्का 
“उक्तत” (छे) आधाः शा। जेना आभिनामामो व्युपन जान्तु आयर्का वषु छै अर्थता। अेना जान्त 
आयर्कात्त्व उक्तत अेटले “उदार, ऊष्मा, ऊजावण छै अेका मोक्षर्को” अर्थता “सक्त दर्मनो वर्त धन्य थाय हे अतिनिद्रिय सुप, तेने उपायुपे अनुभवे छे”
(- ‘क्रण टीका मा) मोक्षर्वी व्याप्ता करी। मोक्ष छै ते परमान्दुरू पर अेना अर्थने, 
अनेआ आनंडनो स्वाद आयो छे अे मोक्षव्या छे, अेम दरी छे। सक्त दर्मनो वर्त धन्य थाय हे 
अतिनिद्रिय सुप, तेने उपायुपे अनुभवे छे, तेने मोक्षव्या। (पड़ा) जने दुः अतिनिद्रिय आनंडनो 
स्वाद आयो नथी ते मोक्षव्या व्याधी होभ? अेम दरी छे। आ (अतिनिद्रिय) सुपमनि 
पूर्णा (-पूर्ण प्रामि) नो जे अर्थी, तेने मोक्षव्या “आ सिद्धात्तुं सेवन करो दे- “ई तो शुद्ध 
वैत-समय अेक परम अमोिि ज सकाय छै; अनेआ आ जे निघ्न लक्ष्यवाणा विविध प्रकाराना 
भावो प्रागट थाय हे ते ई नथ, कारण दे ते बधाय मने परद्रव्य हे।’”

( ... प्रवर्तन ता । ५२-१८७८ नो शेषभाग )

ओवे, अभो अ श्लोक (- ‘समयसार’ व्युः: १८४) जेमना (चित्रातु अर्थता) 
जान्तु चित्रत अेटले आयर्का (अेटले दे) जान्तु आयर्का उक्तत छे, उदार छे, ऊष्मा छे, ऊजावण 
छै, अेका मोक्षर्को (आ सिद्धात्तुं सेवन करो। अर्थता शुद्धतानामो आधाय करे।)

ओवे मोक्षर्को व्याप्ता: मोक्ष (अेटले) परमान्दुरूपदाया, (अर्थता) आत्माना 
अतिनिद्रिय परमान्दुरो लाम, ते मोक्ष। समझावु धाँख? ‘निषयमसार’ मा शुद्धतानामी आधामां 
छे के ‘मोक्ष’ अेटले शूः? के: अतिनिद्रिय अनांत आनंडनो लाम, ते मोक्ष। अर्थता छे छे के: अे 
मोक्षनो अर्थी (ते मोक्षव्या)। अर्थता जने अ आनंडनु तेंठ धन्य छे, आनंद अनुभवमां आयो 
छे, तेने मोक्षव्या। चे: भेक्द कृपशास्त्रमां बोध, (ते धृष्ट) राजाडि बोध, पड़ अनितानुवानी अने मिथाचनो नाथ धन्य गे ने तेने स्थाने सम्बन्धतन अने व्युपारात- 
स्वर्गतानी आनंद आयो; अे जवने मुसुख कुँदे छे, अे जवने योगी कुँदे छे। समझावु धाँख?
मोक्षव्या आ व्याप्ता हे! जने मोक्षनु (अेटले दे) पूर्ण आनंडनु प्रोपीन हे। अनेआ आनंडनो 
नमुनो तो आयो हे। आधाः शा! मुसुख तो तेने कृठों दे के मोक्षनो अर्थी छे। अर्थी अेटले 
प्रोपीन (वति)। जेनु प्रोपीन छे अनेआ नमुनो तो आयो छे। ते नमुना उपवरी प्रोपीन तो 
(पूर्णातुं अर्थता) मोक्षनु छे। समझावु धाँख?

श्लोक:- नमुनो तो आये ते मोक्षव्या दे कृठो?
प्रयास: ता. 8-2-1994

'नियमसर' गाथा -५० नी श्लोक [ - 'समवसर' मोक्षकविकारों श्लोक-१८४ ] है।

"जेमना (विततन्)” अर्थतः ज्ञानुं (“शरीर” अर्थे) आयुर्वाश “उदात्त” छ।

त्यांशी (आ विषय) शुद्ध श्लोक है। अनेश अर्थ शुद्? के: आत्मा आनंदस्वरूप; अनेक आश्रय जने न हो जाते शानन्त्र आवश्यक करे, अर्थे के आत्मानुप आवश्यक करे। अर्थी ‘शान’ शब्दमें ‘आत्मा’ लेना है। आहा... बांक सज्जेसे स्वदेशतनो आश्रय शोभा है। जया सुधी (पूर्ण) वीर्याण ने क्षेत्र त्यां सुधी (तंत्रे) राग श्लोक है; व्यवहार श्लोक है, तो पति तरे आश्रय करवा लाभत के निम्नात्मा है। तेन्दु कर्तव्य तो शानन्त्र आवश्यक (अर्थतः) आत्मानु आवश्यक करवू ते है।

पदलेखी ह अभिभ मौत ह है। जेमना वितत अर्थतः ज्ञानुं शरीर अर्थतः आवश्यक (उदात्त) छ। आहा... बांक स्वरूपस्वरूप संकल्प/Jगतानु जेन्दु उदात्त है; सार्वभौम आवश्यक शोभा होते हैं, उदात्त (अर्थे के) मुख शीत नही। अर्थो बचाय कर छह गुप्तांश्य सुधी आवृत है; जया रे वास्ते निर्माण धारण, जेना आत्मानुं-शुष्क वैश्वक्य अर्थतः आवश्यक उदात्त है, उद्य प्राप्त है। अर्थतः आत्मा ज्ञानान्त शुद्धस्वरूप प्रवृत है; अनु के। ज्ञान अनेक आवश्यक शैल है, उदात्त है (अभिभ) मोक्षाभिम है; अभिभ लीलु छ।

आहा... बांक तो पंथम आत्मा मूल करे है! आ तो दुनिया वर्ण पर्याप्त आवश्यकशाय करे है! अने पंथमत्ता गुप्तस्यों-खोजने जड़े है! के धर्मने (अर्थतः मोक्षाभिम) तो करवा लाभ क्षेत्र तो ‘आ’ है।
“अेवा मोक्षारी” – अंतिम तिमाकरे अेम दीवुँ. भजगनानेतो आठ कर्मने नाश बठने
अन्त आनंद (प्रसाद) थयों छ; पण जेने अेम आनंदने अंश लाम थयों छ तेह आत्मारी छ.
जेने अल्मानो सौंपूण अनुभव-शान-आनंदने लाम थयों केव अेने मोक्ष; अर जेने अेने अंश
प्रसाद थयों छ अने जे पूर्णांनने अभिविधी छ तेने अरी मोक्षारी केलयामां आये छे. आयु छे बाह! बीजु शुभ याप?

तिमाकरे तो अेवा शं दीवुँ छे: मोक्षारी-मुमुकु-योगी. आळा... आ! मुमुकु-योगी, जेनु
आत्म-आवरण रागी नित्र बठने जेने धर्मावरण थयुँ छे; (अंटेके) धर्म अर्थात शृङ
वेतन्-आनंद स्वभाव; अेनु आवरण जेने थयुँ छे; जेनी शृङवापां अंकारता छे; अेवा
मुमुकु, तेगो “आ सिद्धान्तु सेवन कडो.” आळा... आ! आ तो आदेश आये छे. आयारी छे
ने..! अे वस्तुतु सेवन कडो. सिद्धांत अर्थत वस्तु. जे आनंदकेप्रभु छे अे सिद्धांत; अे आत्मा
आनंदस्वपने अे शृङ वस्तु; अेनु सेवन कडो अद्भव अे वस्तुनो आश्रय कडो.

‘प्रसादनार’ गाथा-१०मा दीवुँ छे (वस्तुग प्रभु आश्रय विना परिशा मो आदेश
कै? ) व्यवहारी फ़मी गाथामा अेम कडुः के: “शृङ के अशुमां प्रशंसवामा शृङ के अशुम
आत्मा जे, शृङ प्रशंसवामा शृङ, परिशामस्वभावी बीहारने.” अे जे तो बीहार ठे..! जे रीते पर्याय
परिशामे छे तेवूँ (वेतन्) पर्यायमा तन्मय वह जय छे. पणी १०मी भा कडुः के, आ जे
परिशाम छे अेनो आश्रय द्रवी. ‘आश्रय’ नो प्रभु कणी ने? अे परिशाम विना धर्म न
केव्य, परिशाम छे अे पर्याय, परिशाम छे. ते तेगो ‘आश्रय’ कहाँ? (उ-उग्य.) नदीतर
आम तो विकारो आश्रय तो निमित किया: (विकार) परना दत्ते (याप छे). परंतु अरी अे
ने ली वेंुँ. अरी तो परिशामारे पोटे ज तेगो आश्रय छे. आळा.. आ!

अरीमा कडे छे: अरी! सिद्धान्तु नेपाल दोरो. आपो भार अंगनो सार! वस्तु भजगान
(आत्मा) तो शरीर, वाड़ी-निवारी तत्त निंत्र छे: पण (ज़े) दया, दद, बरतो विकार छे
अनाथी पण वस्तु विकार छे. (अवी जे वस्तु) तेना आश्रय कडो; अेतु सेवन कडो अर्थात तेनां
अंकार थानो! तिमाकरे तो आश्रय-सेवन करवानु सेवन कडे छे. ‘आश्रय’ नो अर्थ ज स्वभाव
tर्कनी अंकारता. जे अंकारता अताही रागमा, मिथ्यामा छे, (नेघी) भजगान
विधानमत्स्वप्न अंक बाजु रकी जय छे. (अर्थात निरोपत वह जय के), तेना (बडदे) रगने
अंकारु कडे छे! आळा.. आ! समाजङ्गु अंकी? आपी वात छे, प्रभु! जीसी वात छे पण शुँ कडे?
वस्तु तो आ के. छठा गुष्ठाथण सुधी व्यवहारारित आये; पण तेना व्यवहार त्यारे दीजीने ठे,
जेने निर्माणसम्मर्क-शान-अंकारनो अंश (साधे) केव्य, पणी अने (व्यवहारने) छीनीने
साथमां जय छे, अर्थात निर्माण (रतनबेस) याप छे. आळा.. आ! वस्तु तो आ के, प्रभु!

‘छठाणा’ मा आयु ने..! “लाम आपी दी आपी यापी, निश्चय (उर) लापो; तोवी सकव
जग छ कछ-छ, नित आत्म थापो.” लाम आपी-नापी.. लाम शंक मृत्युँ छे, पण अर्थात
वातनी वात कडो.. (आ छे के:) जगत छ कछ-छ (अंटेके) अंदर आत्मा अने रागनु (ज़े)
हेतपुँ (यह रक्त छे) तेना, गे ते प्रकारे छीनीने; अर! गुणी अने गुणा अेवु हेतपुँ छीनीने;
आत्मा-निजारी धायकमाप-आनंदमाप-नो आश्रय कडो, अेमा अंकार थानो! धूपना ध्यानी
अंक समय पण बस्तु नही, (तेम कडो)!
82 – प्रवचन नवनीत: भाग-2

अंक चुकाया विशद. बिच्छाया गुजरी गया. अंकी (सांभववा) दरवारी आपता. लोगो पूछे तो धरी थी. धड्डी वात स्थापित: “परथी बस, पोतानानां बस; ठूंठ ने तथ, अंकावुं बस.” शाय तो आ चै, भाई! परथी बस, बस अंकले कड़. “परथी बस, स्वामा बस; अंकावुं बस, ठूंठ तथा.”

आँख... जाँ! बड़ा सिंहासन (नो सार आ है). (बाकी तो) परथी (शाक्त आदिवाल) जड़पूजु करे के गो मे ते लाम (कियाओ) करे पत (अंक काल्य नही) करवा लायक तो आंखी चै (“परथी बस, स्वामा बस”). वसू तो आ है।

(अंकीया कठे छै.) आ झुर्कानुँ सेवन करू के: “कू तो...” ‘कू’ शब्दामा देताओ (बार छै! के: कू) प्रत्यक्ष (छै. जेम के नजर सामे) अागास दिलो है तेम. अंक कठे छै. ‘कू अंकावान आन्दरस्वपन प्रभु! कू परनी-राजनी, व्यक्तानी-अपेक्षा छोडीने मारी निर्माणचयामां प्रत्यक्ष बघावाणी छै. आँख... जाँ! समझाइ छाँट?

‘तत्पार्थसूत’ (अध्याय-१, सूत-१) मा छै के: मिताशनाने पांच छिड़ियो अने मन द्वारा (अर्थात निमित्ती) कहू छै. अने मिताशनान द्वारा (जशेला पद्धर्ने विशेषकृपाज जागृं ते) श्रृंगारण छै, अंक ठूंठे छै. (आ द्वन) व्यवस्थापनी छै. सुत यात न रहे, भाय मणजाँ गोक. मति (ज्ञान) भो मन अने छिड़ियो निमित. अने श्रुत (ज्ञान) मा मन निमित. अथ व्यवस्थापित.

आ प्रश्न वाणी संख्या १९८२ नी सालामा रजकोटमा आयो हटो के: शाय तो अने शुरु, मन अने छिड़ियो द्वारा थाय छै, तो अनावी तो आला जरूरामा आयोत नोही. (छाता) अंकी तमे अंक कठे छै (के: आलामा जाङो!) ’तत्पार्थसूत’ मा अंकु आचे छै: मति (ज्ञानमा) मन अने छिड़िय निमित. श्रुत(ज्ञान) मा अग्निनिर्मित-मन (निमित.). अंकीया तो अंक पपानी. अने वात त्या गोक रह छै. व्यक्तार सरी चै ने...! अंकीया तो (आलामा अनुवाद-व्यवस्थापन) प्रत्यक्षपूजे मति अने श्रृंगारणामा आयो छै.

‘समस्तार’ गदा-११४ मा ‘प्रत्यक्ष’ दीखी छै. (आलामी प्राग्र प्रसिद्धि गरे.) विकडले देश जानी तेने छोड़ीने, मति अने श्रुत-शुद्धिग्रो अल्मातामा लायो. आँख.. जाँ! श्रुततपने आलाय तर्क लायो.

अंक अंकीया छै: “कू तो शुद्ध शैतन-यमय” - अंको शानमय! आँख.. जाँ! ‘कू तो शुद्ध शैतन-यमय’! (अंकी) शैतन-यमयाँ, अंक पपान न कठुं. जेम के: शैतन-यमयां (कठेरामा) पपान भेक पपान जय यात छम भाले ‘शैतन-यमय’ कहूं. आँख.. जाँ! समझ चै कठूँ?

“कू तो शुद्ध शैतन-यमय अंक परम जयति” - मति अहिनो भेक पपान लक्षमा न लेयो. आँख.. जाँ! “कू तो शुद्ध शैतन-यमय अंक परम जयति ज सदय युम हूँ.”

आँख.. जाँ! कू शैतन-यमयितस धाम (छै)!! अंक (शैतन- यमय) स्वप्नी परम धाम छै. श्रीमद्मा (‘आत्मसिद्ध’ गदा-१६१) मा कहूं छ: शुद्ध शुद्ध शैतन-यमय, स्वसंयति सुभारहिन्द्र. कन्दुं धरी एकतुं? कन विचार तो पाम.” शुद्ध काल्य पुरविन, शुद्ध अर्थत शाननो सागर. अने ‘शुद्ध शैतन-यमय’ - शैता मा शुद्ध आयु अने शैतनमा अने शुद्ध आयु. शुद्ध शुद्ध शैतन-यमय स्वयं जयति सुभारइन्द्र, अने परमजयति. आँख.. जाँ!

‘बदेनश्रीया पवनमृत’ उठो-आलोंमा आये छे ने..! “जेम कथनने छाल दागातो नवी,
'श्री निःसर्ग गाथा ५० - ८३
अनिने जिह लागती नथी, तेन शायकभावामा आवरण, निवाप, के आहुँदे आवती नथी।'

आ अन्नी कडे छ: अेंता सुद्र वैतन्त्यक पर्क परम जयोति; त्यहि दिनो विषय, तेमां-अनुभवामा बेड पल्ली नथी। आळा... ता! एक परम जयोति! ‘परम’ केम कलूँ? के: अन्निनी ज्योति, दीवाली ज्योति, वंदनी ज्योति; ए बधाने ज्योति कडे छ। ज्योति अेंतो प्रकाश। पल्ला आ तो परम ज्योति, वैतन्त्यक परम ज्योति, निधुं अकुप ज्योति ज... ज्योति ज... अेंकाठ दीघुं।

निध्यननो विषय सम्भु अंकाँत छ। साध्य छ... साध्य छ... अेंको ज छ। सत्त+एव=सत्त्व। सह+एव=त्रिधा। सत्त तो अें ज छ। साध्य अंतीत त्रिधा। सत्त तो अें ज छ।

आळा... ता! “अने आ जे निध वक्ष्यावाया” विष्याना दगा अर्थ कर्मा छ: निध वक्ष्यावाया विपरीत वक्ष्यावाया अने अशान्त्वाय। रागहितवाय अशान्त्वाय छे। शीर्षमा छे। भादु वैतन्त्यकुप के शायकभाव अंकुप ज्योति; अनाथी निध वक्ष्यावाया अं साण्डी व्यकार (बाब) गमे ते शेष ते स्थलाव्य विपरीत वक्ष्यावाया (छ।)। स्थलानुणु वक्ष्य तो रडेरां कलूँ छ। आगही-यथा, दान, ब्रत, बैकट, दाम, इवाहिनिर्पिकाम, स्थलाव्य विपरीत वक्ष्यावाया, निध वक्ष्यावाया। छूँ शान्त्वोतिव्यकुप। तो अं साण्डी अशान्त्वुप। रागमा शान्तो-शेतनानो अंश नथी। समजुनें कड़े?

(‘समस्तता’) अतव अधिकारामा रागने अशान्त्वा क्वा। अतव क्वा। गुणव-परिकाम क्वा। आळा... ता! आगहि निध वक्ष्यावाया छ। आगहि विकुप आते तो भववाननी भक्तनो शिखे के गुण-गुणीना भेदनो शिखे, पल्ला ते भाद अंकुपना वक्ष्यती तो अतव वक्ष्यावाया, अशान्त्व छ। ‘सर्वशुद्ध अधिकार’ मा पडेला भिन्न पाता पाता पल्ला छ। भछो अवश (अशान्त्वमावदवालवाल) शन्त छ। (परम अवशय तरंगिकी मोक्षविकार कण्ठ-हमा आवे छे के:) “अय आवदित: सिद्ध:-निपटन: अंत:- धर्म: स्वामनी वा यस्य स: तात्पर्य वा सेवतां आश्रयितं, कै? मोक्षनी भिः मुनिसुमिरिगिमिः, किमूँटे? उदात्तकर चरति... यत्र: यसमातकारणां गुणगलक्षणा: आतनम: विपरीतलिङ्गणा: अवशान्त्वमावदवालवाल।”

व्य आपणे तो अर्थ लेवू छ: “पूर्णविष्यणा: आतनम: विपरीतलिङ्गणा:” – संस्कृत टीका छ। राग तो अशान्त्वमावदवाल। अ्य मोल तो कङू ने। के: राग जूँ छ। अर्थ के, राग पोताने जातो नथी अने आत्माने जातो नथी। अने भवण्याक (आमाका) पोताने जायरे छ अने रागेने पल्ला जायरे छ। अने (राग) जूँ छ। अने आ (आमाका) वैतन्त्य छ। अर्थांक जूँ: (अ रागाकाक) निध वक्ष्यावाया छ। अवश (वक्ष्यावाय) छ अने विपरीत वक्ष्यावाय (अर्थात) स्पूपरी विपरीत वक्ष्यावाया छ। अर्थ वातानुवातानु, उमी, विषय प्रकारने छ। अंतर्कटे अंक प्रकारे नथी। पलेला आण्यू कलूँ के: शुद्र वैतन्त्यक ‘अंक’ परममिन्त; अन्नी सामे ‘विष्यव’ आयुँ। गमाजुँ कांका आहा... ता! तो शुद्र वैतन्त्यक अंक परममिन्त ज दार्य हूँ। अनौ सामे (अ रागाका) निध वक्ष्यावाया छ, विषय प्रकारने छ; (अर्थात) शुद्रविकार अने अशुद्रविकार अने प्रकारने छ। अशुद्र तो टीक! पल्ला शुद्रविकार पल्ला असंभु प्रकारने छ। अ (बाबा) प्रकारने भिन्न वक्ष्य, अशान्त वक्ष्य अने विपरीत वक्ष्यावाया छे। अ प्रकारने भिन्न वक्ष्यावाया विषय प्रकारने (रागाका) भावे छ। (अर्थात) छे तो भावे। अ भाव असिते छे। केप्यरे; पल्ला छे के नथी? तो कङूँ के: “विषय प्रकारने भावे प्रकार वाह”

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
84 – प्रवक्तन न्यान्निति: भाग-२

"निमिताची- वा दलनें अथवा स्वतंत्र पद्धकर परिशिष्टन्ती मार्दी पर्यायां ग्राह थाये छे. विद्वान, दर्शनां पर्याय ग्राह थाये छे; अ दर्शनां अनें दर्शनां स्वववियां नझ्ल. "ते (विद्वान) तु नाथी.") ग्राह थाये छे, ते तु नाथी. स्ववना आधारां देि- उपाधय बनें शान पण व्यक्तिकर छे. (अर्थात्) देि-उपाधय बेलुँ शान, अ व्यक्तिकर शान कर्नेवा. अनें एकत शैित्वत्तु शान, तेने निक्षयण कर्नेवा छे. (देि-उपाधयने) शानुव अ दर्शनां आवे छे. - 'आ तु नाथी' अेम. समजवां शेष तो शु समजाईं? 'आ राज ते तु नाथी' अेम कर्नेवा जय तो पण विकल्प गळे छे. पण समजवां शेष तो देि समजाईं? 'तु तो (शून्य शैित्त्मक) व्यक्तिकर अंक परमभोगी धाम सहाय छूं' "अनें आ अे बिध व्यक्तिकर (विविध ल्ायां ग्राह थाये छे) ते तु नाथी" अेम अेमां नासित (आधे) शेष छे. अेंनी, स्वववियां नासित छे. पण अेमां (पोतामां) अे असित छे. आधा.. खा! "ते तु नाथी." अेटल्यू तो सिद्ध कुँ थे: आ छे, ते (आधारां) छे ज नाथी. (जो) विविध रागादि शेष ज नाथी, (तो) तेने छोड़े-देखे छे देवी रीते? विकल्प आवे छे. ते छे. ते भाव छे. पण भे भवानवनमादी अथ्य व्यक्तिकर, अनान्वभाय अनें विपरीत भावावा छे, ते तु नाथी! पेलामां तो 'तु आ (शून्य शैित्त्मक) क्योंरीति सहाय छूं' अेम कल्य बन ने! अेम कल्य: आ (विविध प्रकारना भावो) ग्राह थाय छे ते तु नाथी. "कड़ा के ते भावाने पद्धत छे." अेंकी तो रागादिने ज पद्धत बना छे ये! अनें ('नियमर्') पौ भे गाधां ते निमित्तपयांने पड़ पद्धत कटी छे. आधार ज्ञानी वाताने (-अल्ला उपाधय छे, अनें) सिद्ध कर्नेथे बीकी अच वात लीनी. अर्थात्तांते इत आधार विकल्प व्यक्तिकरत्न्त्र, अ क पद्धत (छे, अेंम कल्यु). पौ भे गाधां ते रागाने ज्ञानावासी, पोतानी पर्यायां कव-पर प्रकार्णी पर्याय जे एक सम्बन भाव; अनें पण निकाली भावनी अपेक्षाणे पद्धत कल्यु. आधा.. खा! समजाल्यूं कामी?

अर्थात् तो (कल्य: छे: ते) "ते भावाने पद्धत छे." (खोला? के: (जे बिध व्यक्तिकर विविध प्रकारना भावो) अंक अनें अनेंणु प्रकारना विकल्प मने तो पद्धत छे. अे मारी शेित्त्मक नाथी अने अेमां तु नाथी. आधा.. खा! आ पुरुषार्थ! कांत ऑछी छे? पुरुषार्थ उपाय भावांना सुदरे छे?

(लोको) गजरथ काळे छे ने मोडी स्थायत्रा काळे ने रथ उपर याचने वगवानने आमर आम.. आम वाणे ने.. केवा तेवाणे के आ ते शुं करे छे! पण अे आलामां म्यां छे? विकल्प निकालो छे अ पद्धत छे. अे तो दिक्य पद्धतिकर थाय छे. रथ उपर वगवानने पद्धतिवा क्षे. खो कन्दा? बोली बोली: कुर्हां.. पंटसो.. बेकुर्हां.. पंत कुर्हां.. एक कुर्हां.. एक कुर्हां.. अर्थात्..! अे बोल. पण अे भूमभाव छे, अ पद्धत छे. अेमा वाधाय (भाव) मने पद्धत छे. आधा.. खा! ते अेम्प्रकारना, विविध प्रकारना भावो "ते भावाने पद्धत छे.

आधा.. खा! अेम पद्धतां ठेट्ठवा भरी कीती छे! श्रीमद्दो (पत्रक: अधी या के) कौन ने..! के: "सपथुरुणा (णानी) अेम्प्र काकामां, (अेम्प्र शक्तमां) अनें आधाम रक्खां छे." अर्थी (अेमां कैत्तवा अूठ बन्यूं छे!) कड़वा शेष तो केट्ठवा य काली (शाकर तेम छे! जेम
श्री निरंधन मार्त ७४ - ८४
के:=) अलस ते नास्ति; अंक निर्यातां अन्तति सत्तांगी, जान डे- अंक प्रयोग प्रयोगी छे, ते (गुज्जा) पश्चात्त्व नस, ज्ञान पश्चात्त्व नस, निश्चितपेक्षा नस, पूर्वनिःस्थित पश्चात्त्व नस, अनेक पश्चात्त्व नस। अऽम अंक अंक पर्यायमां (अन्तति) सत्तांगी तीते छे। आहा... अ! आवी गोरी शीष! 
अऽहो कहे छे: कुं आ (भिम वशस्त्रवाद यावो) नस; कुं तो शुद्ध शीतक्षणोत छू। अे अल्प अत्यधिक लाइन, सेवन दिण्यां लाइन छे अनेक ध्येय बनावी। अऽहो अवन करण की शीर्ष तो अं ज शीष छे बस! - आम आ समिकाती द्वितीय शी। समजह छे काँक?

वणी, (आ पामी गादानी तीका पूर्ण करतं तीकाकार शुद्धिन श्लोक कहे छे):-
तथा हि-
(शालिनी)
न होर्माकूं शुद्धजीवासितकायाद्वेय सर्वं पुरुषलक्ष्यब्याहाय।
इत्यं व्यक्तं वबित वस्तुत्वकेदी सिद्धि सोडयं याति तात्त्वक्यपूर्वम्। ७४।

[श्लोकार्थः] 'शुद्ध ज्ञानासिद्धार्थी अन्य अथा जे ज्ञान पूर्वलक्ष्यब्याहायी ते जरेवा अभाव नस.' - आम जे तत्त्वकेदी स्पष्टपेश कहे छे ते अति अपूर्व सिद्धने पामे छे. ७४.

आ टीका कर्नार मुर्ति छे। अे श्लोक बनायो छे। आ गादाना (प्रेक्षाता) तो अथवर (कुंडमूख्य) छे। अनेआ आ टीका (कर्नार) पदप्रभुमबाधार्य भूष मुरि छे।
आहा... अह! 'शुद्ध ज्ञानासिद्धार्थी अन्य' (जुहो) 'शुद्ध ज्ञानी अन्य' अऽम न लीडुः. क्या? के: असिद्धार्थ असंस्थित ज्ञान छे ते सर्पस्य सिवाय (बीजेन्द्र) ज्ञान-केतकां (धर्म-शिक्षान्व) नस; माते आप्पु असिद्धार्थ लीढुः छू। 'शुद्ध अकेलो ज्ञान' अऽम न लीढुं: 'शुद्ध ज्ञानासिद्धार्थ' (लिखित)। शुद्ध ज्ञानासिद्धार्थ असंस्थित पेशी छे। अे सर्पस्य बिनेशर सिवाय केतकां जाणु नस अनेकें जाणु नस। समजह छे काँक? वस्तु अौवी असंस्थित पेशी याकृतिरी छे।

'तीकाकार' मा (जुह) दोरिष्काळ्क अकेलोकां (व्रत अपूर्व छे ते अथवा के) कहो छे अनें ('समस्कर्ष') तख-शिक्षान्व असंस्थिती (कहो छे)। निमित्तिकता अर्थात्निमित्तिकता असंस्थिती के, अऽम लायु छे। अर्थी अं कहुँ: शुद्ध ज्ञानासिद्धार्थ। शुद्ध ज्ञान छे पाणी असंस्थित पेशी ज्ञान अर्थात्न समुज्य छे। अं ज्ञान (असंस्थिती) अनी छे। समाजाः काँक?

“शुद्ध ज्ञानासिद्धार्थी अन्य अथा जे” (अर्थी) 'अन्य अथा जे' (अऽम कहुँ)। अनेता (कुंडमूख्य कहुँ) “आ जे भिन्न वस्तुत्वाया” कहुँ कहुँ ने... अनेआ 'कुं अथवा जाणु छू' अऽम कहुँ कहुँ तू। अनेआ अं तूं तूं दूरी नयस्यु। “वज्ञ पूर्वलक्ष्यब्याहायी ज्ञान पूर्वलक्ष्यब्याहाया” आहा... अ! आवी बात छू। अं बाबा पूर्वलक्ष्यब्याहायी बाबा। अधो अऽम अर्थात्नी निमित्तिकतयाने पाण परायन कहुँ छे। निमित्तीती भेद पवयो ने... अऽहो कहे छे: 'पुरुषां तो निमित छे अनार्थी भेद वस्तुतां आपों छे। निमित्तीती भेद वस्तुतां आपों हे अऽहो भेद छे अं पुरुषां मुरि, (अऽम कहुँ)। आहा... अ! समाजाः काँक?
आहा... अ! (वोकने) कहा पढे। निमित्ती वस्तुतां पवयों कहीं बढी ने...! अं शुद्ध...
इसलिए भरोसे के बाद पुढ़कलक्त्या भावो-अभें पूरक-जस्ते अर्थात् रागों उत्पाद-ध्वनि थाय है। प्यथे अनेक पूरक-जस्ते पवन वेच चेत भरोसे तो भी उत्पाद-ध्वनि पवन (अभें) पूरक-जस्ते कहीने तेने पूरकलक्त्या भाव कही दीर्घ भाव वेच चेत। उत्तम तथा अंत भरोसे तो अंत पवन भरोसे। रूपु पवन भरोसे अभें शापितकाल। शापितकाल भरोसे। रूपु पवन भरोसे अभें नथ।

आये जिसके बाद अभेंतिया भावो तो पहेंचर अभेंतिया नथ। अभें (भावो) पहेंचर भावानामां भरोसे जे जे भरोसे। इवनननी पवन पवन इवनननी भरोसे। पवन-शापितकाल तो आं नथ। रूपु तो परमाहस्तिरामिज्जवानबाहु भरोसे। परमाहस्तिरामिज्जवानबाहु भरोसे।

आये शुद्धबाबु अधिकार 'आया-२२ मा आमें आध्यू ने...। गो खाद्यभाववान'— मारामा अंतले शापितकाल-ध्वन-त्रिकाली-शुद्धबाबु भरोसे। स्वभाववान। शारीरिक यथा नथ; गो खाद्यभाववान'— श्रोत्सरस्वपनवाना। भावाना नथ; 'आदिकालिकालण गो'— अभें तो बिखुल है अभें तो हीक; पवन 'गो उवसमण सहायताण'— उवसमणवाना। भावाना (पवन) नथ। आला... हाँ! पवन (आया-२२) भरोसे तो अंतु के: (गतिता भावो, ध्वन) योक्ति, श्रीक ज्ञानस्तानो अने श्रीक गुजस्तानो-अभें मारामा नथी। 'कुं तो अंतो ध्वन, सनातन सत्पवनु कृ' अने आ बधा तो पूढ़कलक्त्या भावो छे ते पहेंचर अभेंतिया नथ। आला... हाँ! ते छे ते पवन, पवन पूढ़कलक्त्या भावो छे, ते (पहेंचर) मारा नथी। शापितकालवाना। शाप पवन मारा नथी।

प्रभु! आ (सांभरण) तो सार नाथे राख अंत शानदानकारी अने अंतताबीमी गो वांची। अंतबी मिलकरु है ने... तो भंडा शानदानकारी वांचे छे गाथामा आध्यू ने...। गो खाद्यभाववान'— झपने शापितकालवाना। भावाना नथी। तो कहे के अंते! शापितकाल तो सिद्धमा पवन छे, (छत्रो) भावामा नथी? (पवन) भापु! कह अभेंतिया, प्रभु! सिद्ध तो पवनत है। सिद्ध के कहे कृद्ध-गुज नथी। आे तो पवनत है, तो अंत पवनत इवनननी नथी।

शुद्धबाबु छे ने...। त्रिकाली शुद्ध, ध्वन, भैटा-नामार्थ ध्वन, (अ) सम्यक्षर्तन्तु भय छे। अंतबी सम्यक्षर्तन्तु पवनते ने शापित अने स्वयंपमणं मानी दीर्घी; अभें तो एभें (ध्वमां) छे ज नथी। अभें कहे छे। आला... हाँ! अभें (ध्वमां) निर्णय करवावानी पवनत अभें (ध्वमां) नथी। आ नथी। आ नथी; पवन अने निर्णय तो पवनत करे छे के ध्वन निर्णय करे है? मारामा नथी, मारामा नथी; पवन 'अंत नथी' (ते) कहे? के-तकू जाननी पवनत अंतर स्वस्थमुख वर्त तो ते जाननी पवनत अंत कहे छे के, 'आ (पवनत) मारामा नथी!' अंत पवनत कहे छे के, 'कुं पवन एभें (ध्वमां) नथी।'— मारामा अंत (ध्वन) नथी, ने एभें (ध्वमां) कुं नथी।

अंते तो 'समयसार' आया-३५०, ज्येष्ठे अवधारणी रीढलमा आध्यू छे ने! ध्याता पुढ़क बंजरं जाननी ध्याता नथी। दीक्षा बघू दीली! दीक्षा: "किं च विविधतीके देवशुद्धनायथते भावना निर्दिष्टकस्वविसंबद्धलक्षणात्मालिकन्यतवेत्रीयकथोस्मक्—

ध्याता पुढ़क अंते ध्याता पुढ़क आध्यू छे। ध्याता पुढ़क (अंतले) ध्यान करवावानी ध्याता नथी, अंतनु ध्यान करे है? के: ध्यान निर्दिष्ट अंतु अंत पवन प्रत्यक्ष प्रतिभासय अविनरद शुद्ध परिशिष्टकमर्बमालक्षण निज

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री निश्मसार स्लोक ७४ - ८६

परमात्मकोन्हूँ ध्यान करे हे. कमण (आ टीका पर अजियार) ध्यानन बढ़ गया हे. बहुशु
बखर होस्हे. विस्तारी वात आयो. व्यवहारी तुच्छवाणाने आईं आईं पडे आईं छ. व्यवहारी (निश्म)
शुचि, (श्रुति) करता करता (श्रुति) शुचि-अने (अग्नि मान्यतवाणाने) आईं पडे, प्रस्तु! शुच वाह!?

(अर्थायम् के) के के: आयो जे बधा पुढोगाना अर्थायम्) परना धावो ते परेशर प्रभाय
नयी. - “आवे के तत्त्ववेदी” (अर्थायम्) तत्त्वे ज्ञानवाणा, तत्त्वे वेदन त्यावाणा,
स्पष्टप्रस्तुते के के हे” पाखां नीमो पर भें छन ने...! “इत्यतं व्यक्तं वर्तित यस्तत्त्ववेदी”—
आवे के तत्त्ववेदी स्पष्टप्रस्तुते के के हे, स्पष्टप्रस्तुते के के हे, अंगो अर्थः स्पष्टप्रस्तुते ज्ञाय
छे. को तो वाणी छे, वाणी छे; अनक प्रकृति पत्ता आयो बृहत्ती कोय छे; पत्तां अन्यो भाव आयो बृहत्ती
छे; आयो केवलः समाजम् कांह। आयो अंग बदल लाभ्यता के: ‘आवे के तत्त्ववेदी
स्पष्टप्रस्तुते के के हे’ तो वाणी तो कांह शक्ति नयी (कदा क्षुद्र के) ‘कदे हे.’ (उत्तरं) अंगेय
वस्तुवत्त्वेन स्पष्टप्रस्तुते ज्ञाय हे. उपेक्षा अले आयो बृहत्ती, अंग तो वाणीनो भाव छे. समाजम्
छे. कांह। अले अन्यो छे: ‘इत्यतं व्यक्तं वर्तित यस्तत्त्ववेदी’— आवे के तत्त्ववेदी स्पष्टप्रस्तुते
के के हे. ‘ते अर्थं अर्थुः बिटर् भाये हे.’ आख... श्र! ‘कदे हे’ अन्यो अर्थः ‘जले हे’ अमेयो.
के के हे ते वाणी-वाणी हे. (परेशरं) अन्यो जे वाव छे तेन वें छे त्येस अब आयोमां आयो हे: “आवे के तत्त्ववेदी
kे के हे.”

(सम्बन्धायम्) गाथा-११३ मा) हुकुंडसर्स्य के के: “वोच्चायण समयशान्तनु“ अने श्रीचन्द्र पढ़ा ‘प्रवचनसार’ मा अमृतवशस्त्रीयमां के के: ‘कुँ वाणीनो अर्थ्य नयी अने मायी अणीथी तमने शान थयूँ अम (मोक्षी) न नायो. कारण के वाणी जठे छे अने तमायी शास्तीश्य तमायामां
तः शय छे. छेड़ो स्कंद के: ‘पवित्र गुप्तावली ज स्वयं शांतकुण्व परिस्तासे, अम्बा तमने
परिशिस्तासी शक्ति नयी’; (अर्थायम्) ‘कुँ कदे छह’ अम नयी, अंग तो वाव याच; अम्बा तमने
(भावावो) परिशिस्तासी शक्ति नयी; (अंगेय) भावावी परिस्तासे अम्बा उड़ी शक्ति नयी.
“तम ज परेशर अर्थुः पदार्थो ज स्वयं शेषावली-प्रभेकायमां परिस्तासे हे,” अर्थायम् पदार्थो जे के ते
ज पोते प्रभेकायमां, शेषावली, ज्ञानावली परिस्तासे हे, “शाती तमने श्येष्य अन्तती-स्मायरी शक्ति
नयी” अंगेय के काली हे ते शातीनी शीर्ष लील छे अने आयी (ज्ञानी) शान-परिस्तासे लील हे.
शाती टीका के के ते अस्मानां (अवने) शान शी लीने ताय। (अर्थायम् शान तो
शानांशी शान हे।) “मात्र ‘अम्बा मडित वेष (कदे दय)’ ते व्यायाम (समजवाना
योजन) हे, वाणीनी मुखयी ते व्याया (समजही) हे अने अमृतवशस्त्रीय ते व्यायाम (व्याया
dकरार, समजवानार) हे’ अम मोक्षी जने न नायो) (न कुत्तानो)।” आख... श्र! अम, के जो हे! अमानाशी न नायो. वाणी वाणीना कारणो नीको छे अने तमाया शानां
परिस्तासे तमाया ज्ञानां ज्ञानो हे. ते समजवाद्यमां हे अने शातीनी तमाया जान ताय हे, अम नयी.
“(परेशर) त्याकापकादविधा बनायी विशुद्ध शाननी ज्ञान वे आ अक आयो शाना
वस्तुकोन्हुँ देश्चर्याने आजे अप्रचुरणपक्ते नायो (परमात्मापिदायम परिस्तासे)।” ‘आजे ज’
शब्द ‘लीक्ष-२७ मा पठ आयो हे. के ज़ो हे! आ टीका शातीनी वाह हे; मेन बनायी छे अम
नयी अने टीकायाम तमाया जान ताय हे अम (पठ्ठ) नयी.”

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
88 - प्रवचन नवनीत: भाग-2

‘समाविष्टता’ मं तो पृथ्वीपादस्थानीमें त्यां सुधी चर्च करि छहे क्रे: हुं बीजने समजानु पूर्वे इत्यादि विकल्प उन्माद छि. विकल्प अने राज, (अन्यने) समझाने भक्ता नथी; अनाथी अने (अन्य खेलो) समझाने नथी. आझ... बहु! जीवी पातो बहु, भजनान! हुं समझावालासे पूर्वे इत्यादि विकल्प अने उन्माद छि. अने तो राज छि ने, भांआ! ते तो स्पष्टपर निपरीति छि, प्रगट लक्ष्य विनिर्छि. भाग्रे तो इत्यादि छि, प्रभु!

अनो अर्थ (लोके) इत्यादि इत्यादि करि छे क्रे: (आधायित्व) अभि करीने पोतानी निरामिस्थाता बतावे छि; छे तो अचाँ (सर्वेऽ) ठीका. पडा अं तो निमित्ती डेस्यामां आये छि. अनो अर्थ निमित्त परमां आहे करितुः नथी. समझाणी शांती?

अद्वीयां तो अं अर्थे: “तपवेदी स्पष्टपोले करि करि” अंते हे स्पष्टपोले प्रवचन आतानो अनुभव करे छे. स्पष्ट अर्थात प्रवचन. स्पष्टपोले करिए (स्पष्टपोले प्रवचन जोड्ये छे. “ते अति अपूर्व सिद्धिने पामे छे.” अनंतकाजा कुर्यारे सिद्धप्रयाश न था, अंती अपूर्व अति सिद्धप्रयासने प्राप्त थाय छे. अपूर्व शब्द दीघा करि ने...! अपूर्व अंते अनाः पूर्व अर्थात् पूर्व कुर्यारे नथी था, अंती अति अपूर्व सिद्धप्रयासने पामे छे, सिद्धिने प्राप्त थाय छे. आझा... बहु! पामी गाया था।

* * *

हवे, आ पांय (गाया) बहु तेवी छि, भांआ! कुर्या के अभि व्यवहार-निरेन्द्र अने आये. पडेयां व्यवहार बतावे अने पदि निरेन्द्र अने जूरी देखनालाई कोने बोये छे अंतूप देक्ने करि. निधानस्ति द्वारा देखना बोये नथी, अपूर्व देखने समझूणु दांती? अं पांय गाया छे:-

(जुमो पृ. 88 उपर)

“कार्यपरामर्श मं ज परेरं अताना हे. निर्दयु करि हुं पराय, निपटनौ निर्दयु करे हुं अनित्य पराय. पठू तेनो निरेष्य हुं कार्यपरामर्श. तेवी ते ज परेरं अताना हे. पर्याप्तने अन्नतार्थ करीने, व्यवहार करीने, असाताना करि हुं.”

-श्री ‘सर्वाधिकार’ / शब्द.

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्रीमद्भगवतःकुङ्कुमायर्यदिव्यप्रसीतः

श्री नियमसारः गाथा ५१ - ५५

श्री पञ्चप्रथमदाशिदेवविशेषतं संस्कृतं टीका

[ शुद्धभाव अधिकार |

विरीयाभिषिक्तविविधायितसहस्रनामे सम्मतं।
संसारियाभिषिक्तविविधायितसहस्रनामे होदि संणानां।।५१।।
चलमलिणमाधवतविविधायितसहस्रनामे सम्मतं।
अधिगमभावो यान्तं हेयोदयेत्तचानां।।५२।।
सम्मतस्स गिमित्तं जियसूतं तस्स जाणया पुरिषा।
अंतरहेवं भणिदा दंसणमोहत्सखयपहुँडी।।५३।।
सम्मतं सणानां विजुदि मोक्षस्स होदि सुण चरणं।
ववहारणिच्छएण दु तम्हा चरणं पववकामि।।५४।।
ववहारणयचरिते ववहारणयस्स होदि तचरणं।
णिच्छएणयचरिते तचरणं होदि णिच्छयदो।।५५।।

विपरीताभिषिक्तविविधायितश्रद्धानामेव सम्यक्त्वम्।
संसारियाभिषिक्तविविधायितं भवति संज्ञानम्।।५६।।
चलमलिणमाधवतविविधायितश्रद्धानामेव सम्यक्त्वम्।
अधिगमभावो यान्तं हेयोपाद्यत्तचानां।।५७।।
सम्यक्त्वस्य निमित्तं जिनसूतं तस्स झाणया: पुरुषाः।
अन्तरहेवं भणिता: दर्शनमोहत्सखयप्रभृते।।५८।।
सम्यक्त्वं संज्ञानं विच्छ तम्हं मोक्षाय भवति स्शृणु चरणम्।
ववहारनिश्चये तु तस्माहरणं प्रवक्ष्यामि।।५९।।
ववहारणयचरित्रे ववहारणयस्स भवति तपश्चरणम्।
निश्चयनयचरित्रेण तपश्चरणं भवति निश्चयतः।।५५।।
रलत्रोपुरा्स्यापात्मानेतत्

भेदोपचारलत्रत्रयमपि तावद् विपरीताभिनिवेशविविर्जितश्रव्यानरूपं भगवतां
सिद्धिपरंपराहेतुमूलानां पंचपरंपरानिमेनां चलमलिनागादविविर्जितसमुपजनितिनिश्चलभक्ति-
युक्तत्वमेव। विपरीते हरिहरण्यगमिनिद्विप्रणिते पदार्थसारय हाभिनिवेशाभावा इत्यथः।
संज्ञानमपि च संशयविमोहविभ्रमविविर्जितमेव। तत्र संशययः तात्तू जिनो वा शियो वा
देव इति। विमोहः शाय्यादिप्रोक्ति वस्तुनि निश्चयः। विश्रेण द्वाध्रात्तमेव।
पापक्रियाविवृत्तिपरिवर्णशास्त्रारित्रम्। इति भेदोपचारलत्रत्रयपरिवर्तितः। तत्र
जिनप्रणीतःहोपदेयतत्तचवर्चितिरितेव सम्यग्ज्ञानम्। अस्य सम्यत्वपरिश्रायमस्य
बाह्यसहकारिकाणः

वीतारगसर्वज्ञमुखकमलबिनिर्गतसमस्तसद्विप्रतिपादनसमर्थब्रह्मायुतमेव तत्त्वज्ञान-
मिति। ये मुमुक्ष: तेतथुप्पचारः पदार्थनिवेशसंहेतुकात् अन्तरंगहेतव इत्युः:
दर्शनमोहनीयकर्मक्षयमभूतः सकाशादिति। अभेदानुपचारलत्रत्रयपरिवर्तनेत्रीजियस्
टॅकोर्तिक्ष्याखैकस्मथविभ्रमसमस्ताभ्रातानेन, तत्त्वविचित्रितमात्रांतःसुखपरमो-
धेन, तत्त्वाविचारस्थित्यरूपसहजार्थारित्रेण अभूपूर्वः सिद्धपर्ययो भवति। यः
परमजिनयोगीशः प्रथमं पापक्रियाविवृत्तिरूपव्यवहारनयार्थित्रेय तिथिति, तस्य खलु
व्यवहारनयोगोत्त्वपर्श्चर्थित्रेण भवति। सहजनिर्वाणयात्मकसमस्यमाथात्मकपरमाणि
प्रत्यत्तमतः। स्वस्वपाविचारस्थितिरूपं सहजनिर्वाणारित्रम् अनेन तपस्या भवतीति।

श्रव्यान विपरीत-अभिनिवेशविर्जिते ते सम्प्रृतं छे;
संशय-विमोक-विब्राहिता विरिक्त श्लान सम्प्रज्ञान छे। प्र.
चल-मल-अग्राध्यक्षा रक्षित श्रव्यान ते सम्प्रृतं छे;
आदेह-देह पदार्थाण अवजोध सम्प्रज्ञान छे। पर.
जिनसृज समकिलेतु छे, ने सुनूकात पुरुष छे;
ते ज्ञाता अन्तर्भु, हमोक्षाहित केजने। प्र.
सम्प्रृतं, सम्प्रज्ञान ते क चर्चा मुक्तिमपं छे;
तेहि क्रिश कुं चर्चाने व्यक्तार ने निश्चय वे। पृ.
व्यक्तारनयार्थित्रां व्यक्तारं तप कोष छे;
तप कोष छे निश्चय ठः, आदेह ज्ञान निश्चयने वे। पप.

अन्यायः—[ विपरीताभिनिवेशविविर्जितश्रव्यान एव ] विपरीत- *अभिनिवेश
रक्षित श्रव्यान ते क [ सम्प्रृतं ] सम्प्रृतं छे; [ संशयविमोहविभ्रमविविर्जितम् ] संशय,
विमोक ने विप्रेम रक्षित (श्लान) ते [ संज्ञानम् भवति ] सम्प्रज्ञान छे।

* अभिनिवेश = अभिप्रय: आदेह.

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
[ चलमलिननमागात्तविविरोधतत्राध्याननम एव ] अणात्म, भवितता अने अगणिता रक्षित श्रद्धान् ते ज [ सम्प्रवर्त्यं सम्मध्यत ्तः। हैयापदसुयाद्वैतवाद्वायम् ] दैव अने उपाधियो तर्पनो [ अधिगमध्याय ] अधिकारुप्य भाव ते [ ज्ञानम् ] ( सम्मध्यत ) ज्ञात छ।
[ सम्प्रवर्त्यपात्तेन ] सम्मध्यतुम् निमित [ जिनसृत् ] जिनसृत् छः। तस्य ज्ञायते एकः [ ज्ञेष्टुः ज्ञानात् पुरुषोऽने [ अंतहत्वः ] ( सम्मध्यत्वः ) अंतर्गत अतुः [ स्मिता: ] कळ्या छः। [ दर्शनमोहस्य क्षयप्रमुखः ] अश्वा के तेमने दर्शनमोहना क्षयप्रवणी केह छ।
[ शृणु ] सांभाय, [ मोक्षस्य ] भोक्षने माते [ सम्मध्यत् ] सम्मध्यत श्रेष्ठ छ, [ संज्ञाया ] सम्मध्यायः [ विद्यते ] श्रेष्ठ छ, [ चरणम् ] शारिरि ( शः ) [ मित्रि ] [ भावित् ] श्रेष्ठ छः। तस्य ज्ञायते [ चवहारनिग्राह्येऽ तु ] कु चवहार अने [ निघात्वी ] [ चरण प्रवर्त्यायि ] शारिरि श्रेष्ठ।
आ, रस्तन्त्रना स्त्रापनुः कृयः कर्म।

प्रथम, भेदोपाध्ययः-रत्नन्त्र अग्र प्रमाणः के-विपरीत अभिविवेश रक्षित श्रद्धान्तः अनेकः जे सिद्धिना परंपरात्तेतृमुः भगवंतं पंथपरमेश्री व्रतेऽनुः ज्ञाति-भवितता-अगणिता रक्षित विपरीत निश्चयः भक्तियुक्तपशुः ते ज सम्मध्यत छे। विङ्गुरुभावार्थिनिकित विपरीत पक्षसमूहः प्राणीः अभिविवेशाना अगायः ते ज सम्मध्यत छे-अपोः अर्थ छे। संशयः विमोक्ष ने विव्रम रक्षित ( शान ) ते ज सम्मध्यायः छे। ताप, जिन्हें देव वसोः के शिव देव वसोः [ अपोः शंकापुर्वमाः ] ते संशयः छे; शक्तियार्धिनिकित परम्परामा निश्चयः ( अर्थात् बुद्धाग्रे केलिया पद्धार्यो: निम्बितः ) ते विमोक्ष छे; अमानापशुः ( अर्थात् वस्तु शूः छे ते संबंधी अर्थापशुः ) ते ज विव्रम छे। पापिथायाय नियुक्तरुप परिश्राम से शारिरि छे। अग्र भेदोपाध्ययः-रत्नन्त्रयप्रसिद्दित छे। तेमा, जिन्नप्रगृहीत हैय-उपायेय तत्पुरतुः शान ते ज सम्मध्यायः छे। अम चवहारनिग्राह्येऽः अग्र शतरी शतरी-सर्वना मुक्तानाथायी निकेतनोऽवस्यसमस्यतुः प्रतिपादनमाः सम्बंधी अवी देशश्वर तत्पातः अर्थ छे। जे मुनिशुः छे तेमने पदा उपायायी पक्षविनिवेशाया केतुःप्राणीः लोधी ( सम्मध्यत्वप्रवर्त्यायि ) अंतर्गत केतुः श्रेष्ठ छे, करारः के तेमने दर्शनमोहनीकर्मया क्षयप्रवणी केह छे।
अभेद-अनुपाध्ययः-रत्नन्त्रयप्रसिद्दितायायः ज्ञायने, टेलीकीर्ती शैव ज्ञेनो अक वस्तुः छे अपि निह धर्म तत्तत्त श्रद्धा वेदे, तात्तस्त्रायः ( अही हेंक परम कास्मिनी श्रद्धा वेदे, तात्तस्त्रायः ) अर्थ अंबोध्य धर्म तत्तत्त्त्यस्य अविवाहिन मिन्त्रथतत्त्त्य श्रेष्ठ छे। जे पापिथायायी श्रेष्ठ वेदा पापिथायाय नियुक्तरुप चवहारनिग्राह्येऽ शारिरम् श्रेष्ठ छे, तेमा पूर्वे चवहारनिग्राह्येऽ चवहारनिग्राह्येऽ तपस्ये श्रेष्ठ छे। सक्तिनिवेशयात्त्त्त्य परम्परास्वाधयः प्रतिपाद ते तपूः निह स्त्रापम् अविवाहिन सक्तिनिवेशयात्त्त्त्य अग्र तपस्ये श्रेष्ठ छे।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
‘नियमसार’ गाथा: पप थी पप. (श्रद्धावार अधिकारकर्ता) छेली गाथामो छे. अनेनी टीड़ा: “आ, रत्नचन्द्रा स्वदेशनु कहन छे।” अभाव मिथिला अने व्यवस्था वेग समुख में लेवा छे. अनेकां पढेवां व्यवहारसंस्थानी वात करेछे. पप व्यवहारसंस्थान श्री में छो छो नहे? क्ये: जेने अंतर निष्ठुमस्रमर्यादा-शान आहि श्री में तेने ज व्यवहार श्री में छे। ‘रत्नचन्द्रा’ नेपालकर्ता छे तेथी कदं: तावद अंदेश प्रमथामा, व्यवहारसंस्थानी व्यभिचार करेछे. पप अं श्री में छो छो नहे? क्ये: जेने निष्ठु कहाँ में तेने. छह गुप्तस्वर आहिमा माँ व्यवहार श्री में छे। सातमां नेवारनो अपाक राखने निष्ठुशालिनी सिर्ता थाँ दूर छे।

‘प्रथम, भेदोपवर-रत्नचन्द्रा आ भ्रामी छे’- प्रथम, त्यानं अबेक-अनुपाधार (अंदेश निष्ठु) सम्प्रदाय-शान-शारिर प्रगट छे त्या सिर्ता आँशी छे तेथी ते (साधु) ने (पोताली) अस्थिरता (वश) त्या भेद-उपवास (अंदेशे) व्यवहारसंस्थान-शान-शारिर आवे छे. समझानु श्रींत? (व्यवहारमा) भेद-उपवास (कदं) अने निष्ठुमां अबेक-अनुपाधार देखेने. अने (व्यवहारने) भेदोपवर; अने तेने (निष्ठुने) अबेक-अनुपाधार. अंदेश वात छे।

क्ये हे “भेदोपवर-रत्नचन्द्रा”- आ भ्रामी हे के “विपरीत अभिनवेशरहित श्रद्धानुष्ठान सयमुक्त अंदुं जे सिद्धिना परंपराभेदतृपुरूष” मुक्तिना परंपराभेदतृपुर-पदेवी श्री में छो छो नहे. अंदेश मां ते व्यवहारश्री में. (अं परंपरा दाश छे.) अर्थात निष्ठुस्मर्यादा ते तो साधुता दाश छे अने तेनि साथे जे व्यवहारश्री में ते परंपरा दाश छे. कहाँ दे ये (व्यवहार) तो अभाव कृदने पूर्ण श्री। अंक्तो व्यवहार अं परंपरा कहाँ नही। (श्रीमता:) अंक्तो व्यवहार श्री कहाँ ज नही, अभिमां आप कहो छो? (उत्तर:) ये (अंक्तो) होतो ज नही. तेम छतां अनेने (पप) व्यवहार देखायां. ‘बाँध अंवितका’ मां अभिमा कहो वने ना! ‘अभिमां जिनसंप्रदायी कृदनेवा व्यवहार छे’ (-अभिमा अरवासने व्यवहार कही. व्यवहार कही निष्ठुमी (परंपरा) व्यवहार छे ज नही. कहाँ दे अनेने (व्यवहार कही) ती अनंतद्यान नवभी श्रेष्ठ गयो. अंक्तो व्यवहार तो अन्तराय (अंद्वी) छे ज नही. व्यवहारश्री, व्यवहार अं पाप (डियाथी) निपुतितश्री व्यवहार (शारिर) ते अंगीकरणी कृदने अने मिथादेश नवभी जीवेकडे गयो; छतां सम्प्रदायनु पगर अनेन्द्री कुंडिपण वास थयो नही. तेना (व्यवहारना) कारणी परंपराने (सिद्धि) मूली नही. (उद्देन) तेना (व्यवहार) कह परंपराभेदतृपुर (वतो) नही. परंपराभेदतृपुर ती तेना कहे के: जयो पोताला स्वामीना अनुसरण श्री में. अं अंक्तीयां कहे के: विपरीत अभिनवेशरहित श्रद्धानुष्ठान अंदुं जे (व्यवहार, ते) मुक्तिना परंपराभेदतृपुर (छ)। (परंतु) जेने अंक्तो व्यवहार छे ते (तो) मूढ छे।

अं (वत) ‘सम्प्रदाय’ गाथा-२१४ मां आवी हे: तेनो अंतालिंक्यु, व्यवहारमा मुंडु, प्रीत विवेकान्ना निष्ठुपर आशु छे. कारण दे जेने पोताला आशुमने निष्ठुस्मर्यादा-अनुभव न थयो श्री में तो व्यवहारमूढ छे; अनेने भेदोपवर (रत्नचन्द्रा) लाजु पकड़तो नही। भेदोपवर (रत्नचन्द्रा) तो तेना लाजु पकड़े के जेने अबेक-अनुपाधार (रत्नचन्द्रा) अं होता परंपरा श्री. अंदेशे प्रकट थाँ श्री में. अंदेशे ते: भगवानरामा अभेक, श्रद्ध सत्त्वत, अपव (छे; अंसी) जेने अबेक-अनुपाधार, कोठ उपवास नही अंदेश (रत्नचन्द्रा) अंतरमा निष्ठुस्मर्यादा-शान-शारिरिनी अंसी स्थिरता

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री निम्नमस्य गाथा पृष्ठ पृष्ठ – ८३
उपन्न यह कष्ट तेने अरे नेपालवार-रत्नाकर परमीटेडमूल (छि).
“बगदत नृपमर्मी प्रलेखनु यज्ञत-मलिनता-अगारता रक्षित विभेदूँ निश्चय
बहितसुकीकरणुः ते ज सम्भवते छ।” (‘व्रजस्मसदृश्यवनी परिभाषा:’) बगदत नृपमर्मी
प्रलेखनु उपन्न यज्ञता हास्य चे ज यज्ञता, मलिनता अरे अगारता रक्षित निश्चय
बहितसुकीकरणुः ते ज सम्भवते छ (ते ज सम्भवते छ)। निश्चय बोः निश्चय नस्थी; निश्चय
व्रजस्मसदृश्यवनी अर्थात् व्रजस्मसदृश्यवनी निश्चयकार्याः। जने निश्चयसम्बन्धितले,
सम्भवता है अरे अन्तः स्वरूप पश्चात् है तेने अरे नेपालवार-रत्नाकर (के बहितसुक्ते परमीटेडमूल
ते ज सम्भवते छ) शुचि कहूँ? यज्ञता, मलिनता अरे अगारता रक्षित निश्चय
बहितसुकीकरणुः ते ज सम्भवते छ। व्रजस्मारे 
अरे है तो शुद्धराग, पदा अरे वेशनो उपवास दरीने सम्भित कहूँ। सम्भावना है अंतः?
वेन पति नासिकी वात करे है: “वासु व्रजस्मसदृश्यवनी विपरीत पदार्थसङ्ग्रह प्रतेना
अभिनवेशो अवांते ते ज सम्भवते छ। (अवो अर्थ छ।) आंतः है! निश्चयसम्बन्धित तो
स्वापना आंतः व्यक्ति अरे। अंतः अंतः व्रजस्मारे जे अरे है अंतः (के) प्रणयमर्मी प्रलेखनु (निश्चय)
बहित-प्रेम-अनुरक्षणुः ते अविश्वसनो डेला पहाङ्को अवांत् छ; ते श्रद्धा,
व्रजस्मारे छ। तेने निश्चय (श्रद्धा) है, अंतः आवाजः कर्णे। (व्यक्ति) परमित्योगीशिर
(पदेला) पाणिजयी निदुःसुखः (व्रजस्मस्य नाटिनिः कष्ट 
कहूँ) –अंतः पदा आवाजः कर्णे। (अर्थति जे) परमित्योगीशिर छ। तेने पाप (कूलाची)
निदुःसुखः व्रजस्मारे (अंतः आवाजः कर्णे।) सम्भावना है अंतः?
‘सम्भावना’ गाथा-४२३ मा आम तो कहूँ नेहूँ! के: आवाजः अरे आत्मरक्षन,
आनंदना अनुभवना बान विना जे व्रजस्मारे छ। ते तो व्रजस्मारे छ। डाश के ज्ञानवाणि
तना शाले ने निश्चयनयो आवाजः आव्यो नस्थी, (तेवी ते तो व्रजस्मारे छ। शाली व्रजस्मारे
नस्थी। (तेवी) व्रजस्मारे ज्ञानवाणि छ। (त्या) १२३ गाथामा कहूँ नेहूँ! “जहेऽलो
प्रयोजनवाणि छ” ते आ वात।
(अर्थयुक्त कहूँ के:) व्रजस्मसदृश्यवनी विपरीत पदार्थसङ्ग्रह प्रतेना
अभिनवेशो अवांते ते ज सम्भवते छ। (अवो अर्थ छ।) आंतः व्रजस्मारे प्रणयकरणे तो
व्रजस्मारे छ। यज्ञता है अरे अवांती कहूँ। पहेला अविश्वसन है, कहूँण पति
नासिकी वात। (अर्थयुक्त कहूँ के:) “वासु व्रजस्मसदृश्यवनी विपरीत पदार्थसङ्ग्रह प्रतेना
अभिनवेशो अवांते ते ज सम्भवते छ।” अरे है अंतः अंतः शाली वात कर्णे। विशेष तो
आवाजः कर्णे।
(संशय:) “त्या जिन हेतु कहूँ जे शिव हेतु कहूँ (अवो अवांत्) ते संशय छ।”
निश्चयसम्बन्धितने व्रजस्मसदृश्यवनी अवी शाली वात कर्णे। सम्भावना है अंतः?

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
स्वामी निमबारक गाधा पृ-पृ - ८प
t्यारे ते संप्रभांमा कडेवांमा (गकर्ण) छे ने... ते विना (इंट्रेक्ट) कडेवां? (पृढ) अयम (आरित्र) नति.
अर्धी तो क्वे छे: जेने अतंतसनुना आनंद अने आम्कृतन (प्रागत) बउणु छे, ते परम्परागतेरीरेरि वने पडेनुमा पंथमाप्रतिकास पापिकायी निवृत्तिव प्रवदननन (तुर आरित्र) बयेन छे. अर्धी कहुँ: "पापिकायी निवृत्तिव परिश्रम ते आरित्र छे." पड़ा ते क्वे? के: अनेक-अनुभुव-नित्यपरिश्रमवाहन ख्याने, अनेकारं-नित्यपरिश्रमतित छे. (अटेले के, तेने) पृष्ठ-नन्दना नाथनी-अनेकनना आश्रय (अथात्वाने अनेक-अनुभुव-नित्यपरिश्रमतित) छे (पृढ) अने ज्याम सुधी अंतर पूर्ण स्थिरता नति त्यास सुधी अवा अनेकारं-नित्यपरिश्रम श्रृं, खाने, अने पापिकायी निवृत्तिव परिश्रम आवं छे. (तेने) "आम अनेकारं-नित्यपरिश्रमतित छे." पडेना श्रृं अने संशयाकार देहित सम्भावनानि वात क्वे क्वी ने...? ख्याने अने भुलू दूँ भाणे भाणे क्वे छे: "तेमा, जिन्नाध्री देय-उपाध्य तबीयों खाने ते ज सम्भावना छे." छे तो अ (पृढ) अववारसम्बंध (खाने). आए... या! पोताना बनन्नना आन्तनुं सम्भ वेदन बयु (अर्थात्वा) अने छे (निष्क) तेलयत्नुं खाने ते नित्यसंमिश्रान (छे); अने देय-उपाध्य (तबीयों खाने, अे अववारसम्बंध छे); अयम बे बछ गाणा. जिन्नाध्री तवीयोंमा पड़ देय अने उपाध्य छे. अयम खानाने अववार (सम्बंध) खाने क्वे छे. सम्भाव्या झांस? सम्भावनानि व्यायाम पडेलां आयी गद त्यी: संशय, विभिक्त अने विभिक्त खाने ते ज सम्भावना छे. अर्धीया आ देय ने उपाध्य सुधी पड़ अववारसम्बंध छे. बे बछ ने...! आ देय अने उपाध्य. समक्षितने नित्यसम्बंध पोताना स्वभावनुं छे, अने देय-उपाध्यं खाने अववारशान छे. पड़ अे जिन्नाध्री (देय-उपाध्य-तबीयों...) हो! अन्यभित्तिना क्वेहों देय-उपाध्य नति. सर्वधा बन्नना तिलिक्त, अम्बो देय-उपाध्य (तबी) क्वेहों. बे बछ गाणा ने...! देय अने उपाध्य; अटेले अववार! आए... या! [ "आ सम्क्षपितरिभाषामुः बाह्य सकाराकास वीरनाग-सर्वाना मुख्याङ्कानां नीक्षेणुं समस्त वस्तुना प्रतिपादनामां समर्थ अंुव व्रज्युलित तत्वानन ज छे."] (शु क्वे छे?) के: आ समक्षपितरिभाषामुः बाह्य सकाराकास, (अटेले के) अववारसमक्षितमुः बाह्य सकाराकास... समक्षितने हो...! नित्यसमक्षितने अववारसमक्षित (ते) बाह्य सकाराकास (अर्थात्वा) बाह्य सकार अटेले साधे रेडेवुं अंुव दर्शां- [वीरनाग-सर्वानाध्री व्रज्युलित तत्वानन ज छे.] अगे सुमाज्ञानाध्रकाश तात्त्व अध्यायामां शब्दुः "अववार" देय क्वे? के: सकाराकास, (माके) अववार क्वे. अगे उपयारी नित्यसमक्षि अने खान क्वेहोंमा बावे छे. तात्त्व अध्यायामां ज्याम नित्यसमक्षि अने अववारभासानुं ख्यान छे त्याम अे (वात) छे.
अर्धीया अगे क्वेदुः के: समक्षपितरिभाषामुः के अववारसमक्षपितरिभाषामुः छे; अंुव बाह्य सकाराकास वीरनाग-सर्वाना मुख्याङ्कानां नीक्षेणुं.. आए... या! अर्धी तो अववार (सम्बंध) -क्वानमा पड़ बाह्य सकाराकासणे वीरनागणे क्वे हुँ मुः. जरी जीवन वात क्वे, प्रापु! शैतांबर-शार्मने पड़ बाह्य-अववार सकाराकास नति क्वेता. अने (शैतांबरने) अंुव नित्य (सम्बंध) तो क्वे हुँ नति; पड़ अववारसमक्षितानु परिश्रमामा पड़ शैतांबरप्रणिपत शाश्रो निमित वर्ग धर्मता नति, दर्शां के: शैतांबरनुः शाश्रो सर्वाध्री दर्शां नति, क्वक्पत बनावेला हुँ; अटेले ते शाश्रो
‘पंशितकल्याण’ गाथा-२ भूषण पाठ: समानहुमुदमदांत” संस्कृत पाठ: “श्रमणुखोददाताये।” अने (शुकरस्व) ब्रह्मीत: “जिघवनार्तगत”-श्रमणा।

भूषण नीकोली (अभैरम्य) “चुदानगदिजिवारण सचिवाण”- चार गतिनो नाश करवाणी (अने निरालाली नाशप्रूदु”)-अथवी भगवानी वाणी हे। ‘स्वर्गने प्रात दागे’ अने पण भगवानी वाणी नही। “ऐसी पण्यमिय सिरवा समयमिय सुणह वोषांगमी।”-अथवा अने समयने शिरसा नबन करने हुंडे तें-तें द्वार दुःहे हुं हे श्रुवण करो। अथम अभयां ‘नियमसार गाथा-२’ मा छ। तस्य मुहुगदवण्यु प्रवासदसोस्विरिय हुंण”- तेमना श्रीभुषण नीकोली वाणी।’-अथु छ ने।

डव्यने तत्क पण कहांमा हुं ने तत्क पण कहे हुं। (‘नियमसार’) गाथा-तमा अने तमा “तच्चा” हुं। पण छता केटावेक तकार करे हुं ‘डव्यने तार्थव न केदावण’, ‘तप अने तत्क पण हुंछ हुं।’ पण अने तत्क पण आधामां कहुं ने...। ‘तच्चा इदि भणिधां” हुं। “जीव पोगलकाय कराशामाय य काल आयारस। तच्चा इदि मणिन गणागुणपुूणहिं संजुता।” हुं तो तत्क पण अने तार्थव कहे हुं। अथु पण पकार। अहेक शब्दां वाणीं उठावे हुं के तार्थव नही, डव्यने तप न केदावण। डव्यने तत्क (२) केदावण। अहेक कहुं: अमे छे डव्यने तार्थव कहीं छीने। अहेकमा तो अहेक अहेक शब्दी जुडी जुडी बधी व्याख्या भाूघा हुं।

अहेक कहे हुं: आ समाध्वकस्मधामातु भाल सहकारी कारण वीराज-सवर्णाना मुनकनमांधी नीकोलीं समस्त वस्तुना प्रतिपादणमा समर्थ (अथु द्वारशुरुष तत्कदावण ज्ञ हुं)।

‘समस्तसार’ निरेह अविर्दशनी पकेली गाथा (१८३) छे ने।...। “सम्वक्ष्टि झे झन्नीमो वो अथेतना तथा चेतन ‘क्योमो’ उपभोज करे हुं ते सर्व निरेहां निमित हुं।”-अहेकसू प्रमु अमे कहे हुं के परत्या भोजवण नही, छांता अहेक कहुं: चानी चेतन अने अथेतनमा भोजवे छे, ते सर्व निरेहां अर्गण छे। आहा... हुं। निविना अं देहि छे ने के: आ अथेत-सतेतने, सचीने भोजवे छे, छुओ। वावा भाय छे; छांता चानी-भो विरेहां देतु हुं! ‘भोग’ नो
श्री नियमसर गाथा पं-पं - १०\n
अर्थ: जानो ( बोगाते ) बोगावे छ ( अम नयी ) . ते बोगाते बोगवतो नयी , परंतु जरी रह आसिदित ( वा आवी जय छ तो ते संबंधी ) रागाने जोगावे छ . पण अर्धी तो अम कडेवाना आयुः अचतन तथा चेतन द्रव्योनिः उपमोग करे छ . ( पण ) परवर्तीने तो स्पर्शता य नयी ( तो पछी ) परवर्ती बोगावे , अंतुं उपांसी आयुः ? ‘समासार ’ नो पाड तो अंगे छे : ‘समाधिष्ट जय जे छाखियो वो अचतन तथा चेतन द्रव्योनिः उपमोग करे छ ,” आहार्... ध्याय ! द्याय ! अे तो अपेश्चारी क्षत्त कुः छे , अम जालुः जोजाे . जोहे पडी रागेअम न रागे . त्या वणी अने ( सम सर्जने ) बोग निर्जनानी अदेत तो जो बोग छोराने मांद्र स्वरुपामां - शारिरामा रमाता कर्ती नयी , बोगारी निर्देश वह जरी-अम नयी . अे द्रुमी प्राकातायी अविकात- विशेषता बताया , तथा अन्य अन्तिनुः ( अने ) स्वरुपामा-अंतमुंचनमा जोर बँधुः छे , अे कर्ते , अने बोग पण द्रुमी अपेश्चारे निर्जी जय छे अम कडेवाना आयुः . आही तो बोगाने भाव तो पाप छे . ( अनाथी ) तो अने भंजन ताया . समाधिताने शु पण मुनिने छे गुरुस्ताने भक्ति निर्माणा जे परिदामाने छे ते छे तो शुम , पण ( तेठी ) अने भंजन ताया छे . समर्थाय कु ण ? (तेम छाँगा ) अम वटिले के , समाधिताने कु ण आस्थिव अने भंड छे ज नयी , अम नयी . भारु ! अ ( वात ) कह अपेश्चारी मायी छे ? सर्वाधिकार सावे मोली तयार मायी छे ने ... ! समाधिताने भंड अने आस्थव छे ज नयी ; ( पण ) अम कह अपेश्चारी कलुः ? (अे तो अने ) अन्तमुंचनी अने विन्युत्त संबंधी आस्थव अने भंड नयी ( -अम कडेवाना आयुः छे ) . अने बापुः ! जे सर्वधिक भंड न योज तो ( पणी अम देम कलुः के ) दशमा गुरुस्ताने लोभ छे तेठी ते छ छे भावे छे . ( प्रायुः ) अदेत ताजे तो ( पण वस्तुसिध्दि ) अयेन छेत शेक नयी .

अर्थ छे : पीरागार-सर्वसत्ता नुक्सानमांथी नीकोलें योगसमस्त वस्तुनु वैदिपान... आके... ध्याय ! अर्थुः ! अे तो भगवानना मुनप्रथ्य नीकोलें कलुः . अने ( भीजुः ) समस्त वस्तुनु प्रितिपान ( अर्थात् ) अधि शीलनु द्वारा तेनां वाणीमां आवे छे , अम करे छे .

आके... ध्याय ! (अर्थ छे के : ) समस्त वस्तुनु प्रितिपानमां समय ! अने भीज वाणी श्रीमान्त ( राजचंद्रक ) ‘अपूर्वु अवसास ’ मां अम करे छे के : “जे पह श्री सर्वसेने त्रिकू शानमां , द्रवी शक्त्या नयी पण ते श्री भगवान जे .” (तेमज ) ‘गोमतीसार ’ मां पण छे : जेनुः शानमां जायुः अंतुं वाणिमां ( आवे नयी , पण तेना ) अन्तमां भागे आवे . (अर्थात् ) जेनुः शानमां आयुः तेना अन्तमां भागे तो वाणीमां आवे छे अने तेना अन्तमां भागे गद्धर्वने प्यामां आवे छे .

आके... ध्याय ! अर्थ तो अे कलुः : मुष्कप्रथ्यांमथी नीकोलें समस्त वस्तुनु प्रितिपान ( -अे ) पूर्ण ज छे . अे पण ‘समयसार ’ मां आवी जय छे : भगवानना मुष्कथी पूर्ण वस्तु १ आवे छे , पूर्ण वस्तु करे छे : ते आवे छे . अर्थाये अे पण कलुः : समस्त वस्तुनु प्रितिपानमां समय अंतुं वस्तुश्लूब तत्त्वानां , ते निमित्त छे . अदेत छे - मुष्कप्रथ्यांमथी नीकोलें जे भगवाननां वाणी तेसम्त पदार्थने केहनारी छे , तेवाणी व्यवहारसमाधिताने निमित्त छे . आके... ध्याय ! समजाय छे कु ण ? 

( शु करे छे ? ) के : “अंतुं द्रव्यश्लूब तत्त्वानां ज छे .” भगवानना मुष्कप्रथ्यांमथी नीकोलें समस्त वस्तुनु प्रितिपानमां समय अंतुं द्रव्यश्लूब तत्त्वानां ज छे . ते जे व्यवहार- सम्बन्धितामां भाल-सक्कारी निमित्तकेहनारां आवे छे . आके... ध्याय ! अय्युः छे प्रायुः ! अने ( भीजुः ) शु ताया ? वणे ( विवाहस्पट ) विषय आवे छे:

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
“जे मुमुशुओ छे तेमने पझ उपमार्थी पडार्थनिर्मित्यना देतुपणाने दीवी (समकुत्त्व परिपालना) अंतरंग देतुओ कदा छे, काराशे तेमने दर्शनमोहनीय कर्मना स्थापित छे।”

शुं कदे छे? कँे मुमुशुओ छे तेमने पझ उपमार्थी पडार्थनिर्मित्यना देतुपणाने दीवी (अंतरं्ग कँे) वर्मात्वा समकिती शाृंणी धाय, अने पोते अंतरंग देतु छे; अने अंगनी दर्शनश्रृंङ्ग वारी बाब (सड़कारी धारा) छे। अं छे तो बने बाह (देतु)। पझ जुओ: मुमुशुओ छे तेमने पझ उपमार्थी पडार्थनिर्मित्यना देतुपणाने दीवी, व्यवहार्थी पडार्थना निर्मित्यना देतुपणाने दीवी, समकुत्त्वपरिपालना अंतरंग देतुओ कदा छे।

आमा (पाँडु) धापा कदे छे। अमे कँे: ‘समकिती जे धाघ छे तेने ज्ञातिको धाग धाय के,’ पझ अं अम्मा अम त्रथी। अम्मी तो व्यवहार्थसमस्तना परिपालना जे छे तेने दर्शनश्रृंङ्ग बाब निमित छे, त्यारे श्रुतने क्षेत्रारे सामे समकिती छे। अंतरंग कँे: देशनालिंया समकिती जे (केन्द्र) निमित धाय छे। अशानी (केन्द्र), देशनालिंया निमित धारा ज त्रथी। ‘ताप्य रश्मिर्विर्तिक’ मा अं धारे आधुन के।

अम्मा कदे छे: मुमुशु छे (अंतरंग कँे) भोजनो अभिलाली धाय छे, तेमने पझ उपमार्थी पडार्थनिर्मित्य-धार्य व्यवहार्थी देतुपणाने दीवी (दर्शनश्रृंङ्ग धापा अंतरंग देतुओ कदा छे।) जे निरश्यसम्पर्शन छे तेने व्यवहार्थसमस्तना मांजनारी-दर्शनश्रृंङ्ग बाब सड़कारी धारा-निमित छे। बाब सड़कारी धारा (तट्पर); अने व्यवहार्थी सम्पर्शन अं अंतरंग देतु छे। सामे शाृंणी-समकिती निमित छे। तो अमु (मुमुशु) धापने अंतरंग देतु क्षेत्रारे आधुन के। धारा के तो निमित छे। अंतरंग निमित छे ने..? शाृंणी धापनो अभिलाल (आधुन) के डीधारादृष्टी आधुन के तो अंतरंग निमित छे। छे तो अम बाब (समकित अं दर्शनश्रृंङ्ग) बने निमित छे, अं व्यवहार्थी निमित छे, निष्क्रिया नी. अने पर्परारे धारा की। निष्क्रिया हो स्वधारा ज (स्वन) आधुन के यो मां। अने अं (बने निमित) तो व्यवहार छे, निष्क्रियावानो आ व्यवहार अने तो पर्परारे धारा छे, अंतरंग निमित धाय छे अं छे। निष्क्रिया-स्थिरता धाये।

जिज्ञासा: निष्क्रियसमवदितम व्यवहार क्षेत्र?

समाधान: अंतरंग क्षे व्यवहार हेतु धाय। हेतु तो निर्देश छे। धारुं हो ने..! निष्क्रियसमवदितवान्त क्षे पर्म निर्देश छे। ‘नियमन’ गाया-र मा क्षे ने..! “निष्क्रियसमवदितवान्त शान-अतुहनुषु शुद्धस्ततिवाचक मां त्रम निर्देश शोभारी भोजनो धापा छे。” (अंतरंग कँे) अने व्यवहार्थी अपेक्षा धाय।

जिज्ञासा: छतां, धारुं माने व्यवहार हावे अहों के नहीं?

समाधान: अंतरंग ‘नियमन’ मा क्षे: व्यवहार निमित छे। पझ अनेत्री (निष्क्रिय धाय अंत क्षे) धाय।

जिज्ञासा: निरुपालन भे प्रकाशे धाघ ने..?

समाधान: निरुपालन भे तो पहेथा व्यवहार क्षे। व्यवहार नुँ क्षे। व्यवहार निष्क्रिय स्वधारा व्यवहार छे ज नहीं।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री नियमसार गाथा पृ-पृ - ८८

जिखासाः व्यवहार कारण देवुं ध्येये तो?

समाधानः नहीं नहीं नहीं. व्यवहार तो उपायर्थी (कारण) केवलम्य छ. अर्थ तो
कहुं ने. अनी तो उपायर्थी (अंतर्गत देनुआ) कहा छ. अनी अर्थ बरेम्य छ ज नहीं. पण
निर्देश ययो ध्येये तेने व्यवहार-निमित्तने परंपरा (कारण) कहुं छ. अनी अर्थ बरेम्य (जूणू
निर्देश प्राग्यतो). कारण के निर्देशे अं जूणू ही; छतां (जयं सुंडी जूणूता प्राग्ये नहीं त्या जूणू
वचे ) व्यवहार आये छ.

(अर्थ तो कहुं देखि के:) व्यवहारसमित्तना परिशिष्ठामा, भगवानना श्रीमुण्डी तिक्वेलिं
तत्प्रवत ते बाब सद्धारी-निमित्त खारण (छ) अनी समिदली खप जे छ तेने मोनी
परिष्ठि उत्पत्त बहुत गही छ. समिदलीमा तेने उपायर्थी अंतर्गत देतु कहा छ. अनको अंतर्गत
करुं (छ) अने ताली जीमेय छ.

जिखासाः व्यवहारसमित्तनु कारण कहुं!

समाधानः व्यवहार अनी निमित्त छ. निर्देशने निर्देशेक कहो ने..! अने (व्यवहारनी)
खारण अपेक्षा अ नयी. अने तो अर्थम खपना आदरम्य थय. अर्थ ज जात छ. खारण.. छ! पखर
निर्देशेक छ. निर्देशसम्पर्क्याल-ञान-अनुभाजन (हुय शुद्धरत्नत्वात्मक मार्ग) पखर निर्देशेक छ.

आहा.. छ! निर्देशनी साथे, जयं सुंडी पूर्ण मीतराज न होय त्या जूणू, व्यवहार
आये छे दे नहीं? तो अने व्यवहारसमित्तना बाब निमित्त-सद्धारी कारण वाही अने अने
वाचीना क्षेत्राणा नाही-धमिमा अने उपायर्थी अंतर्गत देतु छ. नहींतर (अभम) तो अने
बाब छे. खारण.. छ! अनुचुं व्यत्व (मकर) आयुं छे. अनो आल्मा जे सम्पर्क्याल-ञान
पामेली छे ते आदम्ये अना (मुखुर्णा) नान-समिदलाम अंतर्गत देतु उपायर्थी केवलमा
आये छे. आहा.. छ! समाधय छे गंजे?

खारण.. छ! खीम गाथामा तो (संस्कृत त्रीकमा) छ ने... “परमनिरपेक्षतया
निजपरसमात्वसम्पर्कांमा परिशिष्ठानमुखुर्णासुफलत्मात्यक्यभाष्यो मोक्षीयापयः।” पण आपण्ये
तो अनीय (अंतर्ग-बाब देनुआयी) पाय पाचे छे. खारण.. छ! खेतमा पाण्या पडे अने
खेती वाचे!! आली वाचे छे, बैरा! प्रभुयो मार्ग गंभीर छे! निर्देशदेखि कौनसी अपेक्षा ज
नयी. व्यवहारने निमित्त केवलमा आयुं. निमित्त देखि परने-निर्देशने करतुं ज नयी टारे (तो
व्यवहारने) निमित्त केवलमा आयुं ने...? आ (तत्प्रवत तेस्त शानी पण निमित्त छे) अने
(अर्थम) व्यवहारसमिदलाम कहु देता नयी; पण अनुचुं (ज) निमित्त जूणू छे.

खुलों अर्थ (पाक) छे: “ये मुखुर्ण: तेस्तुर्गचारत: पदार्थनिरीवणस्तत्तत अंतर्गहतेऽ
हितुतयात: दर्शनमोहनीकर्मशुद्धितना: साक्षादिति।” अभमार्ग (खेतमा पाहीतो ) अनी अर्थ
डो छे के-दशनमोहिनी जे ख्यापम्य छे ते समिदल पामितने अंतर्गतुं छ. पण अनी अर्थ छे
ज नयी. अनी अर्थ पदेलिस शरीरप्राक्षेत्रांको पण अर्थ छो। अने आक बाबांजानार्गी (‘नियमसारी’)
जणु. अने ज खिंडी टिका खेतमेरेली बनावी छे. पण पंक्तिमंडली (क्रिकेटमार्गो) (मूल) पाहीने
अनुसरणी आपी अर्थ अर्थ छे जुलों: “जे मुखुर्णो छे” अटाे ‘मुखुर्ण’ के? के मोहार्थी छे “तेमने पण”... ‘तेमने पण” के? (समिदल मारे
तो) जे’ (धनमोहिनी वाही) छे अर्थम (अंतर्गत) मुख्यतेने बाब सद्धारी कारण देखुं (पण
अर्थ) मुखुर्ण छे “तेमने पण”... ‘तेमने पण” उपरेआ आ? के जयं मुख्यतेने छे पण जे
मुखुर्णहेतु छे तेमने पण”

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
100 – प्रवचन नवनीत: भाज-2
उपयासी पढ़निष्ठा ने तेजसुर्यने दीवे समयपरिसंहिता अंतर्गं खेतूनो क्षात्र च।
आँख... है! अंतर (टीकामां) पाठ अंदे के: अस्य समयपरिसंहिता बाह्यसहायकारणजातीमर्नात्मकमुखमलिपिविनिर्धारितसमस्तसमयपतिपादनसमार्थ्यमक्षुमतेव तत्त्वज्ञानमिश्र। ये मुनिशु: लेडिपूर्णार्थ:”—मुनिशुने पाठ उपयासी-मुनिशु देहात—अथै समकालीन्य। तेने पाठ “परम्परागतमयेवतीतः अंतर्गंहठेव ईतुक्ता:”— ‘उपाधारण’ (केम के) बाल छेन...! तें छे
तो बने उपयासी पाठ (१) शुद्रने बाल सक्षारी क्षत्र अने (२) अने (शानी) 
आत्मने उपयासी अंतर्गं हेतु क्षत्र। समजावूं छात्र? आवी स्तुस्तितिक हे, भाल।
जीवाणू: शानी-नो जे आवी छे, अने अंतर्गं हेतु क्षत्र?
समाधान: अने (शानी-नो) आवी छे न...! अने कदेवानो जे भाल छे, ते भाल अने (मुनिशु) समजावूं आवी छे। आवी छे (समजावूं) पाठारी। पाठ अन्या अन्यु (अने शानी-नो 
आत्मानु) निमित्तपूर्वू हे। अना अभिधारणे निमित्त, (तेने) अंतर्गं हेतु कदेवानो आवी।
आवी... है! वस्तु (वस्तित) ते आ हे! बाल सक्षारी क्राश केहु ने...!” आ
समयपरिसंहितानुभाल सक्षारी क्राश वीरागर-प्रभुवानु मुक्तदर्शतेरी नैवेद्यमुक्त समस्त 
वस्तुना प्रतिपादनाम अभू द्रव्यमूलपत्त तत्त्वज्ञान ज है।” – ते निमित्त छे अने जे 
मुनिशुने छे तेने पाठ अंदे के जेम वाणीने (निमित्त) केहु तेन मुनिशुने अंदे के मोक्षाथी 
छे, धर्मामा छे अने पाठ उपयासी, बाल समकालीन्य व्यवसायसमिक्त छे तेने ते, बाल 
(अन्य) समकालीन्या परिसंहिता अंतर्गं हेतु चो। अन उखेडामा आवी छे। समजावूं 
छात्र? “तेजसुर्यने दीवे (समयपरिसंहिता) अंतर्गं हेतु चो छे, केम? के: तेने 
दर्शनमोक्षनीयकर्मा व्यवसायित है।” केना? के: जेना आत्माना परिसंहिता, बाल (अन्य) 
समकालीने उपयासी अंतर्गं हेतु चो, अन उखेडामा धर्ममोक्षनो बाल-भिक्षुप्रशासन धेरू है। अना 
आत्मानो अभिधारण, देशालिखिने अंतर्गं हेतु छे अने शाल बाल हेतु छे; (अ-अन उखेडामा 
आवी छे।) आवी छे! समजावूं छात्र? क्राश के ‘तेने’ अंदे के? अने? –मुनिशु। ‘मुनिशु’ 
क्राश? –दर्श पामनार नवी, पाठ धर्म मानेला छे (तेने)। अनी वाणी द्रव्यमूल बाल सक्षारी 
क्राश; अने अनो अभिधारण (–छे तो अ-पर-निमित्त-बाल क्राश, पाठ–) उपयासी अंतर्गं 
हेतु (छे)। क्राश के ‘तेने’ अर्थान छे? के: मुनिशुने (अंदे) धर्म पामनार नवी, धर्म 
मानेला छे ते, धर्म पामनारा व्यवसायसमिक्तमां उपयासी अंतर्गं हेतु कदेवानो आवी छे।
(शौकता:) पूर्ण बोल्ड; बने बाल क्राश केहु है! (उत्तर:) बाल क्राश केहु छे न...! अन 
भूरू है। अन उखेडामा ओला (द्रव्यमूल) बाल-सक्षारी क्राश (छे) तेने ज अंतर्गं केहु छे।
तेनी अर्थी केहु ने के जे मुनिशुने छे तेने पाठ द्रव्यमूल तो छे, अंदे अपी शानी-नी वाणी 
छे, ते तो द्रव्यमूल छे; ते व्यवसायसमिक्तमां बाल सक्षारी क्राश-निमित्त छे पाठ अनो जे 
अभिधारण छे, अंदे अनो आत्मा जे छे, ते मुनिशुने पाठ (अर्थात्) बाल-व्यवसायसमिक्त 
ज्याने (पाठ) उपयासी अंतर्गं हेतु छे। (अंदे के:) अर्थी अने मुनिशु धर्ममानो पाठ 
(उपयासी) अंतर्गं हेतु कदेवानो आवी छे। आवी... है! समजावूं छात्र? आवी है! 
क्राश के तेने अंदे मुनिशुने ज्याने पाठ अने अंदे द्रव्यमूल छे अने आ पाठ बाल निमित्त छे; 
अने तेने धर्ममोक्षनीयकर्मा व्यवसायित है।
जेने धर्ममोक्षनीयकर्मा बाल-उपयास धेरू हैं ते अने आत्मा-समकालीने,
व्यवसायसमिक्तमां
श्री नित्यमसार गाथा पृ.-पृ. - १०१

बिंदुंग-सहकारी कारण छ अन्त अर अन्त मोहकारक उपाध्यायी अंतरंग देतु कर्माणामा आय छ। निष्ठायसंविदा माता तो कर्ष्य अरेशा छ ु नहीं। आम छ, बाहु! शु धाय? निर्दयने तो अपेना छ ु नहीं। अन्त गोपुरा (भीज गाथामा) कर्ष्य गाय के: (परम) निर्दयकाले छ। अन्त कर्ष्य अपेना छ नही। अन्तकृतना नाथ, आनंद नाथ, रामुन आश्रय लहने (निष्ठायसंविदा) शु हेतु तो कर्ष्य अपेना छ ु नहीं।

यव्यक्तिगतने निमित्त करे; पछि निमित्त करू तरु नथी। अन्त अपेना नथी। यव्यक्तिगतिने पण वाणी आब-सहकारी कारण छ, तोपण अने वाणी अन्त कर्ष्य यव्यक्तिगत करी हेस, अन्त नथी। अने तो निमित्त कारण करु।

वणी, निष्ठायसंविदाले छ, अने यव्यक्तिगत थप्यु छ, अने धम पामेल छ, तेमने दर्श्मोकणीपक्षना यमाक्रित छ अने ज्ञायु; अने अने ज्ञान परिशाम अंतरै, के धर्मी ज्ञान परिशाम; अने अर्थात धर्म पाम्यन यव्यक्तिगतिने (ते) उपाध्यायी [अंतरंग देतुनो कहा छ।] वाणी कर्ष्य अन्त (शानीना) अर्थात् लोपर (विशेषता दर्शाय) माते तो अंतरंग देतुनो कर्ष्यामार्थ आय। समूिण ह छ करू?

जिलासा: अभ भवामान आये के: बिंदुंगामा मुसुल, मुसुलनी वाणी; अंतरंगमा धर्म आदिकानो यमोकष्म तो अभसा शु वाणी आये?

समाधान: यमोकष्म तो तोतानाथी धाय छ। यव्यक्तिगत पण्यु पोतानाथी धाय छ, अने तो उपाध्य (नी वात छ) अर्थी तो निमित्तकारणी वात छ।

जिलासा: निमित्तमा अभ भवामान आये के: अंतरंगमा कर्मभो यमोकष्म?

समाधान: नही... नही... नही। कर्मभो क्षय (अंतरंग देतु धोष, अर्थी) अने वात अर्थी ह ज नही... अने अपेना लागु रहा गए। अने अर्थीयाणा नथी। अने निष्ठाय धोष अने कर्मभो यमोकष्म-क्षय धोष। अने तो-यव्यक्तिगतिने तो रास छ; अने कर्ष्य समकवित नथी। निष्ठायसंविदिनो यव्यक्तिगतिमा आरोप कर्ष्य ह। समूिण ह करू?

जुक्लो: ('मोहकारकार्यकर्ता' अवधारक जातमो, पवित्र: "उमायामानी मित्राहिति")

"अंतरंगमा पोते निरर्ग करी धयावत, निरर्ग-यव्यक्ति मोहकारके ओणयो नथी, पण जिनाला मानी निरर्ग-यव्यक्तिपूर्त प्रकारनो मोहकारके माने छ। बैंग मोहकारके तो करू ने नथी, मोहकारके नेतृत्व प्रकारदेशी छ। अना साथा मोहकारके मोहकारक निरुकित प्रक्षय धोष ते ‘निरुकितमोहकारक्’ छ अने ज्ञाये के मोहकारक तो नथी परि मोहकारकनु निमित्त ह ने सहकारी छ तेने उपाध्यायी मोहकारके करूने ते ‘यव्यक्तिमोहकारक’ छ। अरास के निष्ठाय-यव्यक्तिसर्वत्र अरुण ज्ञात्य छ।” आहा... बा! आ तो बहु मारेऎ स्पष्टिकर्ष्य कर्ष्य ह। सामान्य वातमा आचार्तनु (पैट) भोलीने स्पष्टिकर्ष्य कर्ष्य ह। आहा... बा!

आ ‘सातमा अवधारक’ तो पोला १९८२नी साना वाण्यो कर्ष्य ने। ज्ञारे लां अटुं लां आयो... बे... बे... वसुतु निरर्ग छ। आम तो दौही पासे पुस्तक मागता नथी। सारे पुस्तक रामपानी के आयो अभ श्रवानी धात वात नथी। पचि संपूर्ण १९८२नी अभ जगरा गयि। त्या श्रीमाला, ह्यादाऴाङ्ग्नाता नामाना अर बहात बात। अने त्या "मोहकारकार्यकर्ता"
अर्थ के लिए ते “तमने” अेटो साए मुुम्बुतो-धर्मात्मा छ “तमने दर्शनमोदकनीय-कर्मना बधाकि छे.” ‘बधाकि छे’ अेम कडे छे. आ मेिल पामनार व्यवहारसभितीने (दर्शनमोदकनीय कर्मना) बधाकि छे. अेने तो बधाकि छे; पछि वात शुं करवी? अे तो निष्ठयसभिती छे । व्यवहारसभितीना परिभाषामां जेना दर्शनमोदकनीय कर्म थयो छ अेनो आधा (उपायर्थी) अंतर्गृह देतु छे. छे तो अे भाष शीर्ष, तेथी अंतर्गृह देतु पड़ उपायर्थी ‘अंतर्गृहेतु’ कडे छे. आख... छ! समजाणु दांह? आ पेिरेअामा व्यवहारलत्त्वनी वात करी छे. व्ये निष्ठयर्त्त्वना:-

व्यवहारलत्त्वमां बेदोपधार-रंगः शाख क्षता. व्ये अर्थ “अबेद-अनुपधार” (शब्द छे)। आत्माना आपनानो अनुपधार (अेटो) अबेदनु हान थयु, श्रेष्ठ थर, अनुपधार थयो, तो अे अबेद, ते अनुपधार छे। अेमां केक उपधार नसी। अेद तो उपधार बतो। तेथी (‘मोक्षमार्गाढकाद’ सात्र्मा अध्यायमां) कङ्खु ने क्षेत्र उपधारी यवधारसभित देशामां आयु छे। आख... छ! “अबेद-अनुपधार-रंगः परिभाषितवाणा ज्वन्ये”-निष्ठयअनुपधार (अेटो) उपधारहित रंगः परिभाषित (अेटो) समयमार्ग-हान- वार्जनीय परिभाषित (अर्थात्) पर्यायवाणा (ज्वन्ये)। (अे ज्वन्ये ज) बेद-उपधार (व्यवहार) रंगः परिभाषित छे; अं परिभाषितनो शुं अर्थः के: बेद-उपधार-रंगः परिभाषित अे राग छे अने अे (निष्ठयर्त्त्वनी परिभाषित अे) अराजी परिभाषित छे।

“अबेद-अनुपधार-रंगः परिभाषितवाणा ज्वन्ये, टेकटेकी शाख जेनो अंक र्वाघव छे अेवा निज परम तत्त्वनी श्राद्ध वे”-टेकटेकी जेनो छे अेवा प्रभु भवानाय, व्यवहार प्रभु, शाखम्बाव जेनो अंक र्वाघव छे, अेवा निज परम तत्त्वनी श्राद्ध-आ निष्ठयर्त्त्वनी परिभाषित छे, अं वीतराग (परिभाषित) छे। अने (त्यां) व्यवहारलत्त्वनी परिभाषित अे राग छे। आख... छ! समजाणु छे दांह?

आख... छ! शाख जेनो अंक र्वाघव छे अेवा निज परम तत्त्व, निष्ठयार्थी शाखर्यानी श्राद्ध वे अनूत्तरपूर्व सिद्धर्थवाणी थाय छे। अेना (परिभाषितना) करणी वात कडी। बेद-उपधार- (परिभाषित) मां अे वात नकेती। अर्थात् अं कहुँ: अबेद-अनुपधार-परिभाषित द्वारा अनूत्तरपूर्व सिद्धर्थवाणी उपज्य प्रणाली ह छे। (पाठमां नीचे छे) त्यां सर्वावधाय लेबो।

अर्थात् अं वे अर्थात् यवधार वे (सिद्धर्थवाणी थाय) अेम नन्देतु कहुँ। आख... छ! शुं कहुँ-“अबेद-अनुपधार-रंगः परिभाषितवाणा ज्वन्ये, टेकटेकी शाख जेनो अंक र्वाघव छे अेवा निज परम तत्त्वनी श्राद्ध वे... सिद्धर्थवाणी थाय छे।”

विशेष कहेह।

* * *

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
प्रवचन: त. २१-२-२०७८

'नियमसार' शुद्धवाच अविभाज्य छेड़िय (पृथ्वी पप) पाय गाढ़ा. पढ़तां व्यवहारसत्तनमत्यानि वात सादी गढ़. क्योंकि निष्क्रियतनत्रपति वात करे चौर. जेने निष्क्रिय तय छे तेने ज व्यवहार क्षेत्र. जेने निष्क्रिय नदी तेने (व्यवहार) पढ़ा नदी. कबूल ने...! के व्यवहारां मुख्य छे, अत्यते जे जेने शान्तनुसवध आहारांनु भान नदी, ते 'रागने राजपावानी' क्षेत्री धर्मो? समझाणु काह? 'सम्प्रदाय' ऊर्जामा छे ने...! "व्यवहारयो... तदार्थे प्रयोजनाव'an: "... बस! ए वात सप्त छे. आत्मा अंतर वस्तु छे. वात तो जीवनी बहु.

सवारे प्रश्न घर तो ते... के: पर्यायी आधार काह? पढ़ा ते बझाते आ (आवार) विषय नदीचे. दिनहरू तो अविभाज्य शस्त्र के: हुन्द्र पाललाई जे अवस्था छे ते जे समये फिसावानी छे ते समये ते ज ठीठे, ते ते अवस्थाबिंदु छे. अंक वात. भीती वात: जे समये जे द्रव्यनी परिश्रम उपलब्ध थाय छे, लपेते छे, तेने (पर्यायी, तेजस्) दुवैनी पढ़ा अपेक्षा नदी.

'प्रवचनसार' गाढ-१०१ नी संस्कृत टीकामा अंदो पढाछे - [उपाय विपश्चतामाने आकृति छे. अत्यता के: ] लपेते छे ते (विपश्चतामाने) आधारे लपेते छे. आ तो बहु जीवनी वात छे, प्रभु! अंतरान भाषा अंदते हो! अन्य भाषा जे पालाले बालाले, भाले! जीवनी गाढ-१०१ रसा अंदेक दुहुं के: जे समये जे पर्याय अवस्थाबिंदु छड़ी ते, जे समये उत्पर थाय छे ते ते ते निज्य (जन्म) काख छे. ते ते अण ज छे. वात जीवनी बहु, भाले! (पढ़तां दुहुं के: ) जे समये जे पर्याय उत्पर थाय छे ते जे पर्यायी अपेक्षा नदी, दुवैनी अपेक्षा नदी; लपेते छे ते विपश्चता (भाव) ना आधारे लपेते छे. आत्मा आधारे वात थाय छे अने जीवना आधारे जीवन होळी छे.

आरा... बाह! (प्रवचनसार=प्र+वचन+सार) अं वचन 'अंदे' वीतरांग सभ्य विभावन प्रवचन; 'प्र' अंदे विषये करी, 'वचन' अंदे विश्वविद्या अने अंदो आ 'सार' छे. वात बेसे न बेसे, दुनिया स्वतंत्र छे. अं 'तन्त्र' नो अलड़ शु? के: 'व्यवस्थित पर्याय धार' मारे तन्त्र. अविभाज्य 'स्थ-तन्त्र' अर्थात पर्याय 'स्थ' ना आयवे पोतानाही लपेते छे, अं तेनू 'तन्त्र' छे. अंदो भाव 'सत्त' छे. मंत्र, तन्त्र, जन्त्र, --अं राजन अलड वचार आये छे.

(पर्याय) उपाय धार छे, पमे व्याय पढ़ा थाय छे अने ध्रुव छे. --अं राजन आई क्रोणने क्रोणनी अपेक्षा नदी! आरा... बाह! अने 'विविधायास' (पार्थु ८८) मारे अंदेदुहुं छे के: गुण विद्या, पर्याय पोतानाही उपलब्ध थाय छे.

अंदीया तो आईं बीचुँ कहेंछु: द्वरका गुणामा धर्माकुण धुप छे. शान्तगुण छे तेना पढ़ा वीरी धर्माकुणी शाक्त साहे छे. कर्त्ता-कर्ता आदि रजर-शक्तिर छे, अं धुप छे. अं जे कर्ता, कर्म, कर्ता, संप्रदाय, अपाध्याय अने अविभाज्य धर्माकुण छे, तेनू धुप अं शान्तगुणामा पढ़ छे. आरा... बाह! जीवनी वात कादर छे, प्रभु! शुरू थाय? बुजे, अं छे कर्ता गुणुँ कर्ता-धुप गुणामा रहु अने पर्यायिनु परिश्रम धर्माकुणी पोतानाही रहुं. अत्यते के: अं अंदे समयनी पर्यायांमा पढ़ धर्माकुणु परिश्रम स्वतन्त्र-पोतानाही छे. अर्थात परमार्थ 'पर्यायी आधार' धव्य नदी. इमे 'पर्याय' पोते कर्ता, कर्म, कर्ता, संप्रदाय, अपाध्याय, अने अविभाज्य-आधारे पोतानाही धव्य छे. 'अने आधार' धव्य-धुप पढ़नी. समझाणु काह?

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
राजीव नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ. अंकवार ‘बाभ’ नामी अंक शिक्षक छ.
श्री निम्नलिखित गाथा पृ-पृ - १०९
अनंतगुणानी पिंड (आत्मा) के के ते हस्तिमा आयो. तेमा अंक आयो गुण के के भाव नामो छ, तेना करशें निर्मितयापूर्व धार अथवत तेनु भवन बरु... बरु... बरु अंको ते भाव नामो, अनो (आत्मानो) गुण छ अन अंक ‘दीक्षा’ नामो गुण छ. अं तो गुणानु वर्लत छ. गुणामा अंक पाणी अंक (अंक ते बरु... बरु... बरु तेम) नबी. गुण तो त्वा (आत्मामा) अंकसाथे अनंत छ. तेमा अंक दीक्षा नामो गुण छ अं ते विज्ञानवस्था ते समये पोताना करशें पटकरकशी परिशिष्टती बली, तेनाथी रक्तित परिशिष्टन करु अंकी आत्मामा दीक्षा नामनी शक्ति छ, गुण छ, सत्य छ, भाव छ, स्वभाव छ. आयो... झा! समस्तुळा कांट?

वातो जीवी कहु, बापु! आ भरूं बापा! सर्ववधी-अनुवधी सिह थर्लों छ! जेंनी जे पर्यावरण जे समये उत्पन्न ध्वनवाणी छ तेना ओना उत्वाहां धीर्यां ना पझा आश्रय नबी. ध्वनी आश्रय ध्वनी. उत्वाहां आश्रय उत्वाहां अने धुपवो आश्रय धुपवे. आयो... झा! आ वात!! ध्वनी-स्वतुष्कवृत्ती मर्यादा ज अंकी छ!

अंकी अंतरगुणानी पिंड प्रतु, पूर्ण आनंद अने पूर्ण स्वात (व्यक्ति छे), अने अंक अंक गुणामा अंतर गुणानु उप छ, तेनी करें गुण पझा पटकरकनु उप लकर्ने विच्छेद मिन; अंकी धीर थरे तो अं पर्याय पझा-पटकरकनुमी परिशिष्टती पर्याय-पटकरकनी पोताना छे. शुं दुहं? पटकरकनु छे तेनी परिषिष्ट-पर्याय स्वतंत्र पोताना पटकरकनी परिशिष्टती छे. [अं नात्मानुमा पझा छे]. वात अं समये भीज गुणामा जे पटकरकनी परिशिष्ट छे ते आ (आत्मानु पटकरकना) करो नबी. अर्थात गुणामा भीजे गुण नबी. गुणाना आधारमे गुण नबी. द्वना आधारमे गुण छे. भीजे गुण अं तो समये जे पटकरकने परिशिष्ट छे ते ‘पटकरकनावृत्त’ नु परिशिष्टन हे अं कारभारी नबी. अं अंकी जीवी वात हे!

आयो... झा! वसुदेवित्ते ज अंकी हे! सर्वजो वगजाने कोई अंकी कडी अने अंकी हे! बडे आ समझा विना, वाप-कोडक भीजा दिया करनी भरी जय ने... (तोप्प तेनाथी ध्वनो अंत धार, तेना नबी). समस्तुळा कांट? द्वनो स्वभाव ज अंको छे अने पर्यायनो स्वभाव ज अंको छे. परती अवेशानी पोतानु उपजवृं नबी. ते नाम (केतामा ज्यु-गुणा (अं सिपावना) परती-निमितती तो वात ज नबी. निमित तो स्पर्शुं पझा नबी.

‘समस्त’ जीव गाथामा आयो ने...! कृत पझा द्वय पोताना धर्मने वुबं छे. पोताना धर्म अर्थात द्वय, गुण अने पर्याय. नबी अने छुबं छे, परने लुंबना नबी अंकेके परंतुने क्यारे य स्पर्शता नबी. आयो... झा! आ तो कृत वात हे! अजिने पाणी स्पर्शुं ज नबी अने पाणी गरम धार छे. आम छे, वगजान! आ कृत छे, अने आ छे (झम ते भीजा) रजक्षा छे, तो अने क्यारे य स्पर्शता ज नबी. अने झेटानी टके धार छे तो दंतना रजक्षा (झेटानी) टकरले अखता नबी. आपी वात हे!

अंको बडे छे के: पर्याय द्वने स्पर्शती नबी. त्या (जीव गाथामा) अंकी नहीं. त्या कबइं देते: पोताना धर्म-द्वय-गुण-पर्यायने वुबं छे. अं तो परती निम्न क्यारा माटे बजाय. बडे पोतानामा पझा बे प्रकार धारा: गुण अने द्वय अंक छे, गुण पझा शक्ति छे अने द्वय पझा शक्ति छे. गुणाना प्रेश छे ते द्वयना प्रेश छे. (पझा) पर्यायना प्रेश अमुक (अपेशाने) निम्न छे. माटे कृत छे के पर्याय द्वने स्पर्शती नबी अने द्वय छे ते पर्यायने स्पर्शुं नबी,

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री निम्नलिखित गाथा पृ-पृ - 107
(माटे) वह ले तो (अभी नथी; अभी का-सत्रा गुस्सीखणकों वात है). आ तो जे आत्माने शायदवामान तितार्को पोतानी स्वभाव है तेने शायदवामान है; (तेने) भेक निज परम तत्तरनी 'श्रद्धा वडे’ -अने परयों है ते वडे-अनमृतरूप सिद्धार्थाय वात है. अभी वेंौं वह हैं के: व्यवखय वडे सिद्धार्थाय वात है. त्यों (व्यवखय रनाभाय) तो परंपरा दीर्घी कसी, वह के (जेने निःश्चय क्षेत्र तेने साथी) व्यवखय आये हैं; पूर्ण पढी तेने छोटी वें होणा जाय है, तो तेने परंपरा (ढेतुबूता) कड़े. नाती वर व्यवखयरोपायां अने निःश्चयरोपायां (अभी) भेक (रोपायां) लागू तो व्यवखयरोपायां युँ जन व्यवथको; अभी निःश्चयरोपायां (फ़्युँ) निःश्चयरोपायां; अभी भेक (रोपायां) ने कोड? (-अभी नथी.) (व्यवखयरोपायां, अभी) आरोपी धरन हैं. समझूं दाँत? अभी व्यवखय श्रद्धा-जिन-गुरु-श्रीकसी श्रद्धा-दीर्घी नथी, अभी वह व्यवखय है। “निज परम तपस्यी श्रद्धा वडे…”
‘अनूपूर्व सिद्धार्थाय वात है.’ अभी दीपांक के त्या वेंौं है। शायद जेनो अभी स्वभाव है अभी निज परम तत्त्वी-वाती श्रद्धा वडे… अभूतरूप अनेको के पूर्ण है नभी वें अभी अभूत, सिद्धार्थाय वात हैं। आहार... है!

इने, अभी (छेट) करे के, व्यवखयरी धरन है अभी निःश्चयरी धरन हैं। (-अभी नथी.) अभी तो करे हे के: निःश्चय धरन है अभी व्यवखय तो पब्भे आये है तेने आहार वर्ने अभी निःश्चय धरन है श्यामर होरं त्याहे सिद्धार्थाय वात है। समझूं दाँत? अभी तो रंगन्नत वडे मोक्ष-सिद्धार्थाय विपक रहे, अ म वएद रू हे ने... अनेक निज परम तपस्यी श्रद्धा वडे, (अभी वेंौं, अभी निःश्चयरोपायां वात करी)।

इने “तड़ाकमाता” पेषुना (व्यवखय) शान आयूं कुं ने संशय, विवेक ने विवेका रखित; अने पूर्ण आयूं जिनाश्रीपी ठेर-उठती मत्रौतौं शान: वे चार आयूं। वड़े तेने व्यवखय(सम्पू) शान है। इने अभी (निःश्चयरोपायां नथी वात हैं.) “तड़ाकमाता” भगवानताका शायदवामान परतुँ शान वडे अर्थात आत्मामान वडे; अभी हूँ आयूं। आत्मामान वडे अर्थात परतु शान वडे नभी, पर्यायिना शान वडे नभी, (वड़े) आत्मामान वडे; अनेको के आत्मा जे तितार्क हैं तेना शान वडे (सिद्धार्थाय विपक हैं)। अे शान अभी ‘पयाय’ है; पूर्ण आत्मा जे बे हैं हैं शान वषु अं वहु च मे, अभी तो ‘मन्य’ है, अभी शान तेन ‘आत्मामान’, आत्मामान गुरुतुँ शान... अभी आत्मानी पर्यायिना शान, अभी नथी। समझूं दाँत?
आधी वस्तुस्थित है। अभी वॉ भोगाघ बाने गपूं व सतु लने हैं। अभी तो अभी के ठीक पडे तेने लने। तेनी अभी छाँट वजित परने विस्मृत स्त्रुणा वात ज नथी। ते (पड़ा) भगवानताका है! ‘पंस्तिकाघ’ मा ह्यु है...! आत्मिकख साध्मौ जय है। आत्मिकख पदू शुं भगवान परमानी शायद (फ़्युं)। अभी वह आत्मा नेने...! अभी उपांडर है, अभी वेंौं। पयाय (विशेषधवानी) होत अभी हूँ?

अभी हूँ के के “तड़ाकमाता...” काढा शुं है? (श्रमामा) ‘माण’ शब्द शेरोतो वायूह। त्यों ‘निज परम तपस्यी श्रद्धा वडे’ (शब्द है) अभी तो शनामा क्यांक भूल परी जाय है ने... शरी जे शनामा जन्ना पडा प्रजार है ने... माटे कहूँ: ‘तड़ाकमाता! आत्मामान तड़ाकमाता। समझूं दाँत? तड़ाकमाता “(से निज परम तपस्यी शन्मातमस्वप्न)” शैतंय भगवानतुँ
हाँ! समाजुं काँट?

आधिकार अंगनुः शान शेष, नव मूर्तिम शान शेष, तेठ मिथाड़िने पाप शेष छै। दमन्ता (अंद्र विवाही ने) आध्यात्मी ज्ञानजी के... के भर अंगनुः शान शेष तोपण तेठ (आत्मातुः शान) नषी। परंतु भर अंगनुः शान तो शम्भतने ज पाप छै। यो हाँ? नव पूर्वी वाह्य अने आधिकार अंगनुः शान, तेठ मिथाड़िने पाप शेष छै। पाप छो पूर्व छो तस्वीर तेठ मिथाड़िने ज पाप छै। अभर अंगनुः शान शेष अने तो मिथाड़िने शेष, तेठ नात्सहरु नपेना नषी।

अर्कीया "ताध्यात्मा-(ते निज परम तत्वना शानात्सवशब्द्) तेठ ज शानमात्र भगवान शाक्षेत्रामात्र-शानात्सवशब्द "अंगनुः अंतर्भूम परम भोर वेह..." भापा केटवी भाषान राजनी वष्णु है। ‘अंगनुः अंतर्भूम परमबोध’-शाल्लनुः (शान) नषी, पर्तुः (शान) नषी, पाप ‘अंतर्भूम परमबोध’ तेठे के: भगवान-आध्यात्मी शाक्षेत्रामात्र शान, अनुः (सव) द्वयनुः शान, के शाक्षेत्रामात्र वस्तु छै तेठ शान-अने ‘अंतर्भूम परमबोध’ कडो। अंतर्भूम छो अने पछी परमबोध काँट, अं परमबोध वेह... “सिद्धिहरू धाय छै।” समाजुं काँट?

प्रणयने तो भगवानमा पाप समिति, नव गुलि जेटवुः ज शान शेष तोपण तेठ देवसान धाय छ। अंवुः नषी के वस्तुः (बाल) शान शेष तेठ तेठ देवसान धाय। अक्षा... ला! ताध्यात्मा-आध्यात्मा शान(मात्र) द्वयनुः छो-अने मात्रकी, अं वेद, मुक्ति धाय छ। छो ने... ‘परमबोध वेद’ “अबूतपूर्व सिद्धिभयां धाय छै।”

अभर तो अं परमपूर्व छै, अने अं पर्यायी मोक्षानी पर्याय उत्पन्न धाय छै, अं (पाट) पाप अपेक्षित-व्यवस्थे छै। गाँवी तो मोक्षापूर्व अने देवसान जे उपस्थ धाय छै तेठ स्वाध्यात्मा आध्यात्मी उत्पन्न धाय छै; पूर्व पर्याय अर्थत मोक्षापूर्व मोक्षानी पर्यायाना आध्यात्मी नषी।राजा के मोक्षापूर्वी पर्यायवृक्त स्व् धाय छै, अर्थात् धाय छै, तो के व्याव हनुमत्त धायी तो तो आत्माका आध्यात्मी नषी।समाजुं काँट? अर्की पाक तो अंगोः के (उत्तरे) अर्की इकट्ठा व्यवस्थानाथी निश्चयार्थनय अर्थात् पापकेश्वर तन्त्रने किल्ला बतावुः छै। मारे अपेक्षी (–परमबोध वेद) सिद्धिभयां उत्पन्न धाय छे, अभर बतावुः छै। गाँवी परेशार तो मोक्षापूर्व अं परमपूर्व छै, अनो अवस्थाय धाय छै, तारे देवसानाथीय त्या उत्पन्न धाय छै। तो के व्यावहारी उत्ताद धाय छै, अभर नषी। तो के निश्चयना आध्यात्मी उत्पन्न धाय छै। अं (कलन) पाप अपेक्षित बहर गयः। (परेशार तो) के देवसानाथीय्य छै ते पोतानी बहुतद्वैत पश्चिमात्री उत्पन्न धाय छै। समाजुं काँट?

जयारे आ वात-व्यवस्था-निश्चयार्थनय-समाजवृक्त शेष, त्यारे (शी रीते अने) शुं समाजे? व्यवस्थानय तो राघ छ अने आ निश्चयार्थनय वीतराजीपर्याय छ अने अं वीतराजी पर्यायी मुक्ति धाय छ। अभर बतावुः छै।

‘स्वामीदार्तिक्यानुप्रेक्षा’ छाँ अंगोः पाक छे: “पुरुष-परिणाम-जुःत कारण-भावन वहसे द्वैत।
श्री निषेधसार गाथा ५६-पृष्ठ – १०८
उत्तर-परिणाम-जुद्दं तं चिदं कज्जं हवे णिमां”। २०११। अर्थं: पूर्वपरिशामधी युक्त द्रव्य ते निषयम्यं अतिसुन्दर: ऋषिः छ अने ते ज द्रव्य निपूर्वे उत्तरपरिशामधी युक्त धार्मिक छा त्यारे ते निषयम्यं अतिरुप्ते धार्मिक छा। (पाः) आ वात अपेक्षित छ। अर वात अर्थीं अधीं छ। मोक्षार्थी ड्रांव्य ते पूर्वपपायिणी छ, अर अर्थि छ। अर्थि (मोक्षपुरुष) उत्तरपपायिणी त्र्यमः अर्थि छ। अर्थि तो, ड्वाराऽत्र धार्मिक परोतनांवेद शतकालीन परिभाष्टरी उत्तप्त धार्मिक छ, तेने मोक्षार्थी (–पूर्व) पर्यावरणी पवित्र विम निम संस्थ।

‘प्रवर्णनार’ गाथा-१०१मां छलु ने...! दियली पवित्रिच्यं बयनी अपेक्षा नवी! अरे वन्वमान! अने मार्ग! प्रलु! ताआ मार्ग गंधं छ। छलु ने...! दियली पवित्रिच्यं बयनी अपेक्षा नवी अने अर्थीं तो अमेक कळु इकः मोक्षार्थी धार्मिक मोक्ष धार्मिक छ। त्या कळु इकः बिज्ञान-परिभाष्ट्री निवधन, ड्वाराऽत्र परिशामधी ज दियले छे ते पोताली अपेक्षागी ज दियले छे, तेने गुणाली अपेक्षा नवी, बयनी अपेक्षा नवी। परन-अपेक्षा तो छे ज नवी, अि तो वात ज नवी।

पवित्र अर्थीं पूर्वश्चित्त (अकेले) नीति ते बतायुः। पूर्वपरिशामथुक्त द्रव्य अर्थि छ अने उत्तरपरिशामथुक्त द्रव्य अर्थि छ। (तें छट्टां), पूर्वपरिशामधी तो मिथ्यात्व पवित्र धार्मिक छे अने परीक्षाली पमणियां सम्ज्हखन धार्मिक छ। (पवित्र त्या अमेक कळु इकः नवी कः:) मिथ्यात्वप्य चे ते सम्ज्हखनी उत्तमितुः अर्थि छ। परंतु त्या अमेक कळु इकः मिथ्यात्वप्य ते ते परिशाम (अर्थि अने जे) सम्ज्हखनी पपायिणी उप्य (ते ‘अर्थि’ छे)। अर्थित मिथ्यात्वप्य यो धार्मिक छ त्यारे सम्ज्हखनी पपायिणी उप्य धार्मिक छ। नवीतर तो मिथ्यात्व उपाधान अर्थि अने तेनुं उपाधान पवित्र सम्ज्हखनी? (–अमेक वतुं नवी.) सम्ज्हखनुं अर्थि? पवित्र (त्या) तो मिथ्यात्वप्य धार्मिक अर्थि बतायुः निम्नी सम्ज्हखनी पपायिणी उप्य ते (अर्थि) बतायुः। पवित्र (अे वात) अपेक्षित छे।

आ तो लोकों (वसुतुस्विततीनी) बनर नवी अने विरोध दरे! अंठो जने बनर न धार्मिक अने विरोध दरे तेमा शुः (धार्मिक)? आला... हा! आ तय ज आलूं छै!! अमाम्ने गम्य करवायुः। आला... हा! मई नदार बज्जनान, अनुत गुणाने बंधन, अकेले गुणाम अनुतागुणाम व, (अयो पोते जे छे!)

‘ज्ञ-शक्ति’ छे ने...! छे तो ज्ञात- पवित्र (‘सम्यक’ मां सुकासाई कर्मांना आवी छे। तेमा अक अनांतर्गतत्व’ नमां शक्ति-गुणाः छे। अं अनांतर्गतत्व’ नु हु मृत बीज गुणार्थीयें छे। अं गुणातृत्व गुणाम नवी, (पवित्र अंतुं हु मृत बीज गुणाम छे)। तत्कालीन आवी बहु जीवी पती, भावू! लोको तो बहुतायणी (घर्म) मानिते बेकळे छे ने...! ‘अनांतर्गतत्वशक्ति’ अं रक्षां छे। जुः: “विशिष्टाः (–पदरस पदिश्व कवकोणाणा) अनांत स्वाभाविक बालिक (–थले छे) अं त भाव जेनुं वधान छे अर्थीं अनांतर्गतत्वशक्ति” आला... भां! अर्थी तो बहु अं इंदुं छे इंदुं जेनुं कवकोणाणा अनांतर्गतत्वशक्ति छे अं आला ज्ञाता गुणामा जो ‘अनु’ कुप्त छे, पवित्र अं धार्मिक अं आला तो धार्मिक जे ड्वाराऽत्र धार्मिक छे तेमा पवित्र ‘अनांतर्गतत्वशक्तिनुं’ कुप्त छे। अर्थित अं अनांतर्गतत्वशक्ति जे छे ते (पवित्र) पर्यावरणी नवी तेमज्ञ अनांतर्गतत्वशक्तिनी जे परिभाष्य छे ते पवित्र (ड्वाराऽत्र) पर्यावरणी नवी; पवित्र ‘तेनुं कुप्त’ ते पर्यावरणमूले हे। आला... हा! समाजां अर्थि?

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
वर्णन नवीनत: भाग-२

"शुद्धी भाव अविरिक्" (वाके) हे ने... पहेलां माये अे धुवने शुद्धचाव कड़ो। अहीं शुद्धिचारणी वात नौ। शुद्धिचारण ठो तो पपाथ छे अने आ "शुद्धी भाव अविरिक्" अन्ते धुवनाच अविरिक् छे। त्रिकाली शात्मावनो अविरिक् हे। (शालता प्रक्रियामय) अे बोल आत्मा-श्रद्धा अने ज्ञान। (ज्ञान अन्ते) "अतंत्रिप परम भोध"। शात्माज्ञ आति ठो अतिन्त्र प्रजान छे। (पठा) (मुनिकाल) अे ठीक करे छे ने...! अे शात्माज्ञाने ठो ("परमदियस्मविन्यासत्" मय) अविनियरिकी बुद्धी कड़ी छे। बापु! परमार्थ छे ने...! (कारक के) परद्यप्ते वल जय छे माते ठो (बुद्धि) अविनियरिकी हे।

अर्थात तो कच्छ छे के: "अतंत्रिप परमबोध वो... अमूल्यस शिलिपियांम वाय छे।" अर्थात् अतंत्रिप शात्माबनां वाड़े छे, अे परमबोध छे (ते पढ) अमूल्यस शिलिपियांम वाय छे।

(ढे आतिक विषें) गौरी भोल: "अने ते-ढे (अर्थात निज परम तत्त्वें) अविनियरिके स्वित धवाः श्रेयशारित वडे" - 'अविनियरिके स्वित धवाः' अे परमबनी वात छे। शुभित न वाय तेवा पपाथुप परमशारित वडे। आशः छे! छे धवाः अने गुण अन्तित छे तेवा अन्तित पपाथ। 'अन्तित पपाथ' नो अर्थ: अश्विनिता-रणामयान न अवावृः। पपाथमयान अविनिय स्विता-निर्मिता (कौं तें) आतिच करे छे। अविनियरिके स्वित धवाः-शुभित न वाय अन्ते सर्कारित वडे अर्थात् स्वामाविक आतिच वडे (अमूल्यस शिलिपियांम वाय छे)।

"अविनियरिके स्वित धवाः"-आलेष्णा नाथ भावण! (तें) स्विता अन्ते आलेष्णा डेन, आलेष्णा आलेष्णा उड़ डेन, (तें) नाम आतिच।

"समयवार" स्विती गाथा (ती ठीकरा अश्विनिता धवाः) कच्छ छे ने...! अर्थात् भावण विस्तारणमयान निमंबन क्ता। पछ्छ गुप्तवर विस्तारणमयान निमंबन क्ता। त्याली ठगने अस्मारा गुप्त विस्तारणमयान निमंबन क्ता। (तें) मरीयता पाण्डव क्ता... अे अमार वाता दोली नौ, अे ठो विड़क छे, (आतिच नौ) आशः छे! अर्थात भावण मानीते परंतु धवाः गुप्त, अे अमार विस्तारणमयान निमंबन क्ता; अनें नाम आतिच हे। अर्थात तं विस्तारण अने छृतस्त्वृनि विस्तारण;
Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

112 - प्रवचन नवंबर: बाग-रे

के (धारा हे) आओ आम लघु यह ने आओ आम लघु यह. लघु यह, पण ते कडू अपेक्षा अन? अड्डी यावर पडला कडीने पची निश्चय कबो, माते अर्थमया पुलासो कडी दीयो के: भाव! यावर अने निश्चय कबो, तेमां शुं के? के: परमधिनयोगीर्थर तो ते के जे. जैने आत्मानुवाद यह, चढ़ा गुणस्थानिनी भूमिका प्रभाव आयो यह, निश्चय (रत्नकेषु) यहन पूर्ण निश्चय (रत्नतंत्र कलं) नदी; तेथी ते पडला पापिकाधी निर्वृत्तिकुष, अंतरे के अवतन्ता परिधानेनी निर्वृत्तिकुष अने प्रतन्ता परिधानेनी प्रवृत्तिकुष, यावरस्थनया आरितमा बोध यह. अने पात चढ़ा गुणस्थानिनी करी. आशा... हा! हे ती पौताना योगमा! परमधिनयोगीर्थर! हे रहा शब्दो वापस्या हे. क्वम के: सिद्धतंत्रा अपुर्वकर्द (वाणा) ने पण ‘जितन’ कबा यह. अड्डा कर्दा यह ने...! अवकर्द, अनिर्वृत्तिकर्द अने अपुर्वकर्द. समकिर्नुनी पृथियो अपुर्वकर्दणी (के). त्यां (तेने) ‘जितन’ कबा यह. - ‘गोम्भीरस्य’ मां यह. अड्डी तो ‘परमधिन अने योगीर्थर’ शब्द वापस्या हे. अथ गृहस्थाने पण योगी ती हे, मुमक्त कबा बता... ने मीमांसा. (परंतु) अड्डी तो परमतिन, परमविद्याग, योगीकर्द कबा, अने पात चढ़ा भूमिकणी हे. (जे परमधिनयोगीर्थर) पडला पापिकाधी निर्वृत्तिकुष यावरस्थनया आरितमा बोध यह. तेने परंतुर यावरस्थनयाप्रभण तपश्चरण बोध यह; यावरस्थारितिनी, यावरस्थनयाप्रभण अंतरे मुनिपूण बोध यह. दीक्षाक्यार्क कर्दे यह ने...! तपद्वारक कर्दे के दीक्षाक्यार्क कर्दे, अठा यावरस्थारितिनी रा. दीक्षाने पण कर्दे यह. कर्दे के के:

“तेने परंतुर यावरस्थनयोगीर्थर तपश्चरण बोध यह.” यावरस्थन यह मो, यावरस्थनयोगीर्थर-गयम तपश्चरण बोध यह.।

“सद्गिर्जन्यानलक परमस्वर्भवत्व तर्मणामां प्रतिपन्न ते पण यह” आ निश्चयारितिनी, निश्चयतप. तप कर्दे के दीक्षा कर्दे, (अदार्थ हे). सद्गिर्जन्यानलक अर्थ्या वामविद निश्चय-नयस्वर्ध, परमस्वर्भवत्व (ते निश्चयनया विषय हे). व्यो! ‘नय’ ती ज्ञान यह. पण ज्ञानना विषयने जे निश्चयन्यालक कडीने परमस्वर्भवत्व अर्थ्यात सद्गिर्जन्यालक, परमस्वर्भवत्व, निश्चयन्यालक, परमस्वर्भवत्व, अन्यो (निश्चयनया) विषय हे. अनु अदार्थ अनेक कर्दे हे. “सद्ग निश्चयन्यालक परमस्वर्भवत्व तर्मणामां प्रतिपन्न ते पण हे.” निश्चयतपमा अनिवाव स्थितिकुष सद्ग निश्चयारितिनी तपशी बोध हे. ते द्वा निश्चयारितिनी धारा हे.

... विलोकन करेषे.

* * *

प्रवचन: ता. १२-२-१९७८

‘निष्मसार’. गृहस्थानय आविकर (ठीक) नी छेदी (पूर्व धी पृष्ठ) पांच गाथा. छेदी भे ढळी आधा छे. जुः: “जे परमधिनयोगीर्थर पडला पापिकाधी निर्वृत्तिकुष यावरस्थनया आरितमां बोध हे.” डाने? के: चढ़ा गुणस्थानमा परमधिनयोगीर्थर यह, चढ़ा स्वयंस्थानी ओषध हे ते कर्दे, तेने यावरस्थनया विषय जे द्या, धान, प्रतापिना भाव आधे हे. (शुं कर्दे हे? के:) जे परमधिनयोगीर्थर पडला पापिकाधी निर्वृत्तिकुष अंतरे अवतन्ता परिधानेनी निर्वृत्तिकुष; अने प्रतन्ता परिधाम जे आश्रय यह (ते) प्रवृत्तिकुष बोध हे. तेने यावर कदेयां आधे हे.

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री नियमसार गाथा पृ-पप - ११३

परमनिश्वरणी (वात) पही (वेशी). समजा कहा?

परमज्ञनियोगिशरे जो पोतानामा स्थित छ, अनुमान छ, अंशे घिरता छ; पण (ता) निर्विकल्पित नरी; तेघी तने पापियाली निष्पर्क्ष अंतेके (अशुरम) राजाली नियुक्तीय व्यवहारण्यही आचिर बोध छे; “तेने परेर व्यवहारनयोगेश तपश्चरण हो भय छे.” (ढे कहे छे के के)

“सदनिश्वरनयाल्यक परमस्वलाभस्वृप पर्मास्माअमां”-पोतानो आलमा परमस्वलाभस्वृप, धूप, अंगी जे पर्मास्मां... पोतानो! आखा... खा! अे परमास्मां “प्रतपन” (अर्थात्) प्र=विषेषे+पपन=उपादा; (अंतेके के:) आचिरा तणपी-पुदुशाधीनी विशेष (उपादा-निर्विकल्पित); “ते तप छे.”

आखा... खा! ‘सदनिश्वरनयाल्यक’ परेका कहु अने ‘परमस्वलाभस्वृप’ पही कहु। (अंतेके के:) शुद्धनिश्वरनयाल्य, सदनिश्वरनयाल्य, परमस्वलाभ, परमस्वलाभस्वृप; अं (तणपी) विषय छ. अने तणो बानानी विशेष छे; पण अंगी विषय से परमस्वलाभस्वृप परमास्मा, पोतानु पूर्ण स्वृप, बज्जान, परमास्मा! तेमा प्रतपन अंतेके के विशेष उप पुदुशाधी अंदर स्थिरता-निर्विकल्पित जरी घरी, ते तप छे।

आखा... खा! बहु (अलोकिक) मार्ग!! ‘व्यवहार’ परेकामा, ‘आ’ व्यवहार परेको छहु शुद्धस्वास्तमा (निष्पर्क्ष) गाखामा आयो छें! मिथ्याधिक्ने व्यवहार परेको अने पही आम (-निश्चित), अं वात छे ज नरी. अंद्रीयां ते छखुदुश्स्वास्तमा निष्पर्क्षपर्यानी पूर्ण स्थिरता (पर्यायमा) नरी। (अंतेके के) तने निश्वरननो विषय होवा छता पण (छह) पूर्ण स्वृपस्थिरता नरी; अंद्री दशमा, अं अपेक्षामे, पपीनी नियुक्ती शून्याबाब (छह) (र) परिशिष्टण छे तने व्यवहारशारित कदेकामा आए छे। तेहु छे, आए! बहु आकु राम. जगतने (वस्तुस्वरूपुँज बान नरी, माटे) व्यवहार अने निष्पर्क्ष जवा (विवाह)... अंटा तोज्यन... तोज्यन! आखा... खा!

बज्जान परमस्वलाभस्वृप परमास्मां प्रतपन; ‘प्र’ अंतेके विशेषे+ ‘पपन’ (ते तप छे). जेम सुवार गौरी अपारामण ध्यान छ, दाराना-दरेशानो गौर लागावाथी ते जाको आइँथे छ; अंम बज्जानआलमां पोताने दर्शन, जन, आकृतिडो अंश (प्रजटो के) पण अंदरमा विशेष स्थिरता जमाता चैतन्यी मातामातिकका, दीर्घागी अंक पथयिंथमा आइँथे छ. आखा... खा! तने अंद्रीयां तप कहे छे.

आखा... खा! बोटा जवा... व्यवहार परेकामा, अने व्यवहार दर्ता दर्ता निश्चित ध्यान! (परेन्तु) अं वात अमे छे ज नरी. अंद्रीयां तो सत्य जतायूँ छे। भगवान पूर्ण स्वृप तो छे. (ते) दशमा छे, जानामा छे, पण अमे स्थिरतानी पूर्णता नरी; अं हाटे अंने (परमज्ञनियोगिशरे) पापियाली निष्पर्क्ष व्यवहारण्यही (आकृतिक) परिशिर्दम लोग छे. अं व्यवहारनय उपविष्ठत छे. अंने निश्चित (तो) सदनिश्वरनयाल्य, परमस्वलाभस्वृप, परमास्मां, पूर्णस्वृप परमास्मा, परम आलमा, परमस्वृप, पूर्ण शुद्ध धूप, तुच परमास्मा स्वृप (छे); तेमा प्रतपन अंतेके विशेषे शोभा, अर्थात् शुद्धी पृथ्वी, अंतेके दे वितरणीपदितीनी उपादा, अंने नाम तप कदेकामा आए छे। शुद्धावनो अधिकार छे ने...! परमास्मानो कहे के शुद्धावनो

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
114 - प्रश्न: नवनीत: भाग-2 ।
(अधिकतर कदाक़ आकर्षक है) समझानु भाँति?

कहासा: आर प्रश्नरत तप अवश्य है ने...?

समाधान: अने आर प्रश्नरत तप ते निमित्तना कवन छ. ‘सम्यक्षानीतिपिक्ष’ माँ धर्मसाधक खुलकर देंग: भगवान-आत्मा अंद्र, अने आर प्रश्नरत तप क्याक़ी आया! आव्योस परीक्षा क्या है आया?

अने अन्य अने आर आव्योस (परीक्षा) निमित्तना कवन छ. अंतर्नी वीरतङ्गता अद्वैत परीक्षा छ. ते भरेणर तप, आव्योस, परीक्षा (ज्य), अने वीरतङ्गतावृत्त परीक्षा छ. अने आर भावना ने आव्योस परीक्षा (वगोरे क्षण) अने निमित्ती देख पल छ. आया... खा! अने (विशं) धर्मसाधक खुलकर देखु भुला छ.।

वाणि वर्ष पढ़ौँ ला, वह वर्ष था, १९७८ नी सालमाँ, भोटामाँ जंगलमाँ आकर्षण जता लया। ‘सम्यक्षानीतीपिक्ष’ पवित्र तत्ति। कीभो कीई... आ तो अन्य गजन वात क्षण ।। वतु यदार्थ आ ज्ञ है। पाँच ख्यायी अने डुब जुया छ।।

अने अन्य अने खदेंग: “परमात्मामां प्रतिपत्त ते ज्ञ है.” ज्ञो बुजासो कर्षो: “निष्कृतमां अविधिः स्थिरिनुप”-निष्कृतमां अंत्रने परमात्मावृत्त परमात्मामां अविधिः स्थिरिनुप (छ); अर्थात अंतर आत्मनी उम्मुत जमी है; अंतर अन्तिनिम आत्मन (ना गीतार्थ आये हुए)। रात्रे (अंक बाँझनो) प्रश्न झोठे ने...! आत्मानो निष्कृत द्रव्यामां अने विविध आये है ने... के: (आत्मा) आये है, आये है! बाह्य! उभी आया (‘सम्परसर’) मा डबु ने... “भूयेश्वरोगमित”-नव तप छे ते भेकी डबु तो भूवार्थ है अने स्वाभावनी अपेक्षेकां जुटाँ तो ते नव तप अवृत्तिएँ छ। पाँच (२०-२०नी टीमां) अने डबु के: व्यावहारिक अने पार्श्वीयिक नयनो वियारभेम कर्तां (अंत्रने के) ‘आ द्वार’ अने ‘आ पथार्’-अंत्र विकस्थी जारी नयनी वियार कर्तने छीने न्याय, ते भूवार्थ है। पण अनुभव कर्ता ने नव (तप) अवृत्तिएँ छ। अने नाम, स्थापना, द्रव्य अने भाव, अने निक्षेपना भेड़ी है। अने ‘निष्कृत’ छे ते ‘क्षेत्र’ ने भेड़ी छे अने ‘नय’ छे ते ‘शान’ ने भेड़ी छे। ‘नय’ विषयी छे अने निष्कृत विषयी है। तो निक्षेपना भेड़ीनो वियार कर्ती वपने, जे विविध क्षण कर्ता तो अपेक्षाएँ भरार्थ है, यथार्थ है, अने व्यवहार तर्कें भूवार्थ है। वण अनुभवाने अर्थात निरिक्षण अनुभवमां ते (सम्राज्य) अवृत्तिएँ छ। तबलाम महादेवान-मति, श्रृंखला, सहाय, संपर्क कर्तने देव-ने परीक्षणाने अने प्रत्यक्षप्रभावाने भेड़े ते वियार कर्ती वपने जे विविध क्षण, ते श्रीर क्षण (भूवार्थ है)। अन्तमत्तिएँ विभक्त (ै वात है)। भोटानी श्रीरने आत्मनी अने नयनी निरिच कर्तना धम्मां जे विविध क्षण, तो अने अपेक्षाएँ आयार्थ है, छे (रेत) अंत्रने। पण स्वदृढ़नी अनुभव-दृष्टिमां ते अभूवार्थ है। आया... खा! नवतपन, नय, निष्कृत अने प्रमाण-ने चारेनेमे भूवार्थ पण देखा अने अंबृत्तिएँ पण क्षण। आ प्रश्न है ने...! विविधवती निषीद डे-ते वपने तो विविध (भूवार्थ है, अवस्थ नदी); पण निरिक्षण अनुभवमां ते विविध अवृत्तिएँ है, अभाव है ज नभाव, समाहौं कांप?

अन्यायो (तपनी) व्याख्या करि: “सहार निक्षेपनालय खम परमात्मावृत्त परमात्मान्म प्रतिपत्त ते तप।” निष्कृतमां अविधिः स्थिरिनुप [“सहारनिक्षेप यात्रित आ तपनी क्षेत्र है.”] निष्कृतमां अविधिः स्थिरित, अर्थात (स्वदृढ़मां) जमी जुवं, संपर्क, आत्मविद्या,

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री नियमसार गाथा पृ-पृ - १७७
वीं पृष्ठात उन पुरुषार्थ-अनु नाम तप छ. (शु धरे छ? के:) आचरण-सम्पतात, अने आचरण-नी सिध्दत तो छ पण अत्यं पुरुषार्थ वड अविव्य सिद्धत करू, आचरण-नी दशामान उन पुरुषार्थी अविव्य सिद्धत रखू-अन्तः सिद्धित शाश्वनिश्चयार्थत, स्वामानिक सत्य आचरण आ तपस्वी श्रोत छ.

मुखार्थ: तपस्वी आचरण धार्म छ र्थे आचरणी तप धार्म र्थे?

समाधान: कठू हो ने! अविव्य सिद्धित आचरण छ, अने तप कठेवायां आवे छ. आचरण पर्य तप धार्म छ. तप पण करू? के: अविव्य सिद्धित शाश्वनिश्चयार्थत आ तपस्वी श्रोत छ. अन्तः सिद्धित ज्ञाता जयी जयी, अन्तः आचरणी आ तप कठेवायां आवे छ. (श्रोता:) अने वराबर समझणू नयी (उत्तर:) कृरीने कृरीने: पडेतां अव्यक्ततया आचरणां श्रोत छ-केल्या? के: परममदिमा श्रोतां पडेतां पापहिमा निविदित अव्यक्ततया आचरणां श्रोत छ. परंपरभु अनेने अव्यक्ततयावर तपश्चर धार्म छ. लुजो पडेतां आचरण दिवु ने? रण जे तयो अनेने ज अव्यक्ततय करे छ. अव्यक्ततयाने ज अव्यक्ततय करे छ. ‘आर प्रकाःताने तप,’ अने बड़ा निषिद्धा दक्षी छे, ते पुरुषार्थनु ही दर्शन छे. अक्षी तो (के) अव्यक्ततयारित पर्य (पण) पुरुषार्थनु ही दर्शन छे. आक्षण... हा! वणणणु हाँ? वणणण तो बड़ु आक्षणी आया!

अक्षीता तो आ पारमाना सर्वां परमानां कठू ने... परस्मात्राकु प्रलु आ (पोड़े ज) छे. रमणा छेता श्लोकमा कठेवूँः अने परस्मात्राकुमा अविव्य स्तिर्ताकु दीनता अने आचरणी आ तप धार्म छे. बादी बढ़ी लाजल्या छे. आक्षण हु, प्रलु! शु धार्म? अविव्य सिद्धित शाश्वनिश्चयार्थत; अन्तः आचरणमां स्तिर्ता सिद्धता विशेष बढ़ी जयी, अने अक्षीता तो कठे छे.

(कठे) आधार आपे छे: “अक्षी रीते अव्यक्ततयात्म (श्री पच्चली आधारिवृक्त ‘प्रभुत्विंविंशतिका’ नामना शास्त्रे विश्वे अव्यक्ततयात्म नामना अविव्यां ९४मा श्लोक द्वारा) कठु छे के:-

“र्धन्य निश्चय: पुंसा बोधस्वविधो इक्षयते। स्थिरतिशैय चारित्रमित्व योगः: शिवायाः.”

[श्लोकाध्य: आत्मानो निश्चय ते दर्शन छे, आत्मानो बोध ते शान छे, आत्मां ज स्थिरते ते आचरण छे; आयो योगः (अर्धत्त आ रज़ेनी अंतका) शिबपड़वुन हीर्ष छे.”]

आ बड़ा शास्त्रो (वाण्णमां) नाती गणा छे. छवीयस अविव्यार छे. पण पच्चली अनेपंचविवस्य-अेम नाम अ सर्मण छे अंतेदेप प्लास टेक्यामा आयघ. छेलो ‘अव्यक्तृ’ नो अविव्यार छे. आला... हा! ब्रम्तांक प्रमु, अेमा सर्मण तत्त्व अंतेन्तृ नाम अव्यक्तृ छे. बड़ु सुपर स्लु छे. बड़ु दिवु छे. पृष्ठी जर आधार्य करे छे: हे दुपानी! आ मानी पात तमेने पसंद न पड़े, तमेने विषयनी रुपक धार्म तो हुंठो तो मुनि छ, कमा डर्वा. आला... हा! पण मानी पाते तमेने हुंठ (बीज) आता राणबेरो? पण प्लास वर्षु दुपान उपाणु शरीर, उपाणु उपाणु शरीर, भव जेती धार्म अनेप पालप्रभुश लाम दुपिया तेक्यामा लाछने आधी धार्म... अंतेआम (राणबेर हुंठ जय) ! अरे... हा! अेमा जेता धार्म छे. विषयनी भोग तो जेता धार्म छे, प्रमु! आला... हा! अंतेआ आल्लो नाथ भिखे के न...! (अनेमों) अमूहता गुट्टा पीता,

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
१९५ - प्रवचन नयनतित: भाग-2
अंग्रेज़ी में जरूर लिखिए - (विषय-बोध को) जानना प्यारा, प्रभु! अंतर अमृत आ आंद्य, घूट पी! आख़ा... वाह! शरीरी अवश्य झाड़ूँने के पश्चात अवश्य नयमी नहीं! आवां दृश्य के तो अवश्य अंततः अवश्य पाने के; ए खत्तू हो सुभाष के. ए कोह मौज नयमी! समझा जाता है? आख़ा... वाह! अवश्य नयन व्याख्या अत्यन्त हो, सूनी विदेशी संत है! “आंद्य-पानी रक्षात अं द्य न अवश्य छे.” के युवाना! अंगी वात तमने न गढ़े अंगेज़ मोह हेत तो माह करी. कें तो मूल छू. बेहोश शु कर! आख़ा... वाह! विदेशी मूर्शिनश कर्म के!! मारिया राम जे आ वीर छे तेह मम विदेशी छीने; तमने ह्रेद न पढ़े तो माह करी. आख़ा! विदेशी संतनी आ ‘अवश्य धारण’ बीजने ह्रेद बागे न लागे अंगिनी साथ तुलना न करे. पश्चिम मने दुष्प लागे (तो माह करी, अंगी मितिन तक्ष्यला अने अलौकिक सज्जनताय तक्ष्यला करे!!) अमे तो अवश्य अने ह्रेदी: आंद्य, अवश्य धन, आंद्य धन, तुं परमाश्चृ छी, अंगी रमण (कर).

(बिजी देखाए पाल) आये छे: अंदर अवश्य परमाश्चृ, अंगी रमणे के अवश्य. परमगुण आंद्य+शरीर=रमण; परमगुण आंद्य भवान व्रत=शरीर, रमणे, जमी जुं; शेम पशु पारा घरे छे अंगी अंतर आपा की छीने. अं द्य नयमी छे. वात तो आवी है, प्रभु! ह्रेद परे के न पढ़े. आख़ा... वाह! शेम पशु पारा घरे छे अंगी अंतर भवान आंद्य पानीमा वाते छीने, आंद्यु भोजन छीने छीने. आख़ा... वाह! अनीया आंद्य अंतर युं-भोजन करवून अने अं द्य अवश्य धरी घरे की. तेने ह्रेद न पढ़े तो माह करी. आख़ा... वाह! गजन दरे छे! अर! आ वीर गिरी संतो तो घुनो (के युवाना मम धर्मतित है!!)

(‘समय सार’) प्राणी आधारांत कुंदुकुड्यानंद (सरमाये छे ने...) “चलल ज गतलनं”-प्रभु! हुं अनुभवनी वात घुने छूँ. अंगीया वीरे भाषा माराथी आवी जय, तवने ह्रेद न पढ़े; मांदा वतन संस्कृत ने भाषा उपर नयम, मांदा वतन तो अंतर आंद्य अनुभव उपर छे, अं वतन करवामा मारी भाषामा कुं केर परी जय; तो “चलल ज गतलन.” तवने अंगी (आक्षणा) जाननर के अने तमारा आधारामा आवी जय के आ देखाए भूल छे तो शक्तिपुण ध्यान रामता नही। अमे तो अंतर आमानुभवनी वात करी घरे घरे. तेने तरं तारू वक जुं घोरे।

अंगीया केरे छे: घुनो श्लोकावन-“आतमानी निधित्व ते दर्शन छै.” नव तापनी श्राय (घोरे) नी वात ठक़ नाही. अं अंगी परमाश्चृ केरे छे ने...! निधित्वनामांक परस्यकालस्यवधान परमाश्चृ-अं आतमाने; अं आतमानी निधित्व (अने सम्यक्ष्यर्थ). आखा... वाह! आतमानी पवित्रनी निधित्व के गुणाभक्षनी निधित्व, अंग न दीदीं, (परतु) अनवं, अनबेद, अवश्यक्ष्यर्थ-अंवो आतमाना, भवानामात्मा; अंगीनी निधित्व, अंगीनी निधित्व, अंगी श्राय सिम्यक्ष्यर्थ है! व्यक्तिश्मर्षक्षण हैं अं तो आयोपित क्षण हैं, अं तो रात हैं व्यक्तिश्मर्षक्षण (अे) कुं दर्शन(श्राय) नी नपर्याय नही। ते तो रागी तपर्याय छे. (अंगी) रागी पवित्राणी निधित्वस्मर्षक्षणनो आरोप करी व्यक्तिश्मर्षक्षण आयो। आखा... वाह! समय सार छे करी?

‘भोक्षणक्रुड़क’ सत्तामा अध्यायमा कहुँ छे: अं निधित्वनी साथे अंवूं निषिद्ध-राग है अने उपयोगी व्यक्तिश्मर्षक्षण करी आयो. अं समबिती पवित्र नाही. अं निधित्वनी अं सम्यक्ष्यर्थनी पवित्र है। आखा... वाह! अंवूं छे।
श्री नियमसार गाथा पृ-पृ - 1917

प्रश्न: 4 द्रव्य क्या गया?

समाधान: अे तो कड़े छे, प्रश्न! अंकोरा सांभाल तो पड़े! आत्मानी अड़ सम्पन्नी के सातनी पग्म े तेमा के 4 द्रव्य अध्यात्मिक ताकत छे, तो अड़ सम्पन्नी पग्मां 4 द्रव्य (नू नान) आपी गये। अे अपी अड रय नहीं (पाल) अपी अन्तन पग्मांनी ड़ा अड सातनी। अे अध्यात्मिक अड़ पग्मां 4 द्रव्य नज़र पाल आपी गये।

(साधकसे बता शुष्कलांकित) होपंती पग्म, ते रविज्ञानमालकि कडे के। पाल केने?

dे जो आत्मानु निश्चितसम्पर्किंग छे। अे निज़ामूल कारे?

(इसे, कड़े छे) “आत्मानो बोध ते शान छे।” -एंबांडल, स्वमाश्वो सागर अन्त नियुक्तू अड़क़ अपी जे आत्मा, तेनु शान, ते सान के मी चीमे। आज़ा... बा! आज़ा, शानलु शान अने नाघां शान, अे कर रात नरी। पाल शु से अे हुयोने: पुंसी बिन्दरबिन्दु इत्या - ‘तस्य’ अभाव जे स्वरूप, ‘पुंसि’ =पूर्व मः आत्मा, अनी ‘बोध’ =शान, अे इस्ते कदे छे। अटले के “आत्मानु शान ते शान।” आज़ा... बा! संयोजो थोरा जम्मो पा गर्मां-पेटमा सार तो बड़ी दीधो के! आज़ा... बा! अ निश्चितमोक्षांगनी पग्मांनी वात अहे। सत्यमोक्षांगनी पग्मांनी अने अहे। तो अे पग्मां आत्मानु धर्मन, अनुभव अने प्रतिभे छ अने दहन कदे। अने आत्मानु शान अने जान के के। बींज़ (आत्मा अवर) शान औपं श्री, दत्त श्री, अपी कार संवध नरी। (बस!) ‘निश्चितनिष्ठानी इस्ते ते शान छे।’

इस्ते छे ने...! बांच जुमू: आत्मां “स्थिरितत्रेत” =रिथित+तत्व+एव. बांचः
बा! ‘तत्व’ =त्या (अटले) भवत्तवत्तमानमां+ ‘एव’ =ज (निश्चितै) + ‘रिथित’ – “चारितमिति” ते अर्थातेन्त्री छे। “आत्माम् ज्ञेतित्व तेल अर्थ्यैं छे।” शान छे ने...! जुमू! स्थिति ते अर्थातेन्त्री छे। लक्षण के: अर्थात अटले चरणु, भवत्तवत्तमानमां अनालया मे के। अे अंबर आंबनी रचना ते अर्थातेन्त्री। -अमृतमाल! “आयो मोह अर्थातेन्त्री अन्तनी अक्ता शिवपदनु धर्मन करां।”

‘सम्पत्ति’ १६८ आदामा कड़े ने...। “दंसकांना चित्रांणि संबंधाणि साहुणा चिदिं।” (धर्म, शान, अर्थात) के छेलेय अड़ आत्मा ज के, अनेक छे। आज़ा... बा! अे कड़े! त्या तो व्यवस्थाम्यधर्मन, शान, अर्थातेन्त्री तो वात ज करी नरी। पच्चिमा लक्षणमा: अे निम्ब्रसम्पर्किंग, शान, (अर्थात) अनेक्ये पा त्या व्यवस्थांठी, मेलनतांहु लक्षण दृढ़ी ‘मेळक’ छे, अम क्षुद्र। ‘मेळक’ कृमि? के: ओलाव (निम्ब्रसम्पर्किंग) जा भेड़ उछल गया ने... (अटले)। छे तो ते निश्चित-सत्य, पा नज़ा भेड़ छे तेठी ते व्यवस्था दृढ़ी, मेळक दृढ़ी, मेलन के के। लक्षणमा मेळक-अमेळक (नी वात करी के)। आज़ा... बा! पय्याननवी (व्यवस्थाती) लोकी समेते के तो पय्याननवी करण कारी अपी दाँते अटले। बाकी छे नने पवित्रो। तेनु लक अने भेड़ छे, अे तो व्यवस्था थयो। अर्थात सम्पर्किंग, शान, अर्थातेन्त्री नज़ा भेड़, अे व्यवस्था थय गयो। अने अने मेलन (मेळक) दृढ़ु।

अर्थी अे कड़ुं, जुमू: अन्ततानी अक्ता, अने अमेळक। अटले के: अंतरमां-आत्मां धर्मन-शान-अर्थातेन्त्री अक्ता ठा के; तेठ नज़ा-अधयो योग अटले के नज़ानी अक्ता-अने योगनी व्याप्ता दरी। “अन नज़ानी अक्ता शिवपदनु धर्मन करां।” -अमृतमाल करां। बाकी नज़ा
प्रश्न: अमे नीचे दर्जे रवेनारे अनेक कांट साधन तो भतया. छं कांट? अे निधानी पात बराबर छ पण अंौ साधन? अमे के आ मंजिळ करवी, पूजा करवी, गुरुरी नेपा (आदि साधन)?

समवादन: अरे, आप! साधन ‘अने’ कडी. माच! साधन म ‘आ’ हे. दर्शन, शान, आर्जन (भगवती अंकता) आ साधन छ. अने अे जे भगवान भेट छ तेने व्यवहारन दथो, मेत दिक्को, मिलून पद्धाराने व्यवहार छ अंथं अर्थं हे, आक... श! आ जस निर्देशं... छो! (तो पृष्ठ भद्दित, पूजा, गुरुरूप्ता आदि साधनानी पात तो अव्यंग रद्दी गऱ्छ).

आक...श! छनं! रव्ही आधा यही क्रम-क्रम एक्खा-एक्खा "दारसनमहाभाष्य-साधनकः परिणत्वः। एकोपित्र प्रतिभाविदास्य इवत्त泞ं मेचकः।।" -शुअ कहुँ? आत्मा अंकृ हे तोपण व्यवहारसिद्धी जोडफे तो ध्रुव स्वभावपश्चाते दीधे-धर्म स्वभाव भट्ट गया ने... दर्शन, शान, आर्जन... नियम छो! -अदेहकारुपु 'मेक्क' हे. भावायः- "शुद्धयाविधिने आत्मा अंकृ हे; आ निदाने प्राधान कडी कदेवांग आवे त्वये पर्यावरणान पौर्ण थयो तेथी अंकृने प्राप्त भर्तसमतो कदेवो ते व्यवहार थयो, असत्यार्थ पद्म थयो." पण व्यवहारी लोको ने साधनवा माणे भेदली-बायली समझावे. अं विषय (कार्य-कार्य) भावार्थमध्ये ज्ञानजत विविधाने अर्थ दक्षप्रे हे के: "व्यवहारी लोकी पथसामि-मेकमा समझ के तेथी अधी शान, दर्शन, आर्जना भेदली समझतुं छुः।"

अंकृना पक्ष छ ने...! "भिक्षित्रज्ञ चारित्रितिति योगः शिवायःः"-अंकृ (दर्शन, शान, आर्जन) भगवती अंकता शिविंदूणु दाशण हे, आक... श! आत्मात्मा अंकृ अंकता अंकता हे; भेट नहीं, अंदर अंकृ हे गयो; अंतिने आधार छे; मोक्षनु दाशण हे, आधार हे.

प्रथम (अ शुद्भाय अधिकारी छैरी पांच गाथा-भोली ठीक पूर्ण करतां ठीकरादु मुनिराज श्री पद्मप्रमलधारेव श्लोक करेदे हे) :-

(मालिनी)

जयति सहजबोधस्तादुर्दी दृश्टिका चरणमणि विशुद्ध तद्हियं वैव नित्यम्।
अधकुलमल्पकानि कमिस्मुक्तमूति: सहजपरमत्वे संस्थिता चेतानां च।्युः।।

[श्लोकार्थः-] सक्षण शान सक्षण ज्ञात्वं हे, तेवी (-सक्षण) अह दृश्य सक्षण ज्ञात्वं हे, तेवुं ज (-सक्षण) विशुद्ध शारिर पण सक्षण ज्ञात्वं हे; पापमुक्कुण्डणि भजनी अधवा आदव-निदानी पंजितयं रक्षित जेनु स्वरूप हे अंकृ सक्षणपरमत्वम् संस्थित चेताना पण सक्षण ज्ञात्वं हे।

आहाँ... श! शुद्भाय अधिकारी छे ने...! कहुँ: "सक्षण शान सक्षण ज्ञात्वं हे।" -अंकृ हे? पयां नहीं; ध्रुव, सक्षण शान-ध्रुव सक्षण ज्ञात्वं परं, सक्षण ज्ञात्वं रक्षे. आहाँ...
श्री नियमसार श्वाकुं एप - १९२

श्रेयस्य दिशायां करं के: आ सर्व श्रान सदा ज्ञानं वसं तरं तरं श्रान सर्व ज्ञानं वसं तरं तरं। श्रामणयुवं डाँट? अं क्रोण डाँट श्राद, क्रोण जाणी श्राद? के: कशी दिशिमा सत्यशान-श्रृंग, उपदीपे आयी गयी, प्रतीति आयी गयी, ब्यान आयी गयी ते कपे छे के: आ अंकर सर्व श्रान ज्ञानं वसं तरं तरं, नत्य छे, सदा छे। अन्येनि श्राद-श्रान अं तो पर्यापि छे। पछ आ पर्यापि देनाथी उत्तरं छृ? के: (के) सर्व श्रान ज्ञानं वसं तरं तरं, तेना आश्रये सम्यक्षर-श्रान (पर्यापि) उपत्तम थरं छे। आशा... ला! “सर्व श्रान सदा ज्ञानं वसं तरं तरं” आ वात पर्यापि नयी हथि। ‘आ ज्ञानं वसं’ अं जाणारी पर्यापि कडे छे। जाणारी पर्यापि अम्र कडे छे के: ‘आ सर्व श्रान ज्ञानं वसं तरं तरं।’ जेणेनी दिशिमां-अनुसरणानि निमता भासी अं पर्यापि अम्र जाणे छे के: ‘आ श्रान दिक्षा ज्ञानं वसं तरं तरं’ आशा... ला! आ मांगणिक!! इंद्री काया। ‘शुद्धावाप’ छे भरे ने...!’ ‘शुद्धावाप’ अंतेू निदाणी। आशा... ला! के सम्यक्षरनॊ विषयं, अं सर्व श्रान’ ज्ञानं वसं तरं तरं। सम्यक्षेत्र-स्वामाविक श्रान सदा ज्ञानं वसं। ज्ञानं वसं अर्थात् शानकालस्य पर्यापि छे। स्वामाविक श्रान ज्ञानं वसं तरं, श्रवणं वसं। –अे ‘निर्देश’ पर्यापि करे छे। पण पर्यापिॊ ‘विषयं’ जे छे ते ज्ञानं वसं तरं तरं। अभाराशानां जे निमता भासी ते नित्य ज्ञात्वं वसं तरं। आशा... ला! जुडू, शैवी तु जुडू!’ “सर्व श्रान सदा ज्ञात्वं वसं।” मोक्षमार्गनॊ पर्यापि ते अंक समयनॊ छे। अं तो पश्चि मार्ग-अन्तं दिनेचे जे ज्ञानं (जिंडाजीनॊ) आश्रये लीवी ते पर्यापि अम्र जाणे छे के: आ श्रान सदा ज्ञानं वसं तरं तरं, श्रानस्वामा-श्रावणं ज्ञात्वं वसं तरं। आशा... ला! समजाणु डाँट?

बणे, भाषा देवी नाथी (जुङे:) “तेवी (-सर्व) आ हस्त सदा ज्ञात्वं वसं।” सम्यक्षरने देखेती निदाण हस्त जे छे दशन, निदाण श्राद (ते) लीवी छे। निदाण... ला! दास्य हस्त छे अं निदाण अंकर छे। सम्यक्षरने, अं हस्त, तो पर्यापि छे। पण अंकरे जे विषयं छे अमां जे कारण ‘हस्त’ सर्व निदाण ज्ञात्वं वसं तरं तरं। आशा... ला! समजाणु डाँट? जेनाकु उपस्थ हस्त परं ते जळन-सर्व हस्त-अंकर निदाण वसं तरं तरं, श्रवणं वसं।

आशा... ला! छे...! “तेवी” अंतेू ‘जेहुं श्रान तेवी’ अंतेू ‘ते शीते’ “(-सर्व) आ हस्त सदा ज्ञात्वं वसं।” आशा... ला! सम्यक्षरनॊ हस्त ती पर्यापि, (ते) ते नवी प्राप्त यथार्थ छे; ते सदा ज्ञात्वं तथाि। पण अंकर जे हस्तिनॊ विषयं छे, जे सम्यक्षर-हस्त जे छे, ते सदा ज्ञात्वं छे। आशा... ला! आयो मार्जे छे!!! जे हस्तिनॊ विषयं अंकर छे, जे सम्यक्षर-हस्त जे छे, जे श्रवणं वसं, ते सदा ज्ञात्वं वसं तरं तरं। आशा... ला! हस्त सदा ज्ञात्वं वसं तरं तरं। पण श्रान साधे छे, जान जाणे छे के: आ हस्ती निदाण जे उत्पन्न थरं तथेने, जे अंतहस्त जे तेना निदाण छे। (अं) अंतर्यहस्त ज्ञात्वं वसं तरं तरं। आशा... ला! समजाणु डाँट?

थों... पण सत्य तो आ छे, भाव! बँधु लांंडूं के विस्तार गमे ते केरे पण पशुस्त तो अन्या दायीने भूमधुनाथी। गमे तेटला जवापणा ने जवी वाता गमे तेटली करे-व्यवस्थापननी वाता: वर्षानुवर्षानॊ अंखी छे ने कर्षानुवर्षानॊ आम... आपु बंधु छे। (अंनीं डाँट सारपणु नयी।) समजाणु डाँट?

ज्ञात्वहरेह निदाणीस्वामाने पड्यापो त्यारे अं हस्त (अम्र) करे छे, अर्थात् सम्यक्षरनी।
१२० - प्रश्न-प्रत्ययें: भाग-२
साथे रहें हान (अंग) करे छ दे: आ दिशनों जे विषय, जे टिकाणहट, अंदर ज्यांत वहि छे. आख... ल... ल!

जिसाला: दर्शन शान-नी मह लेख पढ़े?
समाधान: साथे छे. अे (शान) जाँठे है हानी. हृद ज्यांत नी. शान-उपयोग छे ते जार्भांलु आम करे छे. दर्शन लोता ने पता ज्यांत नी अने वातने पता ज्यांत नी, आख... ल! जिसी लांटे है, भापु!

अंद (अपे र्षान) समान लीढी: जार्भु-हेम्ब जे ‘उपयोग’ छे अे स्व छे, अने अं सिवाय बीजा गुण ‘उपयोग’ नी तेथि ते पर छे. अंधी समान भाली है. उपयोगस्या-पुष जे जार्भ-हेम्ब अं अविष्ट, अने अं सिवाय बीजा जे छे तेनी नालिष्ट; अरे दे उपयोग्मा आ बाढा गुणो नी, उपयोग्मा तो शान-दर्शन नी उपयोग जे द्रव छे ते अंधा शान-नी प्रयाम्ना आयु, तो अं उपयोग जे छे ते स्व-अविष्ट छे, अने उपयोग सिवायना जे अनंतगुण अंती उपयोग नी, अने उपयोग न कडी. अंधी समान भाली है.

जिसाला: धबु गुणोपी पत्र्यांने उपयोग कदेवाय?
समाधान: नी. उपयोग नी. अं तो पछी धेतना कदेवां य पछी धेतनाना धबु गुण धेतना कदेवामा आवे छे, पता बाग (बेंड) पावाठी धेतना तो शान-हेम्ब अं धेतना छे. अं दशां मेक्षी. (शु) सम्मान धोतने जाणे छे? आरिन धोतने जाणे के कु आरिन छू? -नी. शान जाणे छे. (श्रीतां) आरिनने शुद्ध उपयोग-अशुद्ध उपयोग (संशा) आवे छे! (उतां) अं धार आर्यर अपे र्षाने छे. अं ‘द्रवसंहर्ष’ मा आवु छे. आर प्रकाराने जे उपयोग छे: पांच शान, नाल अर्ण अने आर दर्शन-अं उपयोगापूर धाव... बस! अं शुद्धउपयोग ने अशुद्धउपयोग अंम त्या नी. शुद्ध अने अशुद्धमा तो आर्ष शाथे आवे छे. वळीबार अंरी धार थषे गर छे. शुद्धउपयोग तो अंरी आर्षथानु. अंकुल जार्भु-हेम्ब नी. अशुद्धउपयोग्माने भविष आर्ष छे अने शुद्धउपयोग्मानी निर्मित आर्ष छे. आर्ष छे शुद्धउपयोग्मा. आख... ल! अंना कृपा केर पशे छे. धार तो अंधी बढ छे, ‘द्रवसंहर्ष’ मा लोंपु छे: आर प्रकारानी उपयोग निःश्रेष्ठ जीव छे अने शुद्ध ने अशुद्ध उपयोग जे आर्ष छे ते निःश्रेष्ठ जीव छे. समाजानु अंरी?

अंरीमा करे छे: “तेवी (-स्त्र) आ हृदी सदा ज्यांत छे.” आख... ल! “तेवु झ (-स्त्र) विशुद्ध आर्थिन पता सदा ज्यांत छे.” आख... ल! “तेवु झ (-स्त्र) विशुद्ध आर्थिन पता सदा ज्यांत छे.” आख... ल! अंरंमा जे आर्थिन-वीतराष्ट्राभिम छे अं निर्माण वर्ते छे. (अंम तो) शुद्धवारे पता विशुद्ध करे छे, शुद्धउपयोग-पुष्टीयाने पता विशुद्ध करे छे. पता अंरी निर्माण (आर्थिन) ने पता विशुद्ध कदेवामा आयो छे...

“विशुद्ध आर्थिन.” पता आर्थिन के लीनु? के: शान ज्यांत वर्ते छे. हृदी ज्यांत वर्ते छे. तेमह आर्थिन निर्माणी, विशुद्ध आर्थिन ‘पता’ अंम लीनु नेँ...! ओला (शान अने हृदी) जे आयो परसे... अंतरे आर्थिन पता सदा ज्यांत छे. आख... ल! बनागण वीतराष्ट्राभिम आर्थिन तो आत्मामा सदा ज्यांत छे! जे वीतराष्ट्राभिम न एषे तो जे वीतराष्ट्रीय पर्याय आयी ते आठी क्षणी? आर्थिन शुद्धवारने वीतराष्ट्रीयआर्थिनपोषण आयी क्षणी? जे वीतराष्ट्राभिम निर्मित, द्रव छे! अंना आश्रयथी (निर्मित पत्र्यां उपन्त धाव छे) -आ तो बेल्डु क्षण छे. अत्यधि अं लेवु.
श्री निधानसार श्वेत ५३ - १२१
(नाशीन, तो) पर्याय पोतानाथी (बाय) छ, ते तो ब्यालमा छ। (पण) अर्द्धा तो कार्य बनावतारनु हो। शास्त्र वस्तु बतावली छ नेन...! वर्तमान आरित्रिनी पर्याय (श्रीमान) अर निकारण आरित्रिनी रुप द्वैत, जयवंत वर्तत्त हो; अरे पर्यायमा आरित्रिन प्रगत थयहै तेन वाच (पुन) जान अरे कहेछे के: 'आरित्र निकारण वर्तत्त हो।' आहा... छ! आहुय है!! वाहिवाहे पार पड अरे आहुय लोही।

अरे तो धरि ब्यालमा हो... ने! अर्जुकट्र करो, पर्याय द्वयना अस्त्रेवे हो। अरे अर्जुकट्र करोक्र–पुनयता आश्रये लोही। पण असीयथे जेना उपर वल्ल थयहै ते शील केदी हो; अरे भवार्य हो। समव्यस्त हो छाँह? "विशुद्ध आरित्र पण।" अरे, अरोला (जान अरे हृदि) अरे बेद लीहानुहे...! अरे लोही अर शीलय (आरित्रिनी) लोही- "सहा जयवंत हो।"

अरे! अंदर भवात् आलो ज्ञयो सो छै है आतमा। आहे हो...! 'समव्यस्त नाट्य' मा "जिनपद नति शरीर हो, जिनपद चेतनामादि; जिनवर्तन कवि और हो, उत्त जिनवर्तन नति। (जयवरहः २७)। आहा... छ। भवात् आलो ने! ज्ञयो आलो ने! अंदर शरीर हो! अरे कहो आलोमान पर्याय लोही। जिनपद नति शरीर हो, जिनपद चेतनामादि।' आहा... छ।

अरे अर्द्धा कहेछे: चेतनामा विशुद्धवारित्र, वीररागपथिय, वीररागशकित; (अरोला हो) वीररागपथिय प्रगती, अरोली साध थयहै, अरे शान अमे करो, जावेछे: वीररागवारित्र (–सहध विशुद्ध शरीर) पण सहा जयवंत वर्तत हो। (ञानमान अवृं) वास्तु त्याऱे 'जयवंत वर्त्त' अमे करुन हो...! पण भास्या विना, (अटेले के) 'आ जयवंत वर्त्त हो' अमे ब्यालमान भासन थयाविना, अने 'जयवंत वर्त्त' रुपा हो? आहा... छ। "सहध (विशुद्ध) वारित्र पण सहा जयवंत हो।" (कह्यो कहेछे:)

"पाणसमुद्रबी भणप अथवा काभ्यानी पंकियानी रोकित नें बुरण छे अप्यी सधपरमाल तत्त्वामा सांस्कृत चेतना पण सहा जयवंत हो।" आहा... छ! अर्द्धा पण 'पण' आवृं नहे...! अंदर चेतना 'पण' निकारण जयवंत वर्त्त हो। (निकारण) झानवेतनामानु हो अरे पर्यायमा ज्ञयावे ब्यालमा आवृं त्याऱे अरे पर्यायवेतनामा करो हो के आ चेतना निकारण अंदर जयवंत वर्त्त हो! ध्यात्तेतना जयवंत वर्त्त हो! छ...! "अप्यी सधपरमालात्त्वामा सांस्कृत चेतना पण।" (जब–जान, हृदि अप्यी आरित्रिन नाभि कथा ध्यान हो...! तेमज आ चेतना पण) सहा जयवंत वर्त्त हो। आलोमा शुद्धवेतना "निकारण जयवंत वर्त्त हो।" आहा... छ! शुद्धवाल अधिकारी पूर्वताना आ श्वेत! शुद्धबाल अटेले धृव। अरे धृवमा आ विना: जयवंत शान, जयवंत हृदि, जयवंत आरित्र अने जयवंत चेतना! आहा... छ!

... पुढ्य होः।

**

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
“અલિંગનલા રમા બોલ્લા, ‘ધુંધને સૂક્ષ્મતા નથી અન્યય શુદ્ધ પરશુયામ તે આત્મા છે’ એમ કંઈ, ત્યાં વેદના અભેષ્કાયે કંઈ છે, કેમકે આજના વેદન પરિસ્થિતી છે. તિજાની કે વેદન થતું નથી. તેથી ‘વેદના આવ્યો તે લું’ એમ કંઈ છે. જયાં એ આશ્ચર્ય ક્ષેત્ર તે સમજવા જોઈએ. અહીં સમયજર્ણનની વાત છે. સમયજર્ણનનો વિષય કે ત્રિજાનીધૃદયસામાન્ય તે એક જ સર્વ તંત્રમાં સાર છે. એ વર્તુલ પોતે ધુંધ છે. તેના ઊપર લક્ષ જતાં સમયજર્ણ થાપ છે.”

-શ્રી ‘પરમાયમસાર’ /ર૫૭ભ
प्रवचन: १३-२-१८७८

[ परमार्थ-प्रतिक्रिमा अविद्या }
[ अविद्यानि प्रारंभमा ठीकरार मुनिराज श्री पञ्चप्रभुमलाधिकिर्तिविव श्री माधवसेन आशाप्रेरण ने श्रोकः द्वारा नमस्कार करे हि। ]

(वसास्थ)

नमोदस्तु ते संयमबोध्मूह्त्य स्तरंमकुंस्नथलेकनय वै।

विनेयविज्ञाविज्ञाने विराज्ते माधवसेनसूरस्ये ।१०८।।

[ श्लोकार्थ:- ] संयम अने धातैली भूर्ति, ाहुपुरी धातैली हुँवस्कने वेदनार अने शीश्वपूर्वी कवनारे विकसावस्याः सूर्य समान-अन्वये के विनाभस्म (शोभायमान) माधवसेन-सूरी ! तमने नमस्कार हे ।१०८.

‘नियमसार’, पानमो अविद्या ‘परमार्थ-प्रतिक्रिमा’ अविद्या शोष अविद्यामां व्यवह्यातिंतु वर्णन आये। (निःश्रयातियने कुमुंद भूसु भूसु अने) तेनु परिपक्वार्ण व्यवह्यातिंतु आविष्कार छै। अम स्थानात्मक, शान अने अर्थ घातियत छै, तार् व्यवह्यातिंतु अर्थात् पञ्चप्रभुमलाधिकिर्तिविव निःश्रयातिय वाच, अे वक्ते आये हि अने छोडौँ (स्वयं) स्थिर थाव जसे, अन्य व्यवहार-प्रतिक्रिमा अने परंपरा अवर्ण छै, तस्मात् यथा अने भयान अविद्यामां आविष्कारणे (उक्त) श्लोकः द्वारा नमस्कार करे हि।

आहाँ... झाँ! प्रथम पोते पोताना श्रीगुरुने वंदन करे हि। परमार्थ-साय व्यवहारिनी व्याख्या करती परंपरे पदातमा गुँते याकरे हि। पञ्चप्रभुमलाधिकिर्तिविव भुमि हि, आशाप्रेरण नवी। कि हि जे मा गुँते वेदा हि? —मा गुँते “संयम अने धातैली भूर्ति” हि! अंरत भगवान जानवस्त्रप; (अने) अर्थ ज पर्यायामां पदा जानमूल सघ गया हि; अम कि हि। भगवानान्तमा, शेषो स्वभाव आंगतित्तिव शान (स्वदुप) हि तो पर्यायामां पदा (तेनो) अतीनमित्ततीसंगमूर्ति अर्थात् (अतीनमित्तती) स्वदुप यथा गया हि। (झोङ): अन्य अनेमना गुँते के भवा भुमि? (उत्तर:) भुमि हि अन्य झकी भी! भवा भुमि (आवा झ कॉय:) अर्थां तो पोताना भुमि-गुँते याकर वर्ण थाव झि नेहि!

आगां केली नेहि... अंरत आलानानी नाथ प्रशु, ज्ञातिकाय, शेमां शुभाराग तो झ नवी, शुभाराग तो झ नवी, पदा शेमा भेंड पदा नवी-अनेमो ज्ञातिकाय लीढो हि। ‘झे अनेमो हि’ अमेन न दीवुँ। देमके ‘झें’ तो अन्यमति पदा कि हि। अर्थ तो अस्तिकाय-असंभमुद्रिकि, अन्यानुगुणो धी, अनेमो ज्ञातिकायमां शुभाराग तो झ नवी, शुभाराग तो झ नवी (परितु) भेंड पदा नवी। भोङ ज्ञातिकायना भेंड, भोङ गुँस्वानना भेंड, भोङ मार्गित्ताश्यानाना भेंड, अे वस्तुमा नवी। अे भवा विपष्य यथिपिता हि। समजाँइँ काँई?

आहाँ... झा! अनेमो भगवानान्तमा! (अनेमी) जेने अंरतमां आलानानी भरती याकर गि
124 - प्रवचन नवनीत: भाग-2
च; जेब समुद्रमां वशती झोंके आये चे अभ जेनी पर्यायांम्ब संयम अने शान्ती भरती आयी
गर चे ते अमारा गुढ़ चे. -अभ दहे चे. आख... हा! “संयम अने शान्ती भूर्ति”-अे तो
जाले शान्ती भूर्ति... पर्यायांम्ब चे! “शमुद्री अधीना दृष्टव्याने वेदनार”-विषय-
वासना-अभे, अे तथी जे सांगी. अन्ना दृष्टव्यान (लम्बाणा बाण) ने वेदवाणा (चे)! आख... हा! समाज्य झांसँ?
अे ‘सम्यक्षान दीपिका’ मां आयू चे ने...! पशु लोके अनें (समझा विना) टीका
करे चे ने...! “जेब के जेने माथे धरी-पति चे, अनें धीर धर (विषयपीठ) अह जय तो
(ते) बहर आयतो नाथी. जेब जेने माथे आम्बा धरी चे अंधे दागाडिमा आयी जय तो
ते बहर पदता नाथी.” तेमें (हकुकजोने) विषय स्थापित कर्या नाथी. पशु अभ ल्या वार ले
चे के जुगो: व्यविधाय (ने पशु धोष गम्यो नाथी). अरे... हा! आयू ‘राग’ व्यविधाय चे,
प्रभु! अनें छोड़ो चे, तो परस्तरीनो ल्याग-ज्ञा धर्मी-समक्षीतने अंदर विषयात अया
तो स्वर्गीनो पशु ल्याग शेष चे. तो परस्तरीना त्यागनी- (अे) वात जे शुं कर्वी? अे
तो ल्याग, ल्याग ने ल्याग जे शेष चे. समाज्य झांसँ?
अरीयां कहुँ: “शमुद्री अधीना दृष्टव्या वेदनार” चे. अनें शीत्र (शान्तशा) चे! अरी
यी तो जयं जयी शुभरागनी पशु ल्याग चे त्या परस्तरीनो व्यविधाय...! अे वात... अरे, प्रभु!
शुं दरे चे तु आ? ! अनें अनें अर्थ अनें चे शांसँ? ! (परे अर्थ तो) अनें भतायो कर्ती; तो
य अभ धीरी (वांधी उदारी, अंथ) हेंडी दीघा! आख... हा! आ जगतनी अनें शीत्र चे! !!
अले कहुँ कंठु ने... ‘प्राक्षिपरिप्रेषितिका’ माणी. र्याक्षा विश्वास (अक्षर्यस्थाएक) भा
न गाथा चे: बाग्वचत! तारुं प्रबल्यर्तो तो चेंदु चे ते तारामां शुभमाग पशु न थयो छोड़ोने.
परस्तरीनो ल्याग शेष जे चे. स्वर्गीनो पशु ल्याग (शेष). पशु भोग, अे तो मधुपांपुं
दर्ज चे, दीघ संसारनी पूर्णनु दर्ज चे.
प्रश्न: निर्धार अविवास (‘सम्मचर’) माणा आवे चे ने? ‘शानी होग निर्धारना केतु.
समाधान: आयू! अं होग निर्धारना केतु नाथी. त्यां (सम्मचराए) हृदिनु अंदर जेर
सहत्त चे. ‘शुभ चैतन्यक, आनंदहक प्रभु (चुं)’ अंदी हृदिना ज्ञोंनी प्रशंसा कर्वा माणे
शानीनो होग निर्धारना केतु कहुँ चे. पशु ‘होग’ क्यारे केहने निर्धारना केतु शेष चे? अे
तो पाप चे!
त्यां (‘प्राक्षिपरिप्रेषितिका’ नी) धरी गाथामा प्रबल्यर्तुं वर्णन कर्वुं चे. परस्तरीना
ल्यागनी तो वात (जे) शुं कर्वी? अे तो सजन्तने शेष जे. साधारण सजन्तने पशु अं शेष
चे. अे तो रौलीक्षणांमा ल्याग शेष चे. पशु स्वर्गीनो होग पशु ल्याग ल्याग ल्याग ल्याग, दर्जः चे अे होग पशु पाप चे. त्यां अं ‘प्रबल्यर्तुं’ नूं वर्णन कर्वता कर्वता दर्जः शुं कहुँ चे.
शरीरी विषय देवो अं तो पाप चे जे. पशु शरीरी प्रक्षिप्त क्षणुं हो पशु पुज्य चे. अं
पाप अनें पुज्यी रक्षय, भजगानआतमा आनंदस्वराप प्रभु; अनें भेटे कहुँ आनंदनी साथे
शीन युं, अं प्रबल्यर्त चे. आख... हा! अं प्रबल्यर्त! पशु कहुँ; प्रबल्यर्ती व्याप्त तो हुं
आम कहुँ चुं

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
मेरे निगमकार क्लोक १०८ - १२प (ते) अभी ५ छ, प्रबु! शुद्ध मानसोने अन न रवी तो (मने माक कर्डो). आराध्य रेमा अभी, वीरदारी संत अभी कर्डे छे के: 'आ में अभावनी व्याप्ता करी-बक अर्थात आत्मा, अभी चरवु-आनंदमा रेड़ु, अ अभावनी. आ तमाखा भोग-उपभोग तो मकपाप, दुर्गितनां कद्राष्ट्र छे. तो अभी व्याप्ता साँब्ब्र्जिने, के बंधुओं! के युवाओ! तमने न उदे तो हु मुनि छू मने माक कर्डो. आवा... वा! गजब वात कर्डे छे ने...! मारी पासे (बीजु) शु मक्क बापु! अभे तो बक अर्थात आत्मानंद. अभी रमुं अने अभावनी ककीवोरी छेवी. तो ताहु शरीरती अभावनी पाग्लु, अ वात तो क्यांघ रही गाए, अ तो शुभ छे अने शरीरती भोग लेवो, अ तो मकपाप, (अ पता) हर रही गयु, तो पता जेने अ गमतु युष, विधाना प्रेममा क़साए गया युष ने मारी आ वात तमने कर्डे वेदी न बागे, तो प्रबु! (माक कर्डो).

ते ने...! शुरूः: अवस्थितिगतिर्जनांमेव प्रति मुनुपुराण भगित भया। सुरूतरागसमुद्रगता जनाः कुरत मा क्रष्णमत्र मुनैमिणः।' 'प्रमाणमीन्यतिरिषीतिकः' अवस्थारोटकः, अर्घ्यः, राधा-क आवा... वा! प्रबुनिध आराध्य, मुनि, महासंत (कर्डूोहे छे के:) दे मुनुधु! मोक्षनी प्राणिना अवश्लाषी छे ते मनुश्रो माते म युपतीना संगने, ज्ञान युपती सही-शरीर अेमा बसंगने, निमित्तेद कर्वायणा 'अवस्थारोटकः' नु वर्ण दुः के, परतु हे मनुष्य बोधकुः राग-समुद्रामां दूल्लेवा, ते आ अअंताना अर्थ्यने समव नही शेड, तो तेगे मने मुनि जाह्लीने क्षमा दे. आवा... वा! मुनि छू! मुनि देवा देवाय छे? के: जेने वास्ना (उपी) अधिनियामने छेदी नाम्यो छ अने आनंदनी रमतो मांछे छे, अंतर्ग आनंद साः-प्रत्य साः (देल दे छे, ते मुनि छे). अ मुनि अभे कर्डे छे के: म अवस्थनी व्याप्ता तो ढरी, (पता हे बंधुओ! युपती-ज्ञाना महीनने संगने मने प्रेम युष तो आ वात तमने न उदे (तो), हु तो मुनि छू, क्षमा कर्डो बाहु! आवा... वा!

अभे आ देस्तनो विषय (के) ज्ञाविलक्य भगवान विकरण (के); तेन अशुभराग तो ठी, शूभराग तो ठी अने बेक पता ठी अने समुद्रस्तनो विषय; अने अना आश्रयी समुद्रस्त धारा छे. बीज ठीक तीज (तीत) ठी. समजो ढाँचः? आवा... वा! डक ढूँड, घोरी ढूँड... पता प्रबु! मार्ज आ छे! बीजेठीठी मार्ज ठी, भाई! अभे मो 'व्यभिचारणु शेवन करवु' अ पासी वीरदारीनी ठी! 

अंडीवां करे छे: आभुपी अधिनियामने उम्मिकने भेदनार (के). बे खोल था. संघम अने मात्र बूढ़; अने आरितने मात्र आ (अभे भेदनार) कर्डुः पेशेमा संघम अ मसुद्वय बीजु. पता पडी आ निवधारितनी-प्रतिकालनी अविद्यारां छे ने...! (तो करे छे:-)

"आभुपी अधिनियामने उम्मिकने भेदनार अने शिष्यपी कम्मने विकसावमां सूर्य समान (के)" आवा... वा! निगमती क्षन छे ने...! 'शिष्यपी कम्मने विकसावमां' जेन सवारां मयन विकसति धारा छे तो सूर्य निमित्त छे; तेम शिष्यना शान्ता विकसांमा, (के) भगवान! आप सूर्य समान निमित्त छे. निमित्तो अर्थः अ निमित (बीजमा) कर्ड करदु न ठी. पता निमित (पुढ़ु). "-अेमा वे विराजमान (शोभायामान) मधवसेनसुरी! तमने नमस्ताके हो।" हु निवधारित अविद्यारां वर्णन दुरु छु ते पतेलां (के) गुरु! तमने स्मरण कर्डी, आपने नमस्ताके लु छु. आवा... वा! के मधवसेनसुरी! आप आरिती मूर्ति, आपने नमस्ताके
“इत्यादि कहते है कि व्यावहारिक आर्थिक अनुसूची तथा उसके साथ आय व्यवस्थापन प्रतिपादन करने पर आदर्श रूप से प्रारंभ किया जाएगा।”

अर्थात, व्यावहारिक आर्थिक अनुसूची तथा उसके साथ आय व्यवस्थापन प्रतिपादन करने पर आदर्श रूप से प्रारंभ किया जाएगा।
श्री निम्बानाथ रंडोक १०८ – १२७
पाप प्रतिपक्ष न थयो? (ठर्ते:) अ ते बेय प्रतिपक्ष छे. परमार्थनीय पुल्स-पाप अंक ज वात (टोटना) छे. पुल्स-पाप (बने) अंधनु ज कारण छे. ‘प्रत्येक पाप’ गाथा-७२ मा दबु ने...!
बहु द्वार करतो करता त्यां (उपसंरल करता) कसुङ दे: “ण हि मणणिदि जो एवं गणव विसंसो ति पुण्यपावां। हिंदिदि घोरसारां संसारां मोह संछालो।” –अे शित बंधनु डार्श छे, तबे ते अने पापा तकवत नति अेम छां बेमा हेर माने छे अेटोले के तकवत नति अेम जे नसी मानतो, ते “हिंदिदि घोरसारां संसार” धोर अपार संसारमा परिक्षेमकिएँ करे छे. आँख... झ! आ पुल्स छे, अेनु हज स्वर्ग छे, तो स्वर्गमा राज आवे छे अने हुँभ छे; अने पाप-क्षमामा पछा हुँभ छे; तां जेतु हज हुँभ छे तेमा लेक पाठ्यो दे आ पुल्स डीक छे, अने आ पाप अड़ीक छे-अेम ते मेर क्याँथी वाप्स? अे ‘प्ररम्मतप्रकाश ’ [ (हितीय महाविदा नी) गाथा-पाप ] मा पछा छे. “(जे खब पुल्स अने पाप बनने समान मानती नति ते खब मोही महित थतो खको दौर्गारण सुयि हुँभ सहतो थको संसारमा बने.छे.)”-शुभ कछ विशेष नति। पुल्स अने पाप बेय संसार छे अने इठूँ हज संसार छे। इठूँ न माने तो “हिंदिदि घोरसारां संसारां” अेभी वात छे, प्रबु! मार्ग तो आवो छे! आँख... झ! लोकने वावरमा परनी रोच के, तेही आ सत्य वात बेसती नति!

“परमार्थवनिदा”- ‘मोक्षमार्गप्रकाश’ मा छपांछु छे, तेमा छबु छे के: अने (मूढ खनने) अेम बाले छे दे: आगामी व्यवहार सुगम छे। अेटले लोके आ प्रत्यावावा, भक्ति (आदिनी द्वारावा) दीवरी, अ व्यवहार करे छे, पछ अने अद्वैतनी व्यवहारनी बलन नति। इठूँ बन्धु छे। अद्वैतनी व्यवहार तो वितरणी सम्बंधन-शान-शालिन छे। पछ लोजने आगामी व्यवहार सुमान छे तेही करे छे। तां आवे छे ने...! “इण्ये मूढ अने आयी जर्नु विशेषपूणु-अन्नपूणु सांको: व्यतीता तो मोक्षमार्ग साधी जाणे छे, मूढ मोक्षमार्ग साधी जाणे नति। शा मारे? ते सांको: मूढज आगामपद्यलने व्यवहार करे छे, [अर्थम् ध्वा, धण, प्रति, भक्ति अने तपस्याना भावने अेटले के आगामपद्यलने व्यवहार करे छे] अने अद्वैतपद्यलने निश्चय करे; तेही ते अशां-अंगने अंकांपने असाधीने मोक्षमार्ग दशकः छे, अद्वैत-अंगने (व्यवहारी) पछ जाणे नति। आँख... झ! अद्वैत-अंगने व्यवहारी पछ जाणे नति के ‘व्यवहार शो’?

अे ‘प्रवर्तनसार’ गाथा-७१ मा आसुङ छे त्यां ध्वा, धण, प्रत्यादि व्यवहार, अ मनुष्यव्यवहार छे अने अनुय-हर्ष-थिर्यता (३त्र) वीतरणीक, अ आत्मव्यवहार छे।
अर्थी (‘परमार्थवनिदा मा’) अे छबु ने...! “आगामपद्यल सदेखी (सुगम) छे。” इठूँ अेनु तो अन्तवार कर्यु छे-शरीरी भाषार्य पाण्यु, प्रत देवा, तपस्या करणी, दिशोधी, रसपरित्याग, आदि अेनु तो अन्यत्र पछ अन्तवार करे छे। अ अशानीमूढ अद्वैत-अंगने व्यवहारी पछ जाणे नति अने अशां-अंगने अंकांपने असाधीने मोक्षमार्ग दशकः छे। आँख... झ! “शाधी? कर्यु के आगाम-अंग आदिक्यारूप प्रत्यक्ष प्रभाव छे, [अर्थम् अे मापने हेमस्य पछ छे आ ल्यानी थयो, प्रत पाणी छे, भाषार्य पाणी छे, गृहस्त्याग्रम शोषणो,] तेनु स्वाधू कालियु तेन सुगम छे। ते आदिकार्यो करतो थकी मूढज भोजने मोक्षमार्गो अविभाजी माने छे; (पछ) अंत्तर्जिन्त अद्वैतदृष्ट शिष्या जे अंत्तप्रकाश हरे, ते किया मूढज जाणे नति.” अेटले
हृदय - प्रवचन नवनीत: भाग-२
के: अंतर आत्मानं प्रभु, जानस्वपनी जे अध्यात्मतुं निश्चयद्वयं छें; अेमां जे अज्ञातां, आनंदी दया अने शांतिनी दहाँ, अं जे अध्यात्मो व्यवहार कर छें (तेने ते मृज जातातो नथी.) अध्यात्मो निश्चय तो ब्रो छें. आका... के! बनारसीदासे केटें सरस लट्टु! के! पस्तुलित जे अेंदी छें! दिगंबरां तो मूनिधां अने आधारां तो अविक्षत बढ गया पण्डूळ-पंजित (अाममानी) बढ गया ते पण्डूळ अविक्षत! अने आ बनारसीदासजे तो पडेवा नेतांबर धरा पण्डूळ जया गुलार भाँगने हस-अनुभव थयो तो ‘आ’ लट्टु! आका... के! (अंजानींने) आधम-दिया सेडी लागे छें अने (आधामूप) दियाने ते मृजक जातातो नथी. कारण अंतर्दृष्टिना अभावी (तेने) अंतर्दृष्टिया दृष्टिगोचर थानी नथी. शुडूंनंदी नाथ, ज्योतिष, शुडूंनंदी दृष्ट अने स्थिरता अने तो अंतर्दृष्टिआबाब छें; तेनो आदवती ज्ञान आवतो नथी अने के (आधकिया) तो बळक आत्मां आवे के-आ छोडूळुं, दूरं छोडूळुं, नण थर रया, दूरं छोडूळुं, तपस्या करे छें, अपवास करे छें, रणनां त्याना करे छें अने के सेडें पण्डूळ लागे. पण्डूळ अने ते अंधनु कारण छें. अं अध्यात्मो व्यवहार पण्डूळ नथी. अं अत्यधिकर पण्डूळ नथी. अने ते मनुष्य-व्यवहार करो छें (प्रवचनसार गाथा-२) आवे छें, त्या मनुष्य-व्यवहार करो छें.) त्या लोकिक (व्यवहार) शब्द नथी. (अं बनी दिया) मनुष्य-व्यवहार छें; अं अत्यधिकर नथी! आका... के! समाज छें छाँद? अंतराली जे वस्तु आत्मा, आत्मानृत प्रमुं अने अंतराली गर्भितकिया जे शुडूंनी, अंक्षातानी शुडूंनावाप; अं तो अंजानीं आत्मां आवे नथी तेनी तेनो महिसा न गतो बाँधारी महिसा आवे. (अेंम) धवं धवं लट्टु! के! अं बांधणा वर्ष गया गया छें.

जुणो! अंजानिं शुं करे छें: व्यवहारसन्यान तारित अने तेनुं कर तेनाथी प्रतिपक्ष अंतेले विदुह “अेंमुं जे शुडूंनोप्रत्ययताक परम तारित”-दीतराजी रमणता-“तेनु प्रतिपादन करनारो परम्पर-प्रतिकेत्ता अधिकार कर्देवां कर्देवां आवे छें.”

आका... के! जुणो तो केटें छें धुर्भुऽ अंतर! अं पडेवा तो श्लोक-पमां करी गया छें ने! "शुडूंना घरनार गजजरेरी रयातेला अने शुडूंनों रणपारी सारी रीते व्यक्त करिआला आ परमाणुमाना अर्थसमूहतुं दळन करवावा अं मंदबुद्धिते कोइ? आका... के! शुं करे छें? के: आ तेकड़ा में केरी अंब्ठी मानसी नथी. अं वात तो शुडूंना घरनार गजजरेरी रचित अने शुडूंनो-अधिकार-भार अंगना घरनारांगों रणपारी सारी आवी छें. आ तेकड़ा वाप, हेंग गजजरे अने शुडूंनों रणपारी आवी छें. आपु! अं बाप अमसे अंतराली आवी छें अं भवनो अर्थ गजजरे अने शुडूंनों रणपारी मुखी मन्यो छें तो अं (तेकड़ा) अंडी रथे छें. पण्डूळ आ परमाणुमाना अर्थसमूहतुं दळन करवावा अं मंदबुद्धिते साधारण प्राकी ते कोइ? आका... के! मुख प्रमाणविवधादिव सम्रू भुवीत छें. (तो पण्डूळ) अंब्ठी के करे छें के "अं मंदबुद्धिते ते कोइ?" आका... के! (अविक्षत सर्जनता अं विनम्रतां तु म्यु अवझे छें!! ते पछी श्लोक-पमां अंब्ठी आंयुं नें...! "तथापि हमारीं अभारीं, मन परमाणुमाना सारीं पुढ़ तूनिधि करीं नेंती अन्यतें प्रेरित थाय छें, [अं दृष्टिही दृष्टि प्रेरित थायवे दिवी "तत्तपयूआ" नावनी आ तेकड़ा रथे छें."] परमाणुमाना सारी ‘नियमसार’ छें नें...! अंतरा तेकड़ा थाय खे, अंब्ठी पवित्र आवा करे छें. परमाणुमाना सारीं पुढ़ सध्य अमने अंघर छें. अनेकाथी हरी हरी
श्री नियमसार ५०८ – ५२८

प्रेषण अन्दर धाय छे: आ ठीक बने... ठीक बने... ठीक बने... ठीक बने! आख.... छा! अे सुविधी प्रेरित बहने आ ‘तास्पर्याृता’ नामनी ठीक स्वाय छे. आख.... छा! जुहो! अंक बाजु अंक कडे छे: अमासा मुलभाषी परमाणु जडे छे. जे कंच (शब्द) नीको छे ते परमाणु छे. अे ठकसे आये छे ठीकमान.... छा!

अर्थात अंक कडे छे: परमाणृ-प्रतिकर्मा अविकार केहामान आये छे. “त्यां शुभात्मानं पञ्चरतनयु स्वप्न केहामान आये छे.” जुहो! (पृ. १३९) पांच गाथा (३० थे ३१) मा पांच रत्न! अंक ‘प्रवर्णसार’ शरणालयसूत्रमूलक हृदयकानी चंदी गाथा-२७१ थे २७७-पाण्य गाथाने पञ्चरतन कड़ी छे: गाथा-२७१मा ‘संसारतत्त्व’. २७२मा ‘मोक्षतत्त्व’. २७३मा ‘साधनतत्त्व’. २७४मा ‘साधनतत्त्व’ ने (अथात शुल्कायुक्त) प्रकाशित छे. अथ २७५मा शांततत्त्व (दर्शनि छे). त्यां अमृतावती आयार्थ लक्ष्य छे: आ पांच गाथावी पाण्य रत्नो जडी छे. अर्थात प्राध्येन्द्रलघुसिद्ध कडे छे: कुंडकुंआयार्थी आ पांच गाथा रत्न जडी छे.

पुढील अंक वाट दे: निद्रा-निम्त्रण रजात्रू अने छे तो पर्याव. अने पाण्य रत्न कडु. सम्प्रदाय अंत्ते शुद्धिक्षित प्रज्ञा प्राप्तीती; अन्यो अनुपब्रव अने ज्ञान; अने अर्थतत्त्व-अने पर्याव छे. अने प्रक्रियारत्न कडु. तेन्तु कुं मेघगणान; अनेक तो भी वाट करवी? जपार्थ आ (सम्प्रदाय, ज्ञान, आर्थिक) ने रजात्रू कडु तो आ कीर्ति कुं मेघगणान, अने तो महारत (छ). वागे, अं पूर्ण कुं (पूर्ण) महारत जपी अनंत पश्चिमोनो धर्तारो अंक गुण ज्ञान, अंक गुण दर्शन, अंक (गुण) आर्थिक (अंक आंगवा अनंता पश्चिमोनो धर्तार) अं महारत भगवान (आत्मा) ने तो शु मेघगणान? अंक कडे छे. आक.... छा.... छा! (जयां) अं प्रक्रिया (रत्नात) छे, त्यां व्यवहाररत्नतयि वाट अने तो आरोपित वाट छे. अं (वाट) यथार्थता नथी. अर्थी तो प्रथार्थ-निद्राय (रत्नात) -निद्रायलख अनुसार, निद्रायलख (रज तिनातु) आत्मातु ज्ञान, सम्प्रदाय, अने आसामी स्वपूर्ण-स्थितात-अने रत्न कडु. रत्नात्रू कडु. अने अंत्त कुं (मेघगणान) तेने महारत कडु; -अंगा आत्मारू के शातिं महारत-भगवान आत्माओ विद्यमान छे, अने तो महारत ढीले छे, अने तो रत्नायो मोठो ढीले छे! जपी अंपूर्ण पश्चिम- मोक्षमोरणी रत्नात्रू (पर्याव) रत्न कडु. अर्थी अं रत्नने बतावथानी गाथा छे. ते आ प्रभापे:-

(… शेषांश पृ. १३५ उपर)

“श्रीधरामां शैतंयनी दृष्टि ने अंकाप्रतापिन परिवर्तन छे. श्रीधरामां शैतंयना स्वसंवेदनानु परिवर्तन छे. शैतंयनामां शैतंयनी विवेष स्वसंवेदनापरिवर्तन छे. अने दृष्टि अंतर्भा शैतंयना आश्रये ज श्रीधर-शान- आर्थिक छे. ने ते ज मुक्तितिनु दर्शन छे.”

-श्री ‘परमाणुसार’ / दृष्टि.

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
“निश्चयःकस्थि द्वै जय परमात्मस्वरूप
ज छे. जिनवर ने जयमां केर नधी. बर्ते ते
अद्वैतसनसी जय केश के स्वर्णानो जय केश. अने
बधुं तो पर्यायमां छे. वस्तु स्वव्ये तो परमात्मा
ज छे. पर्यथा उपर्थी जेनी हिंदि बसीने स्वरूप
वर दिष्ट थाँ छे अने तो पोताने पश्चा
परमात्मस्वरूप देने छे ने हरेक जयने पश्चा
परमात्मस्वरूप देने छे. सम्वधान जवा जयवने
जिनवर जगे छे अने जिनवरने जय जगे छे.
अब! इत्यादि विशाल हिंदि! अरे, भी वात अने
तो कह्याँ थां जय, पश्चा आदि कह्याँताने
रेवनारा मान्यतानारी गदनां पार न मा! अरे
तो कहे छे के रूर अंगनों सार अने छे के
‘जिनवर समान आताने हिंदानो लेवो,’ तम के
आतानु स्वरूप परमात्मस्वरूप ज छे.”
—श्री ‘परमात्मस्वरूप’ / २४
श्रीमद्भगवतं कुंडलिकायाधिकृतप्रक्रियात

श्री नियमसारः गाथा ७७ थे ८१
श्री प्रभुदयात्मकशास्त्रविकल्प संस्कृत टिका
(परमार्थ-प्रतिकृमण अधिकार)
अथ पंचरत्नावतारः।

णाहं णारयभावो तिरित्यथो मणुवदेवपञ्चामो।
कर्ता ण हि कारइदा अणुमंता गेव कर्तीण। ७७।।
णाहं मगगणठाणो णाहं गुणठाण जीवठाणो ण।
कर्ता ण हि कारइदा अणुमंता गेव कर्तीण। ७८।।
णाहं बालो वुड़ो ण चेव तरुणो ण कारण तेसिं।
कर्ता ण हि कारइदा अणुमंता गेव कर्तीण। ७९।।
णाहं रागो दोसो ण चेव मोहो ण कारण तेसिं।
कर्ता ण हि कारइदा अणुमंता गेव कर्तीण। ८०।।
णाहं कोहो माणो ण चेव माया ण होमि लोहो हं।
कर्ता ण हि कारइदा अणुमंता गेव कर्तीण। ८१।।

नाहं नारकभावस्तिर्य ज्ञानानुष्ठेदपर्यायः।
कर्ता ण न हि कारायतिता अनुमंता नैव कर्तृणाम। ७७।।
नाहं मार्गणास्तानानि नाहं गुणस्थानानि जीवस्थानानि न।
कर्ता ण न हि कारायतिता अनुमंता नैव कर्तृणाम। ७८।।
नाहं बालो युद्धो न चेव तरुणो न कारण तेषाम।
कर्ता ण न हि कारायतिता अनुमंता नैव कर्तृणाम। ७९।।
नाहं रागो द्वेषो न चेव मोहो न कारण तेषाम।
कर्ता ण न हि कारायतिता अनुमंता नैव कर्तृणाम। ८०।।
नाहं क्रोधो मानो न चेव माया न भवामि लोभोऽहं।
कर्ता ण न हि कारायतिता अनुमंता नैव कर्तृणाम। ८१।।
अत्र शुद्धात्मन: सकलकर्जुरूपावर्ण दर्शयति।
बहरांपंश्चपरिवर्गाख्यावादह तावनारकपर्यायो न भवामि। संसारिणो जीवस्य
बहरांपंश्चपरिवर्गहलं व्याहारतो भवति अत एव तथ्य नारायणकेशुभूतानिनिकलोहराग्रेशा
विद्यते, न च मम शुद्धियनिश्यन्तो शुद्धियावस्थिताकायस्। तिर्पपपा यानाध्यामाहिष्णु-
शुष्ककर्मभावात् तस्य तिर्पपपा य कर्जुरविविधोधम। मनुष्याकर्मकर्माणाश्च यमेष्
विधात्र भावान मे मनुष्यपर्यायः शुद्धिनिश्यन्तो समस्तीति। निर्ध्येन देवनामध्यैहार्देवपर्यायः
योग्यसुरसुरसुगंधस्वाभावाः कुपलद्रव्यसम्वन्धाभावाः मे देवपर्यायः: इति।
चतुर्दशेशुभदेरिनानाति मार्गास्थानाः तथाविधेयः विभिन्नानं जीवस्थानानि
गुणस्थानानि वा शुद्धिनिश्यन्तय: परमाभावस्वरूपाः न विद्यते।
मनुष्यतिर्पपपा कायवयः कृतविकारसमुपजनितायौनस्विरवृद्धाः स्वाहाकाथानां कर्जूलकृतविविधभेदः: शुद्धिनिश्यन्तायमित्रेण न मे संति।
सत्तावनोपमशैवन्तुखुनुमुतिरतविशिष्टाल्पत्थवृहाहकुशद्रव्यादिकनायबले
न मे सकलमोहराग्नेषा न विद्यते।
सहजनिश्यन्तय: सदा निरारायणात्मकस्य शुद्धावोधरूपस्य सहजविश्वकर्म- 
मयस्य सहजज्ञानस्फूर्तिचित्रावृत्तानां स्वरूपाविशस्तितितितितिरूपसहजयथायात्मचारिमत्रस्य न 
मे निचलसूरसूरतिशेषशेषेत्व: क्रोधमानवायालोभा: स्युः।
अथाभिमाः विधिविकल्पाकलाणाः विभावपर्यायाणाः निरघ्यतो तां कर्ता, न 
कारविता वा भवामि, न चानुमंता वा कर्तृष्ण पुद्रकर्मणामित।
नाह नारायणपयां कुर्य, सहजविद्विलासात्मकमात्रायां संचित्यते। नाह तिर्पपपा य कुर्य, 
सहजविद्विलासात्मकमात्रायां संचित्यते। नाह मनुष्यपयाः कुर्य, 
सहजविद्विलासात्मकमात्रायां संचित्यते। नाह देवपर्यायः कुर्य, सहजविद्विलासात्म- 
मात्रायां संचित्यते।
नाह चतुर्दशार्ग्रामास्थानेभ्य ख पर्यायः सहजविद्विलासात्मकमात्रायां संचित्यते।

शुज्ञती अनुवाद
क्यों पांचार रत्नों प्रत्येक दिन करना आये है ज़ि?

नारक नक्रिय, परि-नामप्रेपा वक्र न नक्रिय; 
क्षत्रि न, कारविता न, अनुश्यता जु कर्तना न नक्रिय. ७७. 
कु माङ्गोऽकारणो नक्रिय, गुणान्वय-ज्ञातरणो नक्रिय; 
क्षत्रि न, कारविता न, अनुश्यता जु कर्तना न नक्रिय. ७५.


Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
उम्मीद - प्रथम नव-नित: भाग-२
आझ... श्र! अन्यंत्र, कहाँ कहाँ नहीं तया। आझ... श्र! वीर= 'दी' अर्थात् किशोरे 'दी' अर्थात् प्रेमशा, अलेक जैसी झाड़ुप तरक चीर्नी निजिक निषेध प्रेमशा चौ, अलेक वीरने (आ) भारत तक हजुरम हुआ। भाषा! समझाओ क्षण? अलेके अर्थ 'नियमसार' पड़ेली गाथानी टीकामां आये है। तया 'वीर' तो अर्थ आयो है: "अनेक जन्मापुर अतवीने प्रास करवावाना हृदयमूत समस्त मोदारेमोदने खड़े खड़े ते 'जिन' है। ते 'वीर' है। 'वीर' अलेके विषय 'िरामाः (-िरामाः).
[आझ... श्र! वीरता ग्रहण करे, शोष ग्रहण करे, वड़ा श्रमहीन दीर्षी व्याम्या करी है]; वीरता केले; शोष उधी, विकम (िरामाः) केले, तमसुदुभाण पर विश्व भेजे, ते 'वीर' है। पड़ेली गाथानी शुभाति करी है: "जनमित्यं जिन वीरे" अनेक अर्थ 'आ' क्षण है।
आझ... श्र! श्रीमान्मा (िराम खड़ेला) आये छ ने...! "वचनामृत वीरतागानं परम शांतसम्भूवः अधुष जे व्यवरोगानं, कायरने प्रतिकुलः।" ते गुगुवंता दे शानी अमृत पवस्या दे प्रलु वंभंधकरमां... ते गुगुवंता दे शानी अमृत पवस्यां दे प्रलु वंभंधकरमां। आझ... श्र! अंदर अमृतने सागर व्यवर शीघ्रणो! आझ... श्र! एक त्या अंदर मूं अने ज्ञान पर्याप्त वीरता ग्रहण थँठी; कहे कहे के अने कायरने-नृपसुकने प्रतिकुलः है।
‘वीर्यकितत’ नी व्याम्या ‘समयसार’ ५७ शिक्तमां अवी करी है के: ["श्वातन (िरामाः-िरामाः) रतनानं सामर्थं धूप वीर्यकितत।"] (अलेके के) श्वातन स्नान करे ते वीरः। राजनी स्नान करे ते वीरः नहीं। आझ... श्र! 'श्वातन स्नान करे ते वीरः'। पौतानी परिषिद्धांशु शुभ आनंद अने शानी स्नान करे ते वीरः। राजनी स्नान करे ते नृपसुक। (अे वातः) श्रैले आयी गए है ('समयसार' ज्ञ-िििज अविदाय गाधा-उत्तनी टीकामां तेज धुर-पप्प अविदाय गाधा-िरंज-िरभनी टीकामां् च) "कलीब" - 'िरपसुकः। आझ... श्र! श्रुतं-िशुमानी स्नान करे ते नृपसुकः है्, 'कलीब' है।
आझ... श्र! आ तो अनो सारं छ, भापा! प्रलु कहे कहे के अमे (िो) वीरः नीं वीरः अने कहीं कैः: जे काननगुणी निर्मि-शुभ परिषिद्धांशु र्यः। राजने र्यः ते वीरः नहीं, व्याप्त वीरः नहीं। समझाओ क्षण? जेम नृपसुकने वीरः धूरतु नहीं तो (अनेके) धुर-पप्प धूरतु नहीं; तेम शुभानण है ते नृपसुकपण है अनेका धर्मनी प्रजा उपचार वती नहीं। आझ... श्र! आयी वातः है।
ढैः, अनेकां कहे कहे: "संसारज्ञाओ नन्हु आरंि समस्त व्यवस्थी क्षय है।" - व्यवस्थीं क्षय है ने...! (अलेके के) पर्याप्त श्री मा द्रुत है ने...! आझ... श्र! संसारज्ञाओ नन्हु आरंि-िििडंडं-िििडं, तूं, चीरी, ििगं, ममता-व्यवस्थीं क्षय है। "अने तेही जः तेने नारक-आयुणा देतुिुि समस्त मोहिकाहरू हृदय है, परंतु मने-शुद्धिविद्या बने शुद्धवास्तिकायने-तेजों नही।" आझ... श्र! (वाप्रृकर्मोऽ) द्रम्यां तो नवी पा अती तो शुद्धिविद्या बने मने प्रायमां पा नहीं, अने कहे कहे। शुद्धिविद्या बनायी, शुद्धवास्तिकायनी (िरकर) फल अने सिद्धाता छह, तो माहा व्यवस्थाकाम माने महामायंि अने परिवर्तन नहीं। तेथे बाहरी परिवर्तन माने महामायंि अने परिवर्तन नहीं। समझाओ क्षण? आयी माहा है! 'द्रम्यां नवी' अे कहे परिवर्तने निर्णय अही? "(िुिह) शुद्धवास्तिकायने" -अही अनंतयुक्ती कैले है ने...! अे वातः पा सर्विच्छि सिलाम (िेकः) द्रुत है। तेथे अलेके ज्ञाप न बरके, 'व्यवस्थिाय क्षय' धूरतू है। आझ... श्र! "शुद्धिविद्या बने शुद्धवास्तिकायने तेजों (समस्त
श्री नियमसार गाथा ७७-८१ - १३७

राजेशमोह) नथी。“ ‘तेमो नथी’ अे कड पशिलत हजे छे। -अे मक्काआरम-परिचयकी रहित के पशिलत छे ते अम जडे छे के: आ वस्तुमां मक्काआरम-परिचयका पशिलत छे ज नथी। आ जे पशिलम छे ते वर्तमानमां छे, ते पड ज्ञात्सिडऩा तो छे ज नथी। अत्यारे तो आ पशिलामने सिद्ध करवा छे। आला... छ। शुद्धवालिकाय, अे तो घुर्ण निडान छे। अमां, कडे छे: मक्काआरम अने परिचय नथी। तो ‘अमां नथी’ अे कड पशिलत कडे छे। -अे जे मक्काआरम-परिचयका रहित पशिलत छे, ते अम कडे छे के: ‘आमा नथी।’ मामामा पशिलत छे ते मक्काआरम-परिचयका रहित छे। आला... छ। समलय छे कांट? बाह! भगवानां श्रावणों अंती गंगी रचता! बढ़ु गंगी, बापु!

भारा ज्ञात्सिडऩां (तो) नथी; हु मूंली छु, अंटो ज र (संज्ञावतनो राजां) छे; पड मारी पशिलतां ते मक्काआरम अने परिचयकी रहित छे। मं ज्ञात्सिडऩां जे आश्रय लीली छे ते उद्द आश्रय लीली छे। जे आश्रय सम्पर्कहतां छे अनाबी वारिंगां आश्रय उद्द छे। अे अर्धी भतावे। मक्काआरम अने परिचय अे ज्ञां तो नथी... पड मारी पशिलतां पड मक्काआरम अने परिचय नथी। अे पशिलत वडे हु कडु छ्ये के: भारा ज्ञात्सिडऩां अे नथी! आला... छ। अे आपों पडेला श्वाल-उभयां आवी गयु नेन...! “ज्ञातं है” अे वात द्वयनी छे। (पड जेन अनुं) वान ब्युं ते कडे छे-आ प्रबुद ज्ञातं वर्त छे। अे डोळा कडे? -जावे छे? अे: निर्मापपशिलत वर्त अे कडे छे-आ वस्तु ज्ञातं वर्त छे। अमां आ वस्तूब्युं वान अने वस्तूब्युं वान ब्युं गयु छे। अे (वान अने वान) वानी पशिलत कडे छे ते: आ वस्तु ज्ञातं वर्त छे। आला... छ। वैवी तो जुयो, बापु! आकुं जाम, लाकु! त्या आर बोल आत्मा बदत नेन...! ‘वान ज्ञातं है,’ ‘दृष्ट निर्देश-निर्देशी दर्शन ज्ञातं है,’ सम्पर्कहन तो पथष्टा छे। पड अंदर जे श्रद्धा-हृदि छे ते त्रिक्षा छे; अनेक प्रतीत पर्यायां आवी तो अनाबी आम कडे छे के: “आ दृष्ट सदा ज्ञातं है।” (अने ‘आरत्र ज्ञातं है, ‘छेतना ज्ञातं है।) जावे आवी बुतु नेन...! (श्रावण:) श्रावणी नीड़वे छे आ बहु। (उत्तर:) सीमावर भगवान बोलवे छे। आ रे प्रबुद! शुं कडीणे? आला... छ।

आला... छ। “संसारी ज्योने”-वापि तो उजो! कडे छे के: “अमे संसारी नथी।” आला... छ। संसारी ज्योने “बहु आरम-परिचय (व्यवहारी) बोय छे। अने तेघी ज तेहे (तेघा ज्ञांमां) नारक-आयु (वंडाय छे)। (पड) अमे संसारी नथी। अमे तो शुद्धवालिकानी रंडता करवावाणी हीणे।

त्या (‘प्रवेशसार’ मां) पव्य रतनामां (गाथा: रुत्त थि रुत्तमां) कहु नेन...! पडेला बोलां “संसारत्व” कहु ने... के: वर्ते जेनीृ साहु ब्रह्म बोय छता जे सामानी अंकतां (अंटो के) राजाकाल वान भवावाणी ही तो ते संसारत्व छे, ब्रह्म बोलां मोक्षमार माध्येते ते ने “मोक्षत्व” कहु। (अर्थतः) कहे भवावाने आत्मानो आदर्श बदते अनुतम थये, स्थार छह अे तत्त्व छे ते मोक्षुन कारण छे। (तेघी) अमे अे तत्त्वे मोक्षत्व कडीणे हीणे।

विशेष आपूर्ति।

* * *

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
नियमसार’, परमार्थ-प्रतिक्रिया (अविकार). पढ़ेलो बोल आयो छे. भीले बोल.
परमार्थ-प्रतिक्रियामा पढेलो हरि तो चढ़ छे: मारा ज्ञानित्वायमा अन भील श्रीज नरी.
अन्यथा तो दूरे अस्तित्वातो अभाव करीने स्थिरता चढ़, तेमा पण, ओ भाव नरी, ओम कठे छे.
-शुं कहन? पढेलो समयविशेषमा ज्ञ, शुद्धज्ञानित्वायमा कोठ रागाहि देके बेहदिछे ज नरी.
अन्यथानि विषय तो (प्रधानमा) आधि गयो. ते तो मिठायतुङ प्रतिक्रिया थयु बने अंदरे ते
उपरांत वात छे. मुनि छे परमार्थ-प्रतिक्रियानी व्याप्ता छे. तेही पढेलो ओ लिलुं के: मारी
श्रीज जे शुद्धज्ञानित्वाय छे तेमा तो कोठ बेह-रागाहि छे ज नरी. ओे तो पढेली वात. कठे
अंदरे तो विशेष विशेष स्थिरता करे छे. ‘क्यो ज्ञानित्वाय, वैदेश-मूर्ति, अभेद छूँ’; ‘तेमा-भारी
वीजमा अं बेहदिछे नरी.’ अेंयु (व्याप्तुङ, ते) परमार्थ-प्रतिक्रिया छे. (सुलिने) अंथेक
परिष्कर्तन विशेष थयुं छे. आँख... छे!
अंदे नाथजीनि वात थयु गढ़े, कले शुं बउँ ने...! अंदे ‘ज्ञानित्वाय’ (अेम)
नरी; पण साथे परिष्कर्तन छे. तो अं परिष्कर्तन क्याथी आयो ओ चुँड कठे छे: हुँ अं परिष्कर्त
(अपूर्ण आरंभिक-परिष्कर्त) नो करता नरी. अथतु बुझ आरंभ अने बुझ परिष्कर्तना परिष्कर्त, अं
मारा क्तृत्त्वमा छे ज नरी तेमा तो कुँ नाथजीपूण नरी. कठे अंदे भील वात:-
‘तिर्थयाहिणागे योग मायामिश्रित अनुमित कर्मो अक्षय हेवाने तीव्रे हुँ सक्ता
तिर्थयाहिणा कर्तृत्वविक्रिया छूँ.’
आँख... छे! तिर्थयाहिणा जे थाय छे (तेनु अरहण) अंधम भित्र भित्र अक्षय मिठायतविक्रिया आक्रार (अक्ता)-भाया चतुरी खोय छे (ते छे). तेही तेनु शरीर (पण) आँकु थय जय छे. सम्ब्रह्म छे
शंका? मुनि (शरीर) आम गेम दिलुं खोय छे. भाद्र तिर्थयाहिणा कालायु, गाय, भेस, भोज-एन (शरीर) आम टिक-आँकु छे. देखे पूरा (भावे) आक्रार वाली करी कती, ओम ‘गोम्भटास’
मा छे. तिर्थयाहिणा ने...! [तिर्थयाहिणा-इूकु आक्रार (आंसु)े] (भावे) ओषी आक्रार-इपट-भाया वाली करी
तो तेता क्रममा परिष्कर्तन तो आँकु छे पण (इते) शरीर पण आँकु थय गयुँ.
अंदे कठे छे दे: अं (आक्रारन) परिष्कर्तन मारमा छे ज नरी. (शोटा: ज्ञाना
परिष्कर्तना क्तृत्त्व शरीर आँकु थय ? (उत्तर: निमित्तशी क्वथन ने...! जेवो भाव खोय तेयु
ज कर्म बंधन, अने अेंबु ज शरीर मणे. अेंयु निमित्त-नैमितिक संबंध छे ने? अं निमित्त-
नैमितिक संबंधी व्याप्ता छे. परमार्थ तक्तन आ (ज्ञ) पर्यायी आ (कर्म) पर्याय छे, अेंम
तो नरी. पण मायामिश्रित परिष्कर्तन काली खोय तो अेंमा कर्मबंधन पण अेंबु थयु खोय अने
तेता क्रममा शरीर पण अेंबु थय ते. अेंयु निमित्त-नैमितिक संबंध बतावे छे.
अं तेता ‘संपर अविकार’ (“सम्पर साग” गाथा-१६० वी १८२वी) छेें जाग करी छे. ल्या
निमित्त-नैमितिक संबंधी अपेक्षा समझावमा आधि ने...! “आखावालाब विना कर्मो
पण निरोिध थाय चे, वर्गी कर्मना अभावथी नैज्ञानिक पण निरोिध थाय चे, अने नोकर्मा
निरोिधी संसारना निरोिध थाय चे.”
अंदीमा कठे छे: मुनिराज ने...! ओमे तो परमार्थ-प्रतिक्रियाक्रम परिष्कर्तन थय
श्री निम्नलिखित गाथा ७७-८७ - १३८
गयूं छ। तो देखि छ: “नियापर्यन योजण मायामिश्रित अशुम दमन अभा बोलाने बीचे हुई सदा नियापर्यनन्ता कर्तुरविचिन हु।” दस्तु तो सत्य नियापर्यन अने योजना दार्शनी रहित ज छ। पत्नी अगे उपरांग ने परिसमान निर्तुरविचिन हु। (अर्थात्) माराम अने परिसमान परिसमान ज नथी। आता... ब! शुरू कढ़िया? शुद्धवासिकाय अने अभेद शीर्ष। ज्ञाने अने अभेद (दस्तु) हस्तिया आयुं त्यात में विस्तार परायम्यान हो छ ज नथी। अर्थात् तो देखि विशेष करे है: नियार्धितीत्ये योजने अने हे राजाहित परिसमान छ ते पत्नी माराम नथी। समाजु कहं? परार्थ-प्रतिकाल है नै...! ‘प्रतिकाल’ -पारण हवुं-हड़वुं। तो मन्त्रात्वी तो कही गया है। (मृत्यु ने...!) अने शुद्धवासिकाय-अभेद शीर्षीया मो हाद, अशुभार दे शुभार ज नथी। अने अभेद (शीर्ष) तो हस्तिया आयी गयी। परंतु बड़े जे अस्थिरतात्व परिसमान छ तेना प्रतिकालनी वात आये है। नमत्र छ हां?

‘प्रवचनार’ देवतात्व-प्रकाशनी छेखी गाथा उपरात दुक्ष-१३८ मणि आयुं है नै...!
“द्रव्यानुसारी चरण चरणानुसारी चरण।” अनेक व्याया पत्नी बुझू। देखि छ है: द्रव्य-दस्तु तो छ ज। अनेक आश्रय चलने हेटवी शुद्धपरिशिष्ट ऊपर चक तो तेना प्रमाणाम धारण नथी जंता थाय है, अने द्रव्य अनदे ‘द्रव्यानुसारी चरण’ (छ)। अम ‘चरणानुसारी चरण’ -हेटवी धारण नथी शुद्ध परिशिष्टम छ। नज़ा धारणी (शोड़ी) न अभावनी शुद्धपरिशिष्ट चल हो ‘द्रव्यानुसारी चरण,’ अने शुद्धपरिशिष्टतान प्रमाणाम धारण नथी जंता थाय है त्या सशस्त्र लेखानो अने द्विद्विन्द्र आश्रय आदि लेखान परिशिष्ट नथी होते अनदे त्या ‘द्रव्यानुसारी चरण,’ अम लीघु (छ)। “द्रव्यानुसारी चरण” अनो अर्थ “चरण” अर्थात् राजनी मंदता, अनेक अर्थ अनदो लेखव; अने द्रव्यानुसारी शीर्ष है। अनेक अर्थ हे द्रृष्य है तेने अनुसरनने हे निर्मणपरिशिष्ट शुद्ध छ है ते, जे ते भूमिका प्रभावे हेटवी निर्माण है, तेलवा प्रमाणाम राजनी मंदता [केम के मुलने नज़ा धारण (शोड़ी) न अभावनी परिशिष्ट है तो त्या राजनी मंदता], अनेक योजना प्रभावे थाय है। त्या वघाल लेखानो अने द्विद्विन्द्र (–अभावना माटे भावेलो) आश्रय लेखानु बस्तर अलूट नथी। अनेक वशस्त्र त्या द्रव्यानुसारी चरणाम बोतू नथी, जे “चरणानुसारी चरण” अने बीघु पह। अनो अर्थ: अन्तरेश प्रभावाम धारण नथी है, अनेक धृत मंदकार छ हो तो अर्थी शुद्धपरिशिष्ट विशेष छ... अटूं। अने अने शान धारणा नामे वात झरी है। अनेक त्या अने परिशिष्टद्रव्यानुसारी रेटुं। त्या द्रृष्य अनदे ‘द्रव्य–अनुसारी’ अम नथी। द्रव्यानुसारी परिशिष्ट हे छ त्या रेटुं प्रभावाम द्रव्यो आश्रय लडाने निर्मणपरिशिष्टीत धारा आवे हे अटूं प्रभावाम शुद्धही प्रभाव, भूमिका प्रभाव, राजनी मंदता थाय है। ज्ञा नज्ञाथ (शोड़ी) न अभावनी परिशिष्ट के बजार अने पात आदि लेखानो राज होस्तो तो तेना द्रव्यानुसारी बरसा ज नथी। अने “चरणानुसारी चरण” के त्या राजनी मंदता अटूं हे छ त्या पश्च दे पात के (द्विद्विन्द्र) आश्रय लेखानो विक्षय ज नथी। तो अनेक भूमिकाम जे राजनी मंदकारो विक्षय छ, ते अनुसरण व्यायाम करहो डे। आ राज आदिरो मंद हे तो अर्थी शुद्धपरिशिष्ट विशेष छ, रेटुं अटूं राजनी मंदताना प्रभावाम अर्थात् परिशिष्ट शुद्ध थाय है, अनेक राजनी मंदकारी परिशिष्ट शुद्ध थाय है, अनेक त्या मुलने शीर्ष है। पाँचमे गुणस्थाने अने धारण (शोड़ी) न।
abic - प्रवचन नवनीत: भाग-2

भावावरी परिषिद्ध है तो तथा परिवर्तनमां अंतर्क राजनी तीव्रता है, अने छह गुणस्थाने जन्म (कोड) कषायना भावावरी, द्वारानिवारी, परिषिद्ध हैं तथी तथा अं प्रमाणमां राजनी मंदता क्षेत्र है (पल) अं भूमिज्ञा वर्तम लेवाना, पात्र लेवाना, अभि अंत भवावलो आलाल खेज ते लेवानो विक्षेप 2 लेतो नरी. अन्य वर्तम द्वारानिवारी वर्तम क्षेत्रां आवे छे. आहा... न! अंत हाेरे तो बीचु कडेवुं कुत्र अंतिया तो कुत्रे हे के: ‘अं राजनु परिवर्तन पल मारावा नरी, अने आलाल क्रेशे के: कु अंतिया क्षेत्र पल नरी!’

अंत (‘प्रवचनसार’ मां) तो पठवा शान आलाल आल्या अने पली शेष अविदार चलो अने अं आलाल पूरी कडेवा शरणात्योगसूक्त शुल्क वेयी है नें... आलालस्थरजात्योग अने बंध बतायिके: ज्ञाना आत्रिये जनी जेटली प्रमाणमां शुद्धमलितस्थि भूमिका छे तेल्ला प्रमाणमां राजनु वर्तम, अर्थात राजनी मंदताना परिषिद्ध, तेनो आलाल थाय है अने जेटली शरणात्योग प्रमाणी राजनी मंदता है तेनु वल्क कर्तवुं के बशो मंद विक्षेप है तो अंत तेल्ला प्रमाणमां शुद्धी परिषिद्ध विशेष है, (पल त्या जेटली राजनी मंदता, शरणात्योग प्रमाणी, छे तेल्ला त्या बंध है). अंत अं भूमिज्ञा नोजता बताये हे, आहा... न! गजन विशिष्य, भव्यावन! आ तो सर्व य्रेमेठरनो विशिष्य है.

‘नियमसार’ मां अंतिया श्लोक है त्या समजाश पोते पक्षप्रमुखवालस्थित अंत क्षेत्र है: अंदे! अमारी पिवळ है भगवान पूजाण छें! अंहे अनुमोद ते अमारी पिवळ है. तो अं पिवळ प्रमाणे अंने न कदंगे तो मूनी डेवा? जुनी: क्राणार-200 “केढ़ अंतिया (अवर्णनीय, परम) समाप्ति प्रो उल्लुष्माना हामला म्याटि, [परिषिद्ध हैं] समतानी अनुपारभी रजस्वल आत्मसंपन्नो ज्ञात रुदी असे अनुमोद्वता नरी, त्या हृदय अमारा शेवानो ने विशिष्य है तेने असे अनुमोद्वता नरी.” अंत सर्वविकुलीहार आलाल ‘समयसार’ क्राणार-200मां (तो) सर्व संबंधी नासिक, सर्व संबंध नरी तेय दीपुं छे. ज्यारे अंत नियमसारमां आहा... न! सर्व आत्मसंपदा मुनिगोनो पिवळ है, (अंत धौरु) आहा... न! प्रामु! मूनी अंतेने धन्य अवतार! आहा... न! जेनी नारिक्काला!! आहा... न! न! (कुंडे छे के:) अमारी संपदा पूजाण तो है ज. पल अपूरू पिवळ तनाने असे अमारी संपदाने (पूजा) प्रागत कदंगे नरी तो असे अमारा (विषयने) पिवळ आर्य ज नरी. आहा... न! समय है रहूं छे? पाठां हैछे... “न माद्वस या विषया विद्वाना” “अमारा शेवानो ने विषय है तेने असे अनुमोद्वता नरी.” आहा... न! मुनिगोने विशिष्य तो अमेक शीर्ष! अंते अमेक परिषिद्ध! विक्षेप... विक्षेप-अंतिया तो शान करे हे. आहा... न! सरस (भाव) नीरिको. अंतर बंध होती!

अंदैया तो अं बेंबु छे के: अने (मुनिगोने) महामारम अने महाप्रारकनु परिषिद्ध ज नरी. आम तो वस्तुमां तो अं महामारम अने परिषिद्ध ज नरी. (अंतेने के) समक्षकित्से के विषय है तेने तो महामारम अने महाप्रारक है ज नरी. पल ‘छे नरी’ ते वथारथपणी द्वागे थाल कै छ? के (जेने पर्यथियाएँ पल) महामारम अने महाप्रारकनु परिषिद्ध ज न खेज तेने. तेनी शब्द वापसी है: “कन्नूलम.” जुनो:-

“निम्नेवपथियाने योज माध्यामित्रत अशुभ कर्मो अभाव छेवाने विद्ये कु सहा तिथिचर्यापणा।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री निर्माल सार्व गाथा १७-२१ – १४१

कर्तृत्वविनीत छ्।” जुजो! नारकमा पण अम वेवु छै। पण अर्घीय शब्द ‘कर्तृत्व’ (मूडाने) पुलाउँ उन। उन ए ‘कर्तृत्व’ अर्थात परिषामनी रहि छ। आखो... छह... छह!

आपु! आ तो मारगाङ अंटर जुड़ा (छै), भाग! लोकाने कड़ ‘दर्शनशुद्धि’ नी अजर न मणे के ‘दर्शनशुद्धि’ केम थाय, अने पत्री परिषात निर्मण केम थाय?

अर्घीयान परमार्थ-प्रतिक्रिया अनेक दे म्न: व्यक्तिप्रतिक्रियानी विकिरण उठि छ पण ते तो बन्धनुं कर्णा छ, परंतु आ विथावाची ने प्रतिक्रिया कड़ु अने स्वभावना आश्रय दीक्षा (त्यां) जे अेला अप्रत्याव परिषाम (जे दूबूँ बतात, तेने) छहीने, स्वभावना आश्रये ने परिषाति (विशेष) शुभ कद्री (अर्थात) राजाश्री परिषामथी कड़ीने पोताकी वीतराॅगिरिष्टि प्रगट करि अनुज़ नाम परमार्थ-प्रतिक्रिया केव्वा आव्वा छे।

आम तो (त्यां) कड़ु बतु के: “द्रव्यानुसारी चरण” शेष छ। तेना प्रमाणां रजगणी मंडला अनेक (सुनिने) कोण छे; पण अर्घीयानां तो कड़े के: ‘अे परिषाम मारामा छ ज नभी।’ परमार्थ-प्रतिक्रिया वेलु छे ने।! अे (महानाम अनेक परिषामकृत) परिषामन जेटली द्वा बताये मारामा छ ज नभी। आ तो मुनिराजिंगु प्रतिक्रिया छे ने।! आख!... छह! आ अमारी नाथ, आनंदनुं दण्ड बहावान, जे दिनमाल आव्वो तो अेमा दु (बयौँ) अेला (उस) परिषामनां लीत थयो छे के तेवू परिषामन ज मारामा नभी। अेलो दे जे परिषामथी नारक अने तिर्य्र (योग अनुसुधपरिषाम बिकुझ, तेवा) परिषाम ज मारामा नभी। आख... छह! धार्मिक शुभ हूँ छे। “दु सदा तिर्य्रप्रभावान कर्तृत्वविनीत हूँ।” आख... छह! अे परिषामनुन कर्तृत्व, (कड़ूँ-मै घौँ; तरिपुँछुँ) अनेकाची विधी हूँ। अने आणण तो कडेही भूत पाकां दे: दु कर्तृत्व नभी, दु दर्शनप्राप्तो पण नभी अने दे जेते अनुमोदन दर्शनप्राप्तो पण दु नभी। पाकां तो नज़ बोल छे अने विषिष्ट बोल तो पाकां अेलो छे के: दु अेनु कर्तृत्व पण नभी। गाथा-१५८: “गाण बालो तुङ्खो मेव तरणो मेव कारण तेस्व। कात्य ग हो कार्त्यात अणुमाण गेव कतीण।” ‘ण कारण तेस्व’ - तेनु (दु) कार्त्य नभी’ अे बधामा वेलुँ। ‘कात्य ग हो कार्त्यात अणुमाण गेव कतीण- तेनु (दु) कर्तृत्व नभी, वर्धिता नभी, कर्तृत्वो अनुमोदत नभी।’ पश्चि अेमा (गाथा-८०मा) पण दूबूँ दुः: “गाण रागो दोषो मेव मोहो मेव कारण तेस्व।” आख... छह! ‘ण कारण तेस्व’ - ‘रागुनु कर्तृत्व हूँ नभी।’ आख!... छह! ‘दु तो शुभ आनंदनुं कर्तृत्व हूँ।’

आख!... छह! वीतराज-मार्ग भुँ सूक्ष्म-गूँ, भाग! आख!... छह! अवर्ती (बात चयाकांबा घर्म) माने छ। लोकाने अदर (नाम भागनो) पत्रो भानो नभी। प्रथु! अे तो (अन्त) जन्म-मर्द मतवान पंखनो भागो तो आ छे, प्रथु! भोले तने कुह लागे, आकु लागे के आ तो ‘अेकूण निश्चित’ नभी छे। (परंतु भागुँ!) नयनो निविष्ट अेकूण ज छे। प्रमाणानन्दिक दृष्ट अने पयायं अने कोण छे। पण निश्चितन्यन्त मिविष्ट तो अेकूण ज-अेकूण निश्चित वनस्तु जे छे ते छे। अे सम्यक अेकूण नयनो निविष्ट अे अेकूण ज छे। समयुँ कांतो?

अर्घीयानां तो कड़े छे के: तिर्य्रप्रभावाने योगे जे (साध्यिशित) परिषाम, तेनो दुवूँ नभी। परिषामनामे दु नभी। ‘दु’ कर्तृत्वविनीत हूँ। – (अेमा) चारे पे बताय: कर्तृत्व नभी। वर्धिता नभी अने अनुमोदत नभी तथा तेनु दु कार्त्य पण नभी, समजा छे कांतो?

दबे, नुम्नुँ छे। तो मुनिनु मनुष्यशरीर। (छति अर्घीय दे करे छे:) “मनुष्यनामकर्नेयोत्य द्रव्यम्

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री नियमसार गाथा ७७-७८ - ७९३

आयुष्य बंधायो। अर्थ है अपने अन्याय मनुष्यनी पात लिए छो; अति नार्की सामाजिक, मनुष्यनु मार्गादाय की; धौ प्प मनुष्यनु आयुष्य बायो। तथा समाजी लियेर्यू में धौ मनुष्यनु आयुष्य बायो। समाजाभु धौ?

अर्थ है दर्राहें एक का मारे है प्प प्प मारे संभाप नथी। अर्थ है अर्थ है मारे संभाप नथी। आख... भा! प्प प्रास! आप तो मनुष्यप्राप्त है नें...? (मनुष्यनु) अर मारिमा घर्में है तो धौ धौ मनुष्यप्राप्त है अम गायाएँ आते छके के नहीं? आपे है कई? - ‘बोधपुष्क’ (गाथा-३, जमाना) आहू छ। (तथा) आयतन, शेष, नरीलिमा, ईश्वर नरीलिमा, ईश्वर नरीलिमा, शामा, धौ, तीर्थ, अरंगत तथा मुलाखी विगुंद प्रज्ञाता- अ अधिकार ल्यून (आयतना) निश्चय कराएँ आत्मा छ। [त्या गाथा-उमा गुणस्थान, मार्गाङ्गरस्थान, पथस्थान, प्रामण अने ज्ञास्थान-अने पांच प्रकारी अरंगतपुरुषने नामित कर्तन विधान करु।] तो मार्गार्य तो मनुष्यगत अप्प प्प है नें...! अर्थ है अरंगतः धौ धौ ‘मार्गाया’ लगाली है। तो त्या गाति है नें...! अट्ठार्थो त्या असच्चाबाबु हो के नहीं? 

परंतु अर्थ है दर्राहें एक का मारे है अर है छें के- मारी वर्तमानियः अने पेशुं वर्तमान निर्माणप्रज्ञाताम छ तें; ‘हुं ज्ञानवाणो हूँ।’ हुं अर्थ है (धौपर्याने योग्य) प्रज्ञाताम कर्ता नथी, कार्यिया नथी अने अनुभोक्त नथी, तेज़ तेज़ हुं डर्वा प्प नथी। आख... भा! धौपर्याय अने तें योग्य पुरुषार्थययम्योसंघ्यमः अर्थत्यं ज्ञानययम्यो संघ्यमः अने उदयनो संघ्यमः, अ अधानो “अर्थार धौपणारे लोके निश्चित मारे धौपर्याय नथी।” जुहो! अर्थ है बापा धौरी। पेठां (तिर्योज्यका वात दीर्घी के:) “कर्तुलबद्धिन छु।” प्प धौ (मनुष्यनी वातमाना लीलु के:) “शुद्धनिराकरण नथी।” अने (अर्थ है क्लंकु के:) “निश्चित मारे धौपर्याय नथी।” कर्का के: धौपर्याय तो आवाणारी क्षणे नें...! प्प मारी पर्यय (जे के ते धौपर्यायना) धौरणारा कर्ता नथी, कार्यिणा नथी अने अनुभोक्त प्प नथी। (ते धौपर्याय तो) ध्यान जो। आख... भा! शानी सागुणा कर्ता नथी। जे बावे धौपार्वय धंडाय ते भावना प्प कर्ता तो शानी नथी। आख...भा!

धौ प्रकाशता आयुष्य धंडाय छे नें...! अरे! शानवाष्टरीय ल्यो... अे जे प्रकाशि धंडाय छे। प्प अे क्लंको कर्ता शानी नथी। अरे! छंटा शानीने शानवाष्टरीय धंडाय छे। धंडाय छे के नहीं? हुं डर्वा (गुणस्थान) लुची धर्म धंडाय छे। प्प कर्ता छे के: तेनो तो शाताक्रस्ता हुं। भारा परिशिष्टाम ते मारा है ‘अरे’ अवो हुं नथी। 

विशेषता तो ध्यान आते है। अवी गाथा ‘प्रबन्धध्वंशविश्वारथ’ मा है। त्या मूल पदन्ति पोते कर्ता छे के: आ नहीं, आ नहीं। भ्याल छे के, मारे स्वर्गमा ज्ञान पक्षे। प्प पदेयी ज निष्कर्ष करता जाय छे।

जेम अन्यमतिम ‘गुरुपुरुण’ छे नें...! मरी गाथा प्प पापणारी अ ‘गुरुपुरुण’ लीलो वाजो। अम आपणे त्या प्प ‘अनिश्चिताशयान’ ‘प्रबन्धध्वंशविश्वारथ’ मा है। त्या ‘गुरुपुरुण’ छें वाते है। अर्थ है ‘अनिश्चिताशय’ मा अवी शेली है के: छेंनु मूर्तु वह जाय तो आ ‘अनिश्चिताशय’ नी भावना लेवी (भावी)। अवो अविज्ञात है। वही शेवी गाथाओ! भवाय व्यापान वह गाथा है।

अर्थ है दराकृत वाते है, जुहो! कर्ता छे के: ‘चेह भेकृणाय मार्गाङ्गरस्थानो’-गाति,
रूपमें नवनीत: भाग-2

बेक, द्राष्ट, जानाने बेक, द्राष्टने बेक, बत्त-अभ्यासने बेक, (द्वारा पृष्ठभागी आत्मा (पृष्ठांक) छ। प्रकार छवि छवि अने माध्यमिक) मारामा नती। ए मारामा नती। पार्कारपुरिक आत्मा (पृष्ठांक) छ। प्रकार छवि छवि अने माध्यमिक) मारामा नती। ए धार (=भए अने स्वार) मारामा नती। ए एए (स्वान-फ़र्स बेक) मारामा नती। (अभ देक बेक ओका ओब्झ नरी एक एक एक) ना स्वाय मारामा नती। ए दर्शन (=द्वारा पृष्ठभागी अने माध्यमिक) मारामा नती। ए धार (=भए अने स्वार) मारामा नती। ए एए (स्वान-फ़र्स बेक) मारामा नती। ए धार (=भए अने स्वार) मारामा नती। ए एए (स्वान-फ़र्स बेक) मारामा नती।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री नियमसार गाथा ७७-८१ - १४३
वैवादिकशिक्त-गुण है तो अ सिद्धमा पण कोष है, पण भव्यत्व सिद्धमा नथी. त्यां (जैस आधारशिक्षा भाव रहेता नथी तेम) अ भव्यत्वी योग्यता पण रहेती नथी. तो अ तो पर्यायी अपेक्षाभने भव्यत अने अभव्यत्वी वात करी है. समझाणुं अंक?

अंतर्गत तो पदलेठी जळ के गे के, अ भव्यत्व (मार्गशिर) मारामा नथी. हुं तो अंतर्गत प्रभुहुं! तो निधान अ योग्यताणी यथार्थ अने अयोग्यताणी यथार्थ (अर्थात् भव्यत अने अभव्यत्वपूण योग्यता) थी रहित हुं. आह... बु! समझय अंकणुं समझे, प्रभु! अ आर्य प्रयो पक्ष बु! अंतर्गत लोकः राजी पाप है ने...!

आर्य अंक विज्ञान व विज्ञान आर्य है के: तेमे (चील चीलो) गे तेवो विशेष दुरो पण अन्य स्वाभाविक स्वाधिकारी जे विशेष शैली वाली हैं ते के अंकडे तेम नथी. तेम विशेष दुरो अंकडे प्रशार वधतो जे. आर्य! (जे के) पण मार्ग तो ‘आ’ है. आ एक उम्मीद धरणी (उपवज्ञानी) वात नथी. वस्तु धरणी है. अंकडे के ‘छ’ तो धरणी’ पण अंकडा धरणी है आम नथी; अ तो राज्यवाणी नाथ द्रव्यवाणी धरणी है! (पाठी तेमचे) अम धरणुं है के: (आ शैली) जे व्याख्यान द्वारा, आदर्श हिंदुवानी धरण धारो तेयार वच गया है. तो तेमे क्षेत्रो क्षेत्रो निषेध कर्यो? क्षेत्रो विविध कर्यो? अगे आपने व्याख्याने अम धरणुं तो छुं, अगे आम शैल पे तेम कटे. अंकडे मार्ग नथी. "जिमभी निष्ठा बुद्धि है उत्तमी है बताव. " अगे आपलों जे आर्यू ध्येत तो कर्ते; अंकडे चील वात के चिन्ही? अंकडे शुं... छछ विशेष कर्यावाणी (ते पूर्वार्द्र छरी है? अंतर्गतां तो) छछ प्रति विशेष, वेर, क्षेत्र प्लावनी वात ज नथी.

आर्य... बु! 'पञ्चासिकाय' गाथा-उनी ज्ञानसंसार टीका मं है: ज्ञानसिकाय आदर्शीय हैं. आर्य तो अव्यनी ज्ञानसिकाय ध्येत... पण अंक हे द्रव्य हैं ते आदर्शीय हैं, सादगः है.

अंतर्गत तो भव्यत प्रस्तु त ले छे के: सम्प्रदाय (मार्गशिर) पण मारामा नथी. आर्य... बु! अ तो पदलेठी 'नियमसार' गाथा-उनी आवी गमुं हैं के: क्षेत्रराव भाव मारामा नथी. उपाधार भाव मारामा नथी. अंतर्गत तो मार्गशिर देवी हैं ने...? अंकडे वापरे स्पष्ट धरणुं. अंक (उपाधार, व्याख्यान, क्षेत्र, सम्मिलितत, सासाधन अने विशेष) तेम मार्गशिर (उत्तरी) हैं.

'बोधपादुं' मं तो भव्यनामा पण मार्गशिर उत्तरी हैं! जे मारामा नथी.

'योगसार' गाथा-उनी आवी हैं ने...! "तन-अंदिरया हें वत्तिया" पण बोको त्यां (अंदिरया) हैं हैं के, भव्यनामा त्यां हैं. पण त्यां तो अंक (स्थानानी) निषेध हैं. "जन हेरे देहात"-त्यां धोरे भव्यनामा? अंक तो निषेध हैं, व्यवहार हैं. शुभ्याव मार्ग अंकडे त्यां वक्ष जाय अंकणुं आ हैं. (साधकुं) वक्ष जाय, अंक पण नथी; अगे शुभ्याव आवी विना रहे पण नथी. समझाणुं?

अंतर्गत तो कठे हैं के: सम्प्रदाय (मार्गशिर) ना जे (उपाधारनी) चे ते मारामा नथी. हुं तो निधामी आन्यवापूर्ण भव्यनामा! अनी परिक्षानी पण योग्यता प्रवाह वर्त्त गई तो कठे योग्यता-योग्यतानी प्रवाह ज नथी, अंक जठे हैं. समझय हैं कठे? भव्यनामा पुणा-अंदिरयापूण, वृद्धजीवन, गहरणप्राण, शैलसर्ववाण, महारतप्राण, शैलसर्ववाण; अंकम ज्यामा प्रेम तरीके आवी गयो अने (अंतर्गत)

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री नियमसार गाथा ७७-८१ - १४७

चूं हारा... हारा! अगर परमाभावस्वाव जेनो स्वभाव छ अगर मने आगुण्डास्त्र, ज्ञात्वान अने मार्गाश्चात्मना भेड़ी मारामा थी। समजाणु पांचां परमाभावस्वाव जेनो स्वभाव छ अगर मने आगुण्डास्त्र, ज्ञात्वान अने मार्गाश्चात्मना भेड़ी मारामा थी।

अदि स्थानक्वासी ‘नियमसार’ वांछता होता। ४१ गाथा आयप, “जो खरियमावाहणा।” (त्या क्रुि घे) आपूर्व शाराण आ? सिंधमाप शार्धामाप छ; अने अदि कळे छे के: ज्यमाप शार्धामाप नाथी। तो ज्यमाप छ शार्धामाप? अदे भाट! अदि अम कळे छे के: अे प्यांयनो भेड़, अे त्रिकाजीनो नाथी। (पज) पर्शाय, पर्शाय ताईङ नाथी, अम नाथी। अदे भाट! आपू! अे शार्धामाप तो पर्शाय छे। अे पर्शाय (त्रिकाजी) क्रमान्न माणी नाथी। तो अे अपेक्षार शार्धामाप (ज्यमान) नाथी। पर्शायमाप शार्धामाप अने उद्यकावाडित बराबर छ। शोधमा (गुणाग्राह) सुधी असिद्धवे उद्यकावाडी बाथी छ। अने ‘बोधपाकू’ मां डेवीगे मार्गाश्चात्मनांदी छ। त्या क्रुि लीलु छे: (तेऊ) मनुष्यन्यातमां छै, पर्शाय छ, आ छे ने ते छे; अे कठ अपेक्षारे? अे तो ज्यारे पर्शायनु पर्यन्त केह तो ते अपेक्षा ने लों ज्यारे के नदी?

अदियां तो अम कळेने: “परमाभावस्वावस्वावाणाने”—परमाभावस्वाव, त्रिकाज परमाभावस्वावाणाने अम अम (शोध भेड्हाणाना) मार्गाश्चात्म, ज्ञात्वान अने आगुण्डास्त्र) नाथी। अवाय (लेड) मने नाथी। परमाभावस्वावस्वावाणाने नाथी अर्थात परमाभाव जेनो स्वभाव छे अवाय मने नाथी, अम पुवायो घ्रायो। अवाय (बोल) मां अम आगुण्ड छै ने...। मने... नाथी। कु... विद्वेय, मारे... नाथी। अदेले अदियां आ रीते अर्थ कर्म्यो: मने नाथी। आहा... हारा!

(क्रुे कळे छे के:) “मनुष्य अने तिर्थसर्वर्णः अन्त्याम्, पवित्र विकारशी (केडकारशी) उत्पन्न थता जागु-युवान-स्थवीर-वृद्धस्थाइिि अनेक स्वूल-वृष विविध बेड़े सुविधान्यन्याना अविनायाय मारे नाथी।” आहा... हारा! कुँ जागु पणा नाथी। युवान पणा नाथी। संहि पणा नाथी। अने स्थवीर पणा नाथी। - अे शरीरना पवित्र विकार छे। त्या पाहामा तो अे कळे के: अेनुं कुँ कारण पणा नाथी। जागु-युवानादि अवस्थानूं कुँ कारण नाथी। कुँ कारण नाथी। कुँ कारण नाथी। अने अनुमोदक पणा नाथी। आहा... हारा! समजाणु पांचां?

मित्याव अे ज्यनी बाजावस्त्र छ। अने अंतरमां आलामां मान अदेले सम्पर्कारण बसुं अे बुद्धाज्ञावस्त्र छ। अने केवलाण अने बुद्धाज्ञावस्त्र छ। -अे (बाजी) अवस्था मारामां नाथी। त्या तो पहेलां सम्पर्कारण-अंतराणा (के) डेवलाणानी अे पर्याय पणा मारामां नाथी, अम लीलु छे। अे (के) (बाजु-युवानादिि अनेक लेड) अे तो मारामां नाथी अने अे तो मारी पर्यायमां पणा नाथी। (परितु) आनी (परिश्रमनानी) अपेक्षाने अे आ (सम्पर्कारण-अंतराणा, केवलाणानी के पर्याय) छे अे मारामां छे।

विशेष कहेली...

* * *

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
‘नियमसार’ परमार्थ-प्रतिक्रिया छ ने...! त्यां आल्ये हुए, जूनो: (मनुष्य अने निर्देशपत्य-पतिन क्षायले, वयःपन दिकाती) (केंद्रवारी) (उचित वधा भाज-युधान-स्थविर- 
पुलवासकारिन्य अनेक श्रृंखला) “विविध भेंडो सूचनिशिवायन अविभाज्ये मारे नयी.” अे 
भाज-युधानी अवस्था छ ने...? निश्चयं तो भाज, युधान अने पुलवासका जर्दी हो; अे 
पोताना त्रिभुजवाचित नयी.

पण सम्बंधित पठेर भियार्देन्दी अवस्था अे पण भाजअवस्था छ. अने 
सम्बंधितनी (८०) युधान अवस्था हो. अने केवल (९०) पुलवासका छ. -अे अवस्था पण वस्तुमां-अंतरमां नयी. अे पथाच्य पर्यायां छ.

जे सम्बंधितना विषय त्रिकारी आल्यां, परिपूर्ण स्वच्छ, वस्तु परिपूर्ण... हो! पर्यायां 
परिपूर्ण नयी; पर्यायां परिपूर्ण तो रघुर निर्देश थान त्याचे व्या. “निर्देश समान सधा पण मेरो.”
- ते कांत अही पर्यायी निर्देश नयी. निर्देश निर्देशते किं निर्देशपत्य मे। ‘निर्देश समान ‘ अे 
वस्तु अर्थात त्रिकारी आल्यां, अर्थात-अनेक परिपूर्णस्वच्छ, अनमुंन निर्देशपत्यकर, अजूं निर्देश-पर्यायां छ तेकुं स्वच्छ 
(आ) वर्जने हो (अे रीत समान हो. पण बंतेनी पथाच्य समान हो, अम नयी.) समजाव हो 
कांत?

अहीं कडे हो: अे भाज, युधान अने पुलवासकारिन्य तो जर्दी हो. अनो तो हुं कर्ता पण 
नयी, कारणा पण नयी अने हुं कार्य पण नयी (तथा अनो हुं अनुमोदक पण नयी).

आता... हो! जे आ भोल जरी सूक्ष्म आयो हो: “सत्ता”-स्वच्छन्द सत्ता हो न 
त्रिकारा... त्रिकारा. “अविभाज्य” अट्टे गान. (आ) त्रिकारी नयी वात हो बो! सम्बंधितना 
विषय जे त्रिकारा परिपूर्ण परस्परमात्र, परस्पर आल्यां, परमस्वच्छ; अनी सत्ता; तेमां अविभाज्य 
अर्थात गान: “परमचेतायज्य” (अही) त्रिकारी परमचेतायज्य वेळा. गान अने अे (४०) 
वाहने परमचेतायज्य लिवेँ: “अने सुलनारी अनुपरिपूर्ण बीमन”-अही त्रिकारी नयी वात हो. जी 
वात हो। पर्यायां तो सम्बंधित-गान-ताहित बाये छ पण अनी-सम्बंधितना विषय 
परिपूर्ण परमस्वच्छ हो। अधी नीळे वात हो। समजावं कांत?

‘सम्बंधित’ गाना-२० (जयसेनाधारी एकीतुन) जुह पार्तु छापाळुं कृत्तु ने...! (क्या 
केह केह:) अे ध्याना पुरुष-सम्बंधित अष्ट ध्याने केह हो के लेकुं निर्देशशिवाय पस्तु (कृत्तु शो, 
पर्याय नयी) हो ते त्रिकारी परिपूर्ण-भान परिपूर्ण, आनंद परिपूर्ण अनंत शक्तिगुदा तरीके- 
स्वभाव तरीके हरेक शक्तिगुदा परिपूर्ण, अने अनवा अनंत नागला अकूं जे द्रष्य-वस्तु, अे 
सम्बंधितनूं ध्यान-विषयवं (कृं), अे विषय विना सम्बंधित बोता नयी. अनी (विषयवं, 
ध्यानवं) अपशेषें (आ वात हो). पण पर्याय (कृ) नयी, अम नयी. त्यां पर्यायने छोप 
होरेक, द्रष्य अर्थात सम्बंधितना विषय बनायें (अने मुख्य छोरेक पर्याय नयी अम कँ हूँ 
हो.) तो केह हो: अधी वस्तु सधा निराशर्या हो। द्रष्यां आवश्यक कृत्तुं? वस्तु अनंत अकूं 
त्रिकार (के अने) सामान्य कृत्तु, भूतारी कृत्तु, लायक कृत्तु, गुप्त कृत्तु, संहत कृत्तु, अंक कृत्तु (अकूं कृं), अे वीज पर्याय विना नयी. सम्बंधितनयी तो (अने) विषय बनावे हो. 
तो केह हो: अंक प्रत्यक्ष प्रतिक्रियासंबंध अर्थात अंकर नयी नयी पर्यायां, रजनी अपेक्षा विना, 
गान प्रत्यक्ष जाते हो, अधी अे वीज

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
के "सम्महन-साहा-यात्रिन अेज भोकार्म भ्रमणमार्य। आँधेरी जानाने ठेज नयी। तो शुभ आये। (या) गुलाम-नाम निष्णार, शास्त्रीय, श्रवण, भक्ति, पौरा (आदिन) भावायाय विना रहे? अने भाव मरे 'पंचसितर' गायण-१३७-प्रकाष्ट अथवा शब्द चाहे। "अयं वि कृस्वलक्ष्यत्वा केवलक्ष्यप्रकाष्टायमानाः भवति।" -आ (प्रस्तर राग) पररेजर, वे स्थ्र-लक्ष्याणां कुश्यायेव द्वाराय पद्धप्रद्धानं अथवा आकानांने श्रेय च। अर्थात् आकानांने लक्ष (उपयो्) स्थ्रण क्षेत्र चे तेथी तेने देवण भक्तितु ज प्रथायणणु श्रेय च (अने तेनी अर्थी मान्यता चो: ) अनेत्य आफ़ कथ्याय वशी। पद्ध समीकृती-साधारने तो (निज) विषय के स्थु, आकानां, पूर्ण पस्मलसापणु, चे ते हस्तिमा आयोऽ चे छता हस पर्यायांत आयोऽ छ, केव आर्यर्नां पर्याय (विक्षित) नथी तेथी; तेघ छड़ी-अन्तभूमिक (मुनिने) प्रास मेय चे पद्ध देवायण नथी तेथी; अटले के अपरणी बृहदार्नामां-"उपरतनमूर्तभूमिपाद-स्याभ्याागारगयानिष्पाद्य"-उपराणां गुलामनाओं विषय प्रास न प्रकी श्रेय त्वार अस्तानां (अनेवयस्थात्तान; अनेवय विषय प्रतेने; अनेवय पद्धार्ने अपवानेकारो) राग अक्त्यक्य अथवा; "तीव्रराज्य विनोदार्थ वा कदाचिज्ञानिनोद्पि भवत्तीति।" अथवा तीव्र राज्यर विषयक्य अर्थात् शासाने श्रेय (प्रस्तर राग) श्रेय च। अर्थात् आस्तानां शास्त्र निष्ठेदा मात्र; अशुरार्त तीव्र-आकारऽ चे तेने देवण भाव। [जोध कथां शुभ आवायणणु छ अने आवहन ब? ज पद्ध आवेक लाखणांने छ तेघ] तीव्र राज्यर विषयक्य अर्थात् आयाने श्रुत्वमार्य-पस्मलसापणां भक्ति, श्रवण, वाणन, मनन, छ अने विक्षित-पक्ष आये। अने विक्षित आयाय विना रेतात नथी। (जोध) सम्महनां घेरांमा तो स्थु छे तेघ छता जहा सुधी अंक्तर (स्थ्रपणां) पूर्ण स्वरता न श्रेय, पर्यायांमां अंक्तर श्रवणां शमती नथी त्वार आगुण वंचनार्थ शुभ भक्ति आदि आयोऽ छ। छे तो अने विक्षित पक्ष शान्ताने माचे के अने देय चे। अने ते अने ब्यथानु वारा जागे छे। समधाय छे काहे?

आमां 'निःसारां मां' उत्तरी गायण पशुक आवश्य। अने 'समधाय' मां क्रस्त-रजस्वः छे: "अलकलिमितीतपुरयीर्णायः"-भदु वक्ताव्य अने भदु हलिङ्गोऽथ बस थाऊँ। भु काे भयुः! आयामा ज आनक्षेपण भगवान परिपूर्णु छे। अने अनुभव अं जोकार्म चे। वार वाती वात अने कृष्णातलण च (पक्ष) सर्वादि तो अने छे: "भदु काेवाची अने भदु हलिङ्गोऽथ बस थाऊँ, बस थाऊँ। अने अनेत्य ज के भक्तानु छे अथा परम अर्धने अनेने ज निरंतर अनुभवोऽ। श्रवणः के निरंतरणा केवलायेव पूर्णा श्रेय, तेना स्थवरमानास्त्राणाम मेयसार (परमान) तेनाय बिंधु येरेजर बीघुः दंक पक्ष नथी। (समधाय सिवाय बिघुः दंक पक्ष सारस्वत नथी।) आयामा ज छे। ज अर्धने अनेते परम दक्षिण-प्रभू, पूर्णात्मको नाथ, अनेते, अनेते अथवा अनेने ज निरंतर अनुभव। पक्ष विक्षितोऽथ ज (प्रायण) के-निरंतर आवे। अविक्षित श्रेय छे? छे छे। अथौ ज अनुभव करो। सम्महन-साहा-यात्रिन अं जोकार्म चे। आयामा ज छे। ज येरेजर परमान्यमा छे अने
‘समयसार’ गाथा-डामा (टीमामा) आच्छ के ने... ! त् निर्मण परिशिष्टने वात
हे... से ! रहणी तो वात ज नथि. त् लीघत छ के: परंयिमा (जे) निर्मण यतारकनी परिषिष्टत
हे तेनाथी पण अनुभूति भित्त छे. अे अनुभूति पर्याय नथि; जिकाणी पर्यय छे. शं के छे?
के: ‘कु आ आल्मा-प्रत्यय अणं अणं विश्वाम ज्ञानित-अणाति अणं, नित्य उद्धृप
विश्वाचन-सन्कारावलीपा वाण में एक छु: (मत्ता, कम्म, कर्म, संरक्षण, अपाध्य अने
अविद्याप्रवेश) सर्व यारोना समुचित प्रकृत्यारी यार तीतरीजी जे निर्मणअनुभूति, ते
अनुभूतिमात्रपणाने लीघे शुद्ध छु.’ जीनी वात छे जे. परवा यारोनी वात नथि. रहणा
(यतारक) वात नथि; पण निर्मणपरिषिष्टत जे पटारकनी उपन सार यार परिषिष्टती पण पार,
अर्थां सर्व यारोना समूंचित प्रज्ञारी यार तीतरीजी जे निर्मणअनुभूति, ते अनुभूति-
मात्रपणाने लीघे शुद्ध छु. –आ पर्यायनी वात नथि. अनुभूतिनी परयिमा ‘आ अनुभूति’
घेय शुद्ध छे. अर्थात समझस्मृति-सातनी परयिमा आ (‘निर्मणअनुभूति’ घेय शुद्ध छे).
अर्थी के छे के: ‘प्रक्रियाली पार ‘ अटेले शु: ? के: परयिमा पटारकसऱ्ये परिषिष्टत यार छे. अे तो
(‘प्रक्रियातिपय’) गाथा-डामा (पण) ने... ! परयिमा पण परयिमा पटारकसऱ्ये स्वातन सार
परिषिष्टे छे. (अने) ययु-जुकानी अपेश नथि अने परती (पण) अपेश नथि. जिकायरीयाय पण
स्वातन पटारकसऱ्ये परिषिष्टे छे. (तमस) समझस्मृति, आल, आरिनी निर्मणपरिषिष्टत जे
मोक्षमानी वीतारागियाय, अे परयिमा पटारकसऱ्ये परिशिष्टन यार छे. अर्थी अने कळणे के: अे
(निर्मण) परयिमा जे कम्म, कम्म आडि पटारकनी पोटे (परिषिष्टें) छे अर्थात अने जे
परयिमा पटारकनी परिषिष्टत छे, ते अे पटारकना समूंचित यार तीतरीजी जे
‘निर्मणअनुभूति’ (छे), अनाथी पण भित्त छे. आल… ! निर्मणअनुभूति ते
अनुभूतिमात्रपणाने लीघे शुद्ध छु. आल… ! आ शुद्धनी याप्या छे! ‘परयिमे शुद्ध छु, गूण छु’
–अने अर्थी उयां कदें छे? आ तो आ प्रभागे के: सर्व यारोना समुचित प्रकृत्यारी यार तीतरीजी
अटेले भित्त अनुभूतिमात्र आलमा ‘… जिकाणी अनुभूति छी ! अनुभूति अटेले पर्याय नथि.
अर्थी पाल छे ने... ! ‘आहिम्मको खलु सुद्धा’ तो ‘अटेल’ नी आ
याप्या डीरी, शुद्धनी आ याप्या डीरी. ‘शुद्ध’ अटेले आ (–अनुभूतिमात्रपणां), परयिम्य आर्थात
परिषिष्टत हे. अे परयिमे छे के महती? रागाइटे छे परती ने... ? नथि, अने नथि. पूर्ण (वीताराग)
उयां वह गया छे? पण ते रागाइ यारिषिष्टत अनी मोक्षना मोर्यांमा नथि. कम्भे, मोक्षना मोर्य जे
शुद्धपरिषिष्टत हे ते अटे समयना पटारकसऱ्ये छे. दयु, गुण अने निमंत्रनी अपेश विनाय अे
परिषिष्टत हे, अनाथी पाल पार तीतरीजी अटेले के अे वीज (–निर्मण अनुभूति निकाण) तो,
अे परिषिष्टयां पण नथि, अे तो अे (पटारक) परिषिष्टती पण पार तीतरीजी छे. अनी जे
निर्मणअनुभूति, ते अनुभूतिमात्रपणाने
Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

Shri Nityam Saras Gatha 77-79 - 151

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
परस्पर नवनित: भाग-२
पयध्यामा लीन.' अभि (अभी) नधी. (पश्च) धृष्टं अंतर आन्तर्गतज्ञ मा दीन जे छ। आहार।
हा! अे उभ्यी गाथा तो बलियु ने...? (अभीया) सुभान अनुमूलितमा दीन “अेक्सि विशिष्ट आत्मत्वने”- जुयो। आस आत्मत्व- पूर्ण शान, पूर्ण धर्म, पूर्ण आन्तर, पूर्ण शांति, पूर्ण स्वच्छता, अरे! (जेनो) सर्वस्वभाव पूर्ण (छे)।
‘समस्यार’ गाथा-१६०, पूर्ण-पाप अविश्वासमा आयो छ।: “सो स्वायान्दरसी- ते आन्तर्गत (स्वभावत्वी) सर्वने आश्वास तथा सेव्यासारे छ तोपछ (“कमारण गियानावलक्त्वणो”) - पोताना अर्थान्तर व्याप (न्यू थ्यो) (छे)। आहार। हा! भगवान (आन्तर्गत) छ ते सर्व अनेक सर्वशासी... नियान्त्रण हो! (अभी) पर्यायानी वात नधी, लाह्सो अे न्यू पेला (नियान्त्रण) साथे तथा जी ने...? तेहे तो जऊनो अर्थ धर्मो बनो। पश्चाते तेने विद्याने मम पदे तो ने...? तो अनेक विहार कर्धे पक्षे ने... भापु! क्या क्या क्या अपेक्षाए धर्म है? तेने अखेलुः जोधी के नधी? क्या नयेलुः धर्म है? (अभी) आ तो नियान्त्रणाना विश्वानु धर्म है। अनेक अनुभव है ते मोषाल्क छ। अनेक तेने नियान्त्रणी तो व्यवहार है। द्रव अे निश्चय है, तो नियात्मकर्त्वात्मक अर्थ व्यवहार है।
अे ‘मोषाल्कप्रकाशक’ ने पाण्डु ‘परस्पर वस्तिका’ मा आयो छ। निर्माणप्रयाय अर्थ व्यवहार है, लाह्सो! नियात्मकर्त्वात्मक अर्थ सहभावत्ववर छ न। का्हादि अ को असहभावत्ववर छ।
आहार। हा! जे (विवशो) ‘समस्यार’ गाथा-१६६ नी टिकमा अमुन्तंद आत्माय दहन नेतृ अनुसारय अभीया पर्यायप्रभावाचेरू शैव है। तेनांची वशो आश्वास अभी माने लेया मायो है। अंतः ते उभ्यी गाथा जारी अभि दीहुः के : ‘सर्व कादेका समूहनी प्रकाशाची पर उत्तरतृषी, अर्थात (सर्व) पर्यायाची पार-लिन्त्रा, अंत: अनुभूत्वस्वप्न भगवान, नियान्त्रण शुद्ध धर्म, अनेक त्या अनुभूतिमागपत्तने लीणे शुद्ध कर्भो है। त्यारे अनेक अभीया “अनुभूतिमा दीन” कर्भो है। नियान्त्रण हो! नियान्त्रण अनुभूति जे स्वभाव, तेनां वस्तु दीन परी है। बस! आहार। हा! आन्तर्गत्वन्त्र नियान्त्रण, पूर्णान्तर्गत्वन्त्र, पूर्ण स्वभावक्ष (अभी अे वस्तु छ!) अभेजे अे वापसी उठाओ बनो न।? ‘समस्यार’ गाथा-१६०: “सो स्वायान्दरसी” है न। अभेजे “कमारण गियानावलक्त्वणो”- जुयो, आ (अभी) जय आयु। अम्बे बढने (आचारने) आश्वास है। -अभेजे नधी; दहने ही टिके हुयो, टिकावा “पोताना अपराधी आश्वास है।” अभेजे पाछ हो। अे “[ककम] रण” नो अर्थ तमे कर्भस्त नापी दो अे वात अभी छ ज नरी। अभी तो संदेहेक टिकामा अमुन्तंद आत्मार्थो कर्भो है।: पोताना अपराधी स्वप्नी दर्शनी घर नधी अने अनेक शान नधी, तो पोताना अपराधी, (जे पोतानो) सर्वन-सर्वशासी पूर्ण स्वभाव छ पल ते, ढंगाथेको है। अभी तो कर्भो है के भापु! शांतिऔ मार्ग है, आपु! आ ढेहे पाह-विवाही (नक्कारी) दर्शा जप (तो तथा तेन नधी)। अभेजे मार्ग है, प्रसु।
अभीया समयस्थतना विश्व बसावे है: सुभान अनुभूतिमा नियान्त्रण दीन अभेजा विशिष्ट, अर्थात भास, आत्मत्वने “अडनारा”— अे तो नय-पयाच छ-“शुद्ध्वायार्द्विधनन्त्व बने मारे सकल मोहराजक्ष नधी।” -अा अपेक्षाहो हो! अे (मोहराजक्ष) पर्यायमा छ। पलने वस्तुनी हत्तियामा अनेक वस्तुनी स्वभावमा ज नरी। (अन्तरानुपबिनी) मोह-भित्रत्व तो अनेक (धानी-मुनििने) तो पर्यायमा पलन नधी। पलन (सुनििने) जरी मोह अंहेल (आरितमोहक्ष्य) राजाहि-पर तरकारी.
श्री नियमसार गाथा ७३-८१ - १५३
सावधानी-आवे छे, अथो पण (अनो) अर्थ छे. पण्ये मारी शीर्षमा अने मारी शीर्ष जेटी जे मारी परिभ्रमणेत छ अथो नर्थी!

आखा... हा! आवे मार्ग छे!! (मोडताऊ जर नर्थी) तेसी करोणे समजस्तिने पछी अम वाह जय के कवे आपले पूर्ण-सिद्धसामान वाह गवा: तो पछी सुभमां वाहसं पयं क्र्याये अरु सुभमाने वाहसं पयं सरणु, अम नर्थी. समजन्यु वाहारक?

अशुभने छोड्या शुभमान-व्यक्त, वांचण, श्रवण, मनन, चित्तवाणिज्य (भाव) आवे छे. -अने अध्यु शु छे? विकल्प छे. पण विकल्प आव्या विना राजे नर्थी. अंडर निरनिर्णयमाने तके फेके नर्थी तो (विकल्प) आव्या विना राजे नर्थी. अने अशुभमाने अं तो विशेष पावे छे. समजाणु वाहारक?

(अथर्मणां केले छे:) "आवा विशेष आत्मान्यने" आखा... हा! विशेष-पास तत्त्व.

पर्यायी पण भिन्न. आखा... हा! घोड़ा पण सत्य छे, तुवा समजणु जोळेने. बडु बाँधी बाँधी वात ब्र्यो ने सत्य वात आवे नर्थी (तो ते शु ममानी)? "श्रद्धा उद्धववार्तकानना भले" -अमेक उंक लँ: के: मारो पूर्णार्ध अंडर हि! छन्दालिने पकडवलो मारो पूर्णार्ध छे! शूल अं पूर्णार्ध विना जय अम नर्थी. अम केले चे. अवे कमाव जय छे पण कमावमा पूर्णार्ध स्वभाव-सन्न्युण जय छे, तारे कमावना यथार्थ निर्णय जय छे. समजणु वाहारक? (श्रीता:) कमाव आव्यो त्यारे पूर्णार्ध वशे ज़! (उत्तर:) अं पूर्णार्ध कर्चे त्यारे ज कमावना निर्णय वशे. शेक! वशी ववपने 'कालावधि' केले ने..! अनो अर्थ अथो कुंटो के, कालावधि आव्यो त्यारे (पूर्णार्धी) वशे ज़! 

अथी तो अथु नर्थी, प्रलेष! अथी तो हुँसः कालावधि ने कमाव अं पर्यायमा जय छे ने..? तो पर्यायीन निर्णय उढारे जय छे? के: इत्यो आश्रम ले त्यारे निर्णय जय छे. पर्यायी आव्ये पर्यायीन निर्णय वतै नर्थी. समजणु वाहारक? अंक ज्ञान जिरी हेकरे तो अंडर (तत्त्व) बहु वाही जय अथु छे. अम के अमारे तो कमाव आव्यो त्यारे (समजित) आव्यो. पण ‘अं कमाव आव्यो’ अनो निर्णय छे तने? 'हु वड़... हु वड़... हु वड़ ' - अथी को आर्थिक छे, तो 'कमावमा आव्यो' अं निर्णय उयांडी आव्यो? कमावमा तो लक्षार्थ लिक्षी जय छे. कमावमं तो झाता-क्रमार्थ वशे जय छे. आखा... हा! बाच! अम छे. (श्रीता:) कमाव ज़ सावध्यार्थन्यनो निर्णय करे छे! (उत्तर:) अं कमावनो निर्णय कुंटो अथो सम्मजन्यन अने झान अंडर स्वभाव तर्क आव्यो. (श्रीता:) आपे कुंटो के: कमावनु झान तो आम उपर लक्ष जय तो; तो अथु लक्ष जयारे जय अं पण कमावमा आव्ये ने? (उत्तर:) पण्या (अं) कमावमां निर्णय शी? अं निर्णय पण तयो जोळी? कमावना वतै कर्ची छे अने? (श्रीता:) निर्णय कर्चां अंतो कम आवे? (उत्तर:) कम आवे, तो (पण्या) निर्णयनो पूर्णार्ध कर्चे त्यारे अथी कमावनो निर्णय शी. अं तो कुंटो ने..! कालावधिमा पण अं के श्री-कालावधिमा झान उपर जय छे के, त्यारे पोतानो स्वभावसमुच पूर्णार्ध- 'आ तु तु वुच, पूर्णार्थनिंदनो नाथ, शृद्धार्थवार्तकानना भव्यी निर्णय शूदु हुं,' अंतो पूर्णार्ध-कुंटो त्यारे, कमाव (नो निर्णय वशे) अने कार्पण्यनी भुक्त कुटी गँ.

अं तो कुंटो वटु ने.. पडेवा. अभूती वला, जर नी सावली, संप्रगान्यनी. मोठी तर्क वटु बसती. अं प्रण वशे के 'कालावधिमालो श्रीं कू बसे तम वशे, आपणे (पूर्णार्ध) शुं देवी? आपणे
अँधेरे आवे है ने...! के: “को जो हेंची वीतःरागने सो सो बेसी दीरा रे!” -पण श्रेष्ठे?
“अनजनसी क्षणु न बेसी डूबे बेसी अविरि रे।” - पण श्रेष्ठे? के जोने धर्ममुद्रि गुही गहे है तेरहें। ‘अने देवंश्री डूबे तेनु बहे, तो देवंश्रीनी पर्यावरनी सता, लेनी प्रतितमां आपी है; तो ते प्रतिद्वं त्वारे आपे हे जे मेंमा सर्वपालु अंदरमा पठु छे अनो आश्रय लगने तेरहे आपी प्रति आवेह हे के ‘जगतमा सर्वहे हे’। आजाह... न! आपी वात छे, अच्छै! शुच दाये! अत्तात ताकी जाय, कोटे कहे ताकी जाय, कोटे कहे ताकी जाय!

**शिखासा:** कुणापण वात (पण सराय) सर्वस्वकावय तो आपो ज जोठे रे।

**समाधान:** त्या ज जवु हे। (आि) अंक ज वाद हे। “अलमलम” न दूहु? पूवी प्रभु
तारी शिशु हे तेरो अनुभव कर! अंक ज वाद। ‘छुजसना’ मा आपे हे ने...
“लाप बात की बात यही, नितत्व उर लामो।” - व्यवहार आवे हे, व्यवहार शोष हे, (अे) दे, पण “लाप
बात की बात यही, नितत्व उर लामो; तोँ धकल झगड़े इंत, नित आतम व्यावो।”
आजा... ते आ आ (माही)!

अहीमा छँड़े हे: मारा अंतरना बमनी अथवा ध्वनना ध्वनना ध्वनना ध्वनना मारमां आ मौह ने रागे पल नथी। आजाह... न! समजभ छँड़े?

पूँहेया समजर्ष्ट्यनां विषय जरी सूचिम! अने पूँहेया भूमिमास-समजर्ष्ट्यं-ज कहूँ हे! अने माते (ज) भड़ू जोर देवय हे समजर्ष्ट्यं उपर। भानी तो समजर्ष्ट्यं थया पली हो अनुभमभाव पता आवे हे, शुभमभाव (पण) आवे हे। दृष्टद चाहे हे के दुः दुः नित्यानंद हे, अनो अनुभव थयो हे; (पण न भूमिमासा पूवी) स्विता थय शके नथी, तो निर्विवध्वाना मा (सतत) रडी शके नथी; तो ध्रुवः, धर्म, विद्ययान अठडु शुभमभाव न आवे तो त्यारे हुँ अशुभमभाव जवु (अमें नथी)। तो शुभ कहुँ, अमें देवयामा पता आवे हे।

उपन्यासी श्रृंख हरे, अनो पण उपेष्य देवयामा आवे हे। समजर्ष्ट्यने पता अस्थिरता-अशुभ
छोड़या माते (अणुदे पुड़ेया आवे)। आजानीने तो कहूँ छे ज नथी, अनो तो दुः नित्यानंद पठु हे। अनो (मोधा) अशुभो मा मित्यानंद हे; तात्ती ज (ते) जयो नथी, तो त्या
(आरिधेमोहह) अशुभही बदवानु मण्ड्रुँ हे? आपी वातो हे!

आजाह... न! अणे रे दीपीमा तो केटूँ भरूँ हे! (श्रीता:) दुः दारह पूवी वच नथी!
(उत्तर:) पूवुँ! पूवुँ तो बायः, आपा! अणे रे भगवान-मूूिनारजो-साधा सङ्गो पूवुँ करे, भानी!
अणे रे अभानु गढ़ुँ नथी! अम्मां तो बढ़ी गन्नीर शीर बरी हे! आजाह... न!

“शुक्रदायानिर्मणना बने” - अणे नित्यानंद पर्याय करे हे के दित्य करे हे? अनित्य
नित्यानंद पर्याय करे हे। नित्या त्या नित्यानंद पर्या करे हे। नित्या तो दुः दुः, अनो दुःस्मृत्य हे। ‘दुःस्मृत्य’
मां, दुःस्मृत्य परिधमाण ज नथी।

आजाह... न! भाषा तो जुवे: “सता, अवबन्ध (शान), परमशैलं, य” -विज्ञान...
के! शान-दर्शन अने बेनुः तालय हे। त्यातनु परमशैलं, आमानु-तत्त्वु-विषयः
आत्मतत्वुँ परमशैलं, पास आत्मतत्वुँ लांची, “अन् रुपा अनुभूतिमा दीन” -
विज्ञान आंदोलनी अनुभूतिमा दीन, आंदोलना दीन पठुँ (विमान) हे। अंतर पूवीनन्दनो
नाथनो नाथ पूवुँ, पूवुँनकां दीन हे। आजाह... न! ‘दीन’ मा पर्याय न येरी। आजाह... न! जुवोने! भाषा
श्री नियमसार गाथा ६७-६८ - १५० पृष्ठ वेदी छे नें... "सुपनी अनुमूलतां लीन..." अेंमें "अद्वाय विशिष्ट आत्मतत्वने"-अेमें लीवुं नें... ? तां प्रयर्म न दीवी (में) "अद्वाय (विशिष्ट) "आत्मतत्वने"- आशा... काँ! आशायनी भाषा तो जुन्मो! ठेटबर्ना जप (आभम) वांछे ने क्रोके वांछे ठाक क्यांरे तत्व द्व न आवें, अेंवी आ अेंक लीवीमा अेंवु आ तत्व छे! वेदांत-वेदांतमा द्वाय न मणे! (श्रोताः) वेदांतवाजा आप्नी वात सांबंधवा मागे तो तेनी साधे वात कर्वी के म न कर्वी? (उत्तरः) वात, अद्वायों धोने कर्वी छे? आवे तो सांबंगे. अेंवी वात सांबंगणे, डेक्लाक अेम हड़े छे: आ तो भी वेदांतनी वात छे। दाङ्ग के आप्ने जेन्दर्मीमा तो करे प्रत ने तप ने भक्त दरवी अे जेन्दर्वी!

१८८८वी सालमा राज्यस्त्रैमा अेंक बापो परमेश्वर यस्ती सांबंधवा आयो बनो। अेमे के झन्ना साधु [अद्वाय क्यां साधु बता? वन्न अे तो (आभायाज बैजने) माने ने के आ ल्यागी छे, साधु छे] अेंवी वात आत्मानी करे छे! अने क्यांरो भावसो भेना राय छे! तो अभ रीत छे? अद्वाय झन्ना आयोर्मा? जेन तो क्रियाकंडी... प्रत कर्वा ने उपवास कर्वा (वाङ्गा क्याङ्गे छे)। अेमा (मे) पठेदी आठवी वात कर्वी के जुमो! परतु तो नित्य ठुब छे, तेने छे; वन्न अे ठुबना नित्य मर्यादापर्यंत अनन्त छे! (आवासे क्याने) हाँ! अद्वाय अनंत्य! अद्वाय नित्य-अनन्त्य बेचे छे! - गिर्ने भागी गयो। भापु! अद्वाय तो वस्तुस्थिति (आ छे)! अद्वाय दोहा पक्ख नथी। अद्वाय तने वेदाङ्ग जेंवु लागे... वन्न अद्वाय वेदांत नथी। समझणु दांरा? (अलो) वापो गिर्ने भागी गयो। अद्वाय अनन्त्य! पर्यंत्य अनन्त्य, क्र्य नित्य। क्याने अने (वेदाङ्गी) लोक पर्याप्त नाने नथी तो पछी तमे ‘सर्व्याप्के छे’ अेंवु मान्यु केले? श्रु ‘अनु’ ठुब माने? अेंम न शाले, भापु! आ (सर्व्याङ्गो) मारे छे, भापु! आ परतु (अद्वाय छे!) अनन्त सर्व्याङ्गु केलेतुं तत्व आ ज भापु! अने आ ज मारे छे। अने छांरा (पक्ख नथी).

झेंहु दड़े के अद्वायों “अनुमूलतां लीन " अने पवक्य क्योः। तो (अेम नथी.) अद्वाय तो “अद्वाय विशिष्ट आत्मतत्वने” लीवुं छे। अद्वाय विशिष्ट आत्मतत्वने’-अेम लीवुं छे। अे अनुमूलति छे अे ठुबनी वात छे। समझणु क्यांरा?

(अद्वाय विशिष्ट आत्मतत्वने) “अव्यया" अउशो जजानरा। अक्ष अर्थादि जण्डुं। अेंम ‘मोक्षमार्गप्रणालके' सातमा मात्रामा लीवुं छे नें! “हिंसार्यांके दोहा ठुबना अव्ययानी निॉत्यादित्य व्याप्तन छे तनें ‘अेंम नथी पण्य निमित्तादिनी आप्नेके आ उपवास क्यांरे छे’ अेंम जण्डुं। अने ‘अे प्रमाणे ‘जजाण्डुं’ नाम ज जनं नयन्नु ‘बड़ढ़े’ छे।"

“शुद्धव्याप्तिर्भवना बने”- अेंका उप्योगर्भतिर्भवना बने’ (अेम नथी.) ‘शुद्धव्याप्तिर्भवना बने’- शुद्धव्याप्तिके अक्ष ठुब ड्रय विजय... विजय; तेनो जे अद्वाय, अर्थादि तेनु जेने प्रयोजन छे; अेंमो जे नथ। (तेना बने) मुनिराज कहे छे: अमेर-भाग्यस्वप, स्वीतरहकाळमा समपता, अद्वायप्राणु आाण्डना स्वाधिने-“स्रण मोक्षार्चेय नथी।” अभी जीव्या मोक्षार्चेयी गध अलकुल नथी। अने आ मृते शुद्धपरिशिष्टित छे तेनां पण मोक्षार्चेयी गध नथी। आत्मा... झं... काँ!

अद्वाय वात छे!! भापु! आ तो जेने अंतर्थी छुट्युं ठुब तेनी वातो छे, भापु! आ तो क्यां मान भेनपवा ने- झंच छींजा करतां अमे विशेष उद्वेदना छीणे नें... (तेनी) अभने
“अच्छे - प्रवर्तन नवराति: भाग-२
मोटा गलो ने इवाला गलो. अभेदे समज अभेदी वात आपो तो तमे हीद ने...! आ अभेदीयां नथी. अभेदीयां तो आ वस्तुस्थित जे छे (ते) छे.

वर्षे, अभेदीयां ए आँधुः “सड़क निरस्त्रनयनथी” - आ त्रिकान भवानशाखाम सड़क निरस्त्रनयनथी, स्वामालिक सत्यरतिथि- (१) “सड़क निरावर्जस्वपुप” (छे). क्रस्वपुप तो सड़क निरावर्ज्जय छे. वस्तु आवर्ज्जे क्यों? पययाम्या आठवे अक्ष समयनी ध्रामां राग साथे निमित-नेमिलिक सन्ध छे. अने क्रम साथे रागने-निमित-नेमिलिक सन्ध छे. (क्रम) अण क्रम छे ने...! व्याक्रम-पर्यायने जड़मल साथे निमित-नेमिलिक सन्ध छे; वस्तुमा तो अण क्रम (निमित-नेमिलिक सन्ध ज नथी).

आँधु... छे! “सड़क निरावर्जस्वपुप” ए अणे (अथानीने) अक्ष असेंवुँ दफळ पडे!
“छे तो सड़क निरावर्जस्वपुप छु” ए वस्तु छे. पययाम्यी (निरावर्ज) नथी. द्रव छे ए सड़क निरावर्जस्वपुप छे, जे समझन्यानी विषय-द्रव, ए सड़क निरावर्ज्जय छे.

आँधु... छे! (२) “शुद्ध शान्त्रुप”-त्रिकाण ची! निरावर्ज्जे ए तो नातिथी कड़ुँ. पहा “आँधु...” अक्षने शान्तने पुंज प्रभु, शान्तने हळळो, धुळळनी हळळो, शान्तने धुळ पूर्ण हळळो-धुळनी वात छने! “शुद्ध शान्त्रुप”... छे! शान्त्रुप छे.

(३) “सड़क विचारस्थितम्”- स्वामालिक शान्त्रकिमथ वस्तु त्रिकाण. सड़क विचारस्थितमात्र भवानशाखा. आँधु... छे!

(४) “सड़क दर्शनना सूक्ष्मशी विपरीतसूत्र भूति”- आ पण त्रिकाणी वात छे. स्वामालिक दर्शन, तेंूँ सूक्ष्म, तेनामो तुः त्रिकाण परिपूर्णाः आ पर्यायी (वात) नथी. जेम पडेलां ‘दीन’ शब्द बतो तेम अखी ‘सूक्ष्म’ शब्द छे. अण पण त्रिकाणी (द्रवनी ज वात छे).

आँधु... छे! अक्ष समयनी पर्यायी पात्रण आणू द्रव, भवानश परमानंदनो नाथ पद्यो (विवामान) छे! आँधु... छे! पूरण... पूरण... पूरण... पूरण, अक्ष अक्ष गुहुळ पूरण, अवा अनंतशुद्धांनो नाथ, अ विचारस्थितम छे. (अवे छे) सड़क दर्शनना सूक्ष्मशी विपरीतसूत्र भूति हुँ! “जैनी भूति अर्थत् स्वपुप सड़क दर्शनना सूक्ष्मशी विपरीतसूत्र” छे. -त्रिकाणी ची! समझन्यानुः भेकुः त्रिकाणी (द्रव) छे. अणे भूतार्थने आध्ररे समझन्य वात छे.

“भूत्वयमसिदो खलु समाभादः हवाइ जीवो” (- ‘समयसार’ १२१० गाथा). अणे भूतार्थनुः यक्त्रुः, यागुः यक्त्रुः, धुळळुः, सामान्य यक्त्रुः, अक्षनुः यक्त्रुः (अक्षय छे).

अण अखीयां “सड़क दर्शनना सूक्ष्मशी विपरीतसूत्र”- सूक्ष्मशी अर्थ ‘छे’ (द्रव छे). स्वामालिक दर्शनना सूक्ष्मशी-विपरीतसूत्र दर्शनना सूक्ष्मशी अर्थात प्रेमहृद धुळ अंकर छे! अण पर्यायी वात नथी. वस्तु परिपूर्णाः आँधु... छे! अणे दर्शनगृह परिपूर्णाः छे. पडेलां ‘शुद्ध शान्त्रुप’ छे. पारी ‘सड़क विचारस्थितम’ छे. ‘विचारस्थितम’ न धुळ, (क्रम छे) ‘विचारस्थितमाः’ (क्षेत्र) तो अणे परी जात छे. (अटवे) ‘विचारस्थितम’ छे, आँधु... छे! अणे (चहनां) आध्ररोणाः अक्ष अक्ष अक्षरानी दिक्रित छे!

“(अभेदीयां अने (४) स्वपुपमां अविघ्न स्वपुप सड़क वधान्यात शारिरावाणा)”-‘वधान्यात शारिर’ आ पर्यायी वात नथी. यथायान्यात=यथाप्रसिद्ध शारिर. अंकर धुळ (छे). आँधु...
श्री नियमसार गाथा ७७-८१- १५७

क्ष! स्वरूपमा अविष्करण स्थितिमय श्रद्ध स्थाप्ततां आर्जितवाणा-हेतु?
“ओम भने”- आ पर्याटनी वाच नभी. आ शब्द-स्वरूप-मुद्रा-शिक्षण-स्थाप्ततावाणा-यथाप्रसिद्ध आर्जित-
मार्कण-अन्तर स्वरूपमा विषय, विद्या, विद्या... विद्या... विद्या प्रसिद्ध है।
आखा... क्ष! “ओम भने” [ आ शब्द देखि वाचा-हेतुः: वेदान्तां ओम कर्दि छि क्ष-
‘हु’ कर्दि तो ओम तो जुडि पहरियो। (क्षेत्र) ‘सर्व’ कर्दि. दर्श देखि तेहो ‘सर्वव्याप्त’ मानो
छि ने..? ओम देखि ‘हु’ मानो तो ते बधामा जुडि पहर ह्राय तेहं हुये. मात्रे वेदान्ताने भी मान्यता
‘ओक ज सर्वव्याप्त’ है तेना परिवर्तन अर्थेः, तेहस्र अन्तर आत्मादेः, अनंत रक्षको (अने
बीजा शार द्रव्योऽ) ‘हु’ विनत हु, ओम दर्शि वाचा ओम “ओम भने” शब्द वाचयो।]
आ शब्द बधा (बोल) मा आयो है: (क्षेत्र के) ‘हु’ नायकपथिन नभी, ओम. (मार्क)
आत्मा (क्षेत्र) ‘हु’ कर्दि छि; बधा रामे ‘हु’ (शब्द) कर्दि तो नभी; ओम कर्दि छि।
आखा... क्ष! ओम भने “समस्त संसारक्षेत्रनाथेतु”- “संसारतम इति संसार:” आे
समस्त संसार क्षेत्र है। ओम तो स्वर्ग हो तोपकः क्षेत्र है, राजसो क्षेत्र है, हुण्यो...
हुण्यो क्षेत्र संसार है। ओम क्षेत्रना रेतु “क्षेत्र-मान-माया-लोल नभी।” आखा... क्ष! 
क्षेत्र, माण-के देश; अने माया, लोम-अे राग; मार्कणामा नभी। - अने क्रीनामा नभी? पवित्रमा
सर्वथा नभी, ओम नभी। ओम देखि देखि विचार हुये, तो पवित्रमा जर्न हु। पवि मारुङ् के (हु) भक्ति
प्रियवर्तन छित तेहं नभी, ओमो अने: मार्कण-लुम्बया नभी। आखा... क्ष! समस्त छि?
“(ओम) भने समस्त संसारक्षेत्रना देतु क्षेत्र-मान-माया-लोल नभी।” हेमना हो भेखः: क्षेत्र अने
माण, राजना हो भेखः: माया अने लोम-अे संसारक्षेत्रना रेतु छि।
(’समस्तसार’) निन्दा अविष्कारमां (क्षेत्र–कृिव-१४२) है: “विलयातां स्वयमेव”—
(स्वयमेव अर्थीत विशेषासिनिना) क्षेत्र पामे तो पामो।” स्वभाव (अने तप) ना भारी..
क्षेत्र पामे तो पामे। पवि आत्माना अनुभव विना मोक्षमार्ज क्षैरेष (पविनी शक्ता) नभी।
अर्द्धाना कर्दि छि के: “समस्त संसार” –अलेका तोहे तो स्वर्गमा बने शेखें के तोहे तो
बुधतानी होय के करो-अनमोलपित मार्कणामा नवे होय, ओम संसार छि, ओम बधी ओको
क्षेत्र है। आखा... क्ष! समस्त संसार क्षेत्रना रेतु क्षेत्र-मान-माया-लोल अने मार्कणामा नभी।
आखा... क्ष!
“क्षेत्र, ओ (उपरोक्त) विविध विकल्पथि (बेदोऽी) बरेला विविधवपर्ययोऽिो
निश्चयैरुं कर्द्या नभी।” - रागादि दाशि छि ओमो निश्चयैरुं कु कर्द्या नभी। ओम (’समस्तसार’)
४७ शक्तिमां वीर्यशक्तिनी पाक बनाइयो करो ने।! के: “स्वरूपी (आत्मस्वरूपी) रचनाना
सामस्तरुप वीर्यशक्ति।” राजनी रचना करे ते (वीर्यशक्ति) नभी।
(शामीने पाणि राग) आवे छि, क्षेत्र छि। विविधवपर्ययोऽिो नी कर्दे तो अशुभ ताबाला
माटे शुभ तो आवे ज छि। तो क्षेत्र करे के: (सोनगक) व्यवसनो निचुषेद करे छि अने (त्यां)
व्यवस हो आ ने ते! (पशु) ओ तो आना दासके बने छि। पशु अभो भवानी शुभ बने छि। (श्रीताः)
मिथि बन्धे आपना उपदेशी बन्धुं छि। (उत्तरः) मे तो रामेय अने पाणि कर्दि तो नभी के ओम मिथि
बनायो। कु तो उपदेश (स्विध दएं करतो नभी अने
तपविषिष्टु) आवे तो (ते) सांपणि वे छि। (अर्द्ध) पवित्रा (पोस्तानी भेले) ओम
व्याधायमित
वर्ण - प्रवचन नवनित: भाग-2
संवात-८४ माहू बनायो कबुल होते हैं। छातीय तथा में तो पहले वह कहने 3 बड़िया देते दे, तो वह भारत! तभी भी हो आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई आई

प्रवचन: तिले १५-२-७८

(‘नियमसार’) परमार्थ-निरक्ति. अंशियाँ (सुधी) आय्या छी: “बादे, आ (उपरोक्त) विधि विकल्पी (उज्ज्वली)” अंकोत्ते व उद्ध गुणस्थान, उद्ध ज्ञानस्थान, उद्ध मार्गप्रवस्थान आदि जब बेहतरी है “बसेखा विवाहविवाहोनो निष्ठायथी तु करता नथी.” आख़... छ! रागनो तो करता नथी पञ्चं असरोनो च करता नथी। अनेकांत भोट भासता नथी। जे अंदर गुप्त अदी छेदतं ते भेक, अनेकांतभोट भासता नथी। माते कहे छे: भेक भारसां छे ज नथी। गुप्त-गुप्तीना भेक द शाननी पांच अवस्था आहिता भे ते-ते अनेक बैतल्पुर्ति हुं-अनेक नथी। अनेक नाम असावं प्रतिक्षण देवुणुमा आयेय छे। आख़... छ! जे (बधा विवाहविवाहों निर्देशयथी) हुं नथी, अनेक करता अने कारियता पञ्च नथी (अनेक अनुमोदक पञ्च नथी)। (छं) रागनो तो करता नथी, कारियता नथी; पञ्च असरोनो पञ्च करता नथी, कारियता नथी अने भेक दिवा भोट तेनो अनुमोदक पञ्च नथी। आख़... छ! पुद्गलकर्मपुद्गलकर्म तर्कनो (अनुमोदक हुं नथी)। नन्में विकारियतते तो पुद्गलकर्मा निर्देशयथी तु (छं, अंशी) पुद्गलकर्मपुद्गलकर्मो करता पुद्गलकर्म (छं) तेनो (छं) अनुमोदक नथी। अनेक वर्ष देवुणुमा आयेय छे। आख़... छ! आ तो बहु
श्री निम्मसार गाथा ७७-८१ - १५८

शातिनो भार्ग छ, प्रलु!

(ढोंग करे छ: ) "कु नार्दपयीने करतो नथी।" नार्दपीना शरीरनी पर्यायने कु ररतो नथी, कु ररवतो नथी अने कु अनुमोदने कु ररतो नथी. अने आ नार्दपयीनु कु जारख (पछ) नथी. अना "सकज चैत्याना विलासस्वरूप आत्माने ज भावुं छ।" - स्वभाविक चैत्याना विलासस्वरूप आत्माछे. भगवान आत्मा चैत्यविलासी प्रलु (चे).

(ढोंग) नथी कदेता हे-आ विलासी माहृत छे. आ भवराम भोगमां-पेसामां विलासी (भस्त) छे! (पछ) अ विलासी तो धूमना य नथी. (अ ती) जर्ना विलासी छे! आ (शानी) तो चैत्यस्वरूप आत्माना विलासी छे.

आखा...कु जारख चैत्याना विलासस्वरूप आत्माछे (चे). आ आत्मा चैत्यविलासस्वरूप छे. आत्मा निर्देश चैत्याना विलासस्वरूप ज छे. अने दोेे छे. अनु विलास ज अेणु छे. चैत्यविलासस्वरूपाना विलास पर्यायांना करवो! (अटाले के ) अ (आत्मा) स्वभाविके विलासस्वरूप छे, तो परिशिष्टांना चैत्यनी विलास प्रकार वाचे छे. अनु नाम साय प्रतिक्रिया केल्यांना आहे छे.

छे ते...! "सकज चैत्याना विलासस्वरूप आत्माने ज भावुं छ।" अने कु भावुं छे. अविचार भावना कुं कुं. कु मारा चैत्यस्वरूप आत्मानी भावना कुं कुं. भावना अविचार अतरे आग्रहता

जीवी वात छे ने, भार! अपूर्व वात, अंतर्दक्षनां क्यारे य कटी नथी. अंतवयार् जेन साधू ध्वस, अनिवार अंग भूसो, त्यां-वेताज्य अन्तव्यार दीडा, पण वास्तविक ज्ञान अने चेताज्य शक्त-केष समक्षीतने ध्वस्य छे, अने निर्धार अविद्यांमां आवे छे ने...! ज्ञान अने चेताज्यशक्त: विदुप्तु ज्ञान अने पर तरक्षी उदासीन (उप) वेताज्य, अती शक्त-शारीर प्रकट कटी नथी. बहारी धक्षिण क्षतानी मंत्रां कटी ध्वस्य पण अ तो दुर्मात्ती ध्वस्य छे. (बहेननांनी 'वस्तुमातृत्' मा छे.) अ ध्वस्य दुर्द्वस छे, अंतर दायरी रामाणो छे.

अनीत्यं काहे छे के: "कु नार्दपयीने करतो नथी।" के? के: कु तो "सकज चैत्याना विलासस्वरूप आत्माने ज भावुं छ।" (‘भावुं छुं’) अ पूर्व छे. 'सकज चैत्याना विलासस्वरूप आत्माना' अ तो निर्धार ध्वस्य ठर. 'अने कु भावुं छे, अनी कु मारा कुं कुं' अ तो पर्याय ठर, अ निद्राश्य-प्रतिक्रियानी द्वारा ठर.

"कु तिर्यायव्याने करतो नथी।' निर्धार अटाले निगोपाली मांडीने श्रवण तिर्याय छो! निगोपाल पण तिर्यायमां आवे छे. निगोपाल, अंडेनिर्य, अंडेनिर्य, निगोपाल, अंडेनिर्य, अंडेनिर्य, पंडेनिर्य (संस्कीते अं अंस्कीते अंहे) अ तिर्यायशरीर; अ शरीर जनाभी मणे तथा भावने पण कु झरतो नथी, कुरवतो नथी, कुर्वाणे क्षत्ते तेने कु अनुमोदने नथी अने अनु दु कारख पण नथी. (श्रेष्ठ: उपाध पर्याय कारख ने के निमित कारख ने? (उतर: ) उपाध पर्याय कारख ने अने निमित कारख पण ने. उपाध पर्याय (अ) तो परमां गयुं. पण अनु निमित कारख पण कु झरतो नथी. आखा... भय! कु तो वीतारायणयीनुं कारख भवणानामा! कु तो शाह-हऽ, चैत्यविलासस्वरूप भवणानामा; अने कु भावुं छे. अमां अ (तिर्यायव्याने अने अना कारख) दुयां आवय? जीवी वात छे, भावु! जगतने (जंगन नथी).
Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री निष्ठुरागा गाथा ७३-७४ - १५१
अनेका वात पल्ले रुबीही आंबेनी नहीं. अनेक बहसना ग्रेम-उल्लास-विष्णु (बत्से छो, तेही) बाल्मा अंत्ते हो! भोवी रथ्यता निक्ष़े... छल्ला... निक्ष़े साहित्यकाळी आम पल्ला काही नापे ने नामसिका ने... आम बेडाम धातु पल्ला माफ़सो ने-गए बड़ी बमस्था लाए! पल्ला अंत्ते तो कहे छे के अ बड़ी दिखा रहनी छे, प्राप्तु! अनेक (अंत्ते) अंदर जे विकल्प विस्त़े छे ते राज़े छे. हुँ ते राजनी कर्ता नहीं, कार्यशाही नहीं अने अनुमोदक नहीं. (हुँ तो) "(सक़ज) घैनचन (ना) विलास (स्वाप) आतमाने (ज भावुं छुं)" डे, अंत्ते घैनचनी विलास भयों छे. (अंत्ते) घैनचनी मुन्यानाथी दीवां छे. पल्ला बड़ा गुढ़ लेवा. "मान ते आतमा " ले छे ने..! तो अ शाना राखे बड़ा अनंतगुढ़ लेवा. समझुंड़ुं काँटा?

"हुँ हेविपण्याने करतो नहीं, सक़ज घैनचना विलासस्वाप आतमाने ज भावुं छुं." आां... छो! अंत्ते हलवील आवे छे के बाह! त्या (‘समयसर’) आकामी आथामा। 'घवचार निश्चयना उपेशाच छे' अंतुं आवे छे ने..! आकामी आथा: “जह नवर सकमणज्ञो.” घवचार वे निश्चयना उपेशाचे. (श्रीता:) उपेशाचे बीज रीते आपणो अशक्य छे? (उत्तर:) कठ रीते अपाय? मारे त्या (दीक्षा) आळुं छे ने..! जेम आलोरे ‘घविष्ट’ कळुं. तो अ सांबिणी (अनो अर्थ अंक़े) समज शके नहीं त्यारे आम तटाघे जीते के आ शुं करे छे! तो (आलोरे कळुं:) ‘घविष्ट’ नो अर्थ प्राप्तुः "तातुरे अविनाशी कल्याण धारे" अेवों छे. आां.. छो! अ जे वपते वकळुं ते ज वपते तेनी (बेंक़ेश्नी) आपानाथी आनादना आस्था आयामा. तेम (घवचार अने परमार्थमार्ग पर सम्याऒणुपणी महाराणे वलावानर सार्वय समान छे अेवा श्रीगुरु जयरे घवचारमा आयाम शेव तारे तेनो) ब्रजाने-शिश्नाने समजेे छे डे के बाह! ‘आ आतमा छे!’ त्यारे ओळो (शिष्य अनो अर्थ समजेे नहीं तो) तटगा जीते के आ शुं करे छे! शुं करे छे! पल्ले सांबेणी (उपकम करेः छे अेम ने परंतु अपूर्व अंगुरुबिधी) जुळे करे ए, आ शुं करे छे? हुऱ समज शक्ता नहीं. तो (श्रीगुरुवे) अेनो (‘आतमा’ शब्दनो) अर्थ शहीः के: प्राप्तु! अम अने आतमा कृती होणे छीं जे जे दर्शन-धात-दारिनने प्राप्ते शेव ते आतमा! अे घवचार. आ उपेशाचे ‘द्व्यस्वरूप’ मळे छेले छे. भूषण शंक कळे: “अतिज्ञातित इति आतमा:.” ‘अत्तति’ एमेे रोताना सम्यावेन-धात-दारिनने (‘गचछति’ एमेके) प्रास धाय ते आतमा. अे पल्ले घवचार वे उपेशाचे आयामे. वेंड पाठी ने समजेे. नवतर समजेे केवी रीते? (आतमालो अर्थ सांबेणी) पल्ले ते (शिष्य) समजेे अंदरस्थी-अंदर ही हो! आ आतमा! (तो समजतायतं) तरंत ज अने आनादनां जिल्ले आवे छे. अेवी योंस्थापणज ज झन (शिष्य) लीडी छे. अंकम अंदरस्थी पकडे छे. पात्र झन छे. अंत्ते हो! आ आतमा!! डे जे दर्शन-धात-दारिनने भेटेले परिशर्मे छे अे ‘अलेक आतमा’!! आां.. छो! आ सांबेणी अंदरस्थी आनादनी धाय पल्ले. अतिविस्तर आनादना. बस! सांबेणी ने तरंत ज [अतिविस्तर आनादनी तेना ह德拉मा सुंदर भोतरंगो (दारिनतरंगो)] भेड़णे छे! अेवी ज आरेष बाजुऱी पल्ला छे! अेवी ज आरेष बाजुऱी पल्लाके पुष्प, पाप, दया, धन, प्रतने प्राप्ते स्वाय अेवा आतमा नहीं. अे पल्ला तो काही नापी. भेड़ पाठी ने पल्लामा आस्था. पल्ला
162 – प्रवचन नवनीत: बाग-2
डेवामां शु आज्ञा? क्षेत्री यदि प्राप्त आमा उपर ज़री जोके, बेलिये समजायु के दर्शन-दान-आरितने प्रास थाय ते आत्मा. प्राप्त आमा जे भेक उपर बल न करूं जोके. आत्म ला! आपिये तो अर्थी आज वेरुंिे छे: आत्मा जे सांभवणाने आयो, ते सांभवणानी जेिे धर्म छे अने समजायु. अे पांचरी गाथामां लीिुं छे. समजायु तो भेलिये. केिे भेलिये समजायु स्विताय तो केर (समजायु माथेनो) उपाय नथि. माते त्या सेरुं के: व्यवस्थानय स्थापन करवा योजन छे (प्राप्त ते अनुसरणयोजन नथि). स्वारांम आज्ञा भतुंिे ने... के: केर प्राप्त विकल्पी धर्म थाय छे, अे स्थापन योजन नथि. अटेले वे व्यवस्थाली लामे छे एवी वति नथि. ’आनायी लामे छे’ अे प्राप्त नथि. व्यवस्थानु अनुसरण करने निकाय थाय छे अभे नथि. प्राप्त व्यवस्थानय (भेक) विना समजायुनी लायकत देखनी नथि. (अने अपेक्षाके अर्थी सेरुं के:) ‘व्यवस्थानय स्थापन करवा योजन छे.’ समजायु कंिे शिष्य धर्म अंदर अभे समजे छे (भाने छे) के: गुरुँिे जे आत्मा क्षेत्रे जे दर्शन-दान-आरितने प्रास थाय. ते आत्मा केरा? के: ते अनेकान्ता उपर दर्श जंिा अनुसरण थयुं तो आनांजी धारा पदी. आज्ञा... ला! आत्मा!! अभे कुवारामांधी पाशी लुटे (वैँते) छे अभे अंदर निताणी-वायक-वाइतन्यिविलास भागवान; अभे कुं बांिुं छे, अभे कुं अंदकारता करूं छे, तो परमपां आनान्दी धारा धेिे छे. आज्ञा... ला! समस्थ छे कंिे?
आनंद भागवान (आत्मा) मां छे. आनंद (बीने) दायक नथि. आनंद शरीरमां नथि. आनंद पैसामां नथि. आनंद हस्त-दानना परिषामांना नथि. आनंद हिस्स-हूँंताना भागवानमां नथि. बोगनी वासनामां आनंद नथि. व्यवस्थानत्तत्त्वणा विकल्पमां आनंद नथि. आनंद मो अंदर भागवान्मां छे. अभे वैतन्यिविलासिं आनंदहस्तुपी भागवान; अभे कुं बांिुं छे, अभे केिे छे.
त्या (‘समयसार’) आकरी गाथामां प्राप्त अभे लीिुं$: अभे अंदकारती जया कलुं– ‘आत्मा’! व्यवस्था-विकल्पने प्राप्त केिे ने विकल्प उपत्ति केिे अभे आत्मा, अभे वति नथि. व्यवस्थाने कलुं तो अंदरुं कलुं: समयवर्तन-दान-आरितने प्रास थाय (अभे आत्मा.) अभे भेक धर्म देखन केिे ‘अंदका’ समजायु. प्राप्त भेक उपर बल करूं नथि. अभे अंदकारती आकरे हे...? अने त्या (आकरी गाथानी ठीकामा) छेके अभे हे: “वचनआक्षववहारनयो नानुसर्त्त्वय:” केिेवामांने अभे सांभवणावामांने व्यवस्थानय अनुसरण करवा लाभक नथि. अकेठी समजायु पवरे स्वेतांिे नथि छातिे भेकाूं अनुसरण करूं नथि.
आज्ञा... ला! आपी वतिे छे. लोकःने (अभदुरुं) लागे, प्राप्त शुं थाय? (लोकःने मूलभार्ती पवरी नथिे ठेिे के:) के आभे (सोनगडे) नयो अंदर कालो. अभे जे (दियांड्रूप धर्म) पररपासने आपते कलो (सतीशी जुडुं), अभे केतलाक मापासो केिे छे. प्राप्त आ नयो (धर्म) नथि, भागवान! अंदत तीर्थीकरे ठेिे ते (ख) ‘आ’ मार्जे छे!
अ अर्थीया केिे छे: “कुं अंतत्त्त्तत्त्त्त्ता कर्तो नथि, सहक निताणी निविलासस्वप्न आभाने जे बांिुं छे.” मायी भावना भागवानमां उपरे छे. भागवान्मो भाव निताणी; अं भावनी ‘भावना’ जे पवर्त्ती छे. ‘बांिुं छे’ अभे कलुं ने...! कुं निर्मम-वैतन्यिविलासीक निताणी वैतन्यिविलासी भावना भागवानस्वप्न भावनामा सही छे. आज्ञा... ला!
“आतमभावना भावना, स्थवर वेिे वेदनासने.” (प्राप्त: ४७४) अं श्रीमान श्रीमाने छे
श्री नियमसार गाथा ०७-२९ - १५३
नें...! अं (संप्रदायमा) तो बोड़ी बाहित करे नें...! पण बाहित अं प्रकारे छः नियमयोग्य अनेक व्यक्ति. आयसामा अंदर अंडला थुं ते नियमयोग्य छः. व्याख्यातानी बाहित आत्मनी विकल्प ते तो व्यक्ति. बाहित छः. (विधि) आयसा छः. पूर्ण (अवसरा) र थाय त्या सुदी(विधि) आया बिना तो केता नथी. ‘सम्यक्षर’ नी ज्ञानेनार्थं तींकसमा छः नें... नियमयोग्य अनेक व्यक्ति. ‘नियमसार’ मा पण ‘परस्परविधिक धिक्क’ गाथा-१३४ थी १४० सुदी आयसा छः. कृपा करे छः नें...! कोई-पांचसे नियम न बाहित; नियम छः बाहित, पण अंदर तो करे छः ते: पांचसे अक्षुद्राने श्रावकने पण नियमयोग्य बाहित छः.

“सम्मतानुप्रसरणे जो भांि कुणात सावरे सम्पन। तत्स दु ग्रीवंदभिति होंदि ति जिन्नि पण्णतं”। १३४। -“क्षे श्रावक अथवा भ्रमण सम्यक्षर, सम्यक्षर अनेक स्मर्थानिनी बाहित करे छः, तेने नियमयोग्य (नियमाती बाहित) छः अं जिनोभो (अनांत तीर्थकरों) छःु छः।” आख... हा! (शोचता:) परिमणे वात छः! (उत्तर:) परिमण अंदर द्याभा छः। पण बाहितनां परिशाम अं ते पायी. पण रागंढी बढनी अंती (नियमसम्यक्षर-शान-शारितिनी) बाहित करे छः तो तेने (नियमाती) बाहित केवलामा आयसा छः। (बाहित अर्थात भजन). अथन तो पायी रिवाय शुं आय? अंदर मारे तो बींउ देवुं दुः के: श्रावकने पण सम्यक्षर-शान-शारितिनी नियमयोग्य बाहित छः। अं नोधनी बाहित छः। बते बोड़ु शारित छः; छःु-सातामं विशेष छः; पण शारित छः अंदर। देवुं (त्यां) अनांतानुबंधळी नो अभाय थो अनेक प्रत्याभावावश्लिष्यो अभाय थो तेसी अंबुं शारित छः। अं द्योधनी बाहित अं ते शायी अनांतातुबंधळी नो अभाय थो अंबुं (त्यां पणा) स्वदुराशरण शारित छः। पण पांकसामा (अनांतातुबंधळी अनेक अप्रत्याभावावश्लिष्यो अभाय थो छः। स्वदुरा ऊं आश्रय बींडी छः, चैत्यविलास (स्वदुरा) भाजनानो आश्रय ऊं द्योधनी छः तो (त्यां) शार्त तो (योतीथी विशेष) आयी। अंदर अंस्य क्षम्भर-शान-शारित गढळ साधे आयो छः। श्रावकने बढळ कबा नें...! कृपा करे ते: ना. श्रावकने तो शान-शार्तने जे श्रय (पणा) अंदर तो (नोधनी बाहित द्योधनी छः) गढळ छः, बाबु।

‘परस्मारपनिविशंसितिः’ [‘हेमस्वर (छोटी) गाथा-२१, २२, २३] मा अंदवो पाय आये छः के समाति-शानी श्रावक विविधपुळक जिनप्रतिमा अनेक जिनपुळकु निमित्त करावेछः ते भय, संधन पुढळो द्वारा बंडवनी छः। त्या तो त्या सुदी लींडु छः के: (कुट्टेवरणा पांडा जेवा जिनचारण अंदर) ज्व (ना दाजः) जेवा जिनप्रतिमातु निमित्त करावेछः (तेना पुढळूं परजन द्वारा बाड़े अंदर बाजळी (सरस्यती) पण सम्भं नथी). आख... हा! आं तो भानी वात छः नें...? तो पछि जे भोटा मंडिर बनाये अं तो शुं क्षेववाय? अं तो संघपित क्षेववाय। अं द्योधनी छः। अं श्रावक बंगनिय छः। अं श्रावक सम्यक्षर-शान-स्मर्थानिनी बाहित सालित अंवा शुभभाव आया: मंडिर (निमित्तो), ज्यायाता, रथायाना वगळे- (भाब) दिघा तो थावाली थाय छः, पण भाव अंदवो छः नें...! तो अंवा श्रावकने बंदवनी करो छः, ते पंडळ छः। आख... हा!

अंक भाषु अं दे के: “असंसरंद ण वटे” (-दर्शनपुळक/गाथा-२५). अं मूलने योग्य बंदन तेने नथी। पण तेने योग्य श्रावकने पण बंदन थाय छः। आम तो त्या अंदवु द्योधनी छः: श्रावकने शुभरुपयोग बोटो नथी! (परंतु) के मूलीयाथु शुभरुपयोग छः ते (अंवा) बोटो नथी;

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
१५४ - प्रश्न का उत्तर: भाग-२
अभिमानी "परमशुद्ध" तथा त्या के पांच ग्रामों में दीदी हुई है: पणा आ (केलाड पंखतो) तो त्यां भी भी कहते थे: जुगो! शुद्धप्रत्यक्ष तो मूलने श्रोत नहीं, श्रवणने नहीं. पणा शुद्धप्रत्यक्ष वज्ररं मध्यवर्तार २ वर्तुं नवी-पर्यूं वात अते कह: भाग! शु धरीरों?

'समयसार' न जयसेनानाथरायकी टीकाओं में आये है: समयसिद्ध शानी ज्ञाने सामाधि आदिन्स भैसे थे तेरो तोशुद्धप्रत्यक्ष द्वारा थाय थे. आल... था! अंदर ध्यानें लागी ज्ञान (ग्यारे) शुद्धप्रत्यक्ष वर्त ज्ञ कहे. अनेक सामाधि धरीरे. (पणा) समयसिद्ध न मने न भान न मणे... अने सामाधि वह गम- द्वाराय सामाधि आवे?

अंतर्नानुतंत्रमाण्य शर्ठ-भान-शायरित्वी भक्ति तो है, अे उपरांतु भगवाननी पृथ्वी. भक्ति, मंत्र, व्रजसामीक्ष बोधे रूप (पणा) कहे है: अरों व्याव श्रवकने श्रोत, मोटों मोटों मंत्र बनाये, तो (ते शाक्त) वधोवी भी, अरों पाते ('प्रभावित्विन्यासित्वा' मा) छे.

(यहां) कह अपेक्षाले कथन छ, अे न जाने अने अक्षात ताड़े तो अम न आले, भाग! आ तो प्रभुशो स्थानवात मार्ग है. अवे (श्रवकने समयसिद्ध-शान-शायरित) नये विश्वाते. अने अंदर देखदो अंदर कब्रुं के श्रवकने शुद्धप्रत्यक्ष वर्तों वर्ती नथी. (पणा भाग!) अरे शुद्धप्रत्यक्ष जे मूलने योग छे तेवा उपयोग अने नथी. समवज्ञ कह ग्रंथ?

आल... था! जुगो ने... कहो अविकार है! चैतन्यो विद्वाना क्या समयसिद्धर्मां आम्मा अनुसारमाण्य आयो त्या ज शानित अने त्या ज निश्चयनी तो स्वप्तस्थानरुपी शायरित प्रगत थाय छे. पणा (तेने) संयम नाम आये अे शायरित त्या (तेवे) न श्रेष्ठ. अे शायरित अशी पारमें श्रेष्ठ छे. भाकी यथो गुरुस्थाने स्वप्तस्थान शायरित छे!

'शीवाकुड़े' (गावा-२) मां त्या सुधी कब्रुं छे क्ये: यथो गुरुस्थाने नारकीं ने पणा शील छे (निश्चितत्वी विरकत है). नारकीं ने पणा शुद्धसम्बूं है, अने अनुभव है अर्थात् अने (आयो) दृष्टि है, शानी कहे अने अने स्थिरता पणा है तो अने शील है, अम कब्रुं है. अे त्या न कठीन ने परिवर्तक पणा थाय छे. अरों पाते है. आल... था! नारकीं ने पणा शील है, अम कब्रुं. समयसिद्ध न है...! अनी वात है. आमा आलानी हृद प्रगत वर्त अने आवध प्रगत, अे शीलना प्रताधी देके छे के अरे नीक्षण्यों कौं परिवर्तक वात. जुगो! आत्मरे कह ने...! श्रृंखला रज्जा. पवेदी नारकीं २२ जुलाई वर्षी निर्धारित है. (अने) शील छे. शील अर्थात् अवसरण श्रीवाली परवरत्नी आदिन्स (भोग) अे प्रश्न त्या नथी. त्या अे वात क्या है? अने हेमां उपर नवमी श्रीवेद्यकों तो स्नादो ल्याग हेतू ल्या भंगमुंगुरुस्थान नथी. स्त्रीनी भोगों तो ल्याग है, नवमी श्रीवेद्यकों स्त्री-छाड़ी त्या नथी. अंदर तो अंदर सममृत्त अनुभव, हृद अने अशी स्थिरता प्राप्त तेने शील करेवां आव्यु छे. (अरे!) अे (समस्ततवी) स्त्रीनी ल्यागी न श्रेष्ठ तोपाण (तेने) शील छे! अने नवमी श्रीवेद्यकों तो स्नी नथी तो मिश्याहृद (त्या) स्त्रीनी ल्यागी छे तोपाण त्या (तेने) शील नथी. अने स्त्रीनी ल्यागी शील है अम नथी. नारकीं यथो गुरुस्थाने शील कब्रुं छे. समयसिद्ध-शान-शायरिता अंश प्रगट थाय श्रेष्ठ अंदर आतां शील अर्थात् स्वप्त है, अंदर शील है! श्रवकने पारशु गुरुस्थाने समयसिद्ध-शान-शायरित-कर्मी भक्ति है. उद्योगाध्यायों ने लौक है. विस्तरा तो वड़ों छे पणा अक्षाद्यात् (अे विषय) यातालो नथी.
श्री नियमसार गाथा ३७-३९ - ४५ पालकों धैर्य करे ते के: “तु योग मार्गाधारी बेदने करतो नथी।” हैदरा विषयमा बेद आयतो नथी। हैदरा विषयमा बेद आयतो नथी। आयत... हाँ! गजन वात छ।” हैदरा विषयमा (ना हें बेदने करतो नथी)। हैदरा विषयमा बेद भूत, भूत, अवधि, मन-परम्य अने क्षेत्र (तथा अचानक ना बेद) अरे हैदरार्धारी बेद मार्गाधारी नथी। (अरे) अरे केबला शान (मार्गाधारी) नी वात वीधी। पणा समक्षता बेद-शाकिकिदमकित, उपसमक्षता, क्षणोपसमक्षता आदि बधा (मार्गाधारी) नी (पणा) मार्गाधारी नथी। आयत... हाँ! अनी के वात छ। गजन वात छ। ने... हैदरा विषयमा बेद छ। ने? मार्गाधारी बेदने दुः करतो नथी, दुः करातो नथी अने बेद करे छ। तके दुः अनुमोडन पणा करतो नथी। आयत... हाँ! (श्रीता:) बेद डॉक्टर करे छ? (उत्तर:) अरे, कर्मवेतने आधीन पोता-पश्चिममाछ, निमित्ती नथी, निमित्तीन मार्गाधारी (अवधि) बेद करे छ। (श्रीता:) तो पुढ़गल करे छ? (उत्तर:) पुढ़गल करे छ, खालिश-काम नथी, अरे लेवूं छ। खालिश-काम नथी, माते पुढ़गल करे छ, अरे करे छ। बेद बाबा पुढ़गल करे छ। बेद छ। तो पोता-पश्चिममाछ। (श्रीता:) पुढ़गल मात्र निमित्त छ? (उत्तर:) निमित्त छ। अरे अर्थ अरे खालिश छ। पोताने खालिश नथी, अरे अर्थुं दोस्त छ। अरे तो आवे छ। शाकिकिदमकित मारे नथी, अरे आयू ने।! (‘नियमसार’) गाथा-२९ भी। शाकिकिदमकित (उनर) पणा अरे विकल्प-विचार-व्यक्त जाय छ। तो अरे आश्रय करता विकल्प बीढे छ। परीक्षणा आश्रय नथी पश्चिम मुख-भाग नथी। शाकिकिदमकित आश्रयती पणा, लक्ष करे छ। अरे तो परीक्षणा छ, तो तेंवूं लक्ष करवाइ, आश्रय करवा जय, विकल्प बीढे छ। आयत... हाँ! आश्रय तो अरे भजेगन अरे विकल्प प्रफु छ। समाजङूँ काळ! दु हैदरा मार्गाधारी बेद, समक्षता बेद, अविश्वास बेद-अरे बाधय बेदने करतो नथी। (समाजङूँ बेदने) शान जाउँ छ।

(‘सम्प्रदाय’ गाथा-१२ नी दृष्टांको अरे गाथा उद्धार छ। ने...)” यह उल्लिखित पवजुहमा तामा ववहारनिर्देश मुहुँ। एकौन विषा छिंडुड़ तिथिक अणाण उन तत्त्वा।” [“आश्रय करे छ। के, दे वात्यायो! जे तमा हिन्मतने प्रवाक्षपाय भाक्ष्ता भे तो ववजुह अने निर्देश-अरे अने नयू भे तो हिन्मतने प्रवाक्षपाय भाक्ष्ता भे तो तीर्थैय-ववजुहार्धारी-नो निर्देश रहै जसै अने निर्देशय विना तत् (स्वतु) नो निर्देश रहै जसै।” ] (श्रीता:) तीर्थो निर्देश रहै जसै?

(उत्तर:) हाँ! तीर्थ अर्थात् भेंडो निर्देश रहै जसै। शीर्ष उमोच्याल्की नीते पणा रहे नरी। शीर्ष, पार्शमुँ, छूँ (आदि आणि गुलस्थाना) भेंड के नरी? हाँ! ववजुह रहै जसै भेंड के नरी?

(वे न माने) तो तीर्थो निर्देश रहै जसै। अनेकारी (वेडोळी) तीर्थी उपलब्ध रहै जसै अरे प्रश्न अरे नरी। पणा ‘भेंड छे ज नरी’ (अरे माने) तो तीर्थो निर्देश रहै जसै अरे प्रश्न अरे नरी। पणा ‘भेंड छे ज नरी’ (अरे माने) तो तीर्थो निर्देश रहै जसै अरे प्रश्न अरे नरी। (अरे) अरे अर्थातः प्रश्न-तत्त्वा आश्रय न भे तो निर्धय रहे नरी। -आयू हाँ आयू! (तत्त्वा) हाँ! “मा ववहारनिर्देश मुहुँ’’- ववजुह छीडी नरी अस्वे दे (ववजुह) नरी, अरे नरी; अरे. भेंड हाँ! शीर्ष उमोच्याल्की नीते। मार्गाधारीमा (शीर्ष) भेंड छे। ‘छे’ अरे बायाडी छीडी वायू नरी। ‘ववजुह छे’ अरे मार्गाधारीमा (शीर्ष) भेंड छे। ‘छे’ अरे जाडूपुँ (ववजुह) छे ज नरी’ तो ते वेदांत रहे जसै, निर्देशयानास रहै जसै।
Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
बेड भासता नथी. आ अम्बडॅर! बेड छे बरा (पशु ते भासता नथी).
आ भजावण! भज=+वान= भज अंगतं अंतर-अंबलकी+वान अंगतं स्वूप. अे बळबी स्वूपप्रेमा! अंतं अंतं शैतं-अम्बडॅरी गृहाना स्वूपपनी बळबी संपत्ते छे!
भजावण, भजावण, भज=+वान छे! अनेनी पयाप्तीमा अनां आदि प्रगट धार आे बाबलक्ष्मी छे. अंतर-अंबलकी अंदरमा पपी (सोटू) छे. बाबी बधी धूंिण छे... अे क्रोड केस के अबज केस-कुरा रांझा. विभारी छे. ‘सम्प्रसार’ श्रीकटकरट=202 मा अनेने “वराका:” कपा छे. आ लावो ने आ वालो... आ वालो-विभारी छे, “वराका:”. आत्मा वालो, आत्मा वालो (अे आत्मारी छे).
‘घवल’ माने अनेये पांक छे: अंदरमा जारे मलिना सम्पत्तेच धार छे ते अे मति (शान), केवण (शान) ने बोलाते छे. (श्रीत: ) मति-शृंग केवणाने बोलाते छे? (उत्तर: ) अंकुले मलिना. अनेये ‘घवल’ माने पांक छे. अर्थमा तां चंदीवार केवणात गये छे, ‘घवल’ वन्याऱे गये छे. व्याेणामया व्याख्या अथ अर्थमा ता वन्याऱे गये छे. अे (देवालक) लांके ता करे छे (सोनगह) ‘सम्प्रसार’ वांचे छे. (अंकुले) ‘सम्प्रसार’ वांचे छे. भाग! तमारे केवण तें तमारे केवण, तें अमारे शुं छे? ता (‘घवल’ मा) अम आये छे: अंतर आंतरस्वूप आत्मा, चात्त-सिंहलासी भजावण; अनेने शान जयां प्रत्यय धार अंगतं जे भाने परूणी कोण अरे कथा नथी, अरुणे जे मलिना शान, ते केवणानने वालोते छे: आयो... आयो... आयो! (श्रीत: ) बोलाते छे ता आयुत ज पेंड? (उत्तर: ) तारे जू तो ‘बोलाते छे’ अम कसं छे ने...! अलसदमाणे केवणाने आयो ज. जाने बीज दिगी तो तें बिचे पूर्ण बंधे ने वरी ज. अम जाने मति-शृंग सम्पत्तेच थमु (तेने केवणाने आयो ज.). अर्थमा तो अप्रतिक्षण गणवामाणे आयो छे! अने केवणाने आयो, आयोने ने आयो ज. तो अनेने बोलाते छे (के-आयो)... आयो... आयो! अम निध केता बोलातीने के-अने भाग! आ (अमुक) रस्ते व्यां छे, ते जेने वताने ने? अम आ (मलिना) केवणानने बोलाते छे. आही... जः! तो आयुत पेंड. केवणाने धार ज. अम कसं छे अलसदमाणे अनेके व्यामा केवणाने आयो ज आयो. अर्थमा विशेष वांच तांकी छे!
अर्थमा करे छे: धौट (मार्गशिका) बेदिने (हुं) भावोतो नथी. श्रीरामी डिया हुं करुं छु अने तो नन्दी; राख मारी धीर छे अने तो नन्दी; राख-प्याबार्वर्तननी हुं भावना हुं करुं छु अने तो नन्दी; पपा निभिरणस्यांचिने बेद छे, अने त्री, अम पपा अरी नथी. आयो मारी छे, भापा! पाणु जेवूं बाँधे. ‘परमात्मप्रशास’ मा लहुं के: शानीचा हलिना पाणु पारते जुंळे छे. अने शानी लहिनाचा पाणु बांधे. वांच तो अवी छे, प्रलु! हुं ध्यान, भापा?
अंदर शैतं-अम्बडॅरी वस्तू माध्यमालू, अमेध; अनंतरस्त्रिनीर विषय छे. अने अनेक आयो मारा बेद हुं करतो ज नथी. राजने तो करतो नथी, करावतो नथी. व्याबार्वर्तनने करतो नथी, करावतो नथी. अनंतरपणा पपी आयोरे. अर्थमा तो पडवूने अने लेवूं के: बेदने हुं करतो नथी, पयाप्तिने बेद पैंते ने...? पपी राजने (बोल) छे. पपी भावमोक्त म्हणे. बेलुं बोल छे. पडवूने शरीरसंबंधीने छे. पपी छे: हुं रागांडॅ बेदहुं भावमोक्त बेदिने करतो नथी, करावतो नथी अने तेनु अंतमोहन करतो नथी. अर्थमा तो (देवालक) अम करे छे के: व्याबार्वर्तनने करतो निषय (रंजन) दर्शे. अरे प्रलु! हुं करे छे, भाग! प्रलु! (अवी मात्या)
168 - प्रवचन नवरति: भाग-2
tने गुजराती दाझर छे. भाई! (अर्थात् तो) तारा खिलनी वात छे ने.. नाथ! तारुं खिल देवी रीते थाय छे (अंग आ वात छे). भगवाननो आ उपेक्षा ‘खिलोपेक्षा’ छे ने...! सर्वश्र परम ठिकपेशी- ‘रत्नकर्ताराकाश’ मां आवे से ने...! अ तारुं ररम खिल छे, प्रमु! अनेकमां भावना करवी, भेदनी भावना छोडवी, अमां प्रमु! तारुं खिल छे. ताने आनंद अने 
शान्ति भगवे, प्रमु! आज्ञा.. ḍ़! भेदनी भावना करवा जहाँ हो तो ताने अशांति-राज थे. आने भगवे है!!

भेक: समजितना भेदे पांच; दर्शना आर-वशु, अवशु, अवदि अने डेवण; दानना पांच; अ (आह्द) बधा भेदने ‘तुं करतो नथी.’ ‘सक्ष वैतन्य विलासवृप्त आत्माने ज बाँधु हृ.’

“तुं मिथ्याधित आहि गुजरातनेही करतो नथी.” - शेखुं, पांठमुं, छठु अथ भेदने करतो नथी. अ यवकरणयो विषय हे ने...?

मिथ्याधित आहि गुजरातन (भेट) -शेखुं, पांठमुं, छठु-सातमुं... तेस्थु-सन्योगी डेवणी- 
अ गुजरातन (मांडा) नथी. अ भेक हे ने पवया. अर्थात् आत्मु ने: “तुं शोळा गुजरातनेही करतो नथी,” गुजरातन हूँ! पवयात्मनयो विषययो यवकरणयो विषय हे!

पण हे भेदनी भावना तुं करतो नथी; तुं शोळा गुजरातनेवा भावतो नथी; अम देते हे. पण (अंकः) ‘वसु नथी’ अम नथी.

“जई जिनमध्य पवजह ता मा ववहारणिण्यु मुयाह.” - ववकर्त-नि रत्नयनयने 
छोटी नथी. ‘यवकरण नथी’ अम नथी. पण (अर्थात् देके हे देखे) यवकरणी भावना तुं 
करतो नथी. समजितु हाँकः “तुं शोळा गुजरातनेही करतो नथी.” , “सक्ष वैतन्य विलासवृप्त आत्माने ज बाँधु हृ.”

“तुं अंकक्ष खसटय भवस्थाने करतो नथी.” पंजेद्रय सुधी पवस्य-अपघयस आहि जवना तोळ भवस्थाने हों करतो नथी. जवना तोळ भवस्थानने भेदने तुं करतो नथी, 
करतोनथी अने करतारने अनुभवदो पण नथी. “सक्ष वैतन्य विलासवृप्त आत्माने ज बाँधु हृ’ “आत्माने ज” भाषा अम हे ने! (तो क्रिया देखे के) आ तो अंकक्ष वह जय हे. 
बधामा ‘ज’ शब्द पत्रो हे. तुं तो अंकक्ष अंकक्षयु भवस्थाने ज बाँधु हृ! आज्ञा... हृ!

.... विशेष कदेशे.

***

प्रवचन: ता. १७-२-१९७८

(‘नियमसार’) परमध्य-प्रतिकम्प. अनेक पांच रत्नावाहाओ (77थी 81). आपसे 
अर्थात् आत्मा: तोएनो निषेध हे: तोळ गुजरातन, तोळ माभ्यमात्रान अने तोळ जवस्थान; 
अना भेदने तुं करतो नथी. समजितु रया पण अ समजितु आहि भेदनुं वक्त नथी. पण 
अर्थात् आ मागण वनसपानी वात हे. जे भावकर-सुध्वकर अनुजवमां आत्मा अ समजितु 
शेष हे. तेंता (अनुजवमां) पण भेदनो आश्वय तो नथी; छतां भेदनो विषय नथी, अम 
नथी, भेद छे. तोळ गुजरातन हे. तोळ माभ्यमात्रान हे. तोळ जवस्थान हे. - (अ) 
यवकरणयथी हे; अन्नो
श्री निषिद्ध गाथा ७७-८७ - ७८
निषिद्ध नथी. पण आयांक डावा लाख नथी; माते वद्यमाननाथो विषय जाणवा माटे प्रयोजनावण छ. आर्द्र लाखत तो (भाट) भजगान (आत्मा), परम आनंदनभ अमृतत्वी बनेलो भ्रु प्रमु (छे). जेमाखो विकल्पमात्र ज्ञानावर भाखे. अने अतिष्ठत्व अमृतनी आगर भजगाननाथो आयांक बीतां अमृतनी पर्यावरणी धारा वढे, अनु नाम समधारन, बाआ ने आर्तिन छे.

अर्थिय भेक आयांक. भेक (मने नथी) अभेद डु, पण भेक बेकरु छे. वद्यमाननाथो विषय-शोक मार्गाच्यांना भेक, शोक गुजारत्वाना भेक, (शोक) खव्याना भेक- आयांक नाथी छे. अर्थ अंतर-आयांक देवाच्यांना भेक (मने नथी, मार्गांना नथी अने अं अंतराय प्रका त नाथी, अंतरंतता नथी अने अनूठदक नथी ] अभेद बेकरु भावना आयुं छे. आख... आख...! समजूणुं कंजे? 'भेक छे'... तो 'कंजे' नथी ने...! धु तो आयांक भेक शैत्यपिलमा भजगानमाता (छे)!!

जीवीं वात छे, प्रमु! आयांक धारी ले बरे; पण भाव अवलोकित छे! कडे छे: धु तो अने भेकरो कंजे नथी. धु तो शैत्यपिलमा भजगानमाता (छे). 'अने शैत्यपिलमा भजगानमाता' अने पण भायक-शक्त छे; पण अनु वाख्य: शैत्यपिलमा भजगानमाता (ने भावो) अने छे. धु शैत्यपिलमा (वहृ) आत्माने (ज) भाव दु छे. धु अनी भावना करु छे. आख... आख... क्रमे दर्शन-भूमिका ज अवलोकित शीत छे! अने भूमिका विना डुं निर्दित छे. समधारन विना धार-दर्श अवपास करे, मकरंत धारा करे, अभेद वेश (उप) अने धुंधारं छे, बदामचरुं धारा छे.

अर्थिय भेक कडे छे जे: हुतांना (जे) विषय शैत्यपिलमा आत्मा, अनेने धुं भाव दु. अने अविष्टरती जीवीं विशेषणपरं धुं व्यभिनना विश्वरता-रम्यतानी भावना करु छे.

अने आर्तिनी अविष्टरती ने...? प्रांतिक, प्रत्यायण आधि निश्चिताचित्रा पेटावे छे. अने ज्ञा निश्चिताचित्रा कोण छे त्या तो तेने अंतर्मुखांमा (सतमात्री छुं अने छांती सातमु) गुजारत्वाना प्रटाक जव छे. अने हेकरु छुं-सातमु गुजारत्वाना प्रटाक जव छे. 'धवल' मा तो अभेद डुं जीनु छे जे: मृत्य पाख्या, पदेला अने अंतर्मुखांमा पण छुं-सातमु गुजारत्वाना लागो तार आयेछे. अनेने धुं पाख छे. अने आंतर्मुखृत-आंतर्मीत्व अनिमितमा तारो वार... तो छुं-सातमु गुजारत्वानी (समय) स्थित करु लाग गए! 'धवल' मा आवो पाख छे. अभेद सत्य छे. पाख छे!

अनेने परमशुपर्यानो अनुत्तम थाये छे ने परमशुपर्यानां ज्ञानी ज जेनी भावना छे. (छांता) स्वभावांः स्वभावांः घाल रूप छे नथी तो विकल्प आयेछे पण अं भोजो बागे छे, धुं बागे छे. मकरंतना परिष्टामा पण आयेछे पण अं (आत्माना) आनंद भागण दु ग्य बागे छे. अतिष्ठत भगवान आनंदक; अनेने अनुत्तम-न्याय; अनी भागण जाणो स्वातं उत्तर धुं दु हुण बागे. आख... आख...! आ भागी तो भूंतो, प्रमु!

अर्थिय धुं कडे जे: धुं भेकरो कंजे नथी. पण भेकरना विषयने ज्ञानावाणे धुं. भेक छे- शोक गुजारत्व आहे. तो धुं तेने ज्ञानावाणे धुं, कंजे नथी. त्या सुधी तो आपो आयेछे. अर्थ धुं भोल बता ने... शोक ज्ञानां, शोक मार्गाच्याना अने शोक गुजारत्व. गुजारत्व,
Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री नियमसार गाथा ७३-७४ – १७१
छ! अे जीज़नू ज्ञान अंदरमा घेय छाई छाड़ने, ध्यानमा अनुमोद ध्यान त्वारेमोक्षमार्ग प्राप्त ध्यान।
तो अे मोक्षमार्गिनो पत्रस्यन्ता भेजनो पत्ता कुं कर्ता नथी। अे तो आयी गरु ओंमा। निश्चय
(मोक्षमार्ग) हो! यव्यास तो खै अवभे। समझौ अछ?
अर्थमा लीपु “शरीर संस्कारी” – अटली भाषा ओली पुस्ती करी: “मारा शरीर संस्कारी बालादि अवस्था” [अोली आजु (पढेला अग भाषा-युवान आद्यय भेजो) मा त्याने अे ओएक शरीर संस्कारी अवस्था नथी।] “भेदने करतो नथी।” युवान (आदि) अवस्थाने कुं करतो नथी; अे तो जद्दी, परमालूजी, पुढेलाने अे समये युवान (आदि) अवस्था छ अने कुं करतो नथी,
कुं करावतो नथी, कुं करावतो छ अने कर्त्तानो अनुमोद्द नथी। (अम) अर बील छ।
सहज चैत्यना विलासव्रुप, स्थानांक चैत्यना विलासव्रुप-प्रियानी स्त्री, हो! चैत्यना विलासव्रुप अवस्था... अमें। कुं तो स्थानांक चैत्यना छ्रुप आनन्दनामू नाू प्रमु; अना विलासने ज भावु छ। अेवा आत्मने ज (भावु छ)। ‘ज’ शब्द पुरो छ। अे सायक
जे आनां-चैतन्यविलासव्रुप भगवान आत्मा, नित्यानां प्रभु-अनेने (ज) कुं भावना कुं छ।
बालादि-युवान अवस्था अनेक प्रकारी दोषे। शरीर नीरो बेहो तो घर्स ठह ठह ने।
अम नथी। चुछाउ उप्मेश आवे। चेताशामा ज्ञाने अने आपडे ‘भावातु’ गाथा-१२३मा
आये छः: “कुं नुमे! ज्ञान सुधी तने ज्ञा (–युवानस्य) न आये अने ज्ञान सुधी रोगपुणी
अन्तर तारी हेढ़ी हुदूने बसम न कि अने ज्ञान सुधी छिदौयतन भाव न घटे त्याने सुधी
पोतानु लिज करे हो।” तेम मरे “भावातु” गाथा-९७मा कुं हुदूनार्थ कुं छः जे: “अक
बनुमान शरीरां अने अकं तसुमां २४-२५ रोग बेहो छ त्याने कुं बाकी छे बेहो आपा
शरीरां देटारो बेहो चोगी।” प्रभु। आ शरीर तो बेहदनी मूर्ति छ अने भगवानात्मा
अतिनंद आनन्दी मूर्ति छ।
अर्थ पे के छः: अे शरीरसंस्कारी अवस्थामें ठुं करतो नथी, कुं करावतो नथी। कुं तो
“सहज चैत्य-विलासव्रुप आत्माने ज भावु छ।” ‘आत्माने ज’ –अकं त ठह छः छः;
अकं त जः छ। कुं भेडनी भावना करतो नथी। भेड हो, पल्ला मारी भावना तो आ अकं जः छ। आहार...
ण! परमानन्दनो नाथ प्रभु महा प्रभु चैत्य-विलासव्रुपी मडं पूरा 
वरेल; अमें अकारातनी मारी भावना हो। आहार...
ण! अे परमाशयानित ने अे परमार्थ-प्रतिकम्बा छः। समझौ अचूक?
(के), “कुं आदिदेवुप भाववनागा भेजनो करतो नथी,” पल्ला (आगवणा
ओलमां) पल्ला भावक्ष मार्धो पल्ला त्याने आयार आवर्ते। अर्थमा तो राग, देव, 
पुल्ला, पुणा, पुणा, दान, प्रत, पुणा आदिना प्लाब्य, व्यवहारलयनामा प्लाब्य अे “आदिदेवुप
(भेजुप) भाववनागा भेजनो करतो नथी।” आवर्त हो! व्यवहारलयनामों जे राग छ अे
भावक्ष हो, अे भाववना भेजनो करतो नथी। भेड छ हो; मूलने पल्ला राग आये छ ने...
तो अे (लेंटी) छ हो; पल्ला कुं तेने करतो नथी। आदिदेवुप भाववनागा भेजनो करतो
नथी, करावतो नथी अने अनुमोद्द नथी। आहार...
ण! कुं भेदरलन्त्र करतो बेहो तो अने
मई अनुमोदन नथी。
‘समस्तार’ पुल्ला-पुल्ला अविधार (गाथा-१४९) मां आयु ने। के: पुल्ला कुशीले हो,
सुधील नथी। (अे) संसारां दानव करे छे ने, प्रभु! अे ज पोते संसार छ अे राग भाव;

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
वर्सन 001: राजेश के टिकट से संपर्क करें http://www.AtmaDharma.com for updates

172 - प्रवचन नवनीत: भाग-2
अनेक बली धर्मी रीते धर्मी? अभम बेहदनाम धरी राग है तो तीन बली धर्मी रीते धर्मी?
अ तो संसार छ। बदु वात आदी, भाद्र! मार्ज बादु! (अति गडन है).

पूर्णांकनो नाथ निदेश शुद्ध शैतंयन पढ़तो है, अे क्रममां तो, रागनो-निमित्तो य संबंध नभी। रागनो संबंध तो अंड समयनी पर्यायमां हैं, वस्तुमां नभी। वस्तुमां पर्याय नभी, तो पढ़ी रागनो संबंध क्यांधी आयो? समझानो काँट? आदी वातो है।

शेतांबर कहे छे के: पंडर भें तिझा वात। अंडीयां कहे छे के: नन्दनपुँग्र होते तो ज सिद्धपुँग्र वात्य। अनाथी (नन्दनपुँग्र विषमपुँग्र) न वात्य। पँड्र (सिद्धपुँग्र) होते तो अने अं (नन्दन) ज दसा ही। समझानो काँट? जेने आराधिया होते तीनेवण्डन ही, अने नन्द ज दसा होत; छता नन्दनाथी मुखि वात्य, अंड नभी। अंडी नन्द दझाथी मुखि न वात्य भोटे बीढ़ (अंडे) वर्तसवत्त पँढ्र आधस्थभा है। तो पढ़े (शेतांबर) पंडर भें तिझा कहे छे; गृहस्थाश्रमभा वेषमां पँढ्र मुखि पांढ्र, केंद्र पांढ्र-मधुधुधी माता (वजेरे। वर्तसवत्त पँढ्र पांढ्र पछे छे अभम माने है)

अद्वा: - वस्त्र तो पर है; पर शु आदु आये?

समाधान: पर ध्यान नही है; पढ़ा वस्त्र लेवानो विकल्प अं नुक्षातन छ। वात साथी! वस्त्र लेवानो जे विकल्प है अं ज महापाप बने है त्या आदित्त शेतु ज नभी।

अंक वता आदित्त। दीक्षा दीवीदी कती शेतांबर। अंकी (सोनरक्षम) शोभां भें अंडे त्या शेतांबर महिद्रामा रहा। पढ़ा अंकी व्याख्यात संभाषण साधारां साधार-व्योर आये। पढ़ी सांभाजी अंड आविने शेतु: महरवक्त। मार्ज तो आ ज साथी है। अभम शु रक्षमा? ’ में शेतु हे: 'बादह! अंके तो 'शु रक्षमा ' अंकेक कटी नभी।’ (अंक हे) ‘तमेदी (दीवीदी दीवी) छही दो ते आदी अंकी नभी , अंकू अंकी तो नभी। वें वार अंड आवा वाता। साधु वता बौशियार भागणा। पांचत वाला। ते पढ़ी अंकी वार महिद्रा रहा वाता त्या। अंकीयां सांभणा आये। अने थुँ हे: 'वात तो आ नधी लांगे है, मार्ज तो (साथी) भा है। पढ़ा थुँ अं अंकी शु? ’ (पढ़ा) अंकी शेतांबर राब्दुँ, तेने माथे बोली, अं अंकी नभी। (शेता:) शेता शेतांबर के स्थानकवासी साधु सांभणे अने अंके व्यात पढ़ा आये। (उदर:) अंकी वज रागादिव है। (अभमी भूमिकामा अंको वार रक्षमा)। पढ़ा मुनने न होे। अंकी तो अंक शेतु हे: जेने साधुपुँग्र अर्थत जे साथा मूनन है, जेने अंतर्मुहि मांग जाने वार छह-सातमु गुणधर्मात आये है अं मूनन- ‘अंकये बधारां आ धम करवुँ है,’ आ धममा मारो आविजर है' अंके प्रत्योगो नभी लेता। साथा संत भाविंगी जेने छह-सातमु गुणधर्मात (अंक अंतर्मुहि मांग) जाने वार आये है अंकये मुनने-आ धम मारो करवुँ है अंके धमा है, ज्ञाय सुधी (शारीर) वाते त्या सुधी भु बोली उद्र है, अंके बोली मुनने-कटी नभी। आढ़ा... आ! धन्य मुनिपुँग्र!! धन्य आदित्त!! आढ़ा... आ! आदित्त विना मुखि नभी। अंकया समायक-सानथी शेतांबर शेतांबर मुखि शेतांबर शेतांबर न शेता। (भोक्ष) मारो शुद्ध चढ़ गयो पढ़ा अंडर आदित्त-पूर्णि समाप्ता विना मुखि शेतांबर न शेता। ज्ञाय सुधी मुनिपुँग्र नभी। आदित्त तो परमेश्वरपूँ छ। अंतर्मां धर्म, धर्मि, जामुँ, अत्तियां आनंदमु भोजन उदसरे वेदुँ (अं आदित्त है)।
श्री नियमसार गाथा ७३-८९ - १३३

हेक बोला नथी: 'आ फहम तमामी करूँ, त्याचु ऊँची अमें ध्यान लावीजुँ; अमें आ भासाळज्ञानां, दुःख उदवापाभां, इलावां, - अ हेक आम मूलने तोथां नथी. आहाँ.. वा! ज्यां नातीमज्ञ आंदनों मोही व्यवाय प्रागत थयो न अने ते पssa श्रीन्त अंते गहने वात, प्रमुं! अं तो परमेश्वरपछ छ (अ प्रांगण्यों छी)) (जोो: 'प्रवचनसार गाथा: २०४ नी टीकानी कृत्तियो) अविक्रम=आम माधे बेळुँ ते; द्रामां जेलावुँ ते; द्रामनी व्यवस्था. संस्कृत टीकाशी अमें छी: "ममलकर्मकमपरिणामस्य।" अविक्रम,' अंते शहद भूस पान्यां छी। "(ममत्तना अनेक अविक्रमना) परिक्रमा, शुभाशुमं उपरजत उपारोज अने तप्तवृक्त तथाविध योगनी अशुद्धी युक्तपण्य सा तथा परद्विय सापेक्षणुण्य सनमानी अने नाजुने) अभावं खोश छ।" अंते अपणे अंतु बेळुँ अविक्रम. आम माधे बेळुँ. हेक प्लस संश्चारुं (आम अर्थात्) दुःख उदवापाभा के द्वा पाण्यानी के पांजाराजूनुं आम तु करीश के आ निशाणुं शुज करवी ते अभामा आम ते तु ज्योरके व्यवस्था, दुःख जेलावस्या के प्लस उदवापाभी-अः (कक्का) आम मूलने तोथां नथी. प्रमुं! आमां ते हेक विकसस आम के नयीं के, बाहाँ! आ अभामां बाहाँ छ अंते शातस्य गमणे ते दीवते के प्लस आपणे अने मान्यो-अंतु अंते तो नथी. अंते तो आण्स्माणां हेक तो (मानुँ). अंतेीयों के छी: "तु रागातिक्षुन भावकामों भेजोने करतो नथी।" आहाँ... वा... वा! कारतो नथी. आळेहों! अभामां उपेश्वामा आत्ये के पंथभास्त अंगीकार करो-अं आते. गमणे अं तो आज्ञावा मारे. गमणे निष्कामवा तो भेजोने करानार प्लस नथी अने के छी अनो तु अनुमोक प्लस नथी अने के छी अनो तु अनुमोक प्लस नथी अने के छी अनो तु अनुमोक प्लस नथी अने के छी अनो तु अनुमोक प्लस नथी. ["सड़क चेतन्यना विलासस्वरूप आताने ज बापुं छ।"] अंतु नाम परमार्थ-प्रतिकर्म करेमानामा आत्ये छ. परमार्थप्रतिकर्म अर्थात् निष्क्रमातिरितैनों आळें पेटाबेडं. समाजें छांहँ।

अंते छो हेक: "तु भावकामक शार कसेयोने करतो नथी।" शार कनाये के छी: भावकामस्वरूप छे. ‘तु’ तो अंगीकार ठह गमणे तोदे (देष्क ठहे के प्लस) अमें नथी! अंते परती ठहे प्लस गमणे. तु मारी शीर्ष (ने तु बापुं छुं). मारी शीर्ष परती बितरे छ. बाहा भेजा ठह गमणे अमें नथी. समशां हांखँ? त्यावे, 'तु' अं तु मां अमिनाना नथी. ‘तु’ मां आतजनी-पोतानी मित्रता बतावे छे. 'मारे आतमा...' 'तु'... अमें 'तु' कडे छे. तु भावकामक शार कसायोने करतो नथी. कहां-कहां अते देयसमा बाजा छ अने माता-लोक आत्मि अं तु रामां बाजा छे. अं हरेय (कनाये) ने तु करतो नथी, कारतो नथी, के छे अनो तु ज्योर नथी अने अनुमोक प्लस नथी. "सड़क चेतन्यना विलासस्वरूप आताने ज बापुं छ।" आहाँ... वा! अभामां भेजोने नथी अंते के छी. प्लस वै आते छे; प्लस ते तरकारी मारी आताना नथी. आहाँ... वा! "तु भावकामक शार कसायोने करतो नथी, सड़क चेतन्यना विलासस्वरूप आतमा (ने ज बापुं छुं)." चेतन्यनो विलास भागाना, अतीत्र स्मरणांथि अंठेर खोटधह बाजों छे, बाजाव हरे छे. आहाँ... वा... अंटे चेतन रत्न, अंटे अंटे गुजात्सा अंटे आै गुजू रतनथि जरूर्त्भूमि बाजों छे. अंनी तु भावणा ठहे छुं. व्यवहारत्नयनी नथी अने निश्चयरतनयना भेजोने प्लस (भावणा) नथी. जीवी पात बापुं, बापुं! समशां हांखँ? अं निश्चयरतनय-शासित समिति (आति) अं भागाकामानामा आती गमणे.

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
"આ પ્રમાણ પત્રપત્રનો દ્વારા " શબ્દ નહીં હોય! ભાવની અધીન તે શબ્દ દ્વારા કહ્ના છે ને.. પત્રપત્રનો દ્વારા-"જેમણે સમસત વિષયના અહેલની ચિતાને છોડી છે." -રાજ્યની સંઘટત તો દીક્ષિત; પણ શાયીદાલીણ-પચ્છાણી ચિતાના પત્ર છોડવી છે. આ પ્રમાણ પત્રપત્રનો દ્વારા સમસત વિષયો અટકે કે પથ્ય, રાજ આદે વિષયના અહેલની ચિતાને છોડવી છે. "અને નિઃદ્રાગુણગૃહના સ્વભાવમાં ચિતાને અકેર કહ્યું છે"-નિઃદ્રાગુણગૃહના અને નિઃદ્રાગુણગૃહના ચિતાને હું છે. અને એના આસપદીય ચિહ્નીલી નિયમ-નિર્દેશનીય, એમાં શાનતીઓ અકેરતા કરી છે. અટકે કે પથ્ય અલેક કેરી હિવો છે, એમ કહેવું છે. શાયદાલીણ, પચ્છાણી અલેક કરે છે; એમની પણ ચિતા છોડવી છે. પણ અહેલીઓ જ દ્રામ છે લડિયારી, ગુજર છે જ લડિયારી- અં તો અકેર છે; એ બે બાકી [ સંબંધ, સંભિત, સામગ્રી અને પ્રમોત્સાહનો ] ભેરે છે, પણ પ્રક્રિયામાં નદી. તે હાલાકો અનેર ધ્યાનમાં આધર લખાણે જ પરિસ્થિત ઉપલબ્ધ છે પણ પથ્ય; એ પચ્છાણીને-પ્રમોત્સાહને-અકેર કરી છે. સમાજ છે કદાચ? "નિઃદ્રાગુણગૃહના સ્વભાવમાં ચિતાને અર્થતક શાનતને અકેર કહ્યું છે." પરિપૂર્ણ પથ્ય અને અકેર છે. અં અધાર બનાવું છે, ધ્વાન જ અં અધાર બનાવો છે, એમાં અકેર થયો છે.

176 - प्रवचन नवमीत: भाग-2
मनुष्यों के द्वारा नहीं किया गया है। तो अगर आप सामान्य लोगी अक्षरार्थी पर्याय क्या आगे चले हों? उत्पाद-व्यय (उपयोग) मात्र तो संसारीन विचित्रज्ञाता छो, भोक्तारों अपनी शुद्धज्ञाता छो; अन्य माननीय संपूर्ण शुद्धज्ञाता छो। अने तो पहले बैठ पड़ी गये, अक्षरता न रही। -आ वात, 'नियमसार' गाथा: 1 वी 18 सुधीन्ताय ज्ञात्र (२००२ मा या ते प्रणालित थाय है) अभी शी छ। अने मोडे नक्शे बनाये बनाये। (ते पने खे मोडा पिणाने) पूजाय, पढ़ा ठार भवजना नहीं। तो बीजा (लीडी) शुरु मसारी? अबवे नक्शे मूळी शी। त्यां 'कारणपर्यंत' शुपने बनाये बनाये। जेनु द्वारा व्यय है निकाला, अनो गुण द्वारा व्यय है अभी, अलेली (रमणीय सब्द आत्म): यह कृत्या अक्षरर्थी (कारणपर्यंत है)। पढ़ा अने तो उपाद-व्ययज्ञाता पर्याय नहीं। बालो सूक्ष्म (विषय) है, बात! उत्पाद-व्यय (पर्याय) तो विद्वंत है, अपूर्ण शुद्धता छो, पूर्ण शुद्धता है-अभी बेहतर, अक्षरता आगे नहीं। तो आत्मा मात्र द्वारा-गुणी अक्षरता (उप) पर्यायविना पूर्ण द्वारा व्यय है रीत बोय? तो 'नियमसार' १९ मी आत्मा मात्र द्वारा: (अभी) जे अच्छे दिमो यो दिमोय, अनी जे सपटी अक्षरर्थी है। तेम अने जे अभी सामान्य द्वारा निविदा ते तेमा, अर्थात आ सामान्य द्वारा-गुण छो तेमा, अभी 'कारणपर्यंत' अक्षरर्थी सपटी है। (पढ़ा) (अभी) उत्पाद-व्यय (उप) नहीं। जीवी वात है। समाजु ठार? बाह शीतावसाहे दीवु है देव: द्वारा, गुणाने पर्यायी आत्मा अक्षर थुे, अ कारणपर्यंत। (पढ़ा अने अर्थ अर्थी बात बात नहीं, केमके) 'अभी अक्षर' जे अने तो नवी (उपादत्रु) पर्याय वात। अने अलेली (कारणपर्यंत) जे तिवान थे द्वारा-गुण-पर्याय धारावादी, उत्पाद-व्यय विनायी है।

"द्वारापर्यंतार्थ स्वतंत्रमा" अनु (अभीत्र) स्वतंत्र है अभी, अर्थ ने अने अभी आ अर्थ है अत्यारे ते- भेदवादी (द्वारा-गुण, पर्यायवस्तु आत्मा) उत्पाद-व्ययविना। (शोरक) जनानी पर्याय कु मी काष्ट है। (उतर) जनानी पर्यायही अर्थ जे जे जन-अन्तनी पर्याय है अभी अक्षरछ। अनो अर्थ जे अने जे अभी पर्याय अक्षर वात अने पर्याय, स्वतंत्रमा अक्षर वात।

जिसासा: पांच बायोमा-पर्यायविने-अभी भाल क्वेयात्य?
समाधान: पर्यायविना आ पर्याय शालिक, उपशम, बायोपर्याय-निर्माणपर्याय है तेने।

जिसासा: इतनी पर्याय भेंगी वात तो आ भाल धुम द्वारा?
समाधान: यो अभी अर्थ शुं प्रभावा केहाल्तु नहीं। आ तो शालिक, बायोपर्याय, (उपशम) पर्यायनी अर्थी वात है। अने जे कारणपर्यंत है जे तो पालिकामिकवानी है। अर्थी! बाहे कम है अक्षर। द्वारा पालिकामिकवान है। गुण पालिकामिकवान अने अलेली ('नियमसार' १७ मी आत्मा) कारणपर्यंत है जे ते पालिकामिकवान है। बालो सुलासो ते दी' २००२ न आत्मा क्वो नहीं। अभी (लीडी सब्द 'नियमसार' प्रवचनना अर्थमा) है।

अर्थीयां जे अंकावत अंकावत है, अने पर्यायमां अंकावत वात है। अने पर्याय तो उपशम, बायोपर्याय अने शालिक क्वेयात्यां आमे है। उदय तो नहीं। पाकमा 'नि' शब्द पुछो छ ने। "स्वद्वारापर्यंतार्थ स्वतंत्रमा द्वारापर्यंत हेतु" खाली बीजुँ पढ़ है: निज द्वारापर्यंतार्थ स्वतंत्रमा 'हेतु', समाजु ठार?

अने वात जी लोंटें अक्षर पठे: 'कारणपर्यंत' अने वात आत्मी नहीं ने...! आत्मी
श्री नियमसार कोप १०८ – १०७

नथी–द्वांशय है नथी। दार्शनिकत्व के बाद वर्तमान भवानी गाथा ‘नियमसार’ मां ज लीली है। अन्य अन्य अर्थ पूर्ण स्पर्श द्वारा है। वहां ज लीली है। गौमण्डी गाथा... प्रथम वर्तमान लिखी है। अर्थां मोक्षमार्ग है ने...! “आ ‘नियमसार’ में मारी भावना मारे बनायु है” – अन्य हेविक्कारायण लुाँ। तो साधारण सार प्रसून अन्य नामी है। जीवी वात है, प्रभु।! प्रथम गाथाएं है स्पष्ट: “दार्शनिकत्व” अं प्रभु हैं। क्षेत्र प्रभु प्रभु यू खुद चली है। समुद्र अं प्रभु हैं, अन्नु जर अत्यं चली हैं, अनेन अन्नी नयो उपर अत्यं चली है। अनेन आयो उपर पावीनो के लोक आयो है अलोकतो। (तें) अं क्षेत्र, उपशम, बखोश्चम, बाझिक, अं परी कठी उपरनो लोक है। आ तो जीवी वात है, प्रभु। बधी वातो समझी पड़ी, प्रभु।! सू प्रभु? पृथ्वी अत्यं आ वात वालती नथी। अटटे अंक्ष्ठ मृदनवाली अनेन समझी (जरी अवधी हैं)। ‘दार्शनिकत्व’ द्वनु है, अं प्रभु वालती नथी। जाँ ‘दार्शनिकत्व द्वनु’ अं प्रभु कहुं? पृथ्वी कहुं अं (तिं) प्रभु? (श्रोता:) आ पृथ्वी द्वनुप्रभु कहें? (उत्तर:) द्वनुप्रभु अं कहें? कहें ने...! कठी वातो बढ़ गई। (दार्शनिकत्व अं प्रभु हैं।) अनेन उपशम, बखोश्चम, बाझिक पृथ्वी प्रभु हैं (पृथ्वी अं उपवास्तपुर हैं)। पृथ्वी प्रभु सू प्रभु हैं? द्वनु-प्रभु हैं अं पारिशालिक भाव हैं। अनेन अं उपशम, बखोश्चम, बाझिकनवाली पृथ्वी हैं ते प्रमाण मोक्षमार्ग–प्रभु हैं। (श्रोता:) आ पृथ्वी कहू गईः? (उत्तर:) आ नामां मे गमे ते– उपशम श्वेत, बखोश्चम श्वेत, बाझिक श्वेत।

अर्थ: देक्षे हैं: निज (द्वनुपाश्चायविना) स्वप्नमा चित आत्म ज्ञान्य अंत्र अंत्र है। साधारण मायाने (दार्शनिकत्वी वात मा) न एसे ने..! मेले पृथ्वीनो अर्थ अत्यं अंत्र अंत्र हैं। बाझिक माया (दार्शनिकत्वी वात) तो कड़त पर ज्ञान नै, भारे कड़त परे। लोग पृथ्वी चोर संप्रदायमा वालती नथी। क्षेत्रां तो जः नथी। अनेन हिंदुस्तान पृथ्वी अं प्रथम गाथा (नियमसार) स्पर्श बीशे (आ वात) अं प्रभु ऊपर है। समझां: कहूँ? प्रथम गाथाएं पृथ्वी प्रभु हैं। “स्वारापेश्वर निर्पेशः” अंवो मृप पात हैं। कहूँ प्रथम गाथा:

पनारायतिरित्युपुष्याया ते जिवात्मिद भणिदा।
कम्मोपादित्विज्ञप्यपञ्जया ते सहाविमिद भणिदा।

जूहो! अं (टीकामा) नीचे है: दार्शनिकत्वयान प्रथम अंस्तुदुर्बन्धयान। जूहो टीका: “त्याः, स्वभावपत्ति अं विभावपत्ति अं बधे प्रस्तुत स्वभावपत्ति अं प्राधरे कठीवामा आये हैं: दार्शनिकत्वयान अंस्तुदुर्बन्धयान।” कहे दार्शनिकत्वयान दोहा? तो “अर्थे संक्षुदुर्बन्धिवल्ल्य, अनाडि–अनंत, अनूर्त, अतिनिर्देशव्यथायणो अं शुद्ध अंगां संक्षुद–संक्षुदर्से–संक्षुदर्से–प्रत्यक्षद्विवीर्तः संक्षुद् अंतः प्रवृत्ति प्रावधानारिति– [उद्स्वर, उपवधान, बखोश्चम, बाझिकनवाली नथी।] (तेनी अंतः तन्मयसे केशी जे पृथ्वी अंवी पारिशालिकनवाली परिशालि) ते जः दार्शनिकत्वयान है।” पृथ्वी अं अवधार चालते ज्ञात त्यारे बधी दशी आदि आये। आ तो अर्थां नामपुरं कठय परे हैं, आ तो जः अर्थां निर्माणयान प्रगट्त हैं अं लेवी हैं। अनेन ते तो अप्रगट छे-दार्शनिकत्वयान ‘द्वनु’ हैं। अनाडि–अनंत–द्वनु–प्रभु (द्वनु हैं ते) जेसूः आ...
प्रवचन ता. १८-२-७८

‘नियमसार’ कविता-१०८ शाले के ने! “आ प्रभाकर पंजाबी द्वारा (अठे पांच गाथाओना भाव द्वारा) जेने समस्त विषयोना ब्रह्माणि चिन्तने छोटे छोटे”- शुरू करे छे? जे आ गुजरात, मार्गाधारण (अने ज्ञान संस्कृति) ना बेडना प्रकार पडे छ अथा बेडनी सिरे जेने चिता छोटी प्रेमी छ, तेनु या छोटी छिंदु छे. आत... छ! आवी बाव छे. भगवानानाथ, पुरुषों-प्रवृत्त, अनंतगुणोंनि आपी रत्नानि अबेत; अथाही विदुह या, निमित्त अने बेड़े; अती पांच जेने चिता छोटी प्रेमी छे अठे के अने तरात या छोटी छिंदु छे “अने निज द्विगुणपरीक्षा स्वतंत्रमा” - द्विगुणपरीक्षा अे बाधी विचारवाद आति (अे) पर छे अने छोटी, निज द्विगुणपरीक्षा जे पोतातु द्वै अनंत गुणसंपूर्ण, अना जे गुणो, अना जे अठे अथा बाधी-अना स्वतंत्रमा “चिनतने अकाश छृः छृः”. आता... छ! जे आ यात्रकाहार परमान्यवाप, अना द्वै, गुण अने निष्परीक्षा अना अकाश बघो छे (अठे के) अंतर्यवाप मानवान पृथवी-प्रवृत्त, अना द्वै, गुण अने निष्परीक्षा जे वीण-अकाश यथो; राजनामा नही अने बेड़ना नही; “ते ब्रह्म ज्ञान”. ते ताक ज्ञान छ. ते धर्मे माधे लाख छे अने भोकने माधे पाने ते ताक छे. ते ब्रह्म ज्ञान छे ने...!

“निज भावी बिन्दु” - शुरू के? ‘निज भावी बिन्दु’ (अठे के) निज द्विगुणपरीक्षा-ने द्वै वस्तु; अना गुण; अने अना अकाश; अने भाव अने बाधी निज भाव छे. [भाव सर्व भाव, अथाही लिन] छ। भाव अनो सूक्ष्म ! (अनो) अनंतकानो अज्ञात नथी. परायमा-अज्ञामा ज अनु पोषणु अने तूच रही छे. अथाही बिन्दु भवानि, निज भावस्वरूप; अने द्वै भाव क्षेत्राप, गुणा (भाव) क्षेत्राप अने निष्परीक्षा (-परीक्षा) जे बाव भाव (क्षेत्राप); जे निज भावी बिन्दु “अन्या रक्षण विचारामा छोटी अल्प कालमा उत्तर गायत्रे मुक्तिने प्राप्त करे छे.”

अथाहो ते अने बाधा छे छोटी अकाश! देश देश के पंथम कालमा मुक्ति नथी ने आटी! बधी बाधी बाधी बाधी पंथम कालमा? अम पाण करे छे अयाहे: अताहे मोक्ष नथी ने (तो) मोक्ष (नी बाधा) अहा आटे (माठे) करे छे आ! मुक्तिना हूँ संसार जगतने मुक्ति परमाणुरामा भातवे छे! अने मुक्तस्वरूप छे ते भावामा अकाशाता, अठे मुक्ति तो अन्या परीक्षामा पाण बाधा
श्री नियमसार श्वेत १०८ – १०८

गह. – शुं कहुं? बन्दवानान्तम, द्वय मुक्तस्वरूप छ; पवित्रामण गमे तेजसी विकृत-अविकृत
dशानो वीती गह पछ तेना द्रम्यां उदाहरण अपूर्वता के अधुना के पंद व्याय थयो नथी.

अेंगु जे द्रय, वस्तु; तेना गुहो; अने पवित्रामण; अेंगु जे निज प्लाव; अेंगु निज भावां
रदीने जेहे विकल्पना भेदान्त विवासने छोडया छ, तेनी अल्प आण्यां, [ (नये आण्यां पूर्ण
mुक्त न केश पछ,) मुक्त चेह जोहानी जे. अल्प आण्य वीशो ने... आयु... श! निज
भाव अेंगु: द्रयने भाव द्रक्षे, गुहने भाव द्रक्षे, अने पवित्रामणे भाव भाव द्रक्षे. अरे! विदारीभाव
शेष अने पछ भाव द्रक्षे, पछ अने आर्यां लेवो नथी. आर्यां तो त्रिकोणी शायक, वैत्तिक्रिया, नविनातने पिंद प्रभु ते निज द्रय-गुहा; अने तेने आश्रय वीश, तेने बझे
ताने जे शुद्धरतिक्ष; अेंगु निज भावां जे लीन छे. अने (ते) निज भावां भिगने छोडे छे;
अें दुवे छे. (श्रीतात.) जा भिगने छोडे छे? (उतः:) वशने छोडे छे. सक्त विवाहने छोडे
छे अेंगु दे भेंतने (छोडे छे). भेंते छे, भें-विकृत-रागाहि सर्वने छीनी अल्प आण्यां
(मुक्तीने पामे छे). “अेंगु सक्त विवाह.” केशु छ ने...? भेंतने नथी केशु अर्थी. भेंते तो
(गुमस्तानहिमा) आची गयो. आर्यां तो आ आलु (निज द्रय-गुहा आयुं) मां जे लीन तान
छे ते सक्त विवाहने छीनी अल्प आण्यां मुक्तने प्राप्त करे छे. अ दिया अनंसी छे, रात
ने बँते ने वटिने जे पृथु, अे तो राज छे. (केशु) वम रिहू. अे तो बल्कं दायण छे.
पछ अर्थी तो जेने शान, दर्शन, आर्यण भेंते पड़ा, अेंगु भेंतोतू पछ जेने दायण छे;
अने भेंतने आश्रय तान अनल लव्य लव्य छे छोडे छे. अेंगु सक्त विवाह, निज भावां
विन्त्र छे; अने छीने, अल्प आण्यां मुक्तने प्राप्त करे छे. समझुं जंट काद?

‘समयसार’ कृष्ण-२४० माणे ने...! “एने मोक्षपर्यो” — मोक्षपंथ अंक जे छे. अंतर
आन्तर्युप संग्राम पृथ्वीतिन्यां अंकत ठयुं, अंक ज मोक्षपंथ छे; अनथी अल्प आण्यां
(मुक्तिने प्राप्त करे छे). अेंगु जयसेनानार्थी संस्कृत टीकांमा लव्य छे के: डारण के, अं प्रभु
प्ड़ छे अेंगु अने ग्रीषे भये मुक्त तान जे. समझुं जंट काद?

[‘नियमसार’ गाढा-५० नी टीका पछी उलट] ‘समयसार’ कृष्ण-२८८माणे
“मोक्षार्थी” आयुं छे ने...! के: [ “जेमना नित्याँ चरित उदार (—उदार, उद्य, उद्देश्य) के
अेंगु मोक्षार्थीं अं सिद्धांतनु सेवन करो के— हुं तो शुद्ध शैतंत्रिक अंक परम ज्योति जे
सक्त छूँ; अने आ जे भिन्न लव्यअव्यने विविध प्रकारता भयो प्राप्त तान छे ते ने जंट,
एरण के ते बाधाने परद्वृत छे.” ] जेमना नित्याँ चरित अेंगु जे जेमना शानतू
आर्यण अर्थात आचार्यां आर्यण-संग्राम पृथ्वी-निविवाह अं आतमा, अेंगु आर्यण-उदार
छे, उदार छे, उद्य छे, उद्देश्य छे, अेंगु मोक्षार्थीं अर्थात मोक्ष अर्थी मुमुशुणो-योगीं
(आ सिद्धांतनु सेवन करो). ‘मोक्षार्थीं नो अर्थ वीशी छे ‘योगीं’ के जेने अंतर्युपमां
योग जेरो छे, अंत भयुणुने संस्कृत टीकांमा योगी पछ ठयुं छे. अेंगु पृथ्वी-निविवाह
मुक्तिं, अें जे अभिवादी अेंगु अं वर्तमान-माणे पछ मोक्ष अर्थी अेंगु अेंगु जे पृथ्वी-निविवाह
तेने जेहे अर्थीं ठोके अनुभव वीशी छे अने मोक्षने अर्थी अर्थात जे जेहे छे के आ (आतमा
आन्तर्युप छे अें जे स्वाद (अनुभवां) आचार्यो छे अने पूर्ण मुक्तिनी
(पृथ्वी-निविवाह) भवना तापे छे, अने पूर्ण मुक्तने अर्थी ठेवामा आयुं छे. —अें पछ अेंगु
ठेकाहे आयुं छे. ‘मोक्षना अर्थी’ नो अर्थ
180 - प्रवचन नव-चतुः: भाग-२
अं क्षेत्र छः: के पूर्व आदर्शों उपादियों, अतेरो के परम्परागत आदर्शंका अनुपस्थितमां, पूर्वं
आदर्शंके उपादियों गर्दे छः; अनेक अम्र अर्थी मोक्षमथील करीं छी. जने रा अने पर्याप्तथेनु
पूर्व वक्त नरी, पूर्व पूर्व आदर्शों (के) कामी छी. जेणे परम्परागत आदर्श ज्ञान के, परम्परागतमां
आदर्शंके अनुपस्थितम छे, अव्वा के मोक्षमथील मोक्षने माते, पूर्वं आदर्शं गाते प्रयोग-पुनर्खरी करे
छे. तेना आ स्थिरतुः सेवन करो. स्थिरत अतेरो वस्तुः स्वरूपं. आ स्थिरत सेवनो; अतेरो के
आ वस्तुः स्वरूपं छे तेना अंकाः वथुः. समाजः के घर? आवी वातो!! कवे र्यां (सांभाव्या य मण्डली नरी). माक्ष पूर्वान्तस्वरूपं छे; अनेक अर्थी क्याके क्याङः के जने
परम्परागतमां मनृत्यु: परम्परागत-ज्ञान में (आत्मा) नुं सम्प्रकाष्ठ (अर्थीः) आदर्शी
के प्रति तारछ छे अनेक पूर्व आदर्शों जे कामी छी. मोक्ष-परम्परागता नमूना जेणे ज्ञाना छे,
अंतेरो के मुक्तस्वरूप में ज्ञानवात्मका छे अनेक सम्प्रुप्त धारण-सत मुगः नुं पूर्वुः छे तेना
(तरकः) सुभ धरीं-धरीं धरीं, जेणे आदर्शं अरसने बेरणातुः लीडी छे, अनेक मोक्षमथील अतेरो
पूर्वं आदर्शं अविलापी करीं. (पणः) जेणे मोक्षमथी जे आदर्श छे अनेक अंश पशः अध्यायां
आयो नरी तेना आ पूर्वान्तचा अविलापी कड़ दीते केलेअ? अम के छे. समाजं घर? मुक्तस्वरूप-अवज्ञात
पूर्वुः प्रस्रापः अनेक ज्ञान के ज्ञान के, आदर्शो भाक आयो छे, निर्दिष्टम
सम्प्रकाष्ठ वथुः छे, अ ज्ञाने पूर्वान्तन्य अर्थी-मोक्षमथी-क्याङः के. आया... घर! आवी
वस्तुः!! शरतो घरी, ज्ञानवादी घरी!
अं वणुत केल्यूः ज्ञूः नें... “मनित्यु: क्यावण्याने बोलावे छे.” अतेरो के आत्मा
आदर्शचलक छे, अनेक दृष्टि जया सम्प्रुप्त वया अं सम्प्रकाष्ठ, दर्शनी पक्षी सीकी छे. अ विना
बण्या योखना छेन-प्रति करे के पूर्वुः करे ने धन करे ने मठिर बनावे ने क्याङः-वाली माझो बनावे
नें... अं तीर्थी रक्ष करे नें तीर्थीचा धान राणे नें-अं धन विकल्पो छे, (अम) के छे. आयो मार्जी!!
अतीतां करे छे अं: जेणे “चितते अंकाः क्वर्ष छे” ते (साह्जव्या) “सक्ष विभावने
छोरी”- विभाव अर्थी-नार भाव (उद्ध, उस्मादिक) पूर्व विशेष भावपुरुः छे, (अं
सत्रायाने) लक्षमांणी छोरी- “अल्प धारणां मुक्तते प्राप्त करे छे.”
अं पांत रतन! अं अरोख के. अरोखः (दौळा) तो आवी गरयू नें...! उक्त
कृत्यस्थान, उक्त ज्ञात्स्थान, उक्त मार्गाश्लेषन (अं) भरा बेडः कुः नरी. ‘अं कुः नरी’ अतेरो
‘ज्ञा नु मन्नी’ तेना तरकबः व्यक्ती छोरीं ‘कुः ज्ञा नु’ त्या अनेनी धरीं करीं, अंकागतायि,
अल्प धारणां मुक्तते (मापीशी)!” आया... घर!
मोक्षमथी मार्जो तो आ। छे! (लोकी) करे आ पातो करे नें... ज्ञानबाद ने प्रति ने तप
नेकुः सम्प्रकाष्ठचः विनायकव ने धन ने धन ने मठिर ने पूर्वुः ने भक्तिने ने माझो मनाववा ने
माझो-निम्न-बाणधावानी अनुत्थाद्भ्या अं निजः भावः छे अनेकी लित्र (अद्वा सक्षण
विभावने) छोरीं छे के. वाभा तो शुं समजवे? विभावने छोरीने, अर्थातः आ भावव छुं छुं
अं त्या नरी (पणः) स्वरूपमां अंकागताविशेष वध चे अतेरो विभाव उत्पन्न वथत नरी. तो
‘तेने छोरीं’ अम क्याङः आयो छे.
श्री निर्मसार श्योक १०८ - १८२

आख़... खा! आपो मार्ग छ!!! बोखोने नित्यावास जेवुं वागे. शाटक पश्न आ व्यवहारकी (निष्ठ) याथ (अेंम अेंड क्याह नथी तो शुं) दया, धन, प्रत, भक्ति, पृथ्वी, तप, अपवास अेंनाथी शाटक नथी? (माथाँ) तेनाथी तो रह्जनो भाप याथ, (तेपश्न) शुम करे तो. (पश्न जे) अंशमान करे के में आ क्षुं ने... तो ब्रज पाप याथ. बीजने हेम्पावा माटे करे, तो य पाप याथ. हृन्यमाम मारी गणहती धर्मां मावे... अें रीते करे, तो अें पश्न पाप याथ. (पश्न) अेंने (ब्रज खेने) तो बजगाने में गणहती लावे... खे. हुं सिंधी पंडितीनी गणहतीनां मावुं. मारा स्वयंमाण-निज भाव-शी विना (अेंवा स्वव विना) अेंने छीते हुं (सिंधी पंडित्मां) आपी शुं छु. आख़... खा! समाजुं शां? आपो मार्ग बारे आखरो! तेई बोखो-साधु ने-बिवागा विश्वाध करे ने...।

लिखासा: पापांमां विने श्रेयुं अेंटे अेंने शेडन करुं?

समाधान: पापांमुं वेंदन करुं. अेंने पापांमे अेनाख-निर्माणपूर्णाञ्यांमां अेकां अर्थाँ अ गाय. अें वात दाले करी क्षी ने...! निम्नभक्तीनी भक्ति करवी. निम्नवस्मगशजन-लाननी भक्ति, अे तो पाप हे. ‘पापानी भक्ति’ अेंने अर्थ जे, ‘द्रव्यनी भक्ति’ छे अेंने पापानी भक्ति उपनन याथ छे. अेंटे पापानी-भक्ति क्रेवामां आवे छे. ‘निम्नसार’ आयान-१३९: “समंतरणाधरनं जो भरि कुंवन सावान समंगों।” – श्रावक अेंने भुनी बेखने निम्नभक्ती भक्ति के. सम्भवनी भक्ति, सम्भव लाननी भक्ति, सम्भव आर्थिनी भक्ति-अेंने अर्थ ज अे के, वीतारामाव-स्वरामावांमां अेकां छे (अें) स्मगशजल-लान-आर्थिनो अेक भक्ति जे, अेंम. आख़... खा! आपी वातो!!

(स्मगशजन-लान-आर्थिन) सेवाणा. अे ‘सम्भवसार’ १२८ं गाथा. अे तो पापाबी वात करी. छात “लांग पुणा जाण तिकिंचि अपाणं चेव णिचह्यायो”– वाश कवाने पश्न छे तो अड. अे तो पापांहे छे अेंना उपर वस जंता याववार छे, विकलप छे, मलिन छे. राग तो कटी; पश्न तस पापानी-स्मगशजन, लान, आर्थिन-अेंवा भें उपर वश जंता तो अें मलिन छे. अेंने याववारने मलिन क्रेवानो याववार छे. अेंम ‘इवाटी’ मां याद छे. १२८ं गाथाणो श्योक-११ छे अेंमा.

मार्ग तो अपूर्व जळे ने...! पूर्व हे न क्षुं याथ, अेंवं नंदूं करे तो जळे अपूर्व क्रेवाय ने...? अत्याह तो संबंधुं य मुखेल पड़े गुं? अेंम बखुर वात आवे तो अं.... अे निम्नावास छे, अेको निम्न छे, याववारकी ने निमेनती तो लाम मानता नथी! (अेंम बोखो विश्वाध करे). पश्न बाहु! वात तो अेंवी ज छे निमेनत अेंने याववारकी लाम तथो नथी!

प्रश्न: स्मग विवाघणे छेदी अल्या जामांमा – “अचिवार” चे ने...? तो ‘अचिवार’ मां क्षमस्फल पार्वद जुं रुं? ‘क्षमस्फल’ चे ने...! ‘अल्या जामां मुडीने प्राम करे छे’ त्यां ‘क्षमस्फल’ क्षुं रुं?

समाधान: अे ‘क्षमस्फल’ मां जळे ‘अचिवार’ आयुं. आपो केंद्रे भक्तिने साथी हे अेंने अेंना क्षमस्फल-अल्या जामांजे जळे याथे; अेंम आयुं. समजासुं छां! आमा! खा! बदो केर. ‘अचिवार’ आवे तो त्यां अेंम के जुमो! अल्या जामां याथे, क्षदो जी जळे जळे याथे छे अेंम उयां आयुं अर्थाँमा? पश्न हे ‘अल्या जामां याथे’ अे क्षद अपेक्षामो रुंहुं? के: केंद्रे आत्मा-द्रव्याना आधारमे क्षमस्फल पापांमो निर्जी धुं छे अेंने यावना आधारमे श्यां अेंने रमणमा।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates
हार - प्रवचन नव-पत्रत: भाग-र

लीटी करी कहे अं पस्यां अल्प काल्यां जे केवलकान लेशे अन्यी अभार। पास्यमां (पार्शविमां) ताकत छे अत्के कमज़ोमा-अल्प काल्यां जे-केवलकान आवश्य, अन्यो निम्न छे। आहार... आहार... समजाशू कंक? 

(अन्धीयां कल्य ने... अल्प काल्यां) “मूल्यने प्रार करे छे।” (पा) आ भवे तो (मूल्य) नयी, आ (वांत) पांत आराना साध्यां मोती के पोले करे छे। अने पा आ भवां मूल्य नयी। अंधक आशाे मूल क्लो कल्यो पा आ भवां मो नयी। श्वते जो मूल्यने प्रार करे छे अने मूल्य जे छे।

‘प्रवचनसार’ मां पंचपत्र गाखा-रचन थी रचन लिथी कहे। जेङे अंतरमा आत्माना स्वभावनी श्रद्धा-श्राद्ध-आर्यनु शुद्ध साधन तिल्ल धूर्त, जेङे अंतर शुद्धप्रयोग प्रागट करहो, अं जवने अस्तारे अं मोक्षत्त तिघी छीने। जेङे शुद्धप्रयोग अरे मोक्षमार्गने प्रागट कर्दे अने जे अं मोक्षत्त तिघी छीने। अंती २७ गाखा-रचना संसारतत्त (सवी पांत) : जेङे अंक्ताशुद्धी रागणा, पुस्ता विकल्पने पा लढ भाग भाग छे, अं साधु भोग तोपणा ते संसारतत्त छे। आहार... आ! अं प्रत, तप, बस, पूण, ठ, ठ, ठ, ठ, ठ, पंथमबंकाना परिसंतामी जेङे लाब माध्यो छे अंता जवने त्यां संसारतत्त कल्य छे। अं जप्प भवे जेन्था पंथमबंकाना पाण्यो भोग श्व पा ते (संसारतत्त छे)। दाम्पक राग छे अं संसार छे, अं जेने रागनी अंक्ताशुद्धि-वानारी (शुद्धि) वर्त्य छे अं संसारिकालाळी छे, अं संसारतत्त छे। अं जेने रागनी अंक्ता तुटीने स्वभावनी अंक्ता, शुद्धप्रयोग (उप) साधन कुर्दू छे, अं जवने मोक्षत्त कल्य छे। आहार... आ! समजाशू कंक?

मार्ज आपो... भारे अचारे लागे। अंक तो धंधा आरे (लोडे) बिभारा नवरा थाप नही; पार आरे आपो बो ‘... आ... आ... (दर्ज दरे, कुर्स करने नही) अभारणा कोण घन्ते, क्षक्षन उद्यधर्म, शास्त्रवाणा के अंतु कोंक दरे तो अं उँचु पुल्य थाप; पा अभारणा आ धर्म, तो उँच रही गए वात!

आहा... आ! मुनिओ-कुर्सकारार आठ अंकलोमा शास्त्रो रस्यां। ताकर्तो त्यां पञ्चां वहा, वह लिथी। अनीगो परे करी (अंकारोना) धागो राज्या। ते (त्रायकाना) पाणी त्यां पाणी मूल्यने (तेमो) आल्या गया। बारे राज्यां नही! वजनारणे (साधनवानी) कु र्दू परी नही के लाव... हु गामवाणाने ताकर्तो आपी रही। पा गूढ़स्थाने बंधर भोग के मुनिराज जवामांं छे अने अंक्षक शर्त बागे छे। अंतेके अं मुनिराज त्यांथी विकार करे अंते के त्यां जय अने ताकर्तो त्यां पञ्चां बो पायने अने रे करे ने उपाधारने (साधनवी दे)। आहा... आ! आपी वात छे! मुनिराजनी दशा!! अंतरमा आनंदमा जूसी रह्या। बंधर निकालां अने हुण वागेछे। आ (विकार) छोटीने उपाध अंतरमा जहूं? अं वारेरार साधनु शुद्धस्थान आवे छे। आहा... आ! आपी वातो छे!! अरे! अनांत राजनी आ हुण, जेने नाश थाप छे, बापा! अनो उपाध तो अलोकाने जे श्व ने...! समजाशू कंक? अं (पंचरत) पांत गाखा पूरी वाह।

( ... शेपांश पृ. १८२ (३२) )

* * *

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्रीमद्भगवतलुक्कुंडायायिकप्रणीति
श्री नियमसारः गाथा 82
श्री पञ्चप्रामलकारितेविवरणित संस्कृत टीका
[ परमार्थ- प्रतिक्रमण अविकार ]
एरिसभेदभासे मज्जात्यो होदि तेन चारितं।
तं दिठकरणणिमित संशोधनादी पवक्षामि।८२।।
ईदुगमेदास्ये मध्यस्थो भवति तेन चारितम्।
तद्दृढीकरणणिमित प्रतिक्रमणादिद पवक्षामि।८२।।
टीका :
अन्त्र भेदविज्ञानात् क्रमेन निर्देश चारित्रं भवतीत्यक्तम्।
पूर्ववक्तपंचचर्चार्थोपत्थर्थपद्धतिः मेलाभासे सति, तरिकेव च ये मुद्योः सर्वदा सर्वस्वताः हि एव मध्यस्थः, तेन कारणेन तेनचं परमसंयमादी वास्तवं चारित्रं भवति। तस्य चारित्राविचलितितिहेतुः प्रतिक्रमणादिनिर्देश यक्रिया निग्रहेते। अतितदेशपरिहारार्थ यत्प्रायश्चितं क्रियते तत्तात्तित्रक्रमम्। आदिशबद्ध प्रत्याश्यानादीनां समवशोध्यमचते इति।
गुजराती अनुवाद:
आ वेदान्त अव्यासकी भवति त्रिथ चारितवने;
प्रतिक्रमण आदि कर्ती तु आदित्यार्थवतरं कार्तेः ८२।
अनुवाद:-[ईदुगमेदासस] आयो भेद-अव्यास थतं [मध्यस्थ] शब्द मध्यस्थ थाय हि, [तेन चारितम् भवति] तेनी चारित थाय हि, [तद्दृढीकरणणिमित] तेने (आदित्यने) तु द्रष्टा निमित्त [प्रतिक्रमणादिप्रवक्षामि] तु निमित्त प्रतिक्रमणादिकर्ती।
टीका:-अद्वैत, भेदविज्ञान द्वारा क्षे निर्देश-चारित थाय हि अथ तस्य।
पूर्वकाल पंचचर्चार्थो भेदविज्ञान (पहली शती) के पंचव चर्चार्थो शिष्यों द्वारा भेद-अव्यास थतां, तेनां ज्ञे मुद्यों मुद्यां सर्वसंवत्स्र छाड, तेनां ते (सतत भेदकार्त्व) तु शारित थाय हि अन्तथा ते ताराली ते परम संवहितों वास्तविक चारित थाय हि। ते आदित्यनी अव्यास स्थितिवेष्टिते दूरुणे प्रतिक्रमणादिनिर्देशः च वद्यामाना आये हि। अतित (भूतकालान) द्वारा परिवर्त्तन अर्थे ज्ञे प्रायश्चित्तः क्षेत्रामाना आये हि ते प्रतिक्रमण हि। ‘आदि’ शब्देण प्रत्याश्यानाल्दो संभवक वद्यामाना आये हि (अर्थात प्रतिक्रमणादिनां ज्ञे ‘आदि’ शब्द हि ते प्रत्याश्यान व्यावहारिक पद्ध समावेशक द्वारा मात्र हि)।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
प्रवचनः तार. १८-२-१९७८ ( ... शेषांश )

(‘नियमसार’) गाथा-१२. अधिकार शु कारे हैं? नियमशासित. सत्यशासित. अन्या खेताबेदमां, प्रतिक्षण ने प्रत्याप्यान ने आत्मोंना ने बहुं आवे के कहे कहे के नियमशासित करी रीते प्राण थाय?

आह... श! पोते भगवान हुंकट आशार के कहे: कवीश प्रमु! तने कवीश. खगभग बींजुं शुं कहे? अंक बाज! कहे के आत्मा अने भावने भावाने करी कवी शकाती नथी. अने [ अंक कहुं ] “पवक्षामी”- [ शुं कवीश ]. स्पष्टिक वा आयो आवे त्यारे तो अेंवा ज आवे ने... ! “वोळ्धामी समयपालुं”-“समधार ( नामना प्राप्यःतेन ) कवीश.” आह... श! प्रमु तने आयो योग सांभवानो मण्यो अंको शो शुं कहुं तो ( शुं ) प्रमुःक शकते हो! आक्षेपी गाथामां व आयुं कहुं: ‘आत्मा’ ( अंको शब्द ) शको; अं सांभवायो, पण सांभवायो नथी. कहे अंको अर्थ धर्मो त्यारे सांभवायो. पण सांभवायो ने तरत ज अंके आत्मान थाय. आह... श! शुं कहुं अंके? आक्षेपी गाथा ( मां कहुं ने...!) आजये ( अंक भेक्कनेर ) कहुं “स्वस्तिक.” अंक आ मुनिराशी कहुं “आत्मा.” नियम अने व्यवस्थाना सांभवानुंपरी रखमां आत्मा चे. व्यवस्थाना आत्मा त्यारे विकल्प विकिष्ठो हे ने...! अंकें देवानी वात नथी. वर्तमान ( मां ) देवानी नथी अंको आ वात दीवी हे. ‘आत्मा’ ( अंको शब्द सांभवानेर ) अंको टागे जोया करे छे. ( अंकें अर्थ ) समजतो नथी; पण इंटाणो नथी, अंकार पण नथी. शुं कहूं छे आ... आत्मा?’ शुं कहूं छे आ? गुणे अंके कनेकर अनवा बींजुं कोडी, अंक भेय वात छे ने आम्मा. ‘आत्मा’... प्रमु! ‘आत्मा’ अंके कवीशे: दर्शन-शान-शार्टने प्रांत थाये ते ‘आत्मा’. नियमसम्यक्षदर्शन-शान-शार्टने हो! आयुं जयं सांभवानुं-प्रमु! तारे आत्मा तो जो!...! अंक वंटोनी वालीं उठचज तो जो. त्यारे अंके ‘आत्मा’ ( शब्द ) सांभवाने आशाका बती-शुं कहूं छे? शंका न बती. आ शुं कहूं छे ( अंकदी जिष्मासा बती; पण ) इंटाणो नबतो के आत्मा... आत्मा शुं कहूं छे? ‘आत्मा’ अंको शब्द जेने अंके पचयो के अंकदी जिष्मासा अंदत्री ( विष्णु ) के: आ शुं कहूं छे! दर्शन-शान-शार्टने प्रांत थाये-अंक वेदी शुं. त्यारे अंकूं सांभवानारे अंकम सांभवाने अतिरिक्त आनंदना आंसु आत्मा-आंत... आंतः आंतः आत्मो. आह... श! आयो ( योगपत्यारन ) जपने ज त्या दीवी हे. समझूणुं कांद? ‘कांडगीका’ मां आवे छे ने...! के: अंकदिपरिचय धारी दीवी धारा. विग्नांग संतोनी वाली!! अंके कहूं छे के: अंक सांभवाने पण आयो वेदी अनेक योग माणें! बजवान-आत्मा तो दर्शन-शान-शार्टने प्रांत थाय. व्यवस्थाने नथी... हो! नियम. बेक पचयो अंको पण व्यवस्थाने पचयो; अंव द्वार सांभवायो अंके आत्मा. अं भेने अनुसरण नथी- ( अंक ) शिष्यने शुं. अंके पोते शुं के सांभवाने ( माते ) आ बेक आत्मो पण अं अमारे अनुसरण करवा लाचक नथी. तेम श्रीताने वेदी सांभवाने छीने ( पण ) ते बेक अनुसरण करवा लाचक नथी. आहा... श! श! श! श!

2005-नी सालमां अंक भागानाे प्राण बतो: पंडेचर्ण पानी आपानो पीवुं ने आय करवूं ने? आहा... श! श! श! अंकम पानी तो गणवुं कामय रही गयं. अंकका तो आत्मा गणने पीवोछ. गणनुं गणवुं अंक पानीने अगवण राजवूं, अं किया आत्मानी नथी. पण अं शे
श्री नियमसार गाथा ८२ - १८४

विकल्प; अथ आश्रय करवा लायक नथी।

आधामा कुँन ने... "पवक्खामि" — कृ प्रतिक्षा, प्रत्याम्यान, आलोचना, ध्यान अथ बहु डीश। ‘आदि’ शब्द छ ने (प्रतिक्षणशृद्धि)। *

आल... ल! बोले (कुँकु मार्थर्थ) कठे छ ठे: में तो मारी भावना माटे आ (‘नियमसार’ नामांकुि शास्त्र) बनायल्यू छ। कुँकु मा आयार्थ जे नीरे नंबरे: "मंगल भगवान्

वीरो, मंगल गौतमो गणी, मंगल कुंकुमदार्थी" — जैनशास्त्रमा आथ्या छ। "जैनधर्मांस्तु

मंगलम्" — येहु पढ़। आल... ल! अथ आश्चर्य करवे छे: में तो मारी भावना माटे आ ब्योक

बनायल्यू छ।

अर्कीय्यू कठे छे: "तेने (निष्ठेक्षेर्तिने) दृढ़ करवा निमिते कृ प्रतिक्षणशृद्धि डीश।" आल... ल! वीतारागभावनी जे याििहशाया, अथी दृढ़ता माटे कुँ या (प्रतिक्षणशृद्धि) डीश।

अथी टीका: "अर्की, बेदिविशाल दारा, कमे निष्ठेक्षेर्तिन थाय के अथक कुँन छे।"

कोयू! पढ़े गृही मित्र मोरी (आत्मा साधकी) अक्ष्युंगिमा सम्याक्षण थाय। पानी भिन्तरताथी भिन्त करीने विकरा थाय। अथी राजिी मित्र मोरी विशेष-विषेष जे विश्वता करी। अथी यािह दृढ़ता पेड़त आ (प्रतिक्षणशृद्धि) डीश। अथक कठे छे। मृत्युं मारी कुर्ता वधती जाय छे ने...! छठे-सा्तमे, छठे-सा्तमे रखे छे, पानी शृद्धि मोटरी ने मोटरी रखे छे अथक

नथी। साझनी रमणीता वधती जाय छे, अथक कठे छे। अथ रमणीने दृढ़ करवा (निमिते) कुँ या आ अधिक डीश।

‘प्रकारहिमेविशिषित’ ‘त्रावयामस्तः’ भाय प्रकारहिमेविशिषित भाय यावस्तु ने...! ब्रह्म अर्थात्

आत्मा, अथी आनंदमा सम्यु (अथ प्रकारहिमेविशिषित)। अथ प्रकारहिमेविशिषित आभ्या करवत करवत राघो नव

नव 'त्याण-विषय (मन्यवन्याधिभी) सेवावो नथी, सेवावो नथी, सेवावो नव जालुवु नथी। अंदर आनंदस्वप्तमा अटले ब्रह्मां सम्यु, अथी प्रकारहिमेविशिषित। (आ अधिकारामा) पूण नव आभ्यासण लणी। मृत्युं रमणी प्रकारहिमेविशिषित... महाआभ्यासण... आल... ल! छुको तो! जगलाम सिंह साथे दानो डीश के!! सिंह अटले आभ्या लो! अथ नवमी आधामा कठे छे के: के भाइयो! के कुर्ता! तमने राजना राजन, जीवन किष्मामा रस पडतो श्रीय, जुवानी (श्रीय), शरीर दुर्णाये श्रीय, साधन ठठ पांचपदीस लाप... बंगला... आ पंपाक साध्य म्या श्रीय; अथी तमने अथक कठे दे आ... आ... नथी! प्रकारहिमेवत तो आने अधिक! आला... ल! प्रलु! के कुर्ता! कृ मृत्युं कहे आथा के वात करी (पढ़ा) जे तमने न दुःखो तो मार त्यक्ते, प्रलु! आल... ल! अथक अर्की मृत्युं रमणी कठे छे के दृढ़ यािहपरे डीश... तमने न दुःखो तो मार त्यक्ते... आकी मार्ग तो आ छे! प्रकारहिमेवत आधार्थ तो पपी तथा अथन आ (कुँकु मार्थर्थ) तो पढ़ेका तथा (यथा)। जेने पढ़ेका नममा बोल्या (यथा) : "मंगल मंगवान्

वीरो, मंगल गोमी मणी, मंगल कुंडकुमारो..." अथक कठे छे के:

कुँ ने निष्ठेक्षेर्तिनी दृढ़ता, विश्वता, रमणीता वधे माटे आ (प्रतिक्षणशृद्धि) डीश।

अथ माटे पढ़ा अथम छे अथ तमारे माटे पढ़ा अथम छे। अथक कठे छे। आल... ल! "बेदिविशाल दारा कमे कमे" — छे ने...! छे कुर्ता स्थाने कुँ कल छे तेथी रागी लेक

* ‘बर्जीत’ माटे जुनो पृ. १८३

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates
अर्थपरिशासन विना आर्यत्व कौन नहीं? अर्थपरिशासन विना आर्यत्व कौन नहीं? इसके लिए जानकारी प्रदान की गई है।
श्री निम्नमार्ग गाठा ८२ - १८७
अने लेखकाने ते पढून थायलूँ ठे पदा पधूँ बेला विशेष करूने आर्थिक याथ ठे, अमं कडेवूँ ठे।
“बेह-अन्व्या अथात, तेमा जे जे मुखुष्यो वर्गां संस्थित रडून ठे, तेचे ते (सतत लेखाध्याय) द्वारा मध्यस्थ याथ ठे।” मध्यस्थ याथ ठे अेले के अंकडा वीतार्गाटक याथ ठे।
रागधी पदा बेह-अन्व्या करुन अने भेट्ना लडाने छोडून पदा आंकुदा अंकइ तरी तो तां आर्थिक नीतार्गी निर्माण याथ- मध्यस्थपणु धाव याथ ठे।

आखा... श! आवी वातः! त्यां भोग ठे क्वाँयं मुंडकांमधूँ, क्वाँयं आजुं येतुःमधूँ? क्वांक पैता सृणा संपत्ता दरी? पदा अने (आतमाने) पैता पदा क्यां भोग ठे? बने मन्या, अवी महता भोग ठे अने। पैता तो अने आतर्मा-जुर्जी-राूँ (पदा अने) महता भोग ठे! हुँफऽनी याथ भोग ठे!

अवीयां कडे दरी देखातं रागधी बेळा पात्ता आनंदी याथ-आर्थिक-प्रज्ञात याथ, मध्यस्थ याथ ठे। मध्यस्थ अेले दोताराजण। आतुर आर्थिक ठे! शु शुँ? “बेह-अन्व्या अथात, तेमा जे मुखुष्यो वर्गां संस्थित रडून ठे।” आखा... शा... शा... शा! रागधी विन्य पदीने, भवानण अतिनिर्णयानंतां मध्यस्थ-सामुळ प्रक्षेप्त-स्थित-रदून ठे, आतुर नाम आर्थिक!

अरी तो पुष्पाक्षेरत्नां न मणे अने आर्थिक ठह गयुँ! वर्त ठह गयुँ! आखा... शा! समकाल ठाँचे? बुदु आकरी वात, भाव! आवी वातः... आवु बोलुँ... अने अने माते रेसोडुँ करे दरी! बार ज्ञान साठे क्षता अने अंक वहाँचा विषायो तरम माळस बनो। साठे आर्थांत अवाहो रंगांबाबांजी क्षती। पांत आर्तिका, साठु पांत अने अंक वहाँचा लुढळ (अमें) त्यां शेकन माळांमधूं अन्नियार माते आर्थांत क्षति ठे। अने बोध तेजिक। पदा कडे तेजिक हे दरी अनी आपणने शी बनार पडूने? अदवियानी शीसे अमे? अवर... र! प्रतलुँ! अने शु बोले दरी? केलों वराव करे दरी? बजु सो बसो पांतसो माळस माते बनायुँ वोर अने (वणी) अेला माळस आवी ज्ञत (तो तो हॉडळी)। (पदा) चातूंह शंका याथ के बाछ अमारे माते बनायुँ छे दरी? नदीतर तो त्यां बनायुँ वोर त्यां ज्ञत (अने शोकसाळ करे)। आखा... शा! प्रतलुँ! प्रतलुँ! मर्ज आयो चा, बाहाँ! मर्ज आयो चा, बाहाँ!

अवी बोले दरी, ‘बेह-अन्व्या द्वारा’ अर्थात रागधा विकारणी त्या अन्व्या द्वारा, मध्यस्थ याथ ठे अेले के वीतार्गाथिक प्रज्ञात याथ ठे।

शेषियांने पदा बुधु अमें ने अमें गुमायुँ। पदा अंत आ अन्व्या क्षर नदी। दरवानुँ तो ‘आ’ ठे, बापू! आलुँ मुनात्पणुँ मूळ्य-अरे! क्षर जरूँ, अनेनी मुहत पूरी वे पतास यरूँ-अंतमें दरवानुँ तो ‘आ’ ठे!

“अने ते आर्थाची ते परम संविक्षीत” आखा... शा! अोयुँ! (सतत लेखाध्याय) द्वारा मध्यस्थ याथ ठे अने ते आर्थाची ते परम संविविक्षीत “वास्तविक आर्थिक याथ ठे।” अने वास्तविक-प्रयाय आर्थिक वोर ठे।

आखा... शा! पंथम आराणा संत, पंथम आराणा जिवने माते कडे दरी! पंथम आरो (कर्णे) बवाव करे दरी ने...! बवे आ वात दिली ज्ञत ठे। अरी तो आ मूळ तो पंथम आराणा ठे। (अने पंथम आराणा श्रीताने ‘आ’ कडे दरी). पंथम आरो ठे, (माते कुठे मार्ग बहाल ज्ञत ठे? अमें नदी)। जे बाँधव पतरे बुधु वोर ठे तो शीरी तो जस शीरी, जे रीते अने
“ते आधित्यी अविषः स्थितिः सतुमुको” - वर्तमानसः आधित्यः केम थायः आ अनेन स्वात्मः। “प्रवचनः” वर्षस्वरूप शूलिकः (आदा-रोपनी टीकामाः आवे छे ने...। तेने (श्रामश्यने-) सुनिश्चितः अंगिकारः करो। तेने अंगिकारः कर्माणि जे यथानुभूति (जेपो अगुणवच छे तेनो) मार्गः तेना प्रेषिता अमे आ विभा।” आखः छः! विजेतः तत्वानी तो शान्ति अन्ने अनेन शीली तौरे अविलंकारः अनुतुनेः आधित्यः आवुं थैमः अनेने आधित्यभुवि (छने गुरुस्वाने) विविधः पाण आवा थैमः अगुण (श्रामश्यन) ना अनुज्ञाति अमे आ विभा। अमे अगुण तने डरिंगे छीरे। [मोक्षभागिः (पोते) अवहारितः करों छे अनेने ते] दुराव छे मात्रे (अंगिकारः) करो। अमे मोक्षभागिः (अंगिकारः) करों छे। आखः छः! आ अंगिकारः करो। “ते आधित्यी अविषः स्थितिः सतुमुको” केतुमुरे “प्रतिकेलणां निष्कर्षविहारः काव्यां आवे छे。” शैय। अगुणसीमणिगुणी। निष्कर्षविक अगुण।...

अनेनि विशेष व्याख्या आवाही。

**

प्रवचनः: तै. १८-२-७८

‘नियमसारः’ आदा-०२, टीका। सूक्ष्म प्रारंभ-अन्तिम अनंतकालां व्याख्या छे करी नति अन्ने यथार्थपरे नूतिपूर्वक सांभणी नति। अवी वीण है। वीरराजः सर्वसा परमेश्वर किलोकालं जने सम्पूर्ण दृश्यर, दान, आधित्यः करे छे, अथ शुरु वीण छे अनेने (ते) केम प्राम थायः अनेनि आ वात छे। अगुण, जम-मरह मटे अनुतुने नति।

अवीयां करे छे: वेदनिष्ठानं द्वारा। - शुरु करे छे? दे: जे छा अंतरमा ध्या, धान, प्रति, भक्ति, धम, श्रृद्धाय धान धान, अथ भी धान छे। अथ राग छे अथ संसार छे अनेने अं बंधनु दृश्यर। आये तो प्रति, आहिता, सत्ता, अहत, अक्षर्यं भूते; पाण ही अथ शुमानिन्दक्षर ने राग। तो जने धर्म धर्माको शेयः-अनेने शुरु करु। अवी अथ वात आवे छे: वाप छे अनात्मी, भेदान्त द्वारा, जुहो पही अंतर अनन्तकल्प भावानात्मा छे अमे अंतर जमाप्त-स्थिरता वधी, अनु.
श्री नियमसार गाथा २२ – २८

नाम यात्रिन ने अनेक नाम भोजनो मार्ग छे. (अ घर्मनी रीत छे.)

“पूजाकत पंचरत्नोधी शोभित” [पंचरत्न गाथा -२९वीं २९ वाली ने...! अनाथी शोभित] “अर्धपरिवार (-पार्श्व-शान) वडे” अटहे के जो जा रीते पार्श्व-शान का रहू छे के: गोष्ठ गुजार्थान, (गोष्ठ) ज्वार्थान, गोष्ठ मार्गशास्त्रम-अ ने भेद पार्श्व-शान स्वभूमि मधे नती. भगवान हाणां मालं शुद्ध शिवाण्य-स्वस्वां (तो) आतीन्द्र आतीन्द्र देव छे.

परमात्मा जिनेश्व, जिनेश्वानी वाणी छे अने गडधरों नी समझ आ वात आवी छे के: दृढ़ ने तप ने भक्ति ने पुजाना भाव, अ बड़ा राग छे; अ रागवी, अंदर भेद पाउयो! रागो ब्याख ने आये; पाप अ मे (जे) आम... पर उपर लक्ष जाए ने के हृदा पालू ने रागो ब्याख ने आये बालू-अन का राग छे; अ बांधनु दार्श छे; अनाथी आत्माने शनत पाउयो! आख्या... हाँ!

“पारिवार वडे”- पाप अ रीते पार्श्व-शान पार्श्व-शान भेद नती अना पार्श्व-शान पारिवार वडे. शु छहं? के: आ भगवानात्मा, (जेने) अवत शर्मा जिनेश्व परमात्मा अंदर जो मो आतमो तो, अनात शैतंय-शान गुढोधी भरेलो भगवान छे. निश्चयी कि अ मो आतमो पोटे ज परमात्मा छे. अ परमात्माने आधार लाहणे (अनु शान धूरं के) अमा (आत्मामा) आ पै-बेदो आधी नती, राग नती, भेद नती; रेमा शानना पाठ प्रकार: भम, भ्रम, अयथी, मन-पार्श्व, ज्वार्थान अ पाप नती; जेमा समलित अने समलिता भेदो पाप नती; आत्रिन भेदो-जेनी परणीती निर्मिताना भेदो अ पाप, जे पानु छे भगवानात्मा, अमा नती. -अना पारिवार वडे- अ पार्श्व-शान के (जे) आयो पार्श्व छे; अन्दा शान वडे (आत्रिन धार छे). आख्या... हाँ! पवेलु मृष्टिशन अने शान नतायु. पवेलु अ लीवु. क्वे पड़ी आत्रिन कि हृदा. आख्या... हाँ! अ शैतंय भगवान; जेमा द्या, धान, प्रत्या विकाप- राग तो नती, पाप जेमा निर्माणपरियो भेद पै ते पाप अमा नती. अमी परथी- भेदी पाप लिख, अवु जे पार्श्व-शान छे तेनु शान- ‘पारिवार’ कहु छे ने- (‘अर्धपरिवार’) -परिवार समस्त प्रकार-संघर्ष-आधार-आत्मा; अनुप पारिवार अर्थात समस्त प्रकारे पार्श्वी निधित्त, लेखी निधित; अवेगो अंदर भगवान पूर्णांक प्रभु; अ रार्श-शान धुये, पड़ी आत्रिन (क्षेत्र). आवी रीते जेने पार्श्व-शान जा जान ज, समलित ज नती तेने तो आत्रिन झों नती. समझणु किए?

पूर्वोकत पंचरत्नोधी शोभित अर्धपरिवार (-पार्श्व-शान) वडे “पार्श्व अत्मी शानातीना प्रमुख” - क्वे केडेआत्रिन दे छे. आ भगवानात्मा, पार्श्व, शैतंय-शान आनेक्ट प्रभु छे. अमां भेदनो पाप आवाह छे. अ रीते आत्मामा शान किने (पढ़ी आत्रिन धार छे).

जिज्ञासा: क्वे शु?

समाधान: आ पवेला पवेली वीररानी आता अ शु छे के: अंदर आ पार्श्व-शान पार्श्व छे. अमां अंदर अंदर गुडी मस्ती छे. अवेगो जे परमात्मास्वचार आतमानो छे. अवेगो राजवी लिख किने, निमितती लिख किने, लेखी लिख किने ‘अबेक’ नु शान किने. -अे तो ग्राम सम्यक ने सम्यक देव छे.

समझणु किए? आवी वाहो छे! अवेग (संप्रेक्षणा) तो क्वे: ब्याखामा आ पार्श्व पालो ने आपायस किने ने... ज्ब गयो धार्म! अंदे प्रभु! शु किने छे? अ रागवी तो लिख (पढी),
180 - પ્રવાસ નવનીત: ભાગ-૨

અને અંદર ગુપ્તાશીલતા દેખાતા બેઠો કે જીવન-ધ્રુવ-સમગ્ર આત્મ પ્રયાસો બેઠે જે વર્તું નથી તે પછીનું એ રીતે જીવન અને સમય્જરણ કરી, પછી આર્થિક માટે શું કરવું? એની વાત છે।

અમે કહે છે કે: પંચમગતિની પ્રતિનિધિ વેટૂમૃત “અયો જીવનો અને કર્મપુષ્પના ભેદ-અયોગ ધ્રુભ” - ભગવાન આંતર્નૃતિ પ્રભુ અંદર વેદન-સામાન્ય અહેંજુ જેનો જીવનફાળ (ખ) અનો, અને રાજની ભાગની બેઠી બાળકોનો ભેદ-અયોગ ધ્રુત. આજા... હો! (કહે છે કે: પોતાનો) અંદર આંતર્નૃતિ ભગવાન અતીનિબજ અંદનો અહેંજુ જીવનફાળ (ખ) -અહેંજુ જીવન થયા પછી પણ, જે રાજની બેઠી રહ્યા છે, અંદરકે (જે રાજની) ભેદ અહેંજુ પણ ભેદ-અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત અયોગ ધ્રુત 

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री नियमसार गाथा ८२ - १८१
के. अने ते कार्यरथी ते परम संबंधी आपने - तुमों! वीतारागता प्रगट करे छ अने ते कार्यरथी ते परम संबंधी आपने “वास्तविक वारित थाय छे.”
अंदर तो रंगक बाई, छिंदर ने दुकान छोडौने, रंगक भ्राता विद्यु माना गर भए वह गर क्रीष्ण (अने केटलाक माने छे). (पण) बापु! आपुं तो अनंतवार दरूं, भार! अंदर आर्येश नाथी अने समाहित र नाथी. आखा... छा! समजायुं छाउं?
अने आरित के छे: जेघुं! अने परम संबंधी आपने परेषर आरित थाय छे. अमेक शैतन्युं सम्बद्धरथि-शाान- प्रगट भाजा पछि पणे जेघु अस्थिरतानो राग बांधा रखो तेनाशी पण भें राखा अंतरम जता संबंधी आपने आरित-वीतारागता थाय छे. अने “ते परम संबंधी आपने वास्तविक आरित थाय छे.”
“ते आरितनी अविषय स्थिरतना फेंटुसे” अने स्थानप्रा-आनंदमा शर्दुं, आनंदमु भोजन करूं, अभिनव आनंदनो उपाधी सवाद लेवा अने “आरितनी अविषय स्थिरतना फेंटुसे”- अने स्थिरता-केरे अने फेंटुसे “प्रतिक्रमणहि निधिरिक्या कदेवामा आये छे.”
अंदरी स्थिरतना फेंटुसे प्रतिक्रमण, प्रतिस्वभाव, प्राथमिक, सामान्य-समाज अने आलोचना अने भेघु निर्दय, शुं के ते कदेवामा आये छे. - ‘निधिरिक्या’ कदेवामा आये छे. अंदरी सुधीळ ाळे आघुं छे.
आहा... छा! देखीं रिक्या अने तो रह छे, आ तो माळी छे, अने बाले-बालेने अने बागी रिक्या तो रह (नी) छे. अने अंदरमा (जे) द्वा, अने अने प्रति विकल्प रिक्या अने राज छे, अने राजनी रिक्या (छे). (अने राज) अने देखीं रिक्यानी बिन्न भैतंय आनंदस्वपू-स्थिरतनी रिक्या (अने निधिरिक्या) कदेवामा आये छे. आखा... छा! जस प्राकीली रिक्या: (अंदर) शरीर, वासी, मननी रिक्या आ बाले, बाले, बाले, अने बाली रजनी रिक्या. (आठ) अंदर द्वा, अने, श्य, श्रृंगार परिसमाप थाय, अने विकारी-विज्ञाविक रिक्या. अने (नी) अनन्यी बिन्न परीने, स्वपुर्ण स्थिरता केरे अने निधिरिक्या. अने ‘निधिरिक्या’ ते मुकिनी मार्ग छे. अने छा... छा! आघुं तो सांबण्यु य न भोज अनेने तो अंदरु पाते के आ शुं दरूं? आ ते जेन्मार्ग बरी? वेंमां तो भाष्य! आघुं राज द्वा शानवी, बलवन्य शानवू, राते आदार न करो, चोकचर करो, कर्ममूं न पावा -अंदरु तो सांबण्यु बुदू (पण) आवो मार्ग उष्मी याथवी काढाहो? अने भाष्य! तने अन्न नाथी. अनन्यीं नाथी मननीधरी देखी छुडौ जाती छे!
जेंपहुं अंदेले वीतारागता. अने वीतारागिनी-विज्ञाप भगवानमानामो छे. अंदर अने भगवानस्वभाव न भोज तो पर्यायुं भगवानप्रा आवो उष्मी याथवी? पार्बू अंदेले आस्था. अने भगवानस्वभावने वीतारागता प्रतिक्रम दरी, सम्बद्धरथि आनंदता सवाद बर, पछि रागपी निर्दय पाठने उन स्वसंवेदनामा आनंदता सवाद लेता अने खवने निधिरिक्या-धर्मनी (रिक्या) थाय छे.
केहु कडे अरे! आवो मार्ग उष्मी याथवी काढाहो? आखा... छा! भाष्य! वीतारागर्मणी बीज वीज छे. लोहीने अने पहली नाथी अने अने घेन छ्रैं... घेन छ्रैं! भापा! अने घेन: ‘घट घट अंदर जिप बसे, घट घट अंदर घेन.’ ‘घट घट अंदर जिप बसे’ - हेतु हेतूम भगवानमानाम अंदर जिनस्वपू-वीतारागस्वपू निर्माणम के छे. अने ‘घट घट अंदर घेन’ - अंदरमा रागही अंदेले तोडी, स्वभावनी अंदेले केरे ते घेन. अने पछि घटमा अंदर बसे छे. अने घेन बाबहक्याना.
वर्ष२ – प्रवचन नवनित: भाग-२

हेमाती नेही. आख.. छा!

‘परमार्थवाणिक’ मा आए छे ने...! (मिष्याणिक) अद्वैतानाव्य ज्ञाताची नेही. अद्वैतानी दोळा-ज्ञाताकिया पण ज्ञाताते नेही. आद्वातना ज्ञातानी किया आ द्वारा, दव्य नेत्राबद्ध करी, माणे के अमे धर्म करीबे छिंगे. आख.. छा! (यही) अे अद्वैतानी ज्ञाताकिया, ते आ ‘नित्यकिया’ छे!

आख.. छा! पऱेड़ूं तो अे संज्ञान ज डळा पडे. मिष्याणिक आरे कीड़ा, कारण ने वूतराना व्यय करी करी (अन्तंता दृष्ट सेहाय). (ह्या, दयाणिक) कियां० अन्तर्वार करी पण अमे धर्म माणे आठे मिष्याणिक तपस्यनू पोषण अने विशिष्ट श्रेयानु शयन तो रडी गइँ.

अे (मिष्याणिकने) ताणाय, अंधेरे (सोहाप्रभाम) रागिकी भिन्न आत्माना-अन्मेलना स्वभावानु शान अने समर्थि धरती पाणी पण केलेले (आर्यमोदकण्य) सागरायामारी भिन्न पाणे छे, आठे अंदर स्वच्छपाणा स्थिरता धाय छे, अे सुरस्थित-स्थिर धाय. “(ते यहांठी) ते पराम संभवीओने (वास्तविक) आरिति धाय छे.” आख.. छा! आ आरितीनी व्याख्या!

ढे ढेरे छे: ‘प्रतिक्रिया’ धौने पऱेडूं? “अतीत (-पूर्वकाला) दोषोना परिकाल अर्थे जे प्रायुक्तिक डरवामा आवे छे ते प्रतिक्रिया छे.” ‘दोषे अेटे पुण्य-पाप भें धौष छे.

‘सम्यक्षर’ मा अे अविकाल आव्यो छे. त्यां वर्तमान सागराना प्रतिक्रियाने धौष करो छे.

(अद्वैतानी ढबणू दे:) ह्या, हात, चतु, भक्तना परिक्रम धौष होष छे. धार छे (अे) धौष छे. अंधेरे धौषे जे पूर्व (धार) ना धारा, ते दोषोना परिकाल अर्थे अर्थात गाथाकाला पुण्य-पापना दोषना त्यागने अर्थे जे प्रायुक्तिक डरवामा आवे छे, आठे के जे ज्ञानान्वयूपमा समापता डरवामा आवे छे (ते प्रतिक्रिया छे).

प्रायुक्तिनी व्याख्या छे ने...! प्रायुक्तिक अेटे सांस्कृत भवानान. प्रायुक्तिक=प्राय: अर्थात (वजयचार), भवुपणे; (मोट भाजे); वित्त अर्थात धारा. अंधेरे सांस्कृत पुण्य धौष करे छे प्राणु अंदर; अने अद्वैतानी प्रायुक्तिक करीने अने प्रतिक्रिया करवामा आवे छे. समाजूं धात?

अर्थे ! क्वांयं सुधे य परी न धौष ने सांस्कृत य न धौष; अने भवुपणी भाजने अेटे के अने प्रतिक्रिया कर्य। (प्रतिक्रिया माते) सांजे ने सावरे धार ने सांस्कृत (कार्यां आदि) नास्कने। अने प्रतिक्रिया कर्ये: मिळ्ळा म दुमकड. क्यां धार प्रतिक्रिया, भार? प्रतिक्रिया धौने पऱेडूं अने तने भवर नेत्री। पऱेडूं तो मिष्याणिकु प्रतिक्रिया; तेने अर्थात परिकाल धौषे. आत्मचक्रामिनु परिकाल-अनुमय; अने मिष्याणिकु प्रतिक्रिया धौषे. धौषे धीरा पुण्य-पापना दोषो रळा ते दोषोना अभाव माते स्वच्छपाणा स्थिरता करी अे प्रायुक्तिक छे अने अे प्रतिक्रिया छे. आवी व्याख्या ने आंदु स्वच्छ!!

“दोषोना परिकाल अर्थे” – दोषोमा भें धौषे? (पुण्य-पापे). अने ह्या, हात, चतु, भक्तना परिक्रम पण धौष होषे छे. अने धौषे ने यारे धार भी अंदर भिन्न छे. “दोषोना परिकाल अर्थे.” (पण) अद्वैत (सोहाप्रभाम) तो पऱेडूं-भवुपणे प्रत ने तरी ने भक्तने पूर्ण करी तू धार रळा अे धौषे बडे रळे भे अने रळ छे, अने भवुपणे, अने धौषे छे, संसार छे, उदयमात्रे छे; अने त्यागने अर्थे जे प्रायुक्तिक डरवामा आवे छे अेटे के आत्मामा-आनंदमा रळाता।
श्री निम्नलिखित गाथा ८२ - १८३

करवामां आवे छ, प्रायः दत्ताथी शान्ताः समपत्ता करवामां आवे छ तेने प्रतिक्रिया करवामां आवे च। आ प्रतिक्रियानि व्याप्या। समजातुह। कहा?

लक्षणान अंदर आनंदु तन पुरुषु छ अतित्रित-अभेद। धर्म अं अभेदनी हृदय करीने आनंदा अनुभव करवो-त्यारे तो तेजे पार्थर्णु परिशपन करुः। अंतिले ते वेदो पदार्थ है तेवू तेजे शान करुः अने परी ज्यारे आर्थिक बेहुः छ स्पे बादी जे राग रहो छ, कु छ लिन्त पदरु छ पनार राग-अथिरताती ज्यो दुः पदोः नक्षिदे स्वर ध्वनि नक्षिदे। अर्थात् (अनिवार्यमहा) अथिरताती ज्यो दुः पदोः नक्षिदे ज्यो दुः पदोः नक्षिदे। अंतः नाग-व्याप्तिना निकलो छ ते होष छ। अं भाव भूतकर्मां य कृजः बनो ते होष छ। तेना लक्षणानि अर्थे “जे प्रायःविन्ध करवामां आवे छ ते प्रतिक्रिया छ।” आहा... छ! आपि व्याप्या!!

(अंक बाज़ूः अमेव) करे छे: अंक पर्याय बीजः पर्यायने अंदू नरहै। आम छरी छे अं शाक उपर आम पडे छे तो छरी शाकने अंदू ज नक्षिदे। -आा ते कृजः माने? आ गरजः वात छे! आ तो शीतराज सर्वस्थे परमाणु जो जो वद्यृत-स्थित-मयान्त्रिक है। आम शाक मोने छे ने...! तो छरी शाकने अंदू नक्षिदे ने (शाकना) कटा वात छे। (श्रीता:) छरी निमित्तमात्र छे?

(उत्तर:) निमित्त अंदे जू हरी अंदू अंदू अंदू अर्थे छे। आ बोझी अधरं अम्बारतनी बांधो छे छे; पनार प्रलु तो करे छे भे दक्षे दक्षे जटा (पोताना ज) अत्यार (छे जेने) प्रलु! ते बनर बनरी नक्षिदे। ज्योतन पर ज्योतन आ बना मुः छे, अं बना ज्योतने अंदू नक्षिदे; पनार बापु! आ अम्बारतनी तने बनर बनरी नक्षिदे। आ जटाना दक्षे परमाणु-रक्षकांमा पोतपोताना रक्षकांमा पर्यायमांमा दियामा वात छे। अं दियामा- पर्यायमा आधार छे पर्यायकों। अं पर्यायकों आधार नक्षिदे ज्योतन छे अंदू नक्षिदे। आ ते कृजः माने? आहा... छ! आपि वात! सजरे छे अं अं (वाजने) अंदू य नक्षिदे अने बाहर छूट पडे छे। अं व्याप्या ज पर्यायका रक्षकांमा पर्यायका रक्षकांमा पर्यायका सिङ्गलि छे अं खूः से नक्षिदे। अंदे खूः नक्षिदे। आहा... छ! आ अम्बारतनी नक्षिदे? अग्नि अं परमाणु स्वयं स्वातः आधारे छे, परना आधारे नक्षिदे; उन्हें पोताना पोताना आधारे नामने गुण है। अं आधार दक्ष, गुण, पर्यायमा व्याप्य रहो छे। अं परने आधारे छे ज नक्षिदे। आ उपरी छे अं आना (वड़ीनी) आधारे रक्षे ज नक्षिदे। आ (हक्का) दक्ष है’ सांभन्तया य न माने। आहा... छ! (बोझी) आ अग्निाना बाह्रणे बाह्रणे ने? अरे बापु! शु हक्के! प्रलु करे छे: अं अग्निाना रक्षकांने अग्निाना रक्षकां अक्षे ज नक्षिदे। अं अग्निाना रक्षकांने आतः अक्षे नक्षिदे। (श्रीता:) अग्निाना ने वीजनीयी आवे छे! (उत्तर:) वीजनीयी य आतः नक्षिदे। वीजनीयी रक्षक जटा ने अग्निाना परमाणु जटा। अं वीजनीयी परमाणु अं अग्निाना अक्षे ज नक्षिदे। अरे! मार्ग तो मार्ग प्रलुमो!! अपनो अन्यो अंदू बोझ ने होरे पुढी जाय तो गांठ बांधे... (पना) अंदे, अं पर्याय (अभेद) अंदू य नक्षिदे अने अं गांठ वर्जी छे। अं शु करे छे बोझ आ? अं ऊँ आ छे, बापु!
आदि सप्तशती: बाग-2

लीलावति निलोकनाथि जन अनेक वैद्यनाथो स्वभावे के वर्णयो छे ते समाधारिक छे! आदि... छ! अंतु (वस्तुविद्याम्) क्वः गौर (बीजे) देखन्यो छे ज नसी अन्यतमां (तो) आा वात छ नथी. वीजनी के माते संशीयो आले छे अम्म नथी. वोटनुं जे पैंदु याले छे ते नैसे जमीनमे आधारे नथी. चापाना आधारे अनेक अंद स्वप्नम अनुभवे स्वतंत्र प्रवाली गति करी रखो छे. आदि वात! अनेक वोटने छे माते साथे मोटरमा भेलो भाजस आम गति करे छे अमेय नथी. आदि... छ! शुं छे आ ते वात! मालने तो अम्म (लागे) छे के आ जैनयम आयो ठो? अरे भापु! तने जैनयमी जोर नथी. "धत घन अंदर जिन बसे- मे रागधी

"अन्तितानु (मृदुकाणानु) हृद्योना परिवर्जने अर्थे जे भ्रमित करवामा आवे छे ते प्रतिक्षा छे." (मृदु गाथामा) इयो पु छे ने...! "पालिकानाणी"- आदि 'शब्द पद्यो छे ने.....! तो के के छे: "आदि" शब्दी प्रत्ययान्नादिन मंत्र करवामा आवे छे. (अर्थात् प्रतिक्षान्नादिन मे आदि शब्द छे ते प्रत्ययान बनोरनो पत्र समावेश करवा माते छे).”) तो प्रतिक्षा ‘आदि’ शब्दी प्रत्ययान पत्र बाह देवुँ.

'पवक्ष्णाना' कहें दुःथे? के: कहें पत्र साग-त्या, नान-ना विकलिती भिन्न, वैद्यनवृत्ति विकसे करी जेणने जेणने कर्मु अनेक अग्नि संवर करे छे। भूतकाण (ना होई) नू प्रतिक्षा, भविष्य (ना होई) नू प्रत्ययान, अनेक वर्तमान (ना होई) नी आलोकना। आवे छे ने....! आलोकना। अंदे संवर। अंदेक भमसायामात्रुः श्रव करी अनेक पत्री रागसी पत्र (भिन्न) पहुँ अनेक स्वर्यान्न आन्तमाण लील थाप तने अंद्रीण पवक्ष्णाना, संवर, भक्ति, सामाजिक, समाय रहे। आवे छे ने....! समाविशने आल्यांचा: अंदे (समाविशने) सामाजिक करी.

आ (संप्रकारमाणि) तो पांच-छ वर्षीय छहीक वयसे ने मोदे (मुखपटी) आवीणे (आम) बेली वयसे ने... नमो आर्यालांग... सिद्धांग... तो असामाजिक (करे छे, अम्म करे छे.) अने बधा सामाजिक करे अनेक पादानी लडाणी आपति ने इतालूँ दारुण। भेषी राज सो-सो-पांचसो... अने जाये के आपणे अलो धर्म! अनेक (अोमाने के) आपणे धर्माने पैतृकी महत्व करी! अनेक मिसायल्चो छे। अने नूने य सामाजिक नथी, भाँध! अंदेक चारणी सामाजिक जनम-मरणाना अनेकने बावे। 'मध्यस्थ' कहुँ कंतु ने...? च सामाजिक छे; अंदे वीतरागिता छे। साम+आत्मक= 'सम' अर्थात समता; अनेक आत्म समता; अनेक 'आत्म दाब; अनेक 'आत्म' हो तथ्य छे। तो अने वस्तू जे वीतरागस्वरूप अनेक छे अनेक शान थाकुँ करे अने अभेद्माण करे छे अर्थात अंदर वीतराग स्वभावमा कहे छे अने वीतरागश्च थाये छे तने सामाजिक करे आवे छे। आदि... छ! अनेक सामाजिक करी।

अर्थात् 'प्रत्ययान्नादिन'-आदि अंदे आवे सामाजिक करी। आवे संवर करी।

[ [अवी रीते (आपायक्ष) श्रीमद्भुटातंत्रसूरिणे (श्री समस्तसारनी आल्यानी तामाणी चितायामा १३७७ श्लोक द्वारा) कर्त्वे च केते:- ]]

तथा चोक्तं श्रीमद्वृत्तचन्द्रसूरिणि:-

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
र्षी नियमसार गाथा ८२ - १८५

[अनुसूचि]

“मेदिविज्ञान: सिद्धा: सिद्धा ये किल कोन।
अस्त्रोवाभावों बद्धा बद्धा ये किल कोनन।”

“(शब्दवृत्त:-) जे कोट सिद्ध थया छे ते बेदिविज्ञानी सिद्ध थया छे; जे कार्य बंधाया छे ते तेना ज (बेदिविज्ञानना ज) अभाभणी बंधाया छे।”

बगवान त्रिलोकनाथ परमापना श्रीमुने नीकेशी वात संसो आपतिता बहुने जगतने माल आपे छे: अत्यार सृजी जे कोट सिद्ध थया, परमापना मोक्स पाया, अ बेदिविज्ञानी सिद्ध थया छे। जे लम ते तपना परिशाध्य भिन्न पडी अने स्वपनमा अभेडणे ठे छे अत्या बेदिविज्ञान पायलाने सिद्ध थया छे। आहा... छे! अत्यार सृजी जे बेदिविज्ञानी अनंता (खो) मुक्ततने पाम्या छे।

(शुम) राग अ पुज्यतव छे। बगवान (आत्मा) श्याक्ततव छे। ते पुज्यतवस्थ शायक्ततव शुद्ध पाठ अने सम्यक्त थयुं, पाठ तने (सर्वथा) शुद्ध पाठ अने स्वपनमा थयया अत्या जव बेदिविज्ञानी मुक्ततने पायमा छे। जेर प्रवत ने तप ने भक्ति (पढे मुक्त पमाती नथी).

अमे प्रवत धर्म ने तप धर्म ने.. बातने आ वर्तीसे करे छे ने...! पढीं तंद धर्मः जाेने कपने कपने अंतरे त्या गयो धर्मः! (अमे) धूँये थ धर्मः (धर्मः नथी), सम्यक ने।

“मेदिविज्ञानः सिद्धा:”–सर्ववन परमापनो (आ) मक्कसिद्धात्मसन्नेद्वेः त्रिलोकनाथ, छंद अने गणेश्रो पढ़े आम कळेता बळा (ते) आ वात छे। आरे! आ वात बोळणे (सांभध्या थ) मक्कती नथी। अनंता धर्मः अनंता अनंता धर्म भो मेदिविज्ञाती सिद्ध थया छे।

छ महिना अने आह सम्यक्त हौट (मनुष्य) मुक्ति पाये। मनुष्यी प्रथमा धाळी छे: नव नव नव नव नव अंवा २४ आंकड़ा मूड़ी अंतरी संयमा (उच्चस्ट) छे अने जवन्य केवः तो अंक अंक अंक हौट (अकड़) अंतरी संयमा मनुष्यी छे। अमाधी छ महिना अने आह सम्यक्त हौट सिद्ध थया छे, थाय छे ने थाय छे। अही न केवः तो मदविदिक्षा (तो शास्त्र) बगवान विरफळे छे त्या परमापना-सिद्धत थाय छे। तो करे छे के छ महिना अने आह सम्यक्त हौट सिद्ध थया अंवा आनंतणातो अनंता सिद्ध अत्यार सृजः थया छे। अनंता लित थया अे बेदिविज्ञानी सिद्ध थया छे। अे (कंड) रागणीं दियादि लित थया नथी। अे प्रवत परिशाध्य सिद्ध थया नथी।

प्रवत प्रशाख तो राग छे। आख्रेछे! अने (लोकने) कुंड कंड भरवे छे? अे तो नवर छे अम (माने छे)। पेड़तहे अमे (अमे) १८८२ नी सालमा जन्मदर गया। व्यापार सालूं हूं (तेमो) अंकूं आयू के: आ बही दियाठो अंतरी छे (अमाधी धर्म थाय नथी)। त्या अंक धूँद झाया, वहुं वाँचालुं, जरीस सूहा साखु-साधीयोंने म्याता। (अे बाहक) ‘सालूं सूहु’ देखायाता बळा। नरम मादकः। अे व्यापार सांभध्या त्या। अषोरे अंकूं आयू। म्याया! आ बढः... आ सांभध्यने विरोध वर्षी। (मे) क्षुद्र: शुं छे? अे तपसू ‘शान्तसागर’ ज्ञो! नामले क्षाय प्रकड़े बंधाय; त्या (सांप्रत्या), दायानी, मननी, वचनची सरणता लीयी छे, अे।
185 - प्रवचन नवंति: भाग-3
सर्गातां रीत्यक्राष्ट, "भाग्य-भाग्य" अनेतर नामकर्म्युं वृक्षः भाग्यः धर्मः नामीं. अनेतर वृक्षः भाग्यः अनेतर (शून्यः) नामकर्म्युं भाग्यः अनेतर मन्निः सर्गातां रीत्यक्राष्टम् भाग्यः धर्मः नामीं.

‘शानसागर’ पुस्तक अष्टाध्यायी यथावतः ब्रह्म दशनी साधनाः श्रीका पदेवां पालेवां वांहेवां. अमां ठोकावः वनमा न हैं नें...! अं पदेवां श्रीका वनमा. बंधा मोड़े करेवां. पशः (रथस्य लक्ष्यः विना) वनमा वातानि वांनावने य पर्यास न भोगे वे केलकी मन्नमा किया, राजानि मेंताय-था, घनां, अनुकूलः, प्रति, तप-नी किया, अं बंधा पुस्तका भाग्यः धर्मः नामीं.

"हुआओ! (अंकीयं) आ हैं: "मेंदिविज्ञानः सिद्धः"-शुं करे छें? के प्रति ने तपनो वास्त ते मोक्षायं भाक्ष छें, व्यवहार निश्चयायं भाक्ष छें (अं बंडी मानो छें) पशः अर्धी करें छें के व्यवहारी भेकः (विना) पारे ते निश्चयायं भाक्ष छें. समजायं भाक्ष? व्यवहार-किया करें ते पारी निश्चयायं, व्यवहार साधन छें अनेन निश्चय साधन छें (अं बंडी मानो छें) पशः अर्धी ते करें छें के व्यवहारी पशः भेकः पारे ते साधन म्याट धार्मः.

आहा...! था! था वाहुं! अन्तद्वार आमे ने आम गंधी गाडः. धर्मने नामें भोटा (मार्गः) से सत्यसिद्धान्त, सिद्धात्मिक किया अने संसार अमे ने अमे ध्वसः. नरक ने निषेधः (नां अन्तद्वार दूर तेहेवां). आपों मृथियाः जाय-कांडः नहीं रहे थरे. संसार उपायः रथ जःन्ये उपायः (अं) जीवकी रजाः.

(अंकीयं) करे छें के के के के अत्यार सूत्री सिद्ध घाया (ते) भेदविद्वानशील सिद्ध घाया. -ल्यो (आ) एक ज सिद्धांत, एक ज धार्मिक नियमः.

आ (लोकः) करे प्रति ने तप करीते अनेतरी सम्यक्षण धार्मः अनेतरी धर्मः धार्मः अर्धी ते करे छें के प्रति ने तपना विद्वानजी भेकः (विना) पारे ते तेनी म्याट धार्मः.

"छे नें...! " के के सिद्ध घाया छे ते भेदविद्वानशील सिद्ध घाया छे. "आ भापा तो साही छे. बंडू टोंकी बंडू! आहा...! था...! आम राजामा भेकः पाको छे अने अनेकेन राजस्य (छें), अमे करे छें. अन्तानां त्रुण प्रात्ये वैदिकत्वाद्वीती भूकि अनेकेन अनुभवात्म भेदी-रागाधी विन्द्र पारे छें; अनेना-भेदविद्वानने काँडे सम्यक्षण थपुं छे, सम्यक्षण थपुं छे, सम्यक्षणातिरिक्त थपुं छे अने तेनाती म्याट बहुं छे. आहा...! समजायं कांडः?

"के के अध्यायः छे ते तेना ज अभावाथी बंधाया छे." हुआओ! थे सिद्धांतः अन्तद्वारां के के मिथियात अने अधावाथी बंधाया छे ते तेना ज (भेदविद्वानना ज) अभावाथी बंधाया छे. कर्मी बंधाया छे ने.. कर्माना उड़नी तीर्थाते लवने बंधाया छे अमे नामीं. आहा...! छे ने सामे (पाक) ! आ तो साही भापा गुंजते छे. अन्तद्वारां के के राजड़ा छे ते भेदविद्वानना अभावाने लवने रजस्या छे. लवने लवने रजस्या छे अमे नामीं.

आहा...! अंजीराशी बाहे योनिमा-एक एक योनिमा-अन्त अन्तरात म्याटः.

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री नियमसार गाथा २२ - १८७
निगोद्मा-बटाटा ने सकड़क, (बटाटा नी तपरे जरी शंका छ पढ़ा) वसखा, उंगणी; अनेक अंक अंक राख जेठला कदाचार्या तो असंभव शरीर अने अंक अंक शरीरां अनंत ज्ञ्ञ अंका-अंक खासां अभार भव करे, आ अंक खास बाहे... ने अंकां तो अखार भव थाय, अंका निगोद्मा-वसखां ने उंगणी ने मूलां अनंत-अनंत भव कर्य्या छे। मूलां जे कट छे अंकां अनंत ज्ञाव छे अने अंका पास्ता बोट छे अंका प्राप्त के।

कहे छे के: अत्यार सुंदरी जेठला ओखलीना अवतारां रक्षया छे ते भेदविज्ञान कालातिका अभावी (रक्षया) छे। कर्मा शोधाकरी रक्षया छे अभाव नभी। (पढ़ा) भेदविज्ञानां काला अभाव ओळे के रागानी अंकानी भाव; अनांशी बंधाणा छे। (झव) रागानी अंकानां बोलाव गयो छे। आहे तो रुका, दानं, प्रता, तपानी भाव कीते पढ़ा अं भाव राग छे अने अंकानी अंकानां मने लाख धर्मो अं भाव प्रविष्टात्मा, अनजान छे अने ते बंधु रुक्षात्मा।

कहे! समझाणू आमां? बहु तारो श्लोक छे। संवर (अधिक) तो श्लोक छे। मध्यश्लोक अमूृतवंदनार्थनी। अंक मध्यश्लोक के जे कोट मुखितने पाम्या; ते रागाना-हस्ता-हस्ता विकल्पेशि भिन्न पडी अने अब्दानी दिज करी त्यारे सम्भवन ध्युं; राजसी भिन्न पडीने अबेटनूं धारन कर्यु त्यारे सम्भवन ध्युं; पढ़ी राजसी भिन्न पडीने स्वस्थमां ध्युं-अनांशी भिन्न धर्म; अने अंका अभावी बंधाणा! आखा.. छा!

आ तो बधा हिगंडना शेक्षियो जुलाया महास, अनेक (आ) सांधस्या मद्यु नधी। हिगंडना धर्म तो आ छे! आहे तो रुका, दानं, प्रताना भाव छे, अनांशी भिन्न पडीने आत्मानूं धारन कर्युं ते वोकानो मार्ग छे। अने राजसी भिन्न कर्यानी अंदर आत्मामा स्थरता कर्यी (अं धर्म छे)। आहे तो शाश्वती भिन्न कर्यानी देने भवावानी भिन्न कर्या; अं बधो राग छे; अं राजसी भेक पात्रां नांद माटे बंधाणा छे अने राजसी भेक पात्रां ते सिद्धपने पाम्या छे। आखा.. छा! आ (पाम्या) मा तो कोट जश्रतां बहु जारीँ बोट तो, अंशी (अंशू) कर्ष कम नधी। ‘रागानी विकल्प छे’ अं झुं छे? (विकल्प) आहे तो शाश्वतिचतनो शो के भवावानी भिन्नतनो शो के पूंगमलप्रतनो शो के भवावानी अंशी पढ़ा; पढ़ा अं राग (छे अने ते) बंधु रुक्षात्मा।

आखा.. छा! (जे कोट बंधाणा छे) ते भेदविज्ञाना अभावी बंधाणा छे अने भेदविज्ञाना सहायाधिकी ते मुखितने भाव (छे) –आ अंक ज खिलांत! छहे...! “जे कोट बंधाणा छे ते तेना ज-भेदविज्ञाना ज-अभावी बंधाणा छे.” –अंशी तो अंक दबूं। (पढ़ा) राजसी पात्री नधी माटे बंधाणा छे अं कर्युँ बहु जोर छे माटे बंधाणा छे-अंक बौनुँ।

आखा.. छा! आ समयसारनो श्वो भेक छे! राजसी भिन्न पडीने अनुभव दर्यो अं ते समयसारनो श्वो प्रसार छे!

... अनेक अर्थ विशेष आवश्य आवश्य।

* * *

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
(‘નિયમસાર’) કાલ-૧૧૦. કાલ ઓલાડાં ગયા છે કાલે. (કડે છે): “અ રીતે જયારે 
મુનિમાથને”-શ્રુયુ: ‘મુનિમાથ’ ક્રવલ! જેણે અમરના સબ્રંપું ઉઠ સ્વસંવેદ પ્રગત હયં છે, 
અ જેણું વાલલિંગ છે તેને અતિત્ત્યું ‘મુનિમાથ’ કડે છે. “અત્યંત બેદભાવ (બેદભાવના પલિશામ) થાય છે.” 
અદેલો (બેદભાવ અંમ) નહી પાણુ: ‘અત્યંત બેદભાવ’ (કડું. 
ડેમડે: ) સમમાગ્નને બેદભાબને પાણુ: પાણુ: રાણિ બીમત પેદું અદેલું જ બેદભાબને છે; અને મુનિમાથ 
તો રાણિ અસંતત્યું (પાણુ: બીમત પેદું બેદભાબને છે. (એટલે) અમ કડું કે: ‘અત્યંત 
બેદભાબને’ (અનાથત) બેદભાવના પલિશામ થાય છે. 
(કડે કડે છે કે:) “તયારે આ (સમમાસર) સ્વયં ઉપયોગ ખોલાદી” - 
અમતબાળણ, અ તો ઉપયોગ જ સ્વયં છે. તયાર શાનુ-શાનુ, અ૦ અ૦નો ઉપયોગ સ્વયં 
છે. અનો કાપિય સ્વભાવ અને સ્વયં ટો ઉપયોગ છે. અ તયાર ધારણ-શાન છે, અને પાણુ: 
ઉપયોગ કૃષિમાં આવે છે. આધા... છ! સ્વયં ઉપયોગ ખોલાદી “મુકતમાહ (મોક ક્રહદ) 
થયો થોક.”-પાણીમાં પાણુ: સ્વયં ઉપયોગનું ખોલાદી મુકતમાહ થયો થોક (અયુનત શુ કડે છે? 
કે:) પરતસની સામાન્યતાની દાંડિત્ત્ય ભાવ (ખતો) અનાથત સ્વતંત્રા અત્યંત બેદભાબને 
લખણે રાણિ મૂકત થયો છે.-આખુ મુનિમાથું! અને અ મુનિમાથ બિતા મુજીત કદ્દું! 
અ૦ (મુનિમાથ) મુકતામાહ થયો થોક, “શનધનલિઙીના પૂર્વી” - આખર... છ! જુઓ! 
સરવાળો લાવયા: સમતાદીની પાટી-ના દરીવાં પૂર, વીતર કારકીની લાવયા પૂર અર્થત હતા 
અને શમાસદીની દરીવાં માગવાન, સમતાદી રાખી વીતર વસબામાં બરેલો પ્રાચુ; અને રાણિ 
બીમત પાડીને રિચર થતા અની પાંચી શમાસદીના હવત આવી; અ૦ નામ આવો તયારે. 
‘શમ’ ની અથ સમતાદી શમધનલિંગીનો દરીવા, અ૦ પૂર અટ્લો હતા, (અનાથત) 
“(શમધનલિંગી પૂરી’ નો અટ્લો અથ ધાણ: ઉપયોગમસ્તી હતા.’ પછી (કડું: ) પાપકલનને 
થોક હતા અટ્લો (અયુનત) સ્વામાસ-મુનામાં વીટરગબાહ પ્રગત થયો તેથી વિવાહવાપન થોક 
થયા (છે). અયુનત વિવાહવાપન-પૂર અને પાપ ભેય-પાપકલનને છ. આવી હાંગ છે! 
પદેદું તો બેદભાબ દ્વાર અટ્લો કે પ્રજાશીલ દ્વાર, સાદૃ દ્વાર. પ્રજાશીલી જે મૂલ તો 

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री निम्नमास क्षेत्र १९० - १८८
अनुवस छे-रागबी बिन्दु पृथ्वी स्वर्णों अनुवस -अस आनंदशा छे, अं धर्मी पड़ी स्वीकृत छे। अनेक आगाज वधीने मुनिराज तो पयोंमां शमरसक्त जिना समर्थन करती लाविनी, वीतरागपच्छीनी भरती लावीने पापवानके अेटेके पुष्प अने पापना धाव के कड़के छे ते नों ठोक नाम्या छे। आाख... बा! "पिराजे छे।" - पुष्प अने पापना भावे ठोक अने पयोंमां शमरसक्तजिना भरती लावीने "शोंने छे।"

आाख... बा! वीतरागभारी बड़ु सुक्ख छे! अंतरमा स्वाध्वरुः अनेकपूर्ण प्रागता विना धर्मी शुद्दित बती नथी। अमें शीवे ( जे सामाज वसू शैतियशन, आनंदक, रसकड़; ते) हटिंग्स लगाने, अनुवस करवे: अनेकू नाम तो प्रथम ममीक्षण छे। अं पश्ची आगाज वधीने (ते) रागग-अस्थिरताते भावे (जे) छे तेनाथी पय्य भेक अेटेके शुद्धी पलटो पलटो, अने वीतरागी धनियामां की वीतरागीजिनी भरती लावीने पुष्प-पापनो धाव करे छे, वीतरागणी परिक्षाते उथ्यावरे छे अने धुः-निराकारी तो हटिंग्स छे जः।

आाख... बा! (बार्निफ बचर नदी तेघी) आाखु अजाग्बुः लाजे अेटेके मालासने (लाजे के) आ शुं करे छे? (पड़ा) मार्ग तो आ छे! जने जन्म-मृत्युधारी रहिंग्स थुंबे धाव तेघी, जन्म-मृत्युः धुःधुः धुःधुः धावनी पुष्प-पापनो धाव करे छे, वीतरागणी परिक्षाते उथ्यावरे छे अने धुः-निराकारी तो हटिंग्स छे जः।

अरे! शोषणी लाभना अत्वार, बाह्य! अंधे सहन कर्य छे। आवो ‘आत्मगं’ गुप्तवाणीमां माहः तुं: नार्कीना अं धक्कना हुः, दोरों घब्बूः अने दोरों ने धक्कना छे। बधवान आत्मसुधुः छे; अनेकू विपरीत ‘राग अने पुष्पना भाव मारा’ अं धो भख्यात्वर्, जःने जन तेघी नरक ने निग्गोत, अने अ नरकने अं धक्कना हुः! भावा गमे ते धये पड़ा अंधे धाव्र समजते बुङ्क कड़का, बाह्य्य। आवसं डे छे, आवो ‘बाल्यसुधुः’ मां छे छे जःने अं धक्कना हुः नुः द्वारने केवळे अने द्वारने बवधी न धाव, प्रभुः ते अंधे हुः, अं धो भख्यात्वर् धावना वेठया छे। आाख... बा! अं धक्कना भुजत थुंबे धाव तो धावक्षुः बधवान आत्मसुधुः छे, अं धुः अंधे अंहर दर्शी छे, प्रभुः। आवो आत्मसुधुः बधवानने संभाजी दे अेटेके तेघी स्वीकार कर! अने हर्षिमां राग अने पर्यायनो स्वीकार छोड़ी हे! आाख... बा! आ तो (अंधनी) शुद्धतात।

अरे! तो ‘मुनिनाथ’ नी वात (छे), मुनिपुणुः-नापुः! अं तो परस्बरवरुः छे; बाह्य! अो धक्क शीव छे!! आाख... बा! जने अंतरमा अत्यन्त आनंदमा शमजनां भरती अवे छे अेटेके उत्पाद धाव छे। बुधपाणीमां तो धुःसुधुः-समजजननविन्यो दर्शों छे प्रभुः! पड़ा तेघी नरकने स्वीकार थात, अं शैतियशनमुनिरतरतनो अंतरमा स्वीकार थात अनै सवर्णां पड़ा आनंदनो भाव अवे। अरे! तो मुनिनी वात विशेष छे। अने तो अंतरमा अंधे विस्तार जमी छे के पथमहसुधा निन्योमां आवुः पड़ा अने खोजो लाजे छे। आाख... बा! अंधे (निकालिक) शीवमां जनेरे समुं जमी गः छे। अंधे पर्योयमो-अवसरमां वीतरागी पुरुः आवे छे। (अंधे) करे छे। (भुजे) वोड़पुः (-जोड़नी भुजे अंधक घरी आवुः पुरुः। पाड़ीं वृज आवे अवुः पुरुः। अंधे पाड़ीनुः ठीः न धाव अने वीस गारु छेरे पांध्र छे परसात पलटो धाव तो नलिमा अवुः वोड़पुः अंधक) शाय आवे तेघी वीतरागजतातुः पुरुः आवे छे। अंतरमा आत्मसुधुः बधुतात।
Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

200 - प्रवचन नवनीत: भाग-2

भागापनों आश्रय वधाने, स्विकार करीं, रागवी नित्र पड़ने स्वस्थमान विश्राम थयो, अनेक दशामां तो वीतरागीज्ञानवनु पूर आवे चे, अंदे के बरती आवे चे. अरेै! आवी वातो!!

(भरति) पुष्प-पापना आधारा कलंकने नाश करी नामे छ तेघी ते शोभे छे. अे वीतरागीज्ञानवनु पुर हे अनेक धाती सतो शोभे छे. (अे सिवाय) बीघे कोह उपाय नथी. आहा... बा! नजापुण्य ने मधुत्रतनो विवेक, अे अनेकी शोभा नथी. समजनुं डांठ?

(अे मुनिशल कडे छे के:) "-ते आ परेशर, आ समयसारी डेवो भेड़छे!" प्रगट भस्वातू दशा अनेक आै ते डेवो भेड़छे! अंदे आै ते करह जात छे? अे वीतरागीज जात छे, अें कडे छे.

शुमः: अंदे वाण प्रमुख ने...! 'शमज्ञानिव' अनुं 'पूर'. दृश्य उपर, अे वर्तमानपुर्णरूप-दृष्टने जांने अनेक शमज्ञानिवनी जनव-योकी बरती आवे (छे). अनेक मुनिमे तो आडुनिएस यथार्थ प्रगटी छे, अनेने तो आदन्ती अनेक वीतरागतानी विशेष बरती आवे छे. अे वीतरागतानी दशा द्वारा पुष्प-पापना कलंकने बीघे नामे छे.- 'शमज्ञानिव' नो आ अर्थ!!

जिहासा: आै तो मुनिनी वात छे. पाै गृहस्थो माटे?

समाधान: पदेवंच समक्षी मण डांठ नें...! पवली मुनिनी वात कडी. धर्मनी पदेवी सीरी सम्यक्षरण पास्तरने पदेवंच राजगी नित्र पडी, स्वस्थमान देही वधाने आगंतुं योकी बरती आवे छे. -अनेक समक्षी-वर्तमानपुर्णी कडींहे. पदेवी आसी मण 'आै' छे. अंदे पार आवी गाढ छे. अमे ने अमे के आै में द्वारं कर्म ने द्वारं कर्म ने धर्ममाणा बनावी नें... माटे धर्म धर्म अमे, अमे नथी. उप (तो) अंत्री आै (कोह अर्पूदू) शीश छे!!

आहा... बा! (भागापनमा) तो वीतरागताबनास सागर प्रातु छे; अक्षायसयायातिं अनेको गुण छे; अनेको गुणस्वरूप जः छे. जानमी जुंघ नौ जानस्वरूप छे. आंतिम जुंघो तो आंतिमस्वरूप छे. आंतिम जुंघो तो आंतिमस्वरूप छे. -अे दृश्य (नी) पदेवी हिरी (अंदे के) सम्यक्षरण-धर्मनी पदेवी सीरी-वर्तमान पदेवंच फुगविं-सोपान (प्रगट) यांत्र अनेक (समक्षीनी) धर मांसा वीतरागीज्ञान (प्रगट के). सम्यक्षरण अनेक वीतरागीज्ञान छे. आंतिम अनेक धर्मनी श्रद्धा भाग छे. राग तांत्री तो त्राय, द्वार, धर, विज्ञानो के पाै अनेकी नित्र पडीने स्वस्थमान अनुस्वरूप धरी (धरी; अनेक नाम) अे वयं प्रशासिकी मारी; अंदे के उपयोगने पक्री राजगी नित्र पडी गाढ. आहा... बा! अंदे सम्यक्षरणमा पाै अनेक आंतिम अनेक शांतिनी बरती आवे छे. (अर्थ) तो आ मुनिनी विशेष वात छे. परमार्थ-प्रतिक्षण छे नें...! (मुनि) अस्थिरतानी राजगी पाै कडी गया छे अनेक स्थिरताना समुद्रान पर्यायं जुंघे छे, अे अनेकी शोभा छे.

आहा... बा! वात सांभंती य कडी पडी. आै ते बवारवी डंडे नजापुण्य लीयं ने पंजाबाणर (लीयं, पाै) अं पंजाबाणरतानो परिणामं य क्लयं धाक्षणं छे? आर्थी वात! लोंडने अंदे लांघे छे...!

"-तेआ परेशर, आ समयसारो डेवो भेड़छे!" जेमा वीतरागता प्रगटे ते समयसारी कर द्वारा छे! आहा... बा! पोते मुनि छे नें...! अंदे मुनिनी अं वात कर्म छे: परमार्थ-प्रतिक्षण अनेक कडींहे.

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्रीमदभगवतंकुंकुमाचार्यप्रसन्नेन 
श्री निमबसारः गाथा ८३ 
श्री पश्चाप्रभलधारितेविशिष्ट संस्कृत टीका 
[ परभार्ष–प्रतिक्रिया अधिकार ]

मोतूण वयनर्मण रगादीभाववर्ण किया।
अपाण जो ज्यादह तसस दु होडि ति पद्मक्षणं।।
मुक्त्वा वचनर्मण रगाद्रिभाववर्ण कृत्वा।
आल्मां यो ध्यायति तस्य तु भवतीति प्रतिक्रियम्।।

dेन्द्र देन्द्र मुमक्षुजनसंस्तुत्स्मणवाङ्ग्यप्रतिक्रियानामधेयसमस्तपापक्ष्येतुभूतसूत्रः
समुदयनिर्मालोऽयम्।

यो हि परमस्तुपश्यर्त्वतांकल्पनामुर्खसुधासिध्धनाथ्यां
राजानिश्चिन्तनानां अप्रास्तवचनकर्मपरिशुद्धोपरि
प्रतिक्रियामुविषयवचननाना मुक्तवा संसारलतामूलकं–
दानां निक्षिलमोहरागदेशभावानां निवारणं कृतसाधानं
विद्यायति, तस्य खलु परमस्तुपश्यर्त्वतांवार्धानांभमुख्यस्य
सकलविविषयव्यापार–

विरहितनिश्चिन्त्यप्रतिक्रियां भवतीति।

गुजराती अनुवाद

28 वचना वचनी छोड़िने, राजाधिभाव निवारीने,
छे छव ध्याये आलने, तें छवने प्रतिक्रिया छे। ८३।

अन्वयार्थः–[वचनर्मणा] व्यक्तरचने [मुक्तवा] छोड़िने,
[राजाधिभावकर्त्ता] राजाधिभावुने निवारण [कृतवा] छोड़िने, [यः] छे
[आल्म] आल्मने [ध्यायति] ध्याये छे, [तस्य तु] तेने [प्रतिक्रिया]
प्रतिक्रिया [महत्वपीड़ित] बोध छे।

टीका:–दिनक मुमक्षुजनो परुः उच्चारामां आकारो जें वचनमय
प्रतिक्रिया नामनो समस्त पापर्मणां द्वेषभूत सूत्रसमुख तेनो आ निरास छे
(अर्थात् तेनु आम्बे निसर्गः कान्त कृष्ण छे).

परं तपश्रवणा कारणभूत सध्वेश्चायसुधासारे भगवान् भूजर्षिनां
वंद्र अथो जे जै (–परं तपसुः कारण अथो जे सध्वेश्चायसुधासारे)
कारण्यां तेनु उदयवा आलो अर्थात् तेनम् भाषते भाषी भाषावा भूजर्षिनां
वंद्र समान छे अथो जे जै (जै) अप्रस्तुत्व पवनन्तरानाथी परिवृद्धि
(–सर्व तश्चः मुक्त्वा जै) होवा छन्ति प्रतिक्रियामुक्त्वानी निवरण (निरिद्ध वर्णरचनाने
(पुष्प) छोड़ो दृष्टि प्रतिक्रियामुक्त्वानी निवरण निवरणु निवरणु निवरणु
अथो जे जै) अप्रस्तुत्व पवनन्तरानाथी परिवृद्धि
(–सर्व तश्चः मुक्त्वा जै) होवा छन्ति प्रतिक्रियामुक्त्वानी निवरण (निरिद्ध
वर्णरचनाने (पुष्प) छोड़ो दृष्टि प्रतिक्रियामुक्त्वानी निवरण निवरणु निवरणु
अथो जे जै) अप्रस्तुत्व पवनन्तरानाथी परिवृद्धि
(–सर्व तश्चः मुक्त्वा जै) होवा छन्ति प्रतिक्रियामुक्त्वानी निवरण (निरिद्ध
वर्णरचनाने (पुष्प) छोड़ो दृष्टि प्रतिक्रियामुक्त्वानी निवरण निवरणु निवरणु
अथो जे जै) अप्रस्तुत्व पवनन्तरानाथी परिवृद्धि
(–सर्व तश्चः मुक्त्वा जै) होवा छन्ति प्रतिक्रियामुक्त्वानी निवरण (निरिद्ध
प्रवचन: ता. २०-२-१८७८ ( ... रेषांश)

(‘नियमसार’) आदा-२३, टैक्ट. “हिन्दी हिन्दी मुलुकजनों के हैं” - मोहना अभिलाषी
जव पर केंद्रिय सरोवर अने साज “उक्तार्थाकां आवतो जे वयस्मह प्रतिक्रिया नामको
समस्त पापक्षणा केलुभुत सृजसमूह तेनो आ निरास हे (अर्थात तेनं आन्य निराकरण-
पंजन कर्फु कर्फु)”. वयस्मह प्रतिक्रिया अस्तेव ‘मिच्छा मि दुक्वं’ ने... आ नहीं ने आ नहीं ने
आ नहीं, अं मर्ममय रत्ना; अं समस्त पापक्षणा केलुभुत हे. अर्थी अंकरु पाप बेंवुं, पुष्प
न बेंवुं. अक्षुमनावना क्षमा केलुभुत सृजसमूह अस्तेव के भज्जयनानी वाढी (अनुसार)
संतोंजे जे पुरुक्कर्ष पयः अने जे वाढी दुरा, विकल्प दुरा भोले चे तेनो आ निरास हे. 
अं वयस्महप्रतिक्रिया वयस्मह अने विकल्प तेनो आ निरास हे (अस्तेव के) अं पदा बंजन
dरवा लापक, छोडा लापक चे. समजाया काँह?

मुनिराजों-हिंदिनर संतोंजे जे प्रतिक्रियानी रत्ना काँह अं मर्ममय रत्ना अने त्यां
कोतां जे विकल्प बीहे, अं यो यववर (छे) तेनं अर्थीं बंजन कर्फु (उम कर्फु) अं काँह
सायु प्रतिक्रिया नती. छे!... “समस्त पापक्षणा केलुभुत सृजसमूह तेनो आ निरास हे
(अर्थात तेनं आन्य निराकरण-पंजन कर्फु कर्फु)”.

आदा... छे! वयस्महप्रतिक्रियानी साक्षरवना काँह, अक्षुमधी आ ‘मिच्छा मि दुक्वं’
ने...! (अर्थीं) कर्फु छे: अं सृजसमूह अने तेना तरो विकल्प बेंवु नास रत्ना लापक हे,
अं रामना लापक नती; रास्ता के अं मर्ममय ववर हे, अं बंजनु दुरा हे. (बाटे तेनं)
निराकरण-बंजन कर्फु कर्फु हे. आवर्य महाराज एकुक्कर्षरत्ना आ श्वोक (आदा) हे.
अं एकुक्कर्ष आवर्य अर्थी कर्फु हे ‘आ शारय मे मारी भावना मारे जनायु हे.’ अं अर्थी टैक्ट कालि
पत्रप्रमुगराहासिद्ध हे अर्थी कर्फु हे के: आमा शुभवनी-प्रतिक्रियानी (छे) विकल्प हे,
अं बुजु आवर्य नती; (बाटे) तेनं नाना बंजन कर्फु हे.

अं एकुसरम पत्रपत्रा अस्तेव अंडर आरिंग ‘छे! (अं बिले छे के) ‘पत्रम
पत्रप्रमुगला कार्यावृत सद्वेद्रुपमुदासांसारे मारे पुण्यमानों चंद्र अर्थीं जे झव’–
आदा... छे! जेम पूतमनों चंद्र बैये लारे समुद्रमा भरती बुध आवे, तेदा-योकर आविद्यामा
भरती थोडी आवे, पदा पुरी बच जयावे बीहे लारे दिरियामा भरती बुध आवे; तेम जेनो
आलमा सद्वेद्रुपमुदासांसारे मारे पुण्यमानों चंद्र समान अर्थीं झव “(-पत्रम पत्रपत्रा
[आरिंगसरु] कार्य अर्थीं जे सद्ध वेदागुप्ती अमृतानो सागर तेनं उक्ताया मारे)” जेम
दिरियामा पाठीमम भरती आवे तेम जेने अंग्रेम पुण्यमानी-निर्दकक आंग अने
वीजावटनी-भरती पूरी भावयामा आवे; अं नाम निश्चय-सच-साँयु प्रतिक्रिया हे.

‘वेदागुप्ती’ दीपो छे ने...! (अस्तेव के) राजीम कृषी जय छे ने...! सद्ध वेदागुप्ती
अमृतानो सागर तेनं उक्ताया मारे “अर्थत तेनं भरती लावया मारे जे पुण्यचंद्र समान छे
अर्थों जे झव” –मुनि छे. जेनी रमणु आनंद्वमावामा जभी गय हे. आल्मा अत्िनिंय
आंतकं पूर प्रतु हे, अत्िनिंय आत्िनो सागर हे; (अर्थीं) पूरीमा जे पर्थी दीये, 
स्वाभाविक वेदागुप्ती अमृतानो सागर उक्ताया सम्म हे (ते) पुरी चंद्र समान छे. (अर्थीं)
पर्थी तो वेदागुप्ती हे, पदा जे पुरीमा विकल्प बीहे हे तेनाती पदा वेदागुप्ती हे; अं दीये छे.
अस्तेव (कहुं के:) जे सहाय–
श्री नियमसार गाथा 83 - 203

वैराग्यपुर्ण अमृतनो सागर तेने (उछलवा माते) अर्थात् तेमा भरती लाववा माटे जे पूर्ण वंद समान छ। अंगवं जे धर्मात्मा-व्यारितवांत, अंगे मुनि क्रीजे अनेन शारिरित्वं क्रीजे। आहार... छ।

“अप्रभासत पवनरचनाधी विपुलेन” -अशुभाववनी श्यामाठी तो परिमुक्त, अंगवं अर्थात् तो हृदि दीवी छ। (अंगे) कड के। विपुलेन= ‘पूजः’ अंगे अनेन भक्तां प्रकारे (‘मुक्त’ अंगव) श्रृंखु。” (-सर्व तरक्षी छुट्टलो) होवा छत्राव प्रतिक्रमणानूनी विषम (विधिवर) पवनरचनाने (पशु) छोडीने” आ र् वक्ताव्रतिक्षणजे बोले छ ने... अंगे विक्रय बीते छ, अंगवी जे विषम पवनरचना-शाश्वती रनामां ‘मिल्या मिरुक्स’ आ मारी भूल रही (ते) ‘मिल्या मि’ (अंगे इच्छे), अंगे पवनरचना विषम छ (अंगे) कडे छ; अंगे अंगे भाव पशु विषम-असमता छ। जे वक्ताव्रतिक्षण छे ते विषमलाव छे, अंगे समतावर वन्धु देंके अंगे विक्रय ने राख छे।

आवाही द्वारा पंथ आराना संतोषी पशु होय ते तेने मुनि क्रेवाम, नवर्ते मुनि क्रेवाम नही; अंग चे। पोटे मुनि चे। पोटानी वात करे छे। पक्षःप्रक्षलपारितेन पोटे आवात्य नव्न, मुनि छ।

प्रतिक्रमणानूनी ‘पीष्म’ (पवनरचना) नो अर्थ ‘विविध’ क्रमः- विविध प्रकारणा शुद्धी होय ने...! आमालं विक्रय पशु विविध प्रकारणा आवे ने...! (‘समसार’)

‘मनोमितिकः’ मां जेने वक्ताव्रतिक्षण भावने-विपुलेन-जीवनो थोड़े थोड़े छ। अंगे अंगे रसित अंगवरे जे वर्गावण सर्ववी विन्द्र पदीने (पोटामां) ठरी जार्य अंगे अष्टर्णो डुब छ। अंगवी ‘अष्टर्णो सागर’ कीयू ने...! वैराग्यपुर्ण अमृतनो सागरने (उछलवा माते अर्थात् तेमा) भरती लाववा माटे जे तेयार छे। आहार... छ। आवाही आक्षेत्री वातुः।

‘कङ’ (लोकिने) बहारथी निरूपिते देवानो प्रसंग (अवकाश) नस्ति। अंगवी तो ‘(मुनि) असुयानी तो घटः छ। श्रृंखली छुट्टे त्याते तेने साधुं प्रतिक्रमणा धार्य’ आ अंगे वसुतरी स्थिति छ। अंगे रीते पशु कङ जेने श्रद्धाला ठकाया नव्न ते तो आमारेण-सागरा माराकुर रूपने पळया छ; तेने ते प्रक्ताव्रतिक्षणना नव्न अंगे निश्चये जे नव्नी। अंगे निश्चय (प्रक्ताव्रतिक्षण) होय ते तेने आवे विक्रय-प्रक्ताव्रतिक्षण होय। अंगे पशु तः (अंगे) कडे छ।

प्रक्ताव्रतिक्षणामां जे शुभराज बीते छ ने...! अंगे अनेक प्रकारणा विक्रय छ अंगे पवनरचना पशु अनेक प्रकारणा होय (छ) -अंगे अंगे विविध प्रकारणो क्रीजने, अंग चे। छे। (अंगे पशु) छोडीने “संसारलतानां मूलः-ईकंडूळ” -संसारलतानां मूलः-ईकंडूळ पवेली, संसारलतानां मूलः-ईकंडूळ पवेली जे अनाहिती शाली (शाली) छे, अर्थात्; अंडेक्रिय, खुद्रिय, नीड्रिय, अंडेक्रिय (आहिना) भव, अंगवी संसारलतानां मूलः-ईकंडूळ “समस्त मोहरागद्रेण भाव” - अंगे मोहरागद्रेण वेदा छे। कङ: संसारलतानां मूलः-ईकंडूळ छे। मूल छे, अंगवी अग्निमोही संसार-भाव छाहे छे।

आहार... छ! अंगवी तो पुल्ले-प्रक्ताव्रतुं प्रतिक्रमण छे। अंगे (पुल्लाने) पशु संसारलतालतामां निश्चये हुः छे! अंगे लोके प्रक्ताव्रसाधन करे (कङ: जे) आ साधन छे अंगे निश्चय साध्य छे। अंगे भाज! (अंगे नव्नी।)

अंडेक शैन्मपुर्णा माहें बुध विक्रोधः मापाः आर्यु छे। अंगे लोके (सोनगढ) निमित्तेनेमानाखो नव्नी। उपायामाती ज्ञानः धार्यः (अंगे बाधे छे)। वाधु बुधः (लम्बाः) आर्यु छे। (पशु)
हाँ – पवित्र नव-नीति: भाग-2

निमित्त अने मानीने छीने के निमित्त छयाती छ पढ़ निमित्तिय उपाधानमा कांट पढ़ थाय। तो ते निमित्त कया रहूँ? अने तो अंहर उपाधानमा गर्नी गयूँ। अने बोटा विद्वाने बुझायो (पढ़) करूँ छ: सोंगवाया निमित्त भाने छ: निमित्त नथै मानता अभै नथै; पढ़ निमित्तिय परमा अर्थ थाय, अभै मानता नथै; अने ज पक्षय क्र। निमित्त कया नथै? पढ़ै जनी वर्णाय पोताने कार्ये (परिशिष्ट्यवाना वीवे) उपाधान धरा छ, तेनुं नाम निमित्त केवलमा आवे छ। निमित्त करावूँ छ अभै छ? (अभै नथै)। परक्रम (अन्य) परमा करे अभै उपाध नथै। आहा... छै! अभै वाय।

अर्थी करूँ छ: केऊँ संसारने बंध करै अटे? केऊँ संसारवताना भूण-कंडगुरूक (समस्त) मोडकागहेघ (भाव) “अभै निवारण करैने” अनो अभै करे (तो)। बाहे तो शुभराग कोता तोप्ता तेनो अभै करे केएक शुभराग अने बहुँ संसार अने भवनु धारा छ। आत्माना आँध्रवेरी जेतीला शान्तिरा प्राप्ती तेठो अंबपरिपाश छ अने जोङे जेठो रागमा रा छ अने बडी वंदमात्रा छ, वंदमात्रा छ। (साधकने) शान्तिरा अने राघरा नेहा करे (साथे)। पढ़ अर्थी तो अने राघरा राघरा छीने व्यक्तमा दीन थाय छ त्याेरे तेने निमित्त-सायु प्रतिविद्ध्य छे। समझौँ छां? केऊँ निवारण करैने “अपन्न-अनांधमय निज कराशपरमाणु धाराधारिय धाराधारी छ” –पाठमा “अपाण जो ज्ञायि” अनो अर्थ द्वार छ। भगवानात्मा अपन्न अनांधमय, (‘आनान्दयो,’ अभै नथै वीवू पढ़] निज आनांधमय, भगवान अंहर अनित्यिक आनांधमय, निज अनित्यिक आनांधमय, अनान्दु अनुष्ठित आनांधमय अनुष्ठ, अने निज कराशपरमाणु, पोताने कराशपरमाणु, निदाती अपन्न आनांधमय निज कराशपरमाणु (अभै वीवू)। आहा... छै। अने रहे झाँट भलो छ!! अथ तो झाँट छे पढ़ अभै वाय!! आहा... छै। अपन्न आनांधमय “निज” कराशपरमाणु! अर्थी वीतरागी परमाणु नथै; अटे ‘निज’ शब्द वीवू छे।

परमाणु धाराकरे ने विज्ञप्त करे, अने धारा बना छ। (श्रोता:) क्यापानी पुस्तक थाय छ? (उत्तर:) अने अदा धारा छे-बघवानी भक्तने भाव पोते ज धारा छे। अभैं (‘नियमसार’ मात्रा) छे। अने वाय धर्मी नथै, अने वाय (शेताउँभर) धर्मी नथै ने...! आ धर्मी समधार मात्र छ तो वीतरागसंरक्ष जोगो अने छ भी तो वीतरागी संर जोगो। बाकी अने सिवाय आ धर्मी बहु जीवो; (पोतानी मेने समज ले तेने नथै)। छ तो समझौँ जोगो, अने पूर्वना कोर संरक्ष जोगो; ते पिसता आ वाय तेने अभै नथै। अने प्रसुक्षिप्त करे।

“अपन्न आनांधमय निज कराशपरमाणु”– पाठमा (छ) “अपाण जो ज्ञायि” अनो अर्थ करूँ: “अने आत्माने धाराधारे।” धेर आत्माने? छै। आत्माने? केऊँ “अपन्न-आनांधमय निज कराशपरमाणु।” आहा... छै। अने आत्मा करो। शरीर नथै, पुछ-पापा भाव नथै, अने समयनी पर्याय पढ़ (अं आत्मा) नथै। निर्णय करे छे ‘पर्याय’। पढ़ अने अनुवाक्षण छे अने ‘निज कराशपरमाणु।’ आहा... छै। समझौँ छां? (‘समयसार’) गाथा-उर्मौँ तो अभै करूँ केऊँ “के सक्षाष्टिसःर, अपन्न, अवक प्रत्यक्षप्रतिभासमय, अविनाश, सुक्ष्मप्रतिशासिक परमभावविक्षण निजपरमाणुविभट्य ते जुँ छुँ” अभै

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
प्रक्ष थियो क्यों ने...? के: तम आत्माने 'कारापरमातमा' को अने कार्य न आवे तो अनें 'कारापरमातमा' शेनो केडवाय? अनें तम 'कारापरमातमा' शी रीते कडो छो? कार्य रीत तो कार्य आवूं ज जोइलेन (तो) शीलें: वाय साथी. पणा ढोने 'कारापरमातमा' छो? अंम माथ्यु अनें के भय माथ्यु अनें? 'अंदर कारापरमातमा भगवान पूर्णपंडितो नाथ बिसाए छे' अं (अंशो) माथ्यु ही कृ यु क्षु? अं (तो) राभी मंडलवाता संतोषात गयो दा वर्तमान परम्यो ढोक उदार थियो (तो) अंमां संतोषात गयो. आत्मा... बा! जेनी मंदि समय निम्न पर्यायनु अन्य लोकालोकने जीवनातुं छे-अस्तारे पणा ढो! अंक समय निम्न पर्याया-च द्रव्यां द्रव्य-गुण-पर्याय-लोकालोकने जीसे, त्यारे पर्यायां अंतु अन्य लोकालोक जादे छे अंती पर्याय उपर्यी हद उदार ढानेम (द्रव्यांत्र करे, तो) अं पर्याय सक्षेप (कारापरमातमा) ने जादे छे. पणा जादे हद लग उपर, अंदर (ज पर्याय) उपर (पठी के हीत तो, ते सक्षेप जीवना छता जीवनां आवती नन्दी). नंदितर पर्यायो निज जीवनात तो अनें (स्व-पर प्रक्षाक) छो (ज).

‘समस्ताः’ १७-१८ गाथा. (बने ने) अजानी (नहा) जानी निम्न हाद छो तोपण अनें पर्यायो निज जीवनात तो स्व-पर प्रक्षाक छे ने...! बने (पर्याय) नाहणी छे, अंक समयनी शिक्षिताची छे पणा अनें स्वाभाव तो स्व-पर प्रक्षाक छे. तो अं (पर्याय) अने प्रक्षाक ही छे. छता अज अजानी (अजानीनी) हदिम्य (स्व) तरकनु पलाह नन्दी (मोट तेने अं स्व जीवनतो नन्दी). अं (स्व छे ते) ‘कारापरमातमा’ ही, तेना आ (स्व-पर प्रक्षाक पर्याय) जादे छे, पणा त्यां अज (अजानीनी) हदि नन्दी. ‘कारापरमातमा ही’ अंक अनें पर्यायां स्वीकार नन्दी. तो अनें कार्य शी रीते आवे? जेने कारापरमातमा ज हदिम्य नन्दी, जीवनां नन्दी, मानवां नन्दी, झें (तेने) अनें कार्य शी रीते आवे? (पणा) जेने मानवानी अंम छे के: आ कारापरमातमा, भगवान पूर्ण आनंदवृजण अंमा अंततुज्ञातनाना जीवनां नन्दी छे; (जेना) अंक गुणानी अंक अंक पर्याय
लोकोकने या अवित्ती पर्यायों न मुख्य अष्टंगुण; लोकोकने जाली नेमा ज भ्रान्त्यमां अक्र श्रद्धानी पर्याय प्रतीत करे छ, अक्र श्रद्धानी अन्तर्भ अक्र श्रद्धागुणां है; अंतर्भ अन्तर्भ गुणां अक्र पर्याय दर्शन ज्ञात न छेद पर्यायों न मुख्य तेनु छ अनेक गुणों मुख्य तेनु छ. समाजशृंखाँ? आय्वुं (वस्तुवस्तुप) छ।

लोका के ने... के: अं (सोनगट) व्यवहार उड़वे छ! पड़ा व्यवहार अनेक उड़वे छ! ने ने शैय अनेक? नै विश्व नै अनेक व्यवहार छ, अनेक उड़वने अंतर्भ जावुं अम के ने समाजशृंखाँ? आय्वो मार्जी वीरतागारो नै।

चित्रेष्व (नी) समाना गणारो अनेकावतारी छन्दो नाटा। गणारो अं ने भव ने ने खण्ड छरस्व भल्ला अनें भगवान आय्व देशता नाटा: अं आ वाणी ह अवी। आक्ष... छ।

‘मुझे’ के क खुन सुनि अर्थ गणार विनारै, रवि आजम उपेश भविक ूण संभाव निवारै।’ अं भगवानी वाणीमां आय्वुं छ! के:–

जे अमे छुँ छें अंवूं व्यवहारप्रतिक्रिया के के छो अनेक छो ज! तौ तने सावुं प्रतिक्रिया यथ। अनें विश्ववक्तने जे व्यवहार क्षयी छ अनें व्यवहारने पड़ा छो उन्दने अंतर्भ ज! त्याे सावुं प्रतिक्रिया यथा। आक्ष... छ।

‘निम्नसार’ निश्चय-परमावस्था अंविध्व (गाया: १५४) मां आय्व छे नें! “जे द्व्य-गुण-पर्यायामा (अर्थात् तेमना विकर्णामा) भन अरे छे, ते पड़ा अन्तर्भ छ।” विपज्ञात कृत, परवर छी। अंत अंव अंव श्रावपरमाला भगवान; अंवा अनेक अनेको विचार कर्दो ते पड़ा विचार अनें अन्तवर्तिय छ। अं जुडुँ नाट अम के के छे।

अरे! आय्वुं (प्रतिक्रिया भी) या छ, प्रत? अरे भाई! अंका (सम्बांधी अल्पशग्ध) लोके विचार के के (सोनगटहो) विचार करो... विचार करो-व्यवहारने मान्य नाथी, व्यवहारी (निश्चय) यथा अमे मान्य नाथी। अंकला उपाध्यायी यथा अमे माने (छ), निम्नतिघी (उपाध्यायामा अर्थ) यथा अमे मान्य नाथी। (पड़ा) भाई! छे (वस्तुप्रकृति) अम ज; पड़ा तने अन्त शी नीते, भाई? दरें पार्श्वकी दरें समने जेनो (स्व) जाँ छे ते पर्याय यथा छे, बने अं पर्याय यथा छे अंवा निम्न साने भले शैय पड़ा निम्नतिघी अं पर्याय छह नाथी। त्यांने निम्नतिकर्देयाला आय्वे छे। समाजशृंखाँ? तेम व्यवहारमा प्रतिक्रिया विकर्ण शैय पड़ा तेनाथी निश्चयामा गयो नाथी, तने छोदने (निश्चयामा) यथा छे। तौ व्यवहार साधान छें अनें निश्चय साधान छें अम त्याे रेतु नाथी।

(अवीया के के:) “अबरदं-अन्तर्भ निश्चय श्रावपरमालाने ध्वाने छे।” आक्ष.. छ! भगवानस्वरूप परमाला, साक्षर शैलिक-स्वाम निर्म श्रावपरमाला, अंकलो भगवानस्वरूप सिद्धस्वरूप-द्व्य है! अंवूं जे श्रावपरमालात्व; अनें जे ध्वाने छे। अनें जे ध्वाने छे (जेम) बाण्य मानाना सत्तनां छूँ धाने छें (तेम) वस्तुप्रकृति अंदर अंदर श्रावपरमाला, अनंत आंतनंत छें तेने शैय छं छ, धाने छं तेनु स्थान कर्दी अभी रस कौं छे। आक्ष... छ।

समाधान: पजे अंकुं्र-अंत अनें विकर्णं निम्न पड़े अनें श्रावपरमालाने
श्री निवमसार आठा 83 - 207
अनुमययो। अे पढ़कावां वेढ़िवुं कर्वालुं छ। अे विनामुतिपुणुं ने आरिज ने साधु ध्यान, अे अंगु रोंता नथी।
(ढें अंगुःयाम धुं छे के: ) "ते जवाने"- श्यापथरमानां ध्याने छे ते जवाने "- के ( जे ) परम्पर परमतत्वनां श्रद्धां "परमतत्वने" जे 'श्यापथरमाना' धीरे ते। अंगुः आंगुःयावतं लिङ परमतत्वनां श्रद्धान्वयतत्वनुं श्रद्धां अे अंगुः वात मारी नामी-परमतत्वनां श्रद्धां, परमतत्वनां "शान"- शास्त्रनुम शान अे नथी। अंगुः तो के के: परमतत्व ( जे ) शास्त्रनुम शान भई नाम। अंगुः चे धारू, अे शास्त्रनुम शान भई। भारे वातुं, भापा। अे श्यापथरमानाः श्रद्धां, श्यापथरमानाः शान-ते क्वारेव थाय। के? अनामा स्वमुमुन धाय त्यारे थाय। जे वास्तु छ तें नीम समुंज थाय तो तें नुमुन-श्रद्धां थाय। आखा। था। "अने अनुधान" एतदे आरिज। परमतत्वनुं अनुधान अर्थतः श्यापथरमानाः आरिज एतदे परम्परामां आरिज। अे श्यापथरमानाः आरिज-अनुधान-स्रिपाला, अे आरिज छ। आखा। था। "(ते) व्याधसंवंधी सर्व ज्ञान विनानुं ( जे ) अनुधानाः "समुंज छे" एतदे मून तो स्वमुमुनी समुंज छे, अम केतुं छे।
अे तो आधार आवे छे नें।! शुधुपणोगसमुंजने शिबामुं आपी छ। शुधुपणोग समुंज थयो छ, तें समशवामां आवे त्यारे तो एम ज केवाल नें।? अंदेर आम जवाय भंजे छे अने के के: शुधुपणोगेन अंदरमां जोरी छ। अे अवश्य छ। अे आवश्यक केवाल बालन अने साधन छ। बाकी व्यवसरार-सागहिनी किया अे पण वंधुं धारा छे, विष छे, जे छे।
"तेने-व्याधसंवंधी सर्व ज्ञान विनानुं निचश्चारकक्षा धृष्ट छे।" लयो। तेने व्याधन अने शान विनानुं, निच अणुं धामानुं। श्रद्धा-शान-आवश्यक-अंतं आवश्यक-तत्ततं आवश्यक ( धृष्ट छे ) तें साधु प्रतिक्षा धृष्ट छे; बीज अने साधु प्रतिक्षा होतुं नथी।
.... विशेष केतेहो।

**

प्रवचन: तत. 21-2-1878

[[ अंगुःयादि ( आशयदे ) श्रीमुक अमृतचंद्रसुरियो ( श्री समसारनी आलम्बनी नामां टीकामां रत्रामांं श्वेत ध्यान करुंग छे के:-
तथा चोकं श्रीमद्वृत्तचंद्रसूरियम:-
( मालिकिन )
“अलम्बलवलितज्ञानयुक्तक्षेत्रम्यत्तान नित्यमेक:।
स्वरसिद्धपूर्णानसंस्कृत्तमात्रेत्वखलु सम्पत्तारुदस्तरं किंविदितित।।"
“(श्वेतय:--- ] अनु केवाली अने अनु दुःखविपक्षी धाय ध्यान, भस। ध्यान; अंगुः अनु ज केवालं ने के आ नरम अर्थने अंगुः नैरंतर अनुपत्तो; धारा के निरंतरा इतकायी पूर्णे ते त्याना सुधारणाम ध्यात्मक जे समयसार ( -परमता ) तेनादीों मुंतुं परेशर भीजुं धांस पण नथी ( -समयसार सिवाम भीजुं कांस पण सार्वभूत नथी। ) ]

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
र२० - प्रवचन नवनित: भाग-२

'निष्ठसार' आगा-उमो आ छेके आयुं नें...! “अपाण जो ज्ञायदि” निष्ठ-प्रतिक्रिया, सायु केदारन अथथा सत समनव, मोक्षी नाम, अनेनी वात छे। अमृतधाराय धिक्षर (सत) के हे:“बडु ककेवाणी अने बडु हरिश्चंदनवाणी बस बाणी, बस नामो” -बाढ़ी वात शु ककेवी? जठाला विय पुष्टी हे ते बाढ़ा बेकर छे। यथार्थमा बधारे शु कु ककेवी? “अलमलम”-बस बाणी, बस नामो- शब्द ककिरे (कहुं के) पूरु करे। (बीजुं) शु कहुंके? “अो अो बडु बडु ककेवाणी छे के” बमराय आयुचाराय सत किर्णर अमे करे छे के: अमाने अो बडु बडु कहुं छे के: “आ रथम अर्थने अणने ज निरंतर अनुमभो” - आदा... भा! आ सिक्खट! रथम पद्धर जे बमरायआयुमा, हवस्तवामा, शुद्ध तियवन, आनंदक प्रमु अणो परमात्मा रथम अर्थ आयु, वस्तु तियदारी जे बीज छे अ तौं रथम पद्धर परमात्मस्वरुप छे-अणने अणने ज (अनुमभो)। आदा... भा! अ तौं बमराय अनातुस्वरुप रत्नाण अंबर पी हे छो आयुआ अंबर (मोक्ष हे अणो) अणने ज निरंतर अनुमभो।

आयु अनातु आनंद ने नाणस्वरुप प्रमु; अणो समयस्तन, अणो समयस्तम, अणो अणो (समयत) यतित्र अणो (आतमानु) याथ अणु अनुमभ छे। यथार्थाणी गमे ते वातो धीय, निमितती गमे ते वातो धीय पा। (अे पर) छे, अ आतमामा नथी!

बमरायआयुमा ते अनंत अनंत युगुनो राशि-केकरी-ढेर अणो परमात्मा पोतानु रथुप अणो “अणने ज” आदा... भा! “अणने ज (निरंतर अनुमभो)” - जुओ, भम हे! आदा... भा! जेने मोक्षार्थ प्रमु गटय छो तेने तो आयु तियनान्न प्रमु अंतहित डरिने अनुमभ गटय। अ मोक्षो मार्ग हे! सुझाव छो छो?

पांड के अणो हे: “रथम अर्थने अणने ज” -बीज बीज (ने) नथी; राजने नथी, निमितने नथी अणने अण समयनी पथयने पशु नथी; (अ अणने ज रथमभ)। मार्ग बडु (सप्त! पशु) अनंतामां कही कडी नथी अथी अणने चेतननी अनुमभ (कही लाने छे)। (अण ≠ ने...) “अनुमभ सिंधार्मिग्रत, अनुमभ ले जसुपु; अनुमभ भा भोक्षो, अनुमभ भोक्षस्वरुप।”

(अ रथम अर्थ) अ रथमस्वरुप बमरायआयुमा छे- “बडु रथ अंतर जिन बसी।” अ जिन बसी, बडु रथ अंतर आयु जिनस्वरुपी-वीतरागस्वरुपी ज आतमस्वरुप छे। (श्रोता:) हवस्तवामा के पायस्वरुपामा? (उत्तर:) वस्तुस्वरुपामा! पायस्मा वीतरागायुमा (प्राप्त) छे? वस्तुस्वरुप वीतरागस्वरुप के। कहुं ने...! “बडु रथ अंतर जिन बसी”जिन अेंटो वीतरागस्वरुप, अ अंतर बडु रथमा विराजमान आयु (छे); जेमा ध्य, ध्यन, ध्यन, अचितनो ब्याव पशु नथी, जेमा अण समयनी पथयने पशु नथी। आदा... भा! जीसी बार छे; भाग! मोक्षो मार्ग (अलौकिक छे)!

कहुं छे: बमरायआयु अनातुस्वरुप छो, आनंदी बनयो पदयो, लज्जाव अतिनिहित आनंदी बनयो पदयो छे अण आतमाने अणने ज (निरंतर अनुमभो)।

सृष्ठ बार छे, भाु! अनातुस्वरुप (आतमानो) अनुमभ द्वार नथी। अ एंमक्यालापार्ति डिया अं भुधी राण (किया) छे, अं भुधी आतमधर्म नथी, आयु नथी.

अणिमां तो परमात्मस्वरुप बमराय अंबर: “सिंह समान सदा पद मेरो” - वस्तु छे! सिंह (समान) पर्याय नथी। द्वय-वस्तु “सिंह समान सदा पद मेरो” अणी जे बीज छे, अणेने
श्री नियमसार गाथा ८३ – २०८

अंकने ज (निरंतर अनुभवो)।

अंक निज़ामी शीर्ष (आत्मा) नो अनुभव थाय अने अनुभवमां प्रतीत थवी अं सम्बंधरण थे। अं कुछ ओहों गुणाखान थे। अंडीयां तो विशेष रंग कदर के छः आं अंकने ज निरंतर-दर्शन-शान-आर्थिरी-अनुभव करो।

ऐसो: दर्शन अंकपेक्षा निज़ामी बचावन पृथ्वीनृण्यं स्वातं शान करीने प्रतीत करवी, निविदह प्रति करवी, अं सम्बंधरण। अं आत्मा बचावन कुष अं नो स्वर्ग करीने शानी वत्मन पृथ्वीमां सम्बंधरणनी धरा प्रगट करवी, अं शान थे। अं अं स्वमृग्गमां स्विरित करवी अर्थांत् अतीन्द्र आर्य बचावन-अनां बचावन-अर्थरता, रामाव, जयइंद्र, आंकनं भोजन करवं, अं आर्थिर। —अं अंकने अनुभव करो।

आँका... बा! आर्थिर कदर छे के विशेष शुं कहीं? बहुं कहुं। पृथ् अं बध निविदह कर्दे बस थायो। हेका रक्षकाथी अंदर निविदह बचावन, पृथ्वी परमांत् शिरा अंदर बचावन-अनां, अं पुष्ठ-पापना शुभाशुभ-पृथ्वी पृथ् निविदह, अंठ ( परम अर्थने ) अंकने ज निरंतर (अनुभवो)। (अं) क्रवृद्धी हरसे केरे अं धने नसूं, कडे नसूं अं नेम निरंतर अनुभवो। अंम कडे छे। आर्थिर वात छे, प्रलु! सूक्षम विद्यय (छे)। अन्तर्कणीय क्षरधेर (आत्मामुनबु) कृया नसूं।

(अंडी शुं: ) “अंकने ज”-अंकेरंग थाह गयुं? (नसूं)। अं सम्पद अंकेरंग छै। आँका... बा! शुचिनृण्यतानं बचावन-अनां सो अंकने ज निरंतर अनुभवो। ‘अनुभव कर्दो’ अं पर्यथ छे, अवस्था छे। जेनो अनुभव कर्दो छे अं द्रव्य के। द्रव्य अर्थांत् पसूं, शाकावाप, शिरानदराप, श्वामाप, श्वामाप, अंकुशराप, श्वामाप, (अं) हेका बढने, अंको शान करीने, अंडी अनुभव (अं अंडीय) स्विरित करो।

“काण्ड के निज़रस्तना खेड़ाव्यी पूर्ण”—आँका... बा! खेडों छे अंडर बचावन-अनां? के: शैवन्निजरुत, शैवन्नी जनक खेडों छे। अंडर आतीन्द्र आँकनी खेडों छे। अं निज़रस्तना खेड़ाव्यी-निज़शंकित-निज़कुष्ठ-निज़श्वामाप रस्तना खेड़ाव्यी-पूर्ण छे। आँका... बा! अंडर निज़शंकितना खेड़ाव्यी बचावन पूर्ण छे। आँका... बा! समझुंं डरं?

नवस्त्तमा शरीर अं अंक, अं तो अंजवत्तत क्षयं। हिसा, वृक्ष, तोर्प, विद्य-मोगवाना (अं) पापत्तत क्षयं। अं धान, धान, त्रेत, भवित आड़िया पौराणम अं पुष्ठत्तत क्षयं। (तथा) अं पुष्ठ-पाप अं धानने अंजवत्तत क्षयं। —अंकेनी बिन्न, बचावन-अनां शाक्तत्त (ञ्जतत्त) क्षयं। आँका... बा! जीवी वात छे, बाग! प्रथम सम्बंधरण ज सूक्षम विद्यय।

“निज़रस्तना खेड़ाव्यी”—पोताना गुन अं स्वामाप रस्तना खेड़ाव्यी पूर्ण “जे शान” अंडी शाननी प्रधानता कारी। पूर्ण शान, पूर्ण दर्शन, पूर्ण आंकन, पूर्ण शािति, पूर्ण स्वभक्त-अंडर शान कृं। “तेना सुकार्यमान ध्वामाम्”—अंखी प्रगटा अंडर शिक्तुंधे ध्वामाम्। सुकार्यमान अंते अं धने पथायो नसूं। “जे समजसार (जप-ममाम्)” - हुणो।! निज़ामी शीर्ष ज अंडर सुकार्यमान छे (अंखी) को छे। आँका... बा! अंडर बचावन-अनां अंतर्कणीय सुकार्यमान पूर्णो छे, (अं) प्रगट तवत्, प्यक्त तवत् छे, अंखी कदर छे। आँका... बा! समझुंं डरं? आवो जीवों मारं छे!
“तेनाथी इंसु परेरर बींंि कंि पश नभी।” अेंक सकड़ना असंव्यः मां भागमा अेंदो ए अेंक समयमा परिपूर्ण प्रभु आत्मा अंदर बिराजे एँ। अेंलो परमात्मा न ले फर्म आत्मा-परमस्वपु ष (छ।) अेंलो उस्तेब विधासमा-हिस्त मा बीढ़ो नभी। अेंलो नेति हटक थाय विना जे घड़ के ते बरू संसार-पाते छ। समझूि केंि?
समयमा रब द्वार छ नेएँ! अेंलो आ रजहमो द्वार छ। अेंलो आठार पञ्चप्रभु द हिन्दू थीड़करे आयः चे बा भाल! अमूतेर्ज्यां थाय पल्ल आम के छ। मूल (आधामा) नीलु पद चे नेएँ। “अपााण जो ज्यादि” अेंलो आ व्याप्या छे के: “जे आत्माने ध्वारे छे” तो आत्मा डोॅङ? एँ: अंतस्तहिताना ख्यायः बनी वचनो परिपूर्ण परमात्मा अेँ आत्मा। अें शुष्क-अशुष्क भावानी पल्ल मित्र अेंलो पोताना परिपूर्ण स्वयामच्छी अक्षत्र-अेंलो “अपााण”- एँलो नेनि बो परमात्मा देखो। समझूि केंि?
“तेनाथी इंसु परेरर बींंि कंि पश नभी।” आख़्या... खा! सरोत्तर वस्तु भगवान परिपूर्ण आत्मा, अें सरोत्तर वस्तु छ। (अेंलो देखे छे).
अक्षत्र चात छे, बाढ़! अपूर्ण चात!! अंतस्तहिताना मनुष्यान्तं बध अंतत द्रव्य, अेंनाथी असंव्यः अंतत नरकानं क्षयः अलै अेंनाथी असंव्यः अंतत स्वर्गानं क्षयः। तो शुष्कबाव (प्रमाणान्तं) बोधो वधी गयो। शुष्कबाव पल्ल अंतनार क्षयः तो स्वर्ग द्रव्युः। पल्ल संयोजन विना अें जन्म-भरक्ष मटे नभी। समझूि केंि?
भगवान आत्मा अंदर परिपूर्ण परमस्वपु ष। “अपााण सो परमुपा काे खे ने तारकस्वामीमां। आत्मा अलै तो अेंली पोते ज परमात्मा छे। वस्तु तरिके पोते ज आ आत्मा परमात्मा छे। आख़्या... खा! अें परमात्मानो अनेनाथी (सम्भविकास) थाय त्यारे परम्यमां अर्क्षपुः-परमात्मपुः प्रगटे।
हट-सम्भविकास अेंलो द्रव्याने के जेनी ध्येमा-विषयमा परिपूर्ण परमात्मा आयः बाव। भुमक्रू पन्तनां ज्यु-ये सम्भविकास विषय, अेंलो लै ये, अलै (हिस्त मा) आयः बाव तेने सम्भविक देखे छे। अलै अेंली ज्यान क्रयुः अलै सम्भविक छे। शास्त्र-ज्यान आदि तो अंतबाव क्षयः, पल्ल अलै ज्यान क्रयुः नभी। ज्यानुः ज्यान क्रयुः नभी। ज्यानस्वपु भगवानमात्मानुः ज्यान क्रयुः नभी। (स्नाप्यमाने) स्वसंसमु द्रव्युः नभी। अथवा स्वतय विमुक्त बनने परती संमुह बढ़ने बईं अभाव द्रव्युः। ते तो निर्देशक गयुः। अेंनाथी व्यवस्था मटुः नभी।
“तेनाथी इंसु परेरर बींंि कंि पश नभी।”-सरोत्तर वस्तु भगवान पोतानुः वस्तु तेनाथी इंजी ओंि शीय छे ज नभी। “(-सम्भविकास विषय बींंि कंि पश सार्थक नभी।)”
श्री नियमसार श्लोक १११ – २११

समयसार आत्मो नियमिति श्रीग. अनेक अनुमान करयो अं मोक्षार्ज.

आखे... का! अर्थ श्लोक अमूर्ततां आधारं (रवित छो)। प्रकुप्त आधारं संपत ४८मा ध्यय. अपि शास्त्र बनाया। अने ‘नियमसार’ मा तो अने किढु के: आ ‘नियमसार’ तो म मारी व्याप्ता मारे बनायु छ. आमा छेल (गाथा-१८७) छ: “णियमाभाणगिरित माण कर णियमसारानामुदुंद” दुकुरेत आधारं करे छे दे म मारी व्याप्ता-आदन्तो नाथ प्रस्तु अनादुक्षांतसार अनि अदेक्षस्तु-मारे आ शास्त्र बनायु छ. अना टीकाकर मुनिराज पदप्रमाणवातित्वें छ अने ‘समयसार’, ‘प्रवचनसार’ ना टीकाकर अमूर्ततां आधारेत छ।

( वरी ( आ रामी गाथानी टिका पूर्ण करतां टीकाकर मुनिराज श्लोक करे छे) : -

तथा हि-

[ आयर् ]

अतीतीयमोहमलमपुरावर्तितं तत्प्रतिक्रिय।

आत्मनि सदोभागानि नित्यं वर्त्तमात्मना तत्स्मन्। १११।।

[श्लोकरः-] अति तीर्थ मोक्षी उपसत्ति धे धृष्टं उपाध्येयं (धर्मं)
तेने प्रतिकर्मीने, दु लक्षोधातरं (सव्याशानस्वरुपं) अेवा ते आत्मामा
अत्माथि नित्यं पूर्णं। १११।।

“अति तीर्थ मोक्षी उपसत्ति धे पूवं उपाध्येयं (धर्मं) तेने प्रतिकर्मीने” अति तीर्थ मोक्षी भिमाशानसनी-उपसत्ति धे पूवं उपाध्येयं धर्मं, तेने प्रतिकर्मी करीने; पूव अने पापना भावी करीने, शुम-अशुम भावी करीने दु परमनामत्सवुपमा रमणता करुँ छ; अनि नाम सायुण प्रतिवाल करवामां आये छे। प्रति अंदेके पात्र करीने, “ दु लक्षोधातरं (सव्याशानस्वरुपं)” अेवथे ते आत्मा- अनि ते शान्ती मूर्ति प्रस्तु, आत्मा शैलमादोङको पुणण सूर्यं छे। जें अने सूर्यं परमाशुभी सिद्धकर छे, प्रकाशं छे; तेन भागवत (आत्मा) शैलन्यं प्रकाशना नूतानी पूर्णं छे। आखे... का! अेवथे भागवत, अेवथे ते आत्मा लक्षोधातरं अंदेके सव्याशानस्वरुपं (छे)। आत्मा तो तीकण शान्तस्वरुपीं छे। बस!” “अेवा ते आत्मामां 
अत्माथि” आखे... का! शान्तस्वरुप, शैलपुरुषं अेवा ते आत्मामां अत्माथि अर्थात् नित्यमोक्षाभिधि आत्मा (मा) “नित्यं पूर्णं।”

आखे... का! मुनिराज करे छे: दु तो सव्याशानस्वरुप भागवतात्मा तीकण अेवथे (ते) आत्मामां अत्माथि, “अत्माथि” अंदेके पूवं प्रविष्ट दशाथ्, सव्याशान-शान- 
वारित्री दशा अने आत्मा छ (अनि) अने अत्माथि आत्मामां (नित्यं पूर्णं)।

जीवन वत, भाव! मोक्षार्जुन सृष्टि बुधु। अनि ते भाव जनत्यानि ज छे, अे सिवाय 
उपायं नथी। अन्यम्य य उपायं नथी। आ तो सर्वसंप्रामा जिद्धेशरेष्टेनुं द्वार्य छ। जेना 
भागमां स्वस्त नथी तेना भागमां कोट वत सत्यं सेतृति नथी। जेंके सर्वस्वाधीन आत्मा छे; 
आत्मामां सर्वशास्तिक-शान्ताव भरो छे-अने आत्मा; अनि अवसंधन'नथी, अनि आत्माथि पर्याप्तमां
"अंद्रणाएँ मां के आत्मानी हृद-शान करें तो अनायन करार वसी। अन्तः निष्ठा, बगवान केवल (जी) बगवानस्वप्नस्वप्न, अन्य हरि, पहने ने आराधना-
एसर्जनों मार्ग छ हरियों, केवल अनुभव कर रहे।"

"भेदकाल में आत्माएं आत्माथी नित्य वर्त्ता हौ।" -मुनिरज केवल हौ नित्य वर्ता अभिषी भीजने (मादे) केवल (अभी) तो नित्य वर्ता हौ अभिषी मृत्ति (पोतने मादे) केवल हौ: वाकवाक हे बगवान-आत्मा में हूँ नित्य वर्ता हौ, आत्माएं आत्माथी नित्य वर्ता हौ, आज... ह! भाषा टूटी (पाँ) भाव अभस्पत!!

जिहादः: पूर्वानि उपाधित कर्म (कांतीं) ?

समाधान: करवर्त जो छ। अभिन्न उपाधित करें, अभिन्न कर्म है। पूर्वानि मित्यात्वाली उपाधिवेकशम है। कुष्ठानि नहीं, पूर्वानि करें। अभिन्न करवर्त है। अभिन्न कर्म का... अभिदर्शी उपाधित करें। अभिन्न कर्म अभिन्न कर्म है। अभिन्न कर्म है। अभिन्न कर्म अभिन्न कर्म है। अभिन्न कर्म है। अभिन्न कर्म है। अभिन्न कर्म है। अभिन्न कर्म है। अभिन्न कर्म है। अभिन्न कर्म है। अभिन्न कर्म है। अभिन्न कर्म है। अभिन्न कर्म है। अभिन्न कर्म है। अभिन्न कर्म है। अभिन्न कर्म है। अभिन्न कर्म है।

"आत्मा पूर्णानिक्षमाभिन्न के सम्महवास्यानि, सम्महान थीरने, प्रति थाम छ। सम्महवास्यानि विश्व-ध्येय के 'धृष्ट' ते सम्महवास्यानि विश्व-ध्येय अभस्ति नहीं, ते तो नित्य (वर्त्ते हैं)। दाहे तो विश्वास्यानि आयो, वाकवास्यानि वाह जायो; पाँ अभि थाम-ध्रुवानि हरि, वाकवास्यानि पवस्ति नहीं। 'अभस्ति नहीं' नेभो अधक हरि नहीं।

अर्थांि जो केवल "ते आत्माएँ" - केवल 'आत्मा' म्ह? सम्महवास्यानि आत्माएँ अभि। अकलो शास्त्रो पूर्द, पूर्द, शास्त्रों चंद्र शैवत... शैवत... शैवत... शैवत... शैवत... शैवत... अभि जे वाकवानामा, अन्तः ते आत्माएँ 'आत्माथी' -अन्तः निर्माण परिशिष्टिः 'नित्य वर्त्ता हौ'
श्री निर्मान्दर श्रोक १९१ - २१३

भुजि तो कदें छे के: ईं तो योकीसे द्वार आनंदों वर्तू छू। ईं तो आनंद्वेक भगवान्मा नित्य वर्तू छू। ‘वर्तू छू’ अे परंतु छे। नित्य वर्तू छू-नित्यमान नित्य वर्तू छू। नाथा सेभेली प्रस स्वाभ बहु जीसा छे। नित्य प्रमु द्वार, सम्बज्यान्नि मूर्ति प्रमु (अे) आत्मा: अंवा आलमाओ आलमारी-वीतरागीपथाथी-नित्य वर्तू छू। अे मारु मोक्षमार्ग अने मुनिपुरण छे, अंम कदें छे। गृहस्थानमाओ नस्दितने (सकण) आतिन होतू नाथी। अने अंद्रि तो (सकण) आर्थिमाधित रणेनाने वात भेजी लीथी छे। समझाय शंशांग।

श्रीश्रीनाथजने आर्तिन नसेभ धरावा ध्याविद्याविद्यावत धरा। राजमां रेवता कर्ता। (पशु) अंतर आलमाओ अनुवप्त करीन आलमानो व्याह वसने धार्मिक प्रतिभित (श्रीनी) प्रगट करी। पशु (ते) पडेली नरकानु आसु बाधू गरु तु त्यारे पूर्वेरम्ये झड़ी नारको निर्मित धारी बाधी यी। तोपणा ट्यारे सम्बज्यान्न प्रस कू। ते आत्मान्ने निर्मित धवी गक-वोकीवी बजार (वर्ष) देय गह। श्रीश्रीनाथ बड्जवान (बड्जपीर) ना वाणमाना १२ बजार (वर्षनी) स्थितको नरकानु गया छे। त्या अंद्रि बजार (वर्ष) गया (वीया) छे अने साक्षियाए बजार वर्ष (क्ष) बाकी छे। पशु आलमारे सम्बज्यान्न-अनुमव्र प्रगट कू। अनेकाः तीर्थंकरों बाँधुये तो भविष्यमा पडेली नरकानुणी नैनाने तीर्थंकर थे। आलमारे... धरक। भवनाहि नामना तीर्थंकर! ज्ञेया बड्जपीर बड्जवान वंश (तेया)! अे प्रताप, आलमा-पूर्णानंदना नाथना अनुमव्र अने सम्बज्यान्न (नो छे)! अंद्रि तो विशेष कदें छे के: दर्शन, शान ने आर्थिमानी सम्प्रदाय-रंगेनी कदें छे। मुनि छे ने... ईं तो प्रेयोमान नित्य वर्तू छू। नित्यमान नित्य वर्तू छू। आलमारे... धरक। आउँ अंच छे। अतु नाम मुनि पुरण छे। “गमो लोए सवव त्रिकालवता साहूण” - आ आधु... धरक। आहार।

उदयाक कदें छे : ‘गमो लोए सवव त्रिकालवता साहूण’ अमहू जेनं सवियाना (पशु) बड्जवाने लेवा! (पशु अंस न्यी). जेन परमेशशे अनुमव्र करी अनुमव्र जेनशासनमा जळेय छे। बीज वार्गमा अं छे ज न्यी। तो ‘गमो लोए सवव साहूण’ – (अमहू) लोकमा बन्धा भागुको छे छे तेमने नमस्कार न्यी। जेनना संतो जे अम बरे छे-आत्मामा-नित्यमा-आनमा नित्य वर्ते छे- अं जेनना साधु। अं साधु ‘लोए’ मां ‘लोद’ मां आवे छे। समझाय शंशांग।

अंक स्थानकानी साधु कदें छे के: ‘नमो लोए सवव साहूण’ – (अमहू) जेनना बन्धा अने जेनं सवियाना बन्धा साधु लेवा! (अंस न्यी. अं) बिकुल वात जळेय छे। समकित जळेय न्यी तो परंनी साधुपुरण उच्चा? परमेश जेन परमात्माना पंथ सवियाना साधु अने समकित वर्ता न्यी। आ पशु धर्म सायो अने ते पशु धर्म सायो अंस न्यी।

वीतराग सर्वरा परमेश जिनेवन्देये (जे) अनंतसुगनो चिंद आत्मा कहो अंतमानी प्रतीति, बान अने सम्प्रदा-निधिकलप्याणे नित्य वर्तू छू; अंम कदेवामा आवे छे...

(... शेषांश पृ. २९४ उपर)
“पोतानी पर्याप्त के परद्वयने स्पर्शती पण्ड नथी तेने
तो अंक बाजू राणी पण्ड के पोतानी पर्याप्तं अस्तत्वं
छ अं शांति, आंद्र आदिनी पर्याप्त आवती न शेषाथी
परद्वयं काहूँ ने जिज्ञासी गुणोने स्वतंत्रं काहूँ.
के ज्ञानान्ती पर्याप्ताधी नाथी आंद्र आदिनी पर्याप्तं
पण्ड परद्वयं काहूँ, तो स्वतंत्रं कळस? के: जिज्ञासी
गुणस्वभावं ते स्वतंत्रं.
अंत: गुणस्वभावं स्वतंत्रं काहूँ, तो तेनो आधारं कळस?
के: जिज्ञासी अंकृत: कार्यसमयसारं ते स्वद्वयनो आधार
छ. जिज्ञासी सच्चान, जिज्ञासी सच्चार्थताम, शुद्ध
अंतःत्त्वस्वद्वयं स्वतंत्रं छे, तेनो आधारं कार्यसमयसारं
छ. अं कार्यसमयसारं उपाय्ये छे.”

—श्री ‘परमाजंभार’ / पप्रिं
આરાહરાય: વહુન મોત્રૂણ વિરાધન વિસેસેના।
સો પહેલામણ ઉચ્ચ પદ્ધતિમાં હવે જમ્ભા॥ ૮૪॥
આરાહરાયાય વચન મુક્તિ વિરા્ધન વિશેષેનું સ્પષ્ટ જાણવું મદ્દત મળશે॥ ૮૪॥
અત્રાતારાધનાય વર્તમાન જન્તોરેલ પ્રતિક્રિયા સાધન તમું.

**ત્રિકી: આત્માની આરાહરાયાયાને વર્તાણ જ્યાને જ પ્રતિક્રિયાઃસ્વભાવ કદેવાય.**

- પરમત્પાદની જ્યાદ નિર્દર્શિત અલ્પસમન્જેણે (–આતમાન સમુદ્ર પાણે) અનુંત (– ધ્યેય પસંદ કરેલ) પર્યાયમંત્રણને થેવે સાધારણ-સ્વભાવભિંભિમાં-આતમાની આરાહરાયાને વર્તાણ કરે જે નિર્પસાધન છે. જે આતમાની આરામન ક્ષત્રિત છે તે સાપસાધન છે; તેથી જથી નિરપશ્ચાણ વિરાધન છીલી-અંગ કાલ્પ છે. જે પ્રથમમાં 'વિગતરાધ ' અર્થાત: *સ્વભાવ ક્ષત્રિત છે તે વિરાધન છે. તે (વિરાધન વિનાં-નિરપસાધન) જ્યાદ નિર્પ્રથિક્રિયામાં છે, તેથી જ તેને પ્રતિક્રિયાઃસ્વભાવ કદેવામાં આવે છે.

* બાદ = આરામની; પ્રસનની; દૃઢ; સિદ્ધ; પુર્ણતા; સિદ્ધ કરીને; પૂર્ણ કરીને 

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
‘नियमसार’ गाथा-२४ कुंडकू आचार्यमन्दरार्जनी गाथा है। ‘प्रतिक्रमणार्या’ अंग
नहीं पुन्त ‘प्रतिक्रमणमय’। “अढ़ी आत्मानी आराधनाम वत्ता खवने ज प्रतिक्रमणस्वरूप
dेव के।” -शूं कहुँ। के: भगवान आनंदस्वरूप, आनंदनो सागर, आतीतिर्य आनंदनो प्रलु
आत्मा; अभे खै वत्ता छे, रमे छे; अनु नाम प्रतिक्रमण है। आहा... खै! सत्य-सारु-निर्मयात्मक अने के छे।
(खे) विशेष चुलाओ करे: “ज परमत्वपानी खव” - परमत्वपानी खव; परमत्व 
जे भगवानमाता अं परमत्वपानी खव; अं परमत्वपणो शानी खव; ‘परमत्वपानी खव’ (अंतेल के:) पोतानु परमत्व जे आत्मा अनें जाणी बहराने (खे)
“निरंतर अभिमुकणे (आलसेमुकणे)” - भगवान पूलानंदस्वरूपनी संमुन-अभिमुन;
(अंतेल के:) विक्रविणी विद्वृ-विपरीतव्य विमुण, रागाक्षी विपरीत-विमुण अने स्वर्णात्मी 
संमुन; परमत्वपानी अभिमुकणे (आलसेमुकणस्वरूपे) अर्थात आत्मा आनंदस्वरूप शुद्ध 
वीरराजमूरत प्रलु अनेय अभिमुन-संमुन वर्णे- “अतूट (-धारावादी) परिशिलांतति
वरे”-अंतेलां निरिक्ष्य गृहास्फलण-शान-दारित (३) जे वीरराजविज्ञान, अं परिशिलांतति वरे 
धारावादीपणे; (अंतेल के:) शुद्धस्वरूपनी दस्त अने शान जयां निर्मण थयां, 
ते शान धारावादी छे; वसः रागाक्षी आजे छे ते दरम्यान छे अने आ स्वर्णात्मा छे। (अे)
परिशिलांतति वरे, अं वीरराजविज्ञानी निरंतर संस्कर वरे “साक्षात् स्वर्णात्मितिमां-
आत्मानी आराधनाम वर्त्ते” - आत्मा आनंदस्वरूपनी सेवनाम वर्त्ते छे। आहा... खै... खै!
‘राध’ अं शष्ण ‘सम्यसर’ मां दीधी छे। ‘राध’ अर्थात् ‘सेवन’। आहा... खै! अनु नु? के:
भगवान आनंदस्वरूप प्रलु, निरिक्ष्य गृहास्फलण आत्मा; अनेय सेवनामां-आराधनाम वर्त्ते छे
ते निर्मयात्मक छे। “ते निर्पराध छे।” आहा... खै।
अढ़ी तो जे बावधी तीर्थकर्गोत्र बंधाय ते पल्ल अपराध छे। ‘पुरुषार्थसिद्धिपाय’
अमृतस्वंद्र आचार्य (नी रचना). अभेले ‘सम्यसर’ नी टीका दरी छे। जे बावधी तीर्थकर्गोत्र 
बंधाय, जे बावधी आबादशरीर बंधाय अं पल्ल अपराध छे। राण छे ने!... आहा... खै... खै!
अं अपराधी रक्षित, निरिक्ष्य भगवानआत्मानी सेवनामां (खे) वर्त्ते छे ते निरिक्ष्य है।
कह सीते? के: अंडे राजनो गुनो गह्नो नाथो!
आहा... खै! आवी वात छे, बाह! जीती जूठ, बापु! अनंतकानां अनंतकानो
अंग्रास भीयो अने आ अंग्रास भीयो।
आहा... खै! सत्त (परिशिला) संस्कर वरे साक्षात् स्वर्णात्मितिमां-आत्मानी [-शुद्ध 
विद्वृतानी] आराधनाम वर्त्ते छे ते पुरुष निरिक्ष्य छे। छ व्यवहार आवस्था करे अं पलु
राग छे, अपराध छे। आहा... खै! गजब वात छे। शुभमताव आजे अं पलु अपराध छे अंडे
अं आत्मानो स्वर्णात्मा नाथो।
अरे! मनुष्यापूर्वत भूमि ने अभे मनु वस्तु अलबमवा न मने तो अं सत्य वस्तुतुं
सेवन-श्रद्धा-शान क्यारे करे? अभे ने अभे जगत बिजानी कृस्मां आह्यु जय छे! अंतर
भगवाननी कृपा लीधी नाथी।
श्री निधमसार गाथा २४ - २५

(अहींया क्रे के:) “जे आत्माना आराधन रक्षित छे ते सापराध छे” - बजगवन शुद्धोत्य आराधन प्रलुनी सेवनां रटे ते आराधना छे ते निरपराध छे अने (जे) आत्माना आराधन रक्षित छे, शुद्धस्वरूप आत्मानी सेवना रक्षित छे, ते भयू सापराध छे. आज... भू! व्यक्तिरत्नभ्रमणो रश छे ते अपराध छे अमें क्रे के. आज... भू! वीतरागभारी!!

(जे) निरंतर परिशासनसंति वे आत्मानी आराधनां वर्तन छे ते निरपराध छे. अने (जे) आत्मानी आराधना रक्षित छे ते सापराध छे. अहीं तो छ आवश्यको विकल्प-रश के, व्यक्तिनो रश के, अने शुद्धस्वरुप पात्र अपराध छे. जगत वात्छ, प्रभु! वीतरागभारी-वीतराजभारी आराधना जे निरपराध छे. अने राजमां रदेयुं अने रमणां रदेयुं अने सापराध छे. समझातुं छाँ?

शिखास्तह्: अनूठ परिशासनसंति तो श्रीशिमा रटे के?

माधानां: अने श्रीशिमा न नीते (नागुपस्थानां) धारावाही दुस्तिं धीय पकड़ुं छे ने...! तो धारावाही धाराधारा वाचे छ. भक्तश्रीलिनी तो वाचे य शुं मोही अने तो अन्तमुखद्वारा भलास! आ तो मुनिपानी वाच क्रे के. अने छाँ-सातमां वर्तन छे. छौं आचे क्रे त्यारे राग आवे के ते अपराध छे. समझातुं छाँ?

आको वाच के, प्रभु! शुं शाय? वीतरागभारी अपांव्य छे. पूर्ण ग्याराय (अनु आराधन) कर्ष नाथी. तेपी अने कुकर दाङे, भाजे नौकी कर्ष दाङुह धीय! अमें दाङे.

बजगवन पूर्णांनां नाथ अंदर बिदाजे छे. प्रभु पोते परमाभवस्वरूप छे. अर्थे के अमां अंदक ’प्रभुता’ नामनी गुज़ छे (अंदक) जानशुला छे, दर्शनशुला छे, आरणंशुला छे अमें अंदक प्रभुता नामनी गुज़ छे तेपी अंदक दुस्तरस्वरूप जे छे. आज... शू... भू! अर्थे! अंदक गुज़ नौकी पात्र अन्तता गुज़ दुस्तरस्वरूप छे. अने अन्ततुलुगुज़ धानी पोते अंदे तो महादुस्तरस्वरूपे छे... आत्मा! अंते क्रे बापुं?? अंदे वोड़ेने (जगत नाथी). वर्तमान पूर्ण ने पापना भावमां रोकाह गयो, अटकी गयो अं तो संसार छे.

अहींया क्रे (क्रे क्रे के:) बजगवनात्मां आंदरस्वरूप प्रमु; अमां लीन वचने आरणंती धारा वर्तन छे अं निरपराधी. अंने (जे) (आत्म) आराधना रक्षित छे अं शुरुराजमां आचे के अं अपाराधी छे.

अंदर (पांक्या) निरपराध अं सापराध बंदनी व्याप्य छे के नाथी? मूण पांक्या क्रे “मोतूण विराहण” छे ने...! “विराहनाने छौडीने” (मूणी) राधमां (आराधनां) आपुं (अंते के:) बजगवन आरणंती वर्तमां अंदर जुव, अनी आराधना-सेवना वीतरागभारी कर्ष, अं आत्मा निरपराधी छे. अने आ आत्मानी सेवना दुस्तरानी छौडी त्या, धान, प्रत्या राजानी सेवनां रोकाह छे अं अपाराधी छे. समझातुं छाँ?

“तेपी ज, निरवशेषणो विराहन छौडीने- (अं क्रे के).” क्या अर्थे? अं हार्वे के-आत्मानी आराधनां वर्तन छे अं निरपराध छे अं आत्मानी आराधना रक्षित छे अं सापराध छे-तेपी ज, निरवशेषणो विराहन छौडीने. -शूं कर्ष के? विराहनपूणुं तो समस्तपूणुं छौडी. निरवशेषणो (अंते) दुस्तराप अं थान राजानी बाडी (अं) ‘विराहना’ (चे, अने) छौडी
पृ २१८ - प्रवाहन नवनीत: भाग-२
हे! आहा... या! ‘निरवशेष’ (अर्थात्) डुकपण भारी राज्या विन राग-विराहण-ने छोड़ीने (अंदेहे के) आ अंश ही है... आ अंश ही है अभे विलुप्त नहीं, रागना भधा अंश छोड़ीने।
आहा... या! आ तो वैतरागमार्ग छे, भाग! रागी वैतरागपणु आपत्ति नहीं। (अंदेहे) रागनी धिशा परतरक है अने धर्मनी-वैतरागनी धिशा स्वतरक है। आभूनी धिशा हेर तो दशा हेर। समजाभुं कांश?

“निरवशेषपणे विराहण छोड़ीने-अभे क्वाँ हैं.” पाथमा ने नें...! “मोतूण विराहण विसेसेन” ‘विसेसेन’ अंदेहे निरवशेषपणे-क्वाँ दशा भारी राज्या विना। क्वाँ दशा रागनो अंश, गुश-गुशीता भेदनो विलुप्त दशा अपराध है। आहा... या! अपराध है। शु माय? अने अपराधी निर्पराधी धाय? व्यवहारकी विश्राम धाय? (अभे नहीं) अभे क्वाँ है। शु माय, भाग?

अर्था संग तो क्वाँ है: के पोटाना स्वप्ननी आराधनामा रत क्वाँ है ते निर्पराधी अने अनुवाची धेत ते सापराधी। धेती ज, निरवशेषपणे विराहण छोड़ीने (पाथमा) अभे क्वाँ है।

“से परिवार विगतराध’ अर्थात राध रक्षत है।” ‘राध’ नी व्याप्या: आराधना- शुद्धस्वप्ननी आराधना; शुद्धस्वप्ननी प्रस्तन्त; शुद्धस्वप्ननी दृष्ट; आ दृष्ट। क्वाँ दृष्ट दृष्ट दृष्ट दृष्ट दृष्ट दृष्ट; अने शुद्धस्वप्न जे पूजा-पापी रक्षत अभे विभवानामातूं सेवन अने आराधना, अने राध अर्थात सेवना, अने आत्मानी प्रस्तन्ता। शुद्धता ते आत्मानी प्रस्तन्ता। शुद्धराज ते आत्मानी प्रस्तन्ता।

विधासा: या अवशकती प्रतिष्ठा धीरी श्रद्धा अनु (शु)?

ऋणाध्य: या अवशकता विलुप्त आवे ते अपराध है। अने ते पुढ़ेलां डूढ़ी गया नेन...! गाथा-२३: “मोतूण वयणरणण रागादीमारवारण किना।” (विकल्प) आवे पृष्ठ अने छोड़ीने स्वप्ननी आराधना कर्यी अने निश्चयप्रतिक्रिया है। व्यवहार आवे है पृष्ठ अने अपराध है। आपु (वस्तुस्वप्न) है!​

“से परिवार ‘विगतराध,’ (राध अंदेहे) प्रस्तन्ता। -आत्माशुद्धस्वप्न परमात।; अनुं सेवन-सम्पदन्त-श्रन्त-शरीर-अने आराधना कर्यी, प्रस्तन्ता कर्यी, दृष्ट कर्यी, सिद्ध कर्यी, पस्तुनी सिद्ध थाइ (अभे कर्यी), पूर्वता कर्यी। अने सिद्ध कर्युं ते, पस्तुनी निर्माणशा सिद्ध कर्यी (वडी) ते, अने पूर्व कर्युं ते। -अने बधी राधनी व्याप्या है। अने ‘समवसार’ भोक अभिधा (गाथा-३०४) मा आवे है: “अपगतराध’ अर्थात राधानी रक्षत है ते आत्मा अपराध है।” अने अर्थात है: ‘विगतराध’ अर्थात राध रक्षत है ते विधान है। बन्धन (आत्मा) नी आराधना रक्षत है ते विधान है। बन्धनात्मानी प्रस्तन्तानी विदुष है ते विधान है। अत्मानी दृष्टणी विदुष है ते विधान है। आत्मस्वप्नसिध्द करे अने सिध्द (उपयोग) बौधे जाय तो विधान है। रागताना पूर्व स्वप्नमां पूर्वता कर्यानी प्रतित (पुरूषार्थ) न ही अने परमां जाय तो ते अपराध है। रागताना स्वप्ननी सिद्ध न करता रागनी सिद्ध करे तो ते अपराध है। पृष्ठ कर्युं (अंदेहे, ध्वन) पृष्ठ न तदे अने रागां जाय तो ते अपराध है। आहा... या!
श्री नियमसार गाथा ८४ - २१८

आदु क्रम, भार! मार्ग आयो हे! संतोषे पुत्रां मूखां हे. दिजोत्स संतोषे तो ध्यानी पीठी रजत्ने जड़े रर्णे धर्म हे. मानो न मानो... मार्ग तो आ छे!

“ते (विश्वास विनानो-निरपराध) जव निश्चितमालय छे.” - ते जव निश्चय प्रतिष्ठित छ संकेत छे, विश्वास रहित अनोदे के निरपराध निश्चितमालय छे. ते (जव) निश्चितमालयस्वप्ने पीररागवामांशुधुपण्योग (मय) तल गयो हे. आकाश... खा... खा! पुज्यां भाव अने पापां भाव अं तो अशुधुपण्योग छे ते तो अपराध छे, शुरू हे. अर्थी तो आत्मा तरिकांशुधुपण्योग ते आराधन छे, अं प्रतिष्ठितमालय (छे) “तेथै जर तेथै प्रतिष्ठितमाकृष्ठ जडेवामां आये हे. - अं मुलिने, अं आत्माने प्रतिष्ठितमाकृष्ठ ज जडेवामां आये हे. काष्ठे के रागारी रहित रक्षणे अंकर स्वरूपाणी पीररागविशेषत्वांतर थयो ते मुलिने आराधक जडेवामां आये हे. (अं अविनि) प्रतिष्ठितमाकृष्ठ ज हे.

व्यवहारसर्वत्र पष्ठ रग हे. आकाश... खा! (‘नियमसार’) निश्चितमालयस्वप्ने अधिकारां आत्यु हे. शुभोपण्योगां पष्ठ परवश हे. शुधुपण्योग भाव हे अं पष्ठ परवश हे. स्व आवश्यक नथी. (श्रीत: इत्यदु-युध-पर्याप्तां विशार दारे जो? (उत्तर:) गदा विशार-लेहे दारे तपश्च परवश हे. आत्मा एक द्राक्ष हे, अं मछु अनंत शक्ति हे, अं मप्ये चे-अंवा गदा लेहे विशारे जो अं परवश हे; काष्ठे के विकल्प-लेहे हे; अं आवश्यक नथी. आकाश... खा! अविनि पात छे, भार! अर्थी आवश्यक हे पोहारे हे: निश्चय (प्रतिष्ठित) तो आ हे, सत्य हे. व्यवहार आये हे पष्ठ हे (ते) अपराध. आत्ता... खा! समझौं कहां?

अं आवर्त आये हे के भार! अर्थी जे कहूं अं ज (कुंडकुंडास्थार्थ ता् ‘समुदाय’ गाथा-३०४ मां) कहूं हे. (जुनो पृ. २२०).

... अं विशेष चदो.

* * *
र२० - प्रवचन नव-नंत्र: भाग-२

प्रवचन: तृ. २२-२-१८७८

[ [ अंगी रीते (श्रीमहानगरपुरकुंडळायेहरावपृक्षत) श्री समयसारस (उर्फ भागा दास) कहूँ छे के:-

तथा चौक्त समयसारे-
“संसिद्धिराधसिद्ध साधियामाराधियं च एवदृढः
अर्गदर्शी जो खलू चेदा तो होदि अवराधो।”

“[ गाथाय:- ] संसिद्धि, राध, सिद्ध, साधित अपने आराधित-अने शक्त्रो अकार्ष छे; के
आत्मा 'अपगतराध' अर्थत् राध्यारी रहित छे ते आत्मा अपराध छे।” ]

‘समयसार’ (गाथा-उ३०-नो आधार आपे छे:) “संसिद्धि, राध, सिद्ध, साधित अने
आराधित-अने शक्त्रो अकार्ष छे।” - आत्माना आन्तरिकपर-सिद्धि थ印度 (अर्थतः)
शाक्त पूर्णस्वपनी सामुदित थराेने निर्मय पर्याय प्रगस्त थरी तेने संसिद्धि कर्दे छे; तेने राध-वस्त्रन
कर्दे छे; तेने सिद्ध कर्दे छे (अर्थतः निकाही स्वपनसून सेवन (अंगसे) शाक्तमार्ग पूर्णस्वपन
अने गुपनो राशि-देवली भवान अनेने सेवा-अर्क स्वसंभुषनी अरके अने अर्कीयां
सिद्ध कर्दे छे. अं पर्यायी सिद्ध छे. सिद्धस्वप्न छे तेने साधन थरुं ते पर्यायने सिद्ध कर्दे छे.
आशा... श! साधित छे, अंगी साधुं छे, वहस्वपनसून साधन कर्दे छे (छे). आराधित (अंगसे)
अंगे चैतन्य भवानने आराध्यो (छे). (अंगसे) निमित्तने प्रेम छीड़ी, राजनो प्रेम
छीड़ी, अंगी समयसार पर्याय उपरनी हृद छीड़ी, निकाह भवान परान्तरस्वपने सेवन-‘
सेवनो’ अं पर्याय छे- अंगी अर्कीयां आराधना करेवांमा आरे छे। “के आत्मा
‘अपगतराध’ अर्थत् अंगी सेवनाली रहित छे अं “राध्यारी रहित छे ते आत्मा अपराध
छे।” आशा... श! रहे तो शुभमानमाय आयो खेल तोम पड़ ते अपराधी छे। आशा... श! आयी वात छे!! अं राध्यारी रहित छे ते आत्मा अपराध छे.

* [ [श्री समयसारस (श्री अमृतसारशहीदपुरकृत आत्माभाति नामनी) ताकामा पड़ (१६७मा श्लोक दास) कहूँ छे के:-

उक्त त हि समयसारव्याख्यां च-

( मालिनी )

“अनवरतमन्तीर्भेद्यते सापराधः
स्पृशति निरपराधों बोधं नैव जातु।
नियतममशुद्ध स्वं भजन्यापराधोः
भवति निरपराधः साधू शुद्धाल्पसेवी।”

“[ श्लोकाः ] सापराध आत्मा निरंतर अनंत (पुरुषलवलमाणुष) कर्मीयी बंधय छे; निरपराध आत्मा अर्थत् पुरुषो रवियो स्वर्गीयो नाथी ज. जे सापराध आत्मा छे ते तो नियमी रहूँ तो अर्कीयो सेवन ढेर तो सापराध छे; निरपराध आत्मा तो वायी रहूँ शुद्ध आत्माने वेदनार खेल छे।” ] ]
“सापराघ आत्मा” अर्थात रागने पोताने मानीने, रागनी सेवामां-शुद्धवाचांमां पुष्प रूपमा (क्षमा) ते निरंतर सापराघी छ. आहार... श्री नित्यमारायणा गाथा १२४ - २२१

श्री नित्यमारायणा गाथा १२४ - २२१

“सापराघ आत्मा” अर्थात रागने पोताने मानीने, रागनी सेवामां-शुद्धवाचांमां पुष्प रूपमा (क्षमा) ते निरंतर सापराघी छ. आहार... श्री नित्यमारायणा गाथा १२४ - २२१

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates
रूर - प्रवचन नवनीत: भाग-2
आचार्य कहे हैं के: अगर अक्षय अने अमेर छे. आह... दू... दू! भीर रीते संतो-दिगरें संतो-दिगरें आचार्य तो अमे कहे हैं के: 'ज़े ज़े सम्यंस्करण-शान-परिषार प्रकटां ते अक्षय छे' कवे पाँच पद्यानो नथी. आचार्यं (अर्थे प्रसं तथा तथा आचार्य शीला) थाप. पण अक्षयानां कोह दीं' पहे नथी. समझ यो कहे छे?

अरे! स्वयंभूरुपाण समुद्रनाम तथीयो ते रतन बल्ला छे अने त्या (तथ्ये) रेती न केह. शु दी हुई? -रतन बल्ला छे. तो आ य स्वयंभूव मृत्यु! अंदर जे शैतंय रतनरक प्रभु! अमां अन्ततंतर पद्यां छे. अर्थे स्वयंभूरुपाण समुद्रमां नीरी (तथ्ये) रेती नथी, कहे हैं के अमकं रतनोनी वेयु छे. असंख्य योजनानी स्वयंभूरुपाण समुद्र. अमकं रतनी बरेदी हैं. अरेरे!! अंतु केतन बोधे छे अने आम आ भगवानालापाणु केतन बल्ले नानु, पण अना भाव तो अन्तत अन्तत बल्ला छे. बाढ़! जैने स्वयाव छे अने केतनी विशेषतानी ज़ुदू नथी. अनें शैतंत्रना सामर्थ्यनी विशेषता छे. आहा... श्र! अन्तत ज्ञान रतन, अन्तत हिरन रतन, अन्तत शारति रतन, अन्तत अंतरं रतन, अन्तत खजतर रतन, अन्तत निति रतन, (अन्तत दर्श) रतन, (अन्तत) वीररतन, (अन्तत) प्रवृतिर रतन, (अन्तत) विलुता रतन- अवी आनती शैतंतनो संबध्ये, अने अकं आकं शैतंतनु अन्ततु सामर्थ्य, अवी के भगवानालापाण; अने पवयी वण लवने छोटी अने पव उपर ददु ते हैं त्यारे के पवयी प्रज्ञध थाप हैं ते अन्ध परिषारी हैं. अंध हरसुनाना (लक्षे धेयाका) परिषार अंधवर्तिषारा हैं. व्यो, आयु बाढ़! अंध हरसुना के मृत्यु द्वो. जैनेमुक्तस्वपुण भगवान छे अना समुद्रनान परिषार पण मुक्त छे. अने परिषारवाणी आलानिरपराशी हैं.

"बंधन द्वा द्वारी स्थादो नथी ज" अमें छे. छे! संस्कृतमाण शब्द: "संधन नेव जातु" — 'न एव जातु' — 'नथी जा.' आहा... श्र! जे भगवान अंधस्वपुण परमाणा, अमकं अन्तता शैतंयरतनोनी बरेदो सागर प्रभु, अनें सेवा जैने धकी अमकं एकी अनें समुद्र धरने जेटे सम्यंस्करण-शान-आचार्य परिषार प्रकट दुह्या, अने निरप्राण प्राणी, अने कर्मी विसुलुक वंधतो नथी. आहा... श्र! 

अरू तो परमाणा अमं कहे हैं के: अमाँई भजन—अे भाव पण अपराध छे, धारा के अमे परद्वय छीने; अं परद्वयनु (भजन अपराध है). 'मोक्षपादु' इसी आधा: "परद्वायं दुगा।" अं तो वीतराग (छे), दुभजनी दृश्या विना वात करे. अमे पण ताहा (गाए) परद्वय तरीछे छीने, प्रभु कहे हैं: अमाँई भजन अने अमांई प्रत्ये लक्ष तु राखे (तो) ते पण अपराध थाप छे.

खिलासा: भगवाननी विज्ञति द्वो क्रिया पुष थाप छे?

समाधान: अं बंधु छापामा आयुं छे: भगवाननी विज्ञति मां शुः क्रिया? बापु! अं बंधु छापामा आयुं छे: भगवाननी विज्ञति मां शुः क्रिया? बापु! अं बंधु छापामा आयुं छे: भगवाननी विज्ञति मां शुः क्रिया? बापु! अं बंधु छापामा आयुं छे: भगवाननी विज्ञति मां शुः क्रिया? बापु! अं बंधु छापामा आयुं छे: भगवाननी विज्ञति मां शुः क्रिया? बापु!

परिषारनी योजना अने इतवो बिनरु योजना तर्कनो भाव थाप (अं अपराध है). संवारां तो अंहु ने के: तीर्थदर्शक साभारिते ज़ बंधाय, (उक्दे) अमे अपरिषार अने ज़ हेय, पण अं अपराध है. जे बावे तीर्थदर्शक बंधाय ते भाव पण अपराध है. व्यावे शु ददु शुं? चेला (संब्रूजकमा) तो राजाध थाप-आहा... श्र! तीर्थदर्शक बंधाय शुं? चेला तीर्थदर्शक बंधाय शुं? चेला तीर्थदर्शक बंधाय शुं? चेला तीर्थदर्शक बंधाय शुं?

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
स्री निम्नलिखित गाथा ८४ - २२३
(शोता:) तीर्थकर थाना छ बधा अपराध करीने थाना? (उत्तर:) अपराध करो त्यारे तीर्थकरप्रवृति बंधाली. अनाघी क्लयाना नरी. अे अपराधनो भाव छोडैने केवल धैन त्यारे प्रवृत्तिना उत्तरनो संयोग थाना; अभारा अने शुं? आही वाया!! बहु आकारी, भाव! लोकने वात बेसती नरी ने... अद्वे विशोध करे छे. समणजूण क्रांि?

अर्धी तो परस्मार्थ अभे करे छे: 'तारा परस्मार्थमांली बसीने, अभे आ भगवान छौँे (तो) परस्मार्थ.. परस्मार्थ.. परस्मार्थ (अभे) नामस्मार्था, (तेमह अभारा प्रतेशनो) भजननो भाव, यात्रानो भाव, पुजनो भाव, अे बधे अपराध छे, प्रलु! आही वाया छे!!

अे (आत्मा) तो शान अने आनंदत्वक्षे छे.. प्रलु! अभारीं एटेली (आळा) पृति वऱे (ते) वऱे तो पंजमव्रतनी, भगवाननी भजननी (श्रे) ते अपराध छे. अने भगवान आनंदत्वक्ष प्रलु; अन्या सुभमनी जे परिखालत थाय छे ते वीतराजपरिखालत अे निरपराध छे.

अरे.. रे! (बोको) अभे के: शरीर क्रांि ठीक श्रे, आभुं ठीक श्रे, ज्ञार्थना जरा आवृण (आराजाना) श्रे, (तो) ठो रुहु! (बले ने पोंते) मुहुरःने पुत्या (श्रे). प्रत ने तपनी क्रांि बुखारा क्रांि अद्वे संतोषाग गयो जसो आपा-आपा! शुं क्रांि? बाधाँ-छाकरं छाकवा, पांडवश लाभणी पेड़क श्रे अभी दुह्न छौँ (भस ! ठो रुहु). अरे, प्रलु! (निवृति नाह्यने) क्रांिनुं आप्त आ छे अत्यारे!

जिशासा: वांचन क्रांिु अे अपराध छे ने..?

समाधान: वांचन क्रांिु पण अभाना शक्त राधांवुं ने.. के: आत्मनो निर्णय करो ने!.. आत्मना भेजानने लक्षे वांचन करता तेने भेजाननुं शक्त थाय के, आ (आत्मा) राधधी लिन्ट छे अद्वे. पछी क्रांिु तो अने छे.

अर्घीमा रुऱे छे: निरपराध आत्मा भंडनने क्रांिपि (स्पर्षतो नरी ज). "बंधन नेव जातु " ’जातु’ छे ने.. ! 'न एव जातु’ — 'जातु' अद्वे क्रांिपि-क्रांि पण अने 'न एव'. आह.. रा! आतो अंतरनी वाती छे, बार्य! बार्य तप करे ने अपवास करे ने श्रेीनों धारा करे ने अविनिहार धारा करे ने रसात्म पकरे ने; पण अने जया सुधी आत्मना रस न प्रजाने त्या सुधी अपराधी छे.

जिशासा: हम्मा निवृति वैली अनेा वांचार क्रांि अने करे अने (कयो छी के अपराधी छे!)

समाधान: आ तो निवृति व्ये अने क्रांिनुं आ छे, अम क्रुं. निवृति वर्तने पहीँ क्रांिनुं तो आ छे के नही? अंतरनिवृति क्रांिनी छे ने!.. प्रवृत्तिवाताने तो वर्तने मने नहि. अे हुणे बली श्रे ने मापस-नोकर ने आम खेला.. खेला! अने अे बधी सावधानी. अर्घी हुणो तो अंदरमा न मने- अंदर होरा छे अने शुं छे? क्रांि (गतानम) नहि.


‘जे सापराध आत्मा छे’— जे प्रागी शुभरागने पण करे छे, जे प्रागी डांडे थाय, धार, प्रत, भजनना शुभरागने पण करे छे ते अपराधी छे. आह.. रा! आपुं सांबरणवुं क्रांिु
निरपभाद आत्मा से बहु दीते शुद्ध आत्मा ने सेवनारे छोटे है।" बहु दीते क्षम करें। सदृश निरपभाद साधू"—‘साधू’ छे ना...! (“शुद्धात्मस्वपौ”)

लोकले (साधू साधू) उदार सेवनो सेवनारे आत्मा से

राजेश@आत्मधर्मा.कॉम में कृपया अपने अपमान लेख की जानकारी दीजिए।
श्री निर्मसार श्लोक ११२ - २२

‘समय सार’ पढ़ें गाथामा हच्चु ने...! सिसब प्रतिवेदना स्थाने छ। पढ़ा समान। आम अवाज नामे तो सामौ अवाज आवे-अदिऽनि। दे भगवान! तमे निरपशाखी सिसब छ। सामौ अवाज आवे छे-छे आमा! तु निरपशाखी सिसब छ।

आमा कांड मोटा भाषु ने मोटा को... श्... अनु छछे अनु नथी। (वसुद्वराप आयुं छ।) तुनिया माने न माने स्तव्यत छ, भापु! जे गुनामा धम् मानशी अन्दा हन तो अने बोगवां पड़े।

* 

वणी (आ ८४ भी गाथानी टिका पूर्ण करतं टिकाकार मुनिराज श्लोक कडे छे) :-
तथा हि-

(मालिनी)
अपगतपरमात्मयान संभावनात्म 
नियतनिम भवारः सापराणः स्नृतः सः।
अनवरतमवंक्याहि विद्वायकुतो
भविः निरपराशः करमसंप्रायसदः। ११२।।

[श्लोकार्थ:- ] आ लोकमा जे जव परमात्मयानानी संभावना रक्षित छे (अर्थात् जे जव परमात्मयाना ध्यानाश्व परिश्रमन्त्री रक्षित छे-परमात्मयाने परिश्रमयो नथी) ते भवार मव नियमकी सापराण गँडामान्म आवे छे; जे जव निरतंर अवक्ष-अरीत-वभायकी युक्त छे ते करमसंप्रायसद (अर्थात् त्यागामा निपुण) जव निरराशध छ। ११२

“आ लोकमा जे जव परमात्मयानानी संभावना रक्षित छे” - आ जगतीने अंदर (जे) आत्मा पोताना परमात्मयानानी संभावना रक्षित छे (अर्थात्) पोताना परमात्मय जे शुद्य वैतनयान अने परमात्मयानी (संभावना रक्षित छै.), (अटोले के) अभ क्यूँ हे के: परमात्मयापूर्ण पोतान्यु (पश) आ जगतीने अंदर जे जर जव अने (स्फुर्तना) ध्यानानी संभावनाथी रक्षित छै, ध्यानानी अंक्षाताधी रक्षित छै” (अर्थात्) “जे जव परमात्मयाना ध्यानाश्व परिश्रमन्त्री रक्षित छे” -परमात्मयापूर्णा ध्यानानी परिश्रमती रक्षित छ, आह... जे! शुद्य परमात्मयापूर्णि अंक्षाताधी जे शुद्यपरिश्रम ताप छे तेनाथी जे रक्षित छे-“परमात्मयाना परिश्रमयो नथी” - परमात्मयापूर्ण भगवानामाताने ध्याने (अर्थात् तेने) ध्यानमा लाने जेतु परिश्रम थयु नथी, आह... जे! जे जव परम आत्मयापूर्ण ध्यान, वैतनयान, अन्दाते प्रस्तु, अने ध्यानानी अटोले तेने तर्कने अंक्षाताधी परिश्रमती रक्षित छ; ते चारे क्रीड़ा साधु नाम धरावतो क्षेत्र, द्विखंडिंग अन्तर्न स्वरु ध्यान, निरतिमार पंथवर्मात पावनो क्षेत्र रण अने परमात्मयाना ध्यानाथी तो रक्षित छे “ते भवार मव”-मव+आत्म=मवामा परिवर्माणा करारो मव, मवार्न=मवामा आर्न=मवामा बजाने पदार्थ स्वरु ध्यान परम आत्मना ध्यानाथी रक्षित छे अटोले के शुद्य परमात्मयाना ध्यानाथी परिश्रम-पर्यवथी रक्षित छ अने तै राग रक्षित छे ते भवार मव, 

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
रार - प्रवर्णन नव-नित कार-े
ववमा कथा प्रजाति है।
आशा... झ! आशा (तत्त्व) मानसने आकूं पुरे अंतर लोके आ आप किया ने तप ने व्रत (तत्त्व) श्रवणी नीठक्या। अती भगवान! जयं परमात्मा मिराजे छ त्य तो जाते नथी अने अन्यांनी कियां रोकारे, परमात्मा धामाइ तो ते दूर वर्ते छ। जेन तिणार्य साधु बांधने नवां श्रवणे दहो चतु मिथ्यार्थस रखी। तेने शुक्लद्वीप कती पवने मे शुक्लद्वीप अपराध छे। अे बतार प्राणि छे, ववमा राजनारू देने मे "निमंत्र वाराध गणवांमा आयो छे।" बोध बापा?
(पाठमा) छे ने... "निमंत्रिम भवनः" - ‘निमंत्रि’ –निर्देश ते। जितम्बपुरी भगवानबाधामानी सेवानाय रहित छे अने राजनी सेवाली रहित छे, ते निमंत्रिम बतार प्राणि छे। आशा... झ! "निमंत्र वाराध गणवांमा आयो छे।" छे ने...? "साराधः समूतः" - अम कियुं ने...! तेने अपराधी गणवांमा आयो छे। "समूतः" अंतरे यार करवांमा आयो छे। "निमंत्रिम भवनः साराधः समूतः सा।" ते निमंत्रिम आस्तधामां-बतामां पारे छे अम अने मरण करवामा अगे हे अंतरे के मद्देववां आये छे अंतरे के गणवांमा आये छे। आमा पकड़ुं य कठार पुरे अंतरे लोके बिखारा जय बीजे रते। आरे बापु! बीजे (रते) जय, बापा। अे (मार्ग) ने श्रवणामा पवन न बाजे के अपराधी आमानी जेतली अंकागता वयसे ते ज परिशिष्ट धम्म छे। अे लिना धम्म नथी। आते तो निर्मातार पंवभार गते, ज्ञानी शरीरनु राशन-पाने-आणबखाणबारी करे, करोड़े रुपया (दानना) पवने, अलामी दुकानने छोडीने त्यांची धारण अने शुक्लद्वीप प्रागत करे (ते यः) अे बतार प्राणि छे। आशा... झ! आपी पारुं है!!
बापे (करे छे:) "जे जव निर्विरु सम्भू-अहेतु-वैण्यावतवधि युक्त छे"- जे होक आत्मा निर्विरु-अन्तर पठणा विन्ना-अपरक अहेतु-वैण्यावतवधि युक्त छे। आशा... झ! भगवानबाधामा अपरक छे, अहेतु छे, त्रिकाश वैण्यावतवधि युक्त छे, अपरक युक्त छे।
आ निमंत्रिमानी वात अंतरे अे आ छे। अंतरे के सत्य वात आ छे। ववदरनी जेतली वारो छे। (ते) अभी अपराधी वारो छे। शानिने व्यवहार आये पवन अे अपराध छे, अे कर्मधारा छे; शानाधार नथी। आशा... झ! अपानी तेने धर्मधारा समझे छे। शुभमाव अंक पवनी अंक, अंक पवनी अंक धारण करे ने...! करे आपके तो बस... पापी निचर्यं त्रीमे। पवनो पुण्य पोते पवन छ, सामन्य... ने! शुभमाव पोते (संसार छे)। (योगसार’ गाधा-अपानी आये छे ने..!) "पापपुरे पान तो जाणे जन सदृश क्रोध; पुण्यतत्व पवन पवन छ, करे अनुपमी बुध दे।" कसे (शुभमाव अंको) वैण्य-वैण्यावतवधि-निर्मातामानी पवनी जयवार छे ने...! व्यवहारतत्व (अंको) पवन वैण्यावतवधि दूर-धरक्र जयवार छे त्याये व्यवहारतत्व ध्यान छे। अने नथी सेवानार, अने अपक-अहेतु-वैण्यावतवधि सहित छे अंतरे के जेना वस्त्र, जान अने ध्यानमा अंक वैण्यावत ध्यान जेने दुपवूँ ध्यान ध्यान छे। आशा... झ! अंक अंक, धुप, वैण्य, अहेतु वैण्य, अंकुर वैण्य, जयं गुळ-गुळी भेक पवन नथी, अपरक अंतरे पंक रहित, अहेतु अंतरे हेतु रहित वैण्यावत अपानी जे सहित छे अर्थात् हिर्स्त-धारण सहित छे।
"ते कर्मसंज्ञासंख्या (-कर्म ल्याखमा निपुण) जव निर्विरु छे।" राजमा ल्याखमा निपुण अंक जव निर्विरु छे।
श्री नियमसार श्लोक ११२ - २२६

आखे... भू... भू!

जून का माओ से बहुत जून सामान्य होय अती आ अंतु लागे के-पड़ आ ते शुं करे छो? 
बापु! माह्य तो आ छे, भाई! तुं भव्यानस्वपूर्ण मे सेवा करवी 
ते सुकिनो माह्य छे. माने जेनवा वश परद्रे ऊपर जन-हयानु, 
दाननु ने भक्तिनु-अे अभिः 
अपराध छे. आखे... भू! आफो माह्य!!

"कर्मसंयासदक्षः"—जुना त्यागांमा निपुण छे, अे तो अभिः छे. 
रागना अभावस्वाभाव क्षरांमा अे जोवी छे, 
इक छे, निपुण छे. रागना अभावस्वाभाव क्षरांमा अे 
विचारण छे अने स्वपनांसि विचारणता प्राप्त क्षरांमा अे निपुण छे. 
हुनिया गणे न गणे. 
हुनियां मा अं अं माह्य नथी. आ तो अने पोतानी जित्तीमा आत्मा बेदो शीष अती 
गापणांमी वाट छे.

अंई परमात्मा दके छे अे हिंगल संती दके छे अे क्षणी परमात्मा दके छे. (श्रोता:) 
आपके छो भू? (क्षतर:) अे संती दके छे अे क्षणी छीने अने अंडर मेकेशुं छे अे क्षणी 
छीने. आखे... भू! (श्रोता:) शुला शेर शीष, भाव शेर नथी. (क्षतर:) त्याे बोकीने 
(मनंके) अंडर भा ज्युं ने ने... अने समजोँ... समजोँ, 
अमुं अंडर भा गयुं छे! 
अं दवने छे ब्या बिधारा. तमे समकिती छे, 
समकिती छे तमे, 
तमारे वान्त्य जोरेजँ! 
तो अने स्थार करो, 
अंवुं डे छे बिधारा. शुं डे पछ अे?

(अंईयां दके छे:) "ते ज्युं निरपाध छे." -जुना त्यागांमा निपुण छे ते निरपाध 
छे. ल्यो! रागने क्षरांमा जे निपुण छे ते सापराधी-मिथ्याद्वि छे. 
समजणुं छंद? 'राग 
क्षरां लाखुं छे' अंवी हर्द्र, 
अने राग क्षरांमा जे निपुण छे ते गुनेगार, 
मिथ्याद्वि, 
सापराधी छे.

अंई! परमात्माना विरंज पद्या, 
ज्यालोकना नथ रवा नथी, 
कुणाकानाडि पूर्णस्व प्राणे 
अंवी लाखुं रवा नथी, 
अने आ नथ ज्यापी बिनार त्या. 
बापु! माह्य तो आ छे, भाई!

अहार... भू! (अंईयां) अेंक ज श्लोक गजण दरे छे ने... आहार... भू! अेंक अेंक 
गाथा अने अेंक अेंक पह, (अति गजण छे). 
बाहार! आ तो निरपाधी अने सापराधीनी 
व्याप्या छे. 
निरपाधी तो अने डोकीके: (के) जुना लाभो पछ अलाव करीने 
स्वपनांसि सेवता डे, 
निर्विवेक आनंदली दिखा प्राणे करे, 
सुभाष दिखा प्राणे करे. (तो) 
ते समजोँ, आमोँ (सेवो डेवाव). 
ते निरपाधी छे. आहार... भू! अने आदली विपरीत 
शुभमांक, अे हुमनाम्य छे; 
अ हुमने सेवे छे ते सापराधी प्राणी छे. 
आहार... भू! जुनानाला आनंदस्वपूर्ण (के) अनाती (विपरीत) 
शुभमांक छे (तेधी) क्या, दान, व्रतरो (भाव) 
मे पछ गुनो छे, अपराध छे, 
ज्युं छे. (अंई) हुमने सेवे छे ते अपराधी ज्युं 
व्याप्त (के) -ब्यवन्या रणगोके. समजणुं छंद?

अंई तो क्षेत्र परकारी सामी-शरीरी ने पेशा ने आ भायी ने छोकरां ने मक्ख-अंई 
(भारां छे अमे) माने छे अने अमे आफो शीरोमे, ज्यूनो! आफो व्याना.

अंई तो के दके दे ज्यालोकना यानुं स्मरण करुं अं ज्युं अपराध छे. 
पाक्मा छे ने...! 
बीज लीलीमा: "सापराधः स्मृतः सः" -आहार... भू! संतोऽना आ माह्य छे. हिंगलकर्म आ

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
“તિકાણિ વસ્તા અવતાર શુભાના જ છે. અવતાર અંદર નવી ઉતપતી અંદર નહીં પછી શુભાનાસ્વત્બ છે. વિકલ્પથી કે રજાથી રહિત જ છે. ગુણ-ગુણીના ભલદથી રહિત શુભાનાસ્વત્બ જ છે તથા સુજાસાગરના પૂર છે. વસતુ પૂરે સુજાસાગરનો પૂર છે. વસતમાં સુજાસાગરી બંધાર બંધા છે, અત્યંતભય આંદનનો પુણ વસતુ છે તે શુભભાવ છે, સામાનયભાવ છે, શાયકભાવ છે, તનો એક સમયમાં અનુભવ તરતા સમસ્ત સંસારીને નાશ થાડ જવ છે.”

—શ્રી ‘પરમાણમિકા’ / ૨૬૮:

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्रीभद्रगति-कुंदकायायित्वप्राप्त

श्री नियमसारः गाथा ८५

श्री पञ्चप्रभलदारितेविरङ्खित संस्कृत टिका

[ परमार्थ-प्रतिक्रमण अविधार ]

मोतुण अणायारं आयारे जो दु कुणदि धिरभावं।
सो पदिकमणं उच्च धिरकमणमो हवे जम्हा।। ८५।।

मुक्तानाचारसमाचारे यस्तु करोति स्थिरभावम्।
स प्रतिक्रमणमुयते प्रतिक्रमणमयो भवेष्वस्मात्।। ८५।।

अनः निश्चयचरणात्मकस्य परमोपेशासंयमधरस्य निष्ठयप्रतिक्रमणस्वरूपं च
भवतीत्युत्करः।

नियतं परमोपेशासंयमिनः: शुद्धात्माराधनायतिरिक्त: सर्वोपनाचार:, अत एव
सर्वनानाचारं मुक्त्वा ह्याचारे सहहविद्विश्वलालक्षणनिर्पलं निजपरमातत्त्वभवनां—
स्वप्ने य: सहजवैरभवानापरिणत: स्थिरभावं करोति, स परमातमवः एव
प्रतिक्रमणस्वरूप इत्यथाये, यस्मात् परमसोमसीभावानापरिणत: सहजनिश्चयप्रति—
क्रममयो भवतीति।

शुजयती अनुपाद

जे छोटी अध्यात्माने अध्यात्मां स्थिरता करें,
ते प्रतिक्रमण डेवापाय छ प्रतिक्रमणवत्ता कारवे। ८५।।

अनुपादः-[यः तु] जे (भव) [अनाचार] अनाचार [मुक्त्वा] छोटीने
[आचारे] आधारां [स्थिरभावम्] विश्रामाव [करोति] करे छे,[स:] ते (भव)
[प्रतिक्रमणम्] प्रतिक्रमण [उच्चाये] करे छे, [यस्मात्] कारवे ते ते
[प्रतिक्रमणम्: भवेत्] प्रतिक्रमणाय छे।

टिका:-असः (आ आधारां) निश्चयशराकामक परमोपेशासंयममि ४र्नाने
निष्ठयप्रतिक्रमणं स्वरूप करेत छ अभूत हुईं छे।

निस्थिती परमोपेशासंयमवाधि शुद्ध आधारानी आधारानी दिमांतु भूष्ण
अनाचार छे; तेथै ज सध्यो अनाचार छोटीने सहजविद्विश्वलालक्षण निरंजन
निज परमातत्त्वपरिर भवेष्वस्माने आधारां जे (परम तपोदन)
सहजवैरभवानापरिणते परंजिष्टो थोड़े धिरभाव करे छे, ते परम तपोदन ज
प्रतिक्रमणस्वरूप करे छे, कारवे ते ते परम समरसीभावानापे परंजिष्टो थोड़े
सक्ष निश्चयप्रतिक्रमण छे।
प्रवचनः तार. २२-२-१९७८ ( ... शेषांश )

आदि... या! अमृत रेड्डी छ. आ इन्ज़ेर तंत्री वाली!! (बीजे आ वात) क्षणें नथी. “नागा भाकुराली आधा” – दर्शन ने मणि, जगती दर्शन ने मणे के आयु डेशी तो समाज सर्दी जगे के नथी? समाज अभाव विरोध कर्ष्ये के नथी? –हनिया हनियानु जने।

मार्ग आ छे! आदि... या!

“अदि ( आ गाथामा) निश्चयवर्षालमक”– निश्चयस्वप्न, (निश्चय) वर्षास्वप्न, स्व-अन्व, आन्तस्वप्न, निश्चयस्वप्नस्वप्न “परमोपेशसंयंभन घरनारे”–जेने राजवी-व्यवहार-रत्नरथनी पर्या वर्त्ये छ अं पर्या संयंभन घरनारे “निश्चय प्रतिमणां व्यवस्था हौिय छ अं शायु।”

-शून दीघु, समाजानी निश्चयस्वप्न पर्या संयंभ-थ्युपनी रामन्यास्वप्न अने राजवी पर्या अंस (थृप) अंसं संयंभ-अने घरनारे निश्चय-सायुः-सत्य प्रतिमणां व्यवस्था हौिय छ अं शायु।

आ स्थानकाली–लोकांबंध सांग-स्वराप प्रतिमणां घरनारे ने... अरोड़ोरोड़ो... शून दीघु जाले! अंम बाबा जामे अने. दत्त विश्ववाल अने जरी शुभमाव करे (अंमां जाले शायु गयो धर्मिः)

१९८१नी वात्ये छ। बोकांमा अंक भाकने पृथ्यूं के: आ अंडु तमे राहे शी पछ अंमां आ भगवान श्ने ने अनुभव श्ने अं शी बनार हौि? अं विश्ववाल अं अनुभव श्ने? तो दीघु के-आप्णे अं विश्ववाल अं अनुभव खेयो नथी। अंक भाकने तो दीघु के: अं अंडु बोकांतमा खेयो। (में) दीघु: आ शून राहे शी, प्रायु? भोला शायु अंक बोकां-विश्ववाल अं अनुभव शीन्यानन्य खेयो नथी। विश्ववाल ने अनुभव अं अन्य मतियो राहे शी। आदि... इ! दीघु, शून राहे शी प्रायु आ तमे?

अदि यां राहे शी के: ‘निश्चयस्वप्न पर्या अंस’ – शूनुं! आदि... या! राजवी दिया छे अं अंस कर्ष्ये जवी छे। पंचकालतना परिशाम आदि अंस कर्ष्ये जवा छे, अंस राजवी जवा नथी, अंस कर्ष्ये (परमोपेशसंयंभना) घरनारे निश्चयप्रतिमणां व्यवस्था हौिय छ अं शायु।

... विश्ववाल राहे।

* * *

प्रवचनः तार. २३-२-१९७८

‘निश्चयवाल’ आधा-थप जी.की। “अदि (आ गाथामा) निश्चयवर्षालमक परमोपेशसंयंभना घरनारे निश्चयप्रतिमणां व्यवस्था हौिय छ अं शायु।” – शून राहे शी के: आधा अंसत्तनां अंस आंतस्वप्न स्वप्नं छे; अंसं जेने प्रथम राजवी विश्ववाल पिवी ने बान अं हनुं के ‘इं तो शायु अंस शी वित् तथा प्रायु!’ अं विश्ववाल भी राजवी बित्र पिवी गयो अं विश्ववाल राजवी स्वचाल नथी छशायु जवा (क्ष) अश्चयरता छे तने पछ छोडीने अं तु मारा व्यवस्था-आंतरना धामां सम्बन्ध भागु।

व्यवहार-आवार अदि जेताला छे-पंचायता शानायर, उधारायर अदि पांच छे ने...! (‘प्रवचनसार’ अवरणपोजसूक्ष्म चूकिला.) शानायर: जवाने भापुं, विश्ववाल भापुं अं आदि
श्री निमित्ति गाथा ६६ - २३
(आठ प्रकार) व्यवहार, विकल्प छ, राज छ: दर्शनार्थ: निमित्ति आधि (आठ) बोल अने पढ़ राज छ। आर्तिनार्थ: पंक्तिक्रम, समिक्षा, गृहि अने व्यवहार पढ़ बन्ध राज छ। तपार्थ: अन्तर्गत आधि (आठ प्रकार) ना विकल्प दिखे छ अने पढ़ राज छ।

दीनी अनुभवां न जता शुभमां राहुल्य अने पढ़ अंकर राज छ। त्यां तो अन्त द्वारा छे - पंक्तिक्रम! तु मारू स्वाप मर्य, पढ़ जावा सुदी कः (पूर्वी) पीतराजपुस्त न पामु त्यां सुदी तारा प्रसाधी अंटने निमित्तः कः आ प्रमाण (पंक्तिक्रम) शुभमान वन आरुप्र छः। ‘प्रसाधी’ लीवु ने... त्या व्यवहार (पढ़) वाणा पढः। (पढः) अभीय अने नज़ार करे छ। अने पांश्य आधार शुभमिकल्प अन्तार्थ है।

शिक्षा: अने अभ्यांकी क्यु सांखु?

समाधान: आ ज सांखु छ। अने छ अने सांखु छ, पढ़ छ अपेक्षाओः? -निमित्तु शान डॉयुं के अने आरु निमित्त होय। जने अक्षरभंजा -सम्भवीशान शब्दु छ, अने पहेठी राजगु श्वामीपुरुषु छुटी गयु छ, राज्यी विरकत छ अने सवार्थां मर्य, पढ़ क्ष नबराजणे बगवने रागहट शुभ आवरणा आवे छ तो अने माद करे छे ढे अने अन्तार्थ है। जीवी वातु बाँधुः

(छेवे) बालांकु श्रेयर छुटी छः। (पढः) अंदरमां अंदर शू जीव छ अंतर पसु, जे जोर दी होम अने प्रथात्मक करो ज नथी। (श्रीता:) प्रयत्न करवा छावा देखातो न कीष्य? (इत्यः:) प्रयत्न करो ज नथी। अने अने जतानो प्रयत्न कोष्ट तो देखाया बिना रके ज नथी।

अने (‘बप्रें श्रीणी व्यस्मातमुत’/बोल उठरुमा) लयु छः: अंदर अत्मा अतीनिय आनंदना नोजना स्वाभिर वात बया छ अने नवाय मुनिओ दे छ। आहा... ढ। मुलिंशु ढोने करेंगु!! ढुं तो (लोकाने) भेदक्षण ढोने करेंगू अनमन भवर न महो।

अभी तो राज्यी बिन्न पदने अंदरमा -स्वापमा गयो छ, राज्यी अंकताना ताना तो दी नायः अने सवार्थी-अंकताना ताना दोही नायः छ। आहा... ढ। आवी वातो छः! दुनिया अनौपर (बनर नहो) अथी वात बुंड जूटी वारे। पढ़ पसु तो प्रमु योते परम अतीनिय आर्धनी (नाथ), प्रमुपारिशिक्षावालय, सत्कर स्वाप, अनंत अनंत गुणना रस्ताकारी बरेलो (छे) अने जथे प्रथम ज आर्थ वीरी अने तो प्रथम सम्भवीशान वाय। अभीय तो अथी आकाश वाक जुवु छे-निधराऩत्रिक्मा करेंगु छ ने...! पढ़ी (मुनिशांमा) तो जे राजी अतिहरता छै, व्यवहार श्वामयार्थ, पर्यन्त्यार्थ (सभितना निर्मंक, निर्दंक आधि आठ व्यवहारार्थ) अने पढ़ अभी तो अन्तार्थ करेंगां आवे छ। आहा... ढ। पंक्तिक्रमार्थ परिणाम के मान समिति, (नाथ) गुरु (उप) व्यवहार अने पढ़ अभी अन्तार्थ गणनामा आवे छ। (क्षेत्रे) अने आत्मार्थ नथी। आवी वात छैः २२ मूण्डुकुल ने महाराज ने... अने अथा अन्तार्थ है।

(अभीयाँ दीक्षामा) छः! “निमित्ति परमपेक्षासंयमवानान्” - जे राजी निरपेक्ष-मिल्ल परही के छे-स्वापमां स्थिरतानी अपेक्षाओः हो! निमित्ति-निश्चयां द्वरि उपेक्षा संयम; जने व्यवहार ने संयम के व्यवहार छ अनाथी पढ़ जने उक्षा थां गद छ (तेने) “शुद्ध आत्मानी आराधना”-प्रतिवाद पूर्णान्त प्रलु; अनु अंतरमा जानने स्वेच्छन (असे) शुद्ध आत्मानी आराधना; ‘शुद्ध आत्मा’ अे निर्देशः पढ़ अनेकी आराधना’ अे वर्तनासन स्वेच्छन। आहा... ढ। आवो।
समाधान: (आ) करवानुत । मे... अंदरमा जवानु । रहुँ, 'करवानु' अने करवानु... के िश्राम ने अनजंि... अंत... शातिना रसनो देड़ छे, अनि वात अने िश्रामां भेजती नथि।

अनाहिं अंतत्वार साथी थायो हिंगंर... हो! पछि अनी हि राज्मान पयःिच अनि रागनी किया उपर... बस! (परीतु) अनि राज्मी लिन, मझ लगवान परमांत्वो दरियो छे, अनंत चित्सश्यानं अनंत शान, अनंत दर्शन, अनंत पीयर, अनंत अंदंू-धी भरलो लगवान, अित्यं छे। अनंत अंदेव अनी शेष मर्यादा नथि अने अनो स्वभाव छें। अनंत स्वभावकृं लेिन अनि आरामग। अनि िश्रामाना जेटला विकल्प-पयःिचक्त्वतना, देव-गुरु-शास्त्रानी भविषणा दिखे अ पृणा अनिाय छे। [अने विषयर निगम िवं धारेिय कर्यो नथि!] छे, के नथि अँभां (टीकां)?

िश्राम: सातमा गुजरातानी अपेक्षामें अनिाय अनि छछा गुजरातानी अपेक्षामें िहायर?

िसाधारण: व्यभिंिनी अपेक्षामें िहायर अनि निधियनी अपेक्षामें अनिाय-अो तो बछू अंदेव ने अंदेक छे। व्यभिंिनर साधारण अंंदो अनुशंिकी छूईने शुि आयो अं अपेक्षामें व्यभिंिन। पृणा परमांथिी हििकणे जुगो तो अिसाधारण पृणा अनिाय छे।

आहा... बर! जगतले जेंपणुं समजुं कड़ा अनो अं विना जनम-मर्यादा अंत आिे अनिा नथि, प्रभु! अं स्नेहित्व-अक्षालित अंधी कौर, भरोिे बीजः बहे गपणी ढुँढे, बढ़िनी ढूँढे बस्थु धाय; आला (तेघो) मांस ने बाजु भाता न बीर् अंदेिे, अं बीखः सुिो धीर्, अं भरोिे बढ़िनी ढूँढमा धायं। डिमेड अं अाँिा सुं धीरच छे? अनेन्स्त तर्क हिि कड़ी नथि अनो अनेन्स्त माधास्त्य अपोषणुं नथि तेघी रागनुं माधास्त्य तयुं नथि। तेघी ज्ञानाय छे तेघी आिे मानीने सेवे छे अं मििहकुंि छे। आहा... बर! आिी ज्ञान छे!

छे...! 'शुि आलानी आराध्या सिवाणुं (बखुंय अनिाय छे)।’ आ तो साधी िािा छे। (श्रेष्ठता:) िृि डिखा (छे). (उत्तर:) िृि डिखा, िताती।

तमे तो िे 'भावानद्वम' छो ने...! उंडर आिेमां भावान छो! 'भग' अखिी अंतंत... अंतंत... अंतंत... अंतंत शान-दशन-आंबंदी लक्षमी, 'धार' अखिी वांश-स्वास्थ्य=बजावान छे। अनेन्स्त अंस्तेना (अंदेव दे) निरिडिक्षां शान, दशन अनो शातिथी निरिडिक्षा आरामग, राजनां आवानी अपेक्षा छोिी, ('रागनों') अन्वार कर्यो। अं पृणा अंपेक्षा नथि छूए (बीजः अपेक्षा शी?) ] अं अंस्तमा निरिडिक्षारुणी स्नियलयानी िेिना, अं िवाणुं बखुंय अनिाय छे। आहा... बर... बर! जे भावे तीर्थकारदों अंगो छे ते भाव पृणा अनिाय छे। आिी ज्ञान! वीतिरागी।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
मार्ग छे, भापु!

अरे! अे डूंढी थयो छे. अे निगोठना भय, अंद शैसमा अधार कर्या, भापु! अे भूली गयो, बहुंू भूली गयो. अं नगरना अंद बजल्या हुँूँडुँडूँडूँ झमे, कडूँडूँ मवे भूरी कराय नभन्नी अंत्यां हुँ वेक्या, भापु! अं आत्माना भयान विना. शुभाबिध डरी तो व्यर्थमा गयो पछ्त त्यांशी-शुभ पछ्ती अशुभ वौँ ज अने. अेय ( शुभ ने अशुभ ) थी रहित आत्मा छे. अेतुं शान ने सम्यक्र्यान अने डरी कर्या नभन्नी. अंदरमा गयो नभन्नी अने बहारी डूँडूँडूँ नभन्नी. अने बहारी वले हेलाक विक्कल्पो थाय, -व्यवधानेम गे दुःखे छे: अने भावे भावामा तने जे राग थाय, अे पछ्त अमे तो निम्न रह्यी देशे देशे: ते अनात्मार छे. वीतराग ( ज ) अमे दुःखे!

जिवासा: तो व्यवसायी नित्य थाय अच्छा कर्या रह्ये?

समाधान: बोली माने छे व्यवसायी नित्य थाय. प्रचु! बायांथी थाय? उंरे पीता नाता अनूठना आँक्यो आँक्यो? उंरे नाता नाता आँक्यो आँक्यो?

आक्सा... छ! अंद्रे मीठी अंगाने ने अनूठना धाला फरेला छे. भागाने तो वीतरागी अनूठनदुःख छे. अंतुं सेवन, अंतुं आराधना, अे पछ्त वीतरागनाय आराधना; अे सिवायमहे हेलाक विवर-विक्कल्प बिचे ( अन अनात्मार छे).

संसाराना-पानाना परीठाम अे ते देयामा उंरे छे. रजिवना ने भोजना ने अन बायारीवेरदाने साध्वनामा ने छलाने देयावी देयाना भाव ने पैसा भर्याना ने रत्न राबवा ने-अने भाव तो अनात्मार छे ज. पछ्त शुभमाय पछ्त अनात्मार ( जे अच्छी परमात्माएँ तो कबो छे, भापु!

जिवासा: गृहस्थाने तो शुभमायी भोज दीभो छे ने...!

समाधान: ना. ना. अने तो नित्य ध्यान छे. छे ने... सरजनानुपूजामा. अने ( गृहस्थाने ) अशुभपूजाय वौँ छे तेमांथी शुभमा आँक्यो छे तौक अशुभ छूँछे छे अने ‘पछ्ती शुभमाय छूँछे’ अने अपेक्षामेले कबुँछे छे. अर्धीनां तो शुभमायने अनात्मार कबो ने...! अन अनात्मारी आत्माने धाम थाय? आक्सा अघु अम, भापु!

जिवासा: आ कुंडकुंडाय धोताने माते दुःखे छे!

समाधान: धोताने माते नभन्नी. आहो आ धाम छे, अम कबुँछे छे. ‘आने प्रतिक्रियावाणो कबुँछे’ अम कबुँछे छे. ‘प्रतिक्रियावण’ -वाणो न नभन्नी-आवा दुःखने प्रतिक्रियाय दुःखवाणा अाये छे. आक्सा... खा... खा!

अरेरे! बहारी बेंसे ने डरमा वर्ती गयो. अर्धी तो कबुँछे छे: व्यवसायी विक्कल्प बिचे अमाय वर्ती गयो! अमाय बेंसमाय-डरमा-अने ( व्यवसाय ) धाम छे ने आ तो कुँ तुँ छूँछे ने अनी धमा मे पाणी ने आटामा प्रति धर्म ने ऑटली भुजित डरी ने आटामा मे पाणीपाली लांचना धाम क्रवा ने-अने बेंसमाय-डरमा ने डरमा-वर्ती गयो छे छ! आक्सा... खा!

जिवासा: आ तो उत्सर्गमार्गे छे. अपवादार्गे दुःखे ने कही?

समाधान: अपवादार्गे ते क्यो? के अमाय ( आत्मामा ) दुःखे ने कही त्यारे ( शुभ ) आवे अने अपवादार्गे. पछ्त ‘अप-वाद’ ने...? माते अने सिद्ध तरुँ: अने तो उत्सर्गमा डरी शके नभन्नी
रण - प्रवचन नव-नीति: भाग-२

त्यारे अशुमती बहुव्य शुभ आवे; पश्च छाता छ तो (ते) अनायार. आख... छ! अे (छड़वन) तो अंदरेमा हरी शक्तो नैं; तो हरी अंदर जड जड़े अँग छे नैं. सँह जड जड़े नैं. तो आचार्य धर्मी (शक्तश्रम) राजी नैं. समाने बेसे न बेसे पश्च सत्य ‘आ’ हे!

छे...! “शुभ आत्मानी आराधना सिवायतुं चतुर्व प्रायार छे.” - ‘शुभ आत्मा’ अंतर एकलो दामूती, आनंदमूती, वीरगरजसकुं भगवान, पूर्णानंदस्य वाग पेशो शुभ आत्मादय... हे! अंतर आराधना, अंतर संयमती दशा; अंतर सिवायती परतरकनी दशा-विमुणतातो बाव-बाँकेले! अे तो अनायार छे, अम करे छे. हे! ‘आराधना सिवायतुं चतुर्व छे’ -पाँच ‘चतुर्व’ लप्त्य छ-अंदर जडपार दीनता-आराधना सिवाय जेटलो व्यवहरने शिक्षा गिरे (अे) बंध अनायार छे, अे आराद नैं.

“तेली ज सनी अनायार छोडिने” - शा माते (अम) करे छे? डे:आत्माना आनंदमा रामपुता, अंतरिक्ष आनंदमा रामपुता, वीरगरजसकुं भगवान; अंतर सिवाय बंध अनायार करे- “तेली ज (ज ते अकेले) सनी अनायार छोडिने” - अंतर शुभ राम अनायार छे अंतर सनी छोडिने, तत्व प्रतिकार करूं बीम तो अंतर आत्मा (आत्मामा) रमण रुप राम अंतर प्रतिकार जे शास्त्र रहिने अंतर बोले अंतर आत्मा शुभ राम आवे, पश्च छे अंतर परमसंथ तो अनायार. तेशी बंधो अनायार छोडिने-ह पश्च उपेक्षा नैं...! अंतर परिपार तो स्वरूपमा रमपुता करे हे त्यारे अंतर उपन्न वते नैं. (तो) ‘अंतर छोडिने' अम करे छे. बंधक अंतर धाममा-सुभागमा आवे हे, अंतर आत्मा अंतरिक्ष सुभागमा अंतर हे त्यारे अंतर शुभ-सुभनी उपन्न वते नैं, तेशी अम करे दे: “अनायार छोडिने”- उपेक्षानी शेली, तो शु आवे? -अनायार-शुभने पश्च छोडिने.

“सत्यतिमित्वप्रतिपादण” - ‘सँह’ अर्थत स्थापित, ‘विद्या’ अर्थत शान अंतर आत्मा. सहजात्मप्रवचनमा “निर्जन निज परमात्मत्व” आच... हा... हा!

अंतर शाननी वात शानमा परहे हे अंतर वाते नैं ने पिचारे नैं ने (अम करे हे) ‘अंतर व्यवहारी निष्ठा तथा अम न माने ते अंजत छे. (पश्च) प्रलय! तुं शुं करे छे अम? तारा स्ववातनी महिमा तने सनी आवते! (तुं) महा व्यवहार छी ने आत्मां छी! अंतर सिवाय (जेटलो) व्यवहार छे ते बंध अनायार छे, स्वरूपने बने छे, बादे रहिने.

आख... हा! ‘समाधिशतक’ मा करूं छे: अंदरे! जगत बलाक जय छे; आसार अंतर करे हे-छाबस्थ छे (कुलानु) विकास छे (तो करे छे:) अंदरे! जगत बलातु जय छे. अंतर अंदर जय छे अंतर छाता अमा बोते करे हे? ऊर पीने- ‘दुहा टाव छ’ अम बोटे करे हे! आख... हा! अंदर मार्ग छे!!

‘सक्षमनिविवासस्वात्मा’ अंतर शाननी विवासस्वात्मा अंतर ‘निर्जन निज परमात्म (तथा)’ - पाँच! बंधन परमात्मा, अंतर नैं. ‘निर्जन’ जेने आठ रागिनी मेल नैं अंतर स्वरूप हे. तारा हे द्या, दान, प्रति, ने मल्कनी बाव अंतर पश्च अंतर-मेल छे. अंतर मेल विनायन निर्जन निज तथा. आख... हा! निज परमात्मत्व’ - पोतानु परमात्मत्व. आख... हा! अंतर “आत्मा शुभ आत्मां” अंतर आत्मा शुभ आत्मां अंतर रमणस्वात्मा आत्मां-

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री निम्नलिखित गाथा तत्परता करते हैं: “सत्यजीत-न्यिविलासात्मक निर्मिति निज परमात्मकत्वमे वायु-अनुभवमे ते ज आकारानु स्वरूप हैं।” - भगवान आनंदव्रुपने अनुभवयो अर्थात आकारानु स्वरूप हैं।

आहा... हाँ! (भवत्तुकविधायो आ शास्त्र) पोतानी भावना माते कर्मों छ अनेक जगतने जहारे करे हैं: तार्क ‘आ’ है, बापु! (आ शास्त्र) अनुभव से कृतार्थ वर्ष थापने अनेक हडू तो जहाएँ।

“इथे आयारामा जे परम तपोधन” - मुनि, तपस्यी धन छ जेने। अतीतिरिय आनंदमा तपस्याम्र जर्व-जामी जर्व इथे आयारामा जे तपोधन, जेने तपस्यी धन छ। ते तपोधन “स्थिरता करे हैं”-आवा आयारामा (जे) स्थिरता करे हैं ते तपोधन। [“ते पोते ज प्रतिक्रिया हैं।”]

अनुशासन अनेक झोंटिने जे तप क्रीड़ा ते तो व्यक्ति क्रीडा। व्यक्ति (अर्थात) विकल्प, अर्थात अनेक अनुशासन अनुशासन। अनेक झोंटिने, (जे) तपोधन (अर्थात) जेने अमृतात्मा आनंदमा अनुभवमा स्वाद भावे हैं इथे आयारामा। जेना अतीतिरिय आनंदमा स्वाद आज्ञा रागनो स्वाद जेने जे जेने, दु:भ जेने लागी हैं; पंथमालात्मक परिस्थिति के भूमिका (नो) भाव अर्थात (जेने) दु:भ जेने लागी हैं; अनेक भगवानभाद्वाने आयारामामा लीनता अर्थात (जेने) आनंदव्रुप लागे हैं; [ इथे जे तपोधन ते पोते ज प्रतिक्रिया हैं।]

आहा... हाँ! आवी शोभी पात शास्त्रमा पड़ी है। शास्त्रमा तो छ ने...? एक भाको तो पूर्ण्य कर्नू ने...? क्रीड़ा: आ (पात) तमाम संप्रदायमा नभी, शास्त्रमा छ (अर्थात) पात आवी, शास्त्रमा छ आ। (शोभा:) (शास्त्र) अथौं मंडित्या बंधारामा पड़ी है। (उत्तर:) अनेक अर्थे उदात्त आवे नभी। शास्त्रमा जयो जन्मा हैं? शास्त्र बणीने पात प्रयोजन शुष्क हैं? -प्रयोजन तो ‘अनांतमा जन्मा’ ते छ। जेने देवरे शास्त्रमा प्रयोजन वीरतात्मा है। ‘पंथातिकाय’ आवा-17 मा आवृः ने: जैनर्वनी शास्त्रमा अनुयोगकाना शास्त्री, जेने तपर्य वीरतात्मा (छ), तो भू वीरतात्मा’ बौध ताह्य? के स्वनो आश्रय के तो ताह्य। अनेक अर्थ जेने आयो जे स्वनो आश्रय तो ज शास्त्रमा तपर्य हैं। आहा... हाँ! शुभ ताह्य?

(अर्थातः करे हैं:) “जे परम तपोधन स्थिरता करे हैं ते पोते ज प्रतिक्रिया हैं।” पोतानी भावना माते (शास्त्र) कर्मों पात इथे आवा जे जोध तें पोते ज प्रतिक्रिया हैं (अर्थातः) तपोधन मुनि, वस्तुनी स्वात्माय जे शुद्ध जीत्नार्द्धं आनंदं, तेमाहं जे रमे हैं, निजाधारामा जेने समुद्र माती छे ते तपोधन पोते प्रतिक्रिया हैं। अर्थात (पोते) प्रतिक्रियाःस्वरूप हैं। आहा... हाँ! समझुः करे?

(भावनास्वरूप) आयारामा “जे (परम तपोधन) सत्यजीतन्यिविलासात्मक” -पर्याय- राजस्थानी सुरज वेशज्जी हैं अंकर। आहा... हाँ

* सत्यजीतन्यिविलासात्मक निर्मिति निज परमात्मकत्वमे वायु-अनुभवमे ते ज आकारानु स्वरूप हैं; अर्थात आयारामा जे परम तपोधन स्थिरता करे हैं ते पोते ज प्रतिक्रिया हैं।
रघु - प्रथम नवमीत - भाग-२

‘पुष्प-पापना अधिकार’ मा आये हे नें...! दे: पुष्प-पापना भावधी जसी ज्ञान अने वेराज्य छै। पुष्प-पापना भावधी जसी ज्ञान अने वेराज्य छै। आम भावीकोडरा छीराम ने छुट्टने छाडि ने ज्ञानु (छाडि) अने वेराज्य नयी। अनेने हे शुमाघ जे राग आये अनती वन छी ज्ञान अनेने माम नाम वेराज्य छै। समजाउने छाँ?।

सवारे एक छाड़ आयुँ छुटू जीनु अने आ परण वणी पालु जीनु। आसपास छै! शुन दाय, बाँछ? अन्धे हुमी हुलिया। अनेने हुमई घनरु दे न मगे। अने रेम शाति मणि दोणी तरब ज्ञानी धम्म मणि -अनेनि घनरु दे न मणि।

भगवान (आमा) तो अक्षाय आगरवी भयो। अक्षाय-वादितसागरो नाथ भगवान छ। पूरण अक्षाय, पूरण वीरराज, खिँसवरुँ हिराजे। पूरण शांतरसनी सागर प्रभु। अनेने सेवना सिवानुं भंडायु नाधार छ। आसपास छ। ‘अनेनी सेवना’ अंतेते अनेनी भावना-व्यक्तता।

छ! सद्धवैराज्यबागासाए “परिषम्यो धहो सिरंभाव करे छ” -सवारपो रागधी विरमीने स्वरुपमा रमे छ। आसपास छ। सवारपो (रागधी) विरमे छ, छल्ली नेदी-अम दुवे छ। समजाउने छाँ? आसपास छ। स्वाभाविक वैराज्यबागासाए (परिषम्यो छ).

वि. सं. १८५४-५४ वात श्री। भावनगरमा एक हेनी धुवनू नाटक जेवण रहू। अन्यत्मतिमा धुव-प्रकल्प आये छ। अनेनी मा भरी गरेली। अनेनी भाप न्याय पर्यो। आ पोते फछी साधू-बाहो थियो। वनभाड आम हीने (ठोड़ो हीने तपस्या करवा) बेली। उपर (स्वयं) थी हे चादाशीयो वितरे। अनेने लवावाए छे दे, वे धुव! आ अपरांश शरीर तो जुगो: माणवा जेवा-सरी संदर्भ उपाणा, शरीरना आ बन्ध अवप्यो। आम अंग अंग बनवेने ने आम बनवेने-ने अम बनवेने-ने लयार फछी धुव एको व्यवास आये छ। माता। मारे जो भव करवानो खेलतो तो देवकरायरी छल्ले छूँ के तारी दुःसे आसल। बाकी बीज ध्राम हे छूँ। तारी बीज वात मने लवावायी शके नदी। अनेने अंदा वैराज्य करता करता। आवुह नाटकमा आपुँ। आसपास छ। आ! अपाधे तो हिजमे के के दे करी नाम्या छे।

अर्ही आप्सो ‘आ’ धुवनी वात करीह छाूँ! (त्या) अर सत्ती हर्ष नदी अनेने तरवनी तो छाँ अभर ने केहिय। (अर्हीया) आ तो सहस्र वैराज्य छ। आसपास छ। अन्तरना आन्तरना अन्तर्यामा आलाया रागधी भसी ज्ञान छे, सहस्रपो भसी ज्ञान छे। अंदर अतिसृष्ट आन्तरना स्वभारमा, धर्मी रागना विकल्पो रहेने भसी ज्ञान छे। आसपास छ। अंदा रागना अभावस्तनावरुँ परिषम्यो धहो, थोर धहो (स्वयं धाम छे).

अानु। भाराज्य छल्ले छुट अानु। वीरराज जिएको सेवाको भानेपार वामीं- ‘आ’ मार्ग आयो। अंदे हुमियाने लाभयो भसी नदी। अनेने धारा उतराए देरी? अर्ही सांभतामा मणि तो अनेने ज्ञानामा अभिआये के छुट्टे मार्ग कोट जुद्दे हे आ तो।

“सहस्र वैराज्य-नी भावनावरुँ परिषम्यो धहो” – वीरराजनाओ भावना-परिषम्यो धहो, रागधी वैराज्य अर्थत उदात्तानुँ परिषम्यो धहो– ‘स्तिर भाव करे छॆ।’ अन्तरमा-आन्तरमा स्तिरता जमी ज्ञान छे। आसपास छ। आ! आ छोड़का रोटली भाता धेर अने पछी नाना भेजार सादा गांठा आये पछी छोड़का गो।
श्री नियमसार गाथा ८५ – २३७

भाग अने गोली सारर भीनी वाह बैक अने माणी आवे, तेने भावा अंगे फडी फडी फडी गांग पुलू उपादे सार भामी-पांग पुल दिखाई जब औला (गानगा) मान. पछी गोली बैक ने तो टट कीडे नभी. आ (सारकरा) स्वाद आगण पांग टूटी जब पांग माणी लांडी असे नभी. अमे जळे आरांकण-सारकरा स्वाद आवा, ते रागण गिडलाई तड़ळ कडी गयो छे तेने अं शरीर टूटी जब ने बंग वाह जब तोप्प डरकर नभी. उपयोग ने परिषड अनेक आवे पांग ते धर्मने अक्टा नभी. आख... शा... शा! बढ़रांम उपयोग ने परिषडना ढाला आवे छ्तां७, पोटे आरांकण स्वादियो लांडी (आरांकणी) बसतो नभी. अमे अं माणी लांडी नभी (तेम). समझां७ अंक? आवो छे मार्ग, बापु! कडी अनें आणणांके य न मणे, अंतु जाने य न मणे (तो) श्रद्धा तो ध्वांसी लावणी? अने स्थिरता तो ड्या (य रेडी हूनी यात).

आख... शा! (संध्यावारांनावारुँ) परिषांमो ढोळ स्थिरामाव करे छे, “ते परम तपोधन ज”- शीरे नभी, अमे. अंतरिंद्र आरांकण स्वादां जांडी गयो छे अमे तपोधन ज-मुनि “प्रतिकम्पास्वरुप किवावय छे, कारण के ते परम समरसीबाबावारुँ परिषांमो ढोळ”-नेले, (पवेले जे) ‘स्थिरामाव’ काढो ते शु छे (ते) कढे छे: ते परम समरसीबाबावारुँ परिषांमो, परम वीरराजगनी अंकांतपासे परिषांमो छे. आख... शा! वीरराजगनांसे अंंदर परिषांमो छे, अंकके प्रलु पोटे आमा वीरराजस्वरुप छे; अंनी जावानांसे वीरराजगनावे परिषांमो छे.

आख... शा! “संध्यानिद्राप्रतिकम्पास्वरुप छे”-न्यो! ते संध्यानिद्राप्रतिकम्पास्वरुप छे (अर्थात) ते प्रतिकम्पास्वरुप ज छे. समझां७ अंक?

भाव तो आकर छ, भापु! अनंतरणांनी वीं दी अप्यास नभी. आ हूलियाना अभ्यासमा भरी गयो! अंगोंला. बी. , अमे. अे. , डॉकर. - (अन्यां) भोंटा पुँचकं वणणांचा. हूलिया रस्ते वयो गयो.

ते (परम तपोधन) ज स्वामाविंद्र निद्राप्रतिकम्पास्वरुप छे. ‘प्रतिकम्पावाणो छे’ अनेम नभी; प्रतिकम्पास्वरुप ज छे, अमे. आरांकण स्वादां अंकतो माणूसे वाळ गयो छे देप्रतिकम्पास्वरुप ज छे. पाप (अने पुण्य) दी कडी गयो छे अने स्वहृतपासे ही गयो छे. आख... शा! आमा दण्डिख शारसना बहु जालपाणानी जहर छे? ते: अंतु अंके छे नभी. आख... शा! अंकतो जड़ने दरुय, (बस) अं संध्यानिद्राप्रतिकम्पास्वरुप आमा छे.

अंक (संध्यावारुँ) तो पटकम्पणू सांपने करे अंकतो बस! अमे पटकम्पणूं कडी आवा. शु पटकम्पण? कौने कडेहुँ पाळ? भिन्यायानुसे सेवन करे-राग आवे अने अमे माणे के में वर्ण ड्या-भिन्यायानुसे सेवन करे अने माणे के अमे प्रतिकम्पणूं दर्दे. अरे! शु थाय, बापु!

(... शेषांश पृ. २३८ उपर)

* Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री निषमसार श्लोक १२३ - २३८
आखा... छ! आधी वातुं!! छें आ बखारमां मानुने भेंडुँ छे आ ब्रात धार्या ने
थींिुं श्युं ने वर्षातघ धार्या ने! -थूने नभी. धदां तेराना भ्याला छे.

अर्था तो अमृतमय भक्ति. भरबख आनंद-भक्तिपूर्ण आत्मने निर्वान-भरबख
निज शब्दस धारण वो (स्नान करायो). अे ‘आनंद-भक्ति’ देखी छे? वीररागवाच धारण वो
अनी पर्यायामां स्नान करायो. आटले लाजर अश्वात्ता टेणे अने शुल्का छे ते प्रगट धार्य छे,
अम.

-श्युं डूं अे? मुनि कटे छे: “बुड लौटक आलापज्ञानी शुं धार्यन हो छे?” भाई!
अे व्यवहारणी-विकल्पनी बधी लौटकज्ञानी (छे). प्रत्य ने तप ने भज्यावानी भक्ति (अे)
बधी लौटक धारण छे. आखा... छ! बुड डूं-बोलुं, (अे) लौटक आलापज्ञान (छे).
(‘समस्यार’ कादा-राजमां) आयुं ढुं ने...! “अलमल.” अे काया अर्थी पोतें (दीकड़ेर
मुनिमे) वापरी छे: बुड डूंने शु डूं, भाई? अे आलापज्ञानी शुं धार्यन हो छे? बुड
डूं धारुणा धवनी शुं धार्यन हो छे? “अर्थात् बीज अनेक लौटक धर्मसमूहीयी शुं धार्य सरे
अम हो?” आखा... छ! व्यवहारिकांक अने प्राताकी आत्मानु धारण शुं सरे अम हो छे?
अे बधु तो लौटक छे. आता... छ! आ लौटकर धारण शुं-भरबख आनंद-भक्ति (वे) आत्माने
शुल्क करो-पर्यायां छी! आखा... छ! आ लौटकर स्नान छे. भरबख आनंदवस्तुप छे प्रभु;
तने पर्यायां भरबख आनंद-भक्तीधी शुल्क करो. अर्थी आधी वातो!! आ भक्ति-आनंदवस्तुप
भज्यावानां अंकेष भरूने आत्मानी भक्ति करो अे भक्ति.

(भक्तिमा) दोल वगाडे... अरे, बापु! अे शुं हो, भाई? अे दिया तो आता करणा
नभी. पत्र अंडर राज धमो अे आत्मानु धर्मवधी नभी. (लोको) अम कटे: धनवे धनवे धलार
ने..! को अकडम कट धलातुं धो? अर्थी तो कटे को: अकडम नभी (को) धनवे... आ ज भार्य हो!

अंडर अतीत्रिय आत्मानी भरबख भक्ति कर! अे भज्यावानी भक्ति हो. (बीजधी)
शुं धारण सरे अम हो? बधी व्यवहारां कथनी गमे ते करो अने राजनी धारण गमे तेतवी
बिमी करो तेथी आत्मानु शुं धारण सरे? आता... छ! भरबख अतीत्रिय आनंद-भक्तीधी
आत्मानी भक्ति करो तो आत्मानु धार्य-आनंदवधी धारण सरे. आता... छ! आधी वातुं!!

आ शास्त्र क्यां अर्थी सोन्गहातुं बनावेंहुं छे? आ तो पहेलातुं छे. अंडर धूं शुं धूं
परयुं छे. आता... छ! “बीज अनेक लौटक धर्मसमूहीयी शुं धारण सरे अम हो?” बीजो
श्लोक:-

(... शेषांश पृ. २४० उपर)

* 

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री नियमसार श्लोक १९४ – १९५
अंदरमा गयो नथी, अे दर्शारामा पैठो नथी; भिजारवेरामां अे रंजयो छ। आला... हँ! 
लघुवान भिखा मागे छै। रागनी भिखा मागे छ। राग कुछ आलो... राग दूसु तो लाम थाय–
अरे! भिजारी.

अर्द्धां कडे छे: “इ आत्मा ज्ञ-मर्जने करनारा, सर्व होसना प्रसंगवाणा” – अेमां 
शुभमाव पडा सर्व होशना प्रसंग छै।

आला... हँ! आली वात आकरी पडे। पछी (लोको) सोनगाने अेम कडे... ने-
सोनगामा आम छे ने आम छे। आपु! कधो, भाय! मार्ज तो आ छे, भाय! अने ते तारा 
किनो वंड छे आ। बाडी आंतणण धुऱ्वी बन्धने भरी गयो छे।

अर्द्धां देटला शब्द वापयो: ज्ञ-मर्जने करनारा, सर्व होसना–ओयुं। अे पुष्प अने 
पाप सर्व होष, अने प्रसंगवाणा–अेनो (पुष्पपापना) संग द्रयो, सबवास द्रयो, संबंध द्रयो, 
लोकार्थ कर्द: अनाथी रणजी मयेछे।

.... विशेष कदेश.

* * *

प्रवचन: तारा २४-२-१८७८

‘नियमसार’ गाथा लपने श्लोक-१९४। “इ आत्मा ज्ञ-मर्जने करनारा” – ज्ञ- 
अने भर्ज, शौचीलाना अणेतार करनारा “सर्व होसना” – अे बधा शुभ अने अशुभमाव 
ज्ञ-मर्जने करनारा सर्व होष छे। हिंसा, जूत, ओरी, विषमनोगवासना, अे तो पाप छे, 
ज्ञ-मर्जने उपमन करनारा (छ छ.) पडा (छे) द्वारा, धार, प्रत, भक्ति आदिना शुभ भाव 
छे अे पडा ज्ञ-मर्जने करनारा होष छे। अे “सर्वहोसना”–शुभ अने अशुभना अंसंभ 
प्रका (अेना) “प्रसंगवाणा” – होसना संग, संबंध, सबवास, अेटले के शुभ रागनो 
सबवास, संग अने शुभरागामा श्रेष्ठा, अे बधा ज्ञ-मर्जने करनारा छ अेवा 
“अनायारे”–अे बधा अनायारे छ। आला... हँ! अे पार्बतृत अने ध्वनीर समित, 
गुमिने लोको धर्म कडे (तेने) अर्द्ध फडे छे: ते राग छे, अनायारे छे।

अेक तो समस्त होष अने तेनो संग-सबवास-परिवर्य वारवार अपनार्जी हय्यो छे। 
अेवा सबवाणा (प्रसंगवाणा) अनायारे “अत्यंत छोडीने” – अर्द्धां तो निश्चयप्रतिक्रिया 
छे नेन... पडेला समस्त रागणी आत्माने भिन्न कढे आत्माना आनंदनी भावना कर्दी अे 
तो प्रथम भेदायनी द्वारा छे। (पडा अर्द्ह अथो विशेष वात छे)।

(अत्म) स्वप्न शुभ शैल-चन्दन (छे)। आत्मा “निरुपम सर्व अनान्द-दर्शन-शान- 
पीर्यवाणी” (छे)। आला... हँ! केवी छे आत्मा अंतर? के: सर्व अनान्द, सर्व दर्शन, 
स्वाभाविक शान, स्वाभाविक पीर्य (वावी छे)। अनात अष्ट्य सीड़ी। आला... हँ! अंतर 
आत्माना शालामां भेड़–अनान्द आनन्द, अनात शान, अनात पीर्य, अनात दर्शन छे। जेतु 
द्वारस्वप्न, अेमां अनात आनन्द आदि भरेलो छे। –अेवा अनात आनन्द, अनात दर्शन, अनात 
शान, अनात पीर्य–अेवाणा– अे आ शार गुला आदिवाणा “आत्मामा”-आत्मा अने कढीमे। 
(अेम) कडे छे के: जेमा अंतिनित्य-अनान्द आनन्द अनात बयो छे।
रचन - प्रवचन नव-नीति: भाग-२

स्वामाव छे ने...! स्वामावनी मर्दाण शुं कोष? आजा... छ! स्वामाव तो अभाव छे. जेंतु माप अपरिमित छे. आजा... छ! अथों जे आन्त, आन, दशन अने वीर्य स्वामावणों आत्मा; आत्मा आत्मामा “अत्मावी स्थित थाने” अटो दे निर्विकारी स्वप्नान् निर्विकारी परिवर्तिती स्थित थाने, अंम. आवी वात है! धर्म ‘आ’ है!

अन्तं आन-आन्त्वन द्रुत; अंव वर्त्तमानये निर्विकार श्रद्धा, आन अने वीत-राज-परिवर्तिति द्वारा- अने अत्मा द्वारा-आत्मामा (अवरों) “आत्मामा आत्मावी” -‘थी बड़ी’ हे ने...! अपादान हे ने...! ‘थी’ (अंटे आत्मावी) “स्थित थाने”-आजा... छ! आवी वात!!

अन्तं आन्त्वनाणी आत्मा. अंव आत्मावी स्थिर थाने अंटे दे जैत्वा पूर्ण-पापणा विकल्प हे अं तो अनात्म हे, अंवे श्रीदेवी, स्वप्नान् दे स्थिर धार है ते वीत-राज-काल्या, अने आत्मा है. अंमे केवलु हे.

अंद्रेवा आत्मामां आत्मावी-शुद्ध चैत्यत्मा, शुद्ध चैत्यत्मा निर्विकार द्वारा स्थित थाने. (श्रोता: ) परिवर्तिते आत्मा घीथी? (उत्तर: ) अने निर्विकार आत्मावे (आत्मा ) घीथी ने...! शुद्धपरिवर्तित छे अने अंवी! हे द्वारा, आत्मामा आत्मावी, अंटों वीत-राजीपरिवर्तिती. आत्मा अतिरिक्त वीत-राज-स्वप्न है. आन्त हे अन्तं शाति वर्णवेन बरेगे हे. अंवे वर्त्तमानमा शाति अने निर्विकार वीत-राज-स्वप्न द्वारा (अंटे दे अने आत्मावी) आत्मामा स्थित थाने. आजा... छ! आ आनुा नाम धर्म. अंवे आनुा नाम अथापत भावना. अंवुा नाम सत्य सामान्य.

अनात्मी जेनी सम्तु अंव सम्पतिन द्वारा-पापणा है, जे विवाह आत्मिनी वर्त्तमानपत्रिम-द्वार अवक-प्रगट हे अंव ज़े जेनी अनात्मी रमण हे अंटे अंवे अंटर वस्तुमा आत्मा ने नती (माटे) अंवे आवी आत्मा अंववो (केवलु हे).

अतिरिक्त अंव आन्त्वन भृगुवा; अंवें अंटु थिने “बाच आत्मावी मुकत थयो बड़ी”-अने अवकारना जे त्वा द्वार, द्वार, भ्रातीनाइ, व्यक्तयार, बारतिनाइ, दक्षायाम, दर्शनायाम, बारित्याम, तपायाम अने वीर्यावें अने अवकारना आवारी, -बाच कठो दे अवकार कठो- “बाच आत्मावी मुकत थयो बड़ी” (अंटों दे:) अंद्रेवा तो बाच आवार दे बघी विकल्प है, अंबे अंबां बघींता हड छे, अतिरिक्त जेने अनंदपरिवर्तित प्रगट कड़ा है ते अनंदस्वाभावी भव्यावहनो आत्मव बढ़े अनंदपरिवर्तित हैं अंडर स्थिर धार है, ते बाच आत्मावी मुकत धार है, मुकत धार है. अम समलय अंवुं (आप्यान) है, ‘मुकत थयो बड़ी’ अंटों अतिरिक्त अनंदमा सीप दीर्घ कड़ने देते हे अंटे आत्मा अंतर व्यक्तयार दे विकल्पो अंवांई मुकत धार है. आवी वात!! सम्बां बांही? ‘बाच आवार’ अंटों ‘अवकार आवार’ थी मुकत थयो बड़ी, निर्विकार-स्वप्ना आवारमां स्थिर थयो बड़ी अने अवकारना आवारी मुकत थयो बड़ी.

आ जेननी म्या नवी! आ तो धाने भाजुण-विनयवीं वांतुण आप दक्षायाम; निशंक आप समजिता आवार; पांच माहार, पांच समस्त, नब गुरु अंके तेर विकल्प आरित्याम आवार; भार प्रकारां तपना विकल्प (अंके) तपना आवार; वीर्यने अशुभमा जतु जतु तने शुभमा (योक्षणां विकल्प अं वीर्यावे); अने द्वा, द्वार, भ्रतिलि (ना सधकय विकल्प) - अं पत्र अनात्मा हे. आ अनात्मवी मुकत धार, स्वप्नामा दीव धार, “शमुभी समुदा ज्ञानिशुमोहोना समुद्री पविन धार है.”
श्री नियमसार श्लोक ११४ - २४

आख़्... ला! आप पंथम आराना संतनी वाली है! ओम के आ तो ओँथा आराना मारे छ, ओम (केवल के तो सत्य नथी). मार्ग तो “अंक होय नान्यामां परमार्थनों पथ”.

आख़्... ला! शुभ लाख (संप्रायमां) आपि वार हरी गरी गए छे ने...!

के हो छे: भरी बंजारु धर्मरु पुरारु छे. अन्ति आन्ति, अंति दर्शन, अंति शान्ति, अंति स्वस्तया-अन्यामा स्थिर बलहने, (अर्थात्) अथो जे आत्मा ओमा स्थिर बलहने, आखर आत्मार्थ मुक्त थयो ढे के अनंतर आत्मार्थ सहित थयो ढे.

आख़्... ला! आपि वाली हरी! काल परे मार्जनारे. (अथो) अथमान नही अने व्यक्तरो अथमास. बीह (वियरीत) प्रुकर्षा. आपि बीह श्रद्धा.

अथो तो हो छे के: जे बाबार फे ते आट्मार विजुद्ध-विपरीत छे. अंक पंथ मन्त्रतना परिभाषा अंक विपरीत छे, अंक आत्माना आत्मार्थ विपरीत छे. (श्रेरता:) निश्चयसी? (उतर: ) निश्चयसी अंके विस्तृतिती थ विपरीत छे. विस्तृतित अंक नथी. व्हवकरु राजनो राव, अंक वसुतु स्वपुरु नथी; अंक (वसु) स्वपुरुनी परिभाषामत थ नथी. स्वपुरु नथी अंके स्वपुरुनी परिभाषात पता अंकी हो के जेर्मो व्हवकर आयर हरी नथी. आख़्... ला! समजानु अंक? (श्रेरता:) व्हवकरणा वालो ज जडे (उतर: ) (भले) भडे. बीहु शुं छे के हे अंकां. अंक तो (सन्ततन) मार्ग हरी. अंक अंक अन्यानो हरी? अंक तो रहबेनी-कन्वरे वर्गानी वालो आपे छे. अंक (पांत) श्राष्ट्ररु हरी नथी? (अंक) अंक घरी कल्यना हरी?

आख़्... ला! आत्मा जे की सर्वसंस्कृत अंक बीह नथी. अंके जे व्हववानात्मा; अंक हे आत्मम व्हवकर जापने निश्चय करी अने अंतर्म दरपु; अंक व्हवकर आत्मार्थ छुटी जुं, मुक्त थुं; (अंक अंकङ्गत सुपनो पथ हरी).

ञिश्चासा: तो नमिरी शुं धे बनाशा?

समाधान: कोई बनाशा छे? रामजहांजी ध्यान राजनी कर्म ओम बडे? ओम निष्काम देहावः. बारी तो जे अंक अंक वर्मानुनी पर्यंत व्हववानामी (प्रतिमानी) अंक मंत्रणी बे खो अंकी जनमक्षण बती, ते उत्तितित धरे, अंका धरे अंकी उपत्ति थरी छे.

अंके जे धरम आलो छे. लाखु छे के तभाकर तररी पोखरु खिमां कुंडुलार्याना तीर्थनी प्रसिद्दि थरी. ते आ बड़ु झारु छुं छे. तीर्थनी प्रसिद्धिमा लाग्ना. तो नजसके अंक तीरी छे ता प्रतिमा छे, अथारिक छे, रोग मटारे छे ने क्वारु छे, आ तीर्थनी प्रसिद्धि धरे. अंके हो के अंक बर्मनी प्रसिद्धि को करे? बापा! अंक तो जे हाले धरणो बीरे अंक ओम जेन्याणो बीरे अंक विकल्प आलो बीरे तो अंक विकल्पने निष्काम देहावः.

अंक हे बर्मणा, प्रतिमानु पर्यातत्वु, अंक बर्मनी बीरे, अंक अंक आत्मामी धिया छे? अंक शुभमानी धिया (आत्मामी) धाय धारे ते बालनी धिया (अर्थ) धाय, अंक हरी? अंक हरी शुभमान व्हववानी भक्तिआत्मनी आलामी बीरे तेही धरे धरे अंक (बालमामी) धिया धाय छे? प्रलु आ तो मार्ग आकरो छे, बापा! बडू हेर... धारो हेरे, बाच्छ!

अरेरे! मुख़य ताणे अंकी पारे कोई नही रते, अं होते छे अं आत्मा रहेशे. अंक हे आरेकरीथ (प्रतिकृतणा आलाम). अत्यारे अंक अंक भोः छीव्युं कक्ष परे! (पढ़ा) हेरे छूट्याने टारे अं
\begin{quote}
रजय - प्रवचन नवनीता: भाग-2

अबुं छोड़ो। शरीरमा अध्यायो द्रम नहीं चुरे, तास नहीं चाहे, बढ़ा कुछ बेगान बच्चा बझो, जोया के आम शूं करनूं?, आपे छों? आपी हैवाना छों? भाव... हाँ! जबा बंदर गर्भ है त्या सामु को नहीं आने अन्य जाने पते नहीं अन्यी सामू जोखने 'मारूंं काँटा सारूं थाय, कव्यािः थाय अथा आ माराना हुँनूँ (बोगवाना न पड़े) अन्यी आचार्या राखे। पल (अक्षराणे) अंक बचाना अबुं आम मारक चाने छूटी जरेले- अने मारणे ने हुँका ने पैसा ने अन्यी आटा ने वर्णार्थ-उर्वरिकर ने...! आहा... हाँ!

भुजांमा अक्षराणे त्या सारे आखर करवा गया तत्ता। मारणे पांच थाप उपियायुं तो अंकलूं उर्वरिकर बतुं। ओरेठे ओरेठे मारणा धातवेला। त्या मने तो अन्ये थाय दे: आरे! अन्यी (अन्ये) छुट्याँ आकर उत्पत्ती। आहा... हाँ! बडारनी पुतिमा अंकालूर थाय गोवेला। भगवान चाने भ्या छ अन्तरी जुड़े? अन्यी अवरेन न मने। अरे, प्रतु! द्वारा रजका अने भ्या (आ भगवान) अरे! (अन्ये) राघनी बारे पल (भ्या संभं नर्थी, तो पछी आ मारणे ने हुँका ने वेदार ने, उर्वरिकर ने मारणा आ तारा व्रजार्थ गया?)

अंकलूं द्राकू ने...! शुभारामणा प्रसंगावशी आम छी? (अन्ये नर्थी)। शुभारामणा प्रसंग अने तो बधा द्वस्ताया है। (अनाचार्य है)। आहा... हाँ!

अक्षराणत...! अंकलूं अंकालु छ... जबे के अंकर तो आ शूं चुटुं? अत्यारी तो जुड़ो ने...! अंकलूं मानी मानी उर्वरिक मा धातित्तुलू देतूलू गया। पल अने द्रिष्य (शरीर) नी स्थितिः छ। अने ताराना भ्या छ अने (परमालू) अनी धातित्ता (अनेकी) करेता है। अने (परमालू) ने 'मारा' क्रोलूंने अक्षराणत्ती (पोलाना) मायामा, ते छिन्न तासा, प्रतु! अबुं हुँका थेले। (पल) अने छायावाणी पते राघनी चूटीने (स्वातागाने) निन्न भायो थेले, राघनी चूटीने जले वायकर्माणे जुड़े पायाधे थेले, अने भरता, त्या ज रन्डी पलः के- 'हुं तो आ छुृँ।' हुं तो अन्तत शानमागार्थी बरेलो भगवान छु, बायक छुृँ; 'हुं राघना म नर्थी' हुं पूर्ण स्वस्थप, अंक सम्यती पर्यायामा नर्थी।' (तो हुँका नाथी).

(भवने) अने पल आ भवमार आर्थी ने... के नले (आचार्या) भवमार आर्थीः आ भवमार ते पल आर्थी, पाँधु! अने साला-वाला (तने) टरटा जोया करे अने रोने। दृढ़रो हेथे तो अभौं कहे: अरश... हां! बाहरे अन्त्यारी जन नर्थी। राखित्तूलू त्या आचार्या गया' ता ने...? अंक बाँध नहीं पढ़ो। अने छही नसिहत भ्या गया, अमा आपुं रहियुं छूटी भेजु वर्युं हाँ, ओरेठे ओरेठे गोवेला। मारणले बोलावो, दर्शन करवा। अने आपमारणी आंसु लब्यं त्या त्यातं त्या... आम बाथ धूतीं... पीका... पीका... पीका... पीका... दृष्य। आहा... हाँ! अंक विवेश अने आर्थी जाने जन्मू नबते। सजी नारी अने तारी अग्निरी जिमी टिपट करे, आ रे! राघनां बरे काँटा नहीं अने जिमी जिमी रोने। बयां... बयां... (करे) अने अनेका नांटे रोता नर्थी। अने मारिने बोरमा जरेले के नर्थी अनेकुं अनेक (दुम) नर्थी। (पल) अनारी सम्यता जाय छ। (ते मते रोते है।)

आहा... हाँ! अवर भगवानमार्था अंकर राघना संग ने सक्यास्र विनानो, अने पृथु संग अने सक्यास्र शूं लाब करे?

मुनिमो माते नर्थी कहुं- दोकटसंग छोड़े! आसे छे ने... 'प्रवचनासार' मां: तुं मालसो
\end{quote}
श्री निषुम्भार श्वेत १९४ – रथ
साथे बुध वातो रेक्रा रेक्रे. ( नक्षतर) त्या ब्रमणां में जलश. तने त्या रागां रेकरे-
अरुं केम ने आरुं केम ने आरुं केम ? बुध माह ! ‘आरुं केम ’ मरवा हे ने... बुध छूटी ज्यो.

राजशेठना बोक बाल मुनिसिपालिभा में उपरी. जनकम गेमेला. मैसूर बोके भूम भाँतूँ
बो तो अंकड़ उल्ल भूमविया, छिली स्थिति. त्या अंक पोलीस आय्या, अने रापनागनां
विदा मन्यो ते... ते अरंद मरे. कु छ तिो त्या. अरी बारी माहे. बेडी भूम जल
पुष्पास रे मारे शु रुपवाला आ शिवोरुं ने वालुं ने...? (साहनी) आय्यांसै आय्यांसै
धारा (वहे). आधा... ब! श्रीहुँ : अरे! तमे अन्तारे रेक्रा घो ने, बाहर ! तमे शुं डे छो आ ?
हे छूटवाला लण आय्या छे ने... तमे आ चृूँने. (श्री) तमारा स्वाभ्यां माटे. पण पाणणां
यवानुं बो ते बाथे. पण मा ‘ या मुके नरी. हे सुधी अं बारी पृूँ : छोकरुं-छोकरोगुं-
अरुं डे करुं ? मारे शुं करुं ? आधा... ब! अे मरी ग्या.

आने छे ने...? अे अधी बुटारानी-बुटारानी टोली छे! (बाल) अनुहूँ लण तया सुधी
अमारा... अमारा करे. प्रतिदृश क्षे-बुध तपाशाँ... छ छ महिनारी सारे उजारा... हे छूटा
तरी. ( ओला ) बुध हुणी ताय छे... पण वात छे के अमारे उजारा करवा परे छे अे वात अे न
मूडे.

अंक बाल अरी आनेरे अम करे के मलरज़! (दाला) बुध हुणी ताय छे... बुध
हुणी. (कहुं) तमारे उजारा करवा परे अटोके तमे हुणी ने...? ओके पृूँ दे क्यारे मरी
ग्या... डे मरी ग्या? तमे सूता क्षा? अटोके दे या ध्यान न राजय्? अटोके पाराकरती
उजारा करवा परे अनेना भातर ने...? पण बोले अने के: ओला हुणी छे... (कहे) छूटा तरी,
अर... र... राँह दी बुरे अनेरे अने अने गरे नरी; ओमे करे उजारा करवा परे. आधा... ब!

अरे प्रभु! तु तोला छो, बाहर! क्या तु आधी चढ़े छे? अने ! (बदन-श्रीनां
व्याख्यात् ’/रणमा) वचा ने...! “आ विवाहबाब अनारे हेश नरी. आ परश्रमां अने
उला आधी चढ़े छे? ” बगवान आनंदश्रवां अने श्यासरूप पोताङु निःवर वतन; अने छोरीने
शुमरागमा आने तो अे परश्रमां आय्या, अने छोरीने नरी. अे (विवाहबाब) अनेना वतन
नरी. आधा... ब! आधी वातो छे! आ राज अने पुल्ला विकल्पां आय्या, अे हुणान
हेशां आय्या. आनंदो हेश बगवानामां, अने तो छोरी दीधी! आधा... ब! तो परी
आ बहार बाय्यी, छोरी ने दुढं ने मजानने माटे देशा देशा (अे तो अति अति हुणाना
हेशां आय्या हेशां आय्या जेणुू छे). आधा... ब! समालुं दंगे?

अरीनां करे छे: “शब्दसूचि समुदाय जनविज्ञाना?” अटोके आय्या आनंद अने
श्यासपूरी आय्यांमा करे छे त्यारे तने समारामी वैद्याराजीज घटाते छे. शुम-आस्युष्मान अे तो राजनो
(वात) विषमान (छे). शुम-आस्युष्मान छे अे असम्पा-विषमान छे; अनाधी छोरीने
अटोके अंकर शाय छे त्यारे शब्दसूचि-समारामी समुदाय जनविज्ञाना नीक्षण. आधा... ब!
वैद्याराजीजी समुदायी समारामी वैद्याराजीजी समुदाय जनविज्ञाना "समुदायी पवित्र शाय छे."

आधा... ब! वैद्याराजीजी बगवानामां तो शायी... शायी... शायी...शायी, तदन
आधारस्वाभ्यांना पिंड प्रभु (छे); अने अंकर बायं शायीना समुदाय जन बहार प्रगटे छे,
समुदायी शायिना जन बहार आने छे, अनाधी पवित्र शाय छे. अटोके तो अम कहुं दे:
र२४५ – प्रवचन नवंती: भाग-२
अोला (पंचमद्वारपतलिना) शुभरागशी पवित्र वरो नवी. (पश्च.) शुभरागो छोड़े हे त्यारे पवित्र परिप्रेक्षामधी पवित्र सयान हे. आहां... बा? आवी वाटू!!

प्रश्न शमस्रायो तो हिरयो हे. पुष्प-पाप्नां भाव तो अंको विषमभाव हे, हुज्जाबाब हे. बघवान ते समतानु-आनंदमृ भाव हे; अंबां अंदां ता अंने समतानी जलता बिन्दू भाव हे; अनानी विषमभावांना नाश ठरते, पवित्र भाव हे. अनो अर्थ हे: शुभभाव हे अर्थ अपवित्र हे. आहां... बा! पठे पडे आत्मानी पवित्रता अने रात्रो देश वज्न्यो हे!

श्रीने रात्या प्रात्या अने अम भाव (लागे) हे के: अरवे! आ श्याम भाव निजसम्बांवी नीडीने बाज़ आत्यो; आ बोझे? आ बोझे-दुःख सकन वरून तथी. आहां...
बा! समजालूं कांक! वाये वाये केरी हे.

“शमस्राय समुद्राना जलता बिन्दूयोना समुद्रती पवित्र भाव हे” - परयो हा! आहां...
बा! समतानी हिरयो, अंबां जलबिन्दूं-पार्श्वांची वीता भागातांचा बिन्दू आत्या-अनाती ते आत्मा ( -परयो ) पवित्र भाव हे. आहां...
बा... बा!

“ते आ पवित्रपुसळ” – अंबां हे पवित्र सनातन संज्ञान, आहां... बा! “पवित्रपुसळ “(-सनातन)” हे ते...! (-सनातन) “आत्मा मण्डली कलेखनों क्षय करीने” आहां...
बा! शुभशुभमभिप्रेक्षामृत्तीं परे, तेनां नाश-क्षय करीने “लोकनो उट्टर साक्षी भाव हे.” “उट्टर साक्षी”-हाक-समजितांचा तो आत्या छे ज प्रां आ तो सिद्ध वर्तन उट्टर साक्षी भाव हे. आहां...
बा! समजालूं कांक! आवी वाटे छे!!

पवित्रपुसळ (-सनातन) आत्मा मण्डली कलेखनों क्षय करीने लोकनो उट्टर साक्षी भाव हे.” –देरण्वानी (थाव हे). आत्या तो समजीत हे छे ज. आहां...
बा! आ (देरण्वानी) तो उट्टर साक्षी भाव हे. समजालूं कांक?  

पुष्प अने पाप्ना शुभाशुभ भाव वे व देश हे, जेर छे, विषम हे, दुःख हे. आहां...
बा! पैसा ने जी-दुहात वे दुःख नवी, अं तो दुःखना निमित्तो छे. दुःख तो अंदां जे विषमभाव उत्पन्न भाव हे ते हे. अने छही; समताना जलता भरेलो बघवान-भात्या; अंबां आत्माची समतानी जलबिन्दूंच्या उपर्या अनाती ते पवित्र भाव हे अने कलेखनी छूटी जग हे अने उट्टर साक्षी भाव हे.

अं सम ( आठां ) थर. खे ३८.

(... शेषांश पृ. २४५ उपर)
श्रीमद्भगवत-कुंडकुंडायायीवप्रणीत
श्री निम्नसार: गाथा 8.5
श्री पञ्चमलयाकथितविशिष्ट संस्कृत टीका
[ परमार्थ-प्रतिक्रिया अधिकार ]
उम्मगं परिचता जिनमण्ये जो दु: कुणादि धिरभावां।
सो पदिकमणं उच्चं पदिकमणमो हवे जन्मा॥ 86॥
उन्मार्गं परित्यज्य जिनमण्ये यस्तु करोति धिरभावाम्।
स प्रतिक्रियामणुयते प्रतिक्रियामणो भवेदस्मात्॥ 86॥
अन्त्र उन्मार्गंपरित्यागं: सर्वज्ञात:सत्क्षेत्रीयार्थांकारकारश्रोतः।
यस्तु शंकाकांशाविविधिकिंस्तःशिक्षित:प्रशंसांसंस्तवमलकंपंकंकिमुक्तः: शुद्ध-
निश्चयसहः: बुद्धप्राणित:मध्यादिदेशंसत्याचारितानं मार्गाभासमुन्मणं परित्यज्य
व्यवहारेण महादेवादिदेश:परेवचर्यार्थावर्जीतार्ग्यां अन्ध:हवाद्रत:पंचमहारा:पवचमसमिदित्रिगुसि-
पंचनिविरोधश्चादव्यक्तिविविधाविविधाशिल्लुगुणांकरोति ,
शुद्धनिश्चयनयेन सहजवभादशुद्धगुणांलकुते सहजपरमचित्त:समान:निराश्वासतिः
निजपरमालस्वयं: धिरभावां करोति, स मुनिनिविश्वार्थांसत्क्षेत्र:यत: इत्यत: ,
यस्मात्शिश्वार्थाईविक्रियां परमतत्त्वां तत: एव स तपोधनःऽस शुद्ध इति।

शुद्धाती अनुपाद परित्यागी जे उन्मार्गेन जिन्मण्यां स्थिरता क्रे,
ते प्रतिक्रिया कठवाय छे प्रतिक्रियाभवता कारशे। 86॥
[ प्रतिक्रियामणं ] प्रतिक्रिया [ उच्छे ] कठवाय छे, [ यस्मात् ] अर्थः के ते [ प्रतिक्रियामणं:
भवेत् ] प्रतिक्रियाभवेश। 86॥

श्रीक:- अन्तः उन्मार्गो: परित्यागाने सर्वज्ञात:सत्क्षेत्रात: म्विद्रात: वांतवां आवेल छे,
जे शंका, दंशा, विशिष्टिका, अन्यन्त्र: प्रशासं अने *अन्यन्त्र: संस्तवपु: मण्डकुङ्कक्षीती विमुखः ( मण्डकुङ्कक्षीती दक्षिण रक्षित ) शुद्धिनिश्चयसम्बन्धः ( चब: )
शुद्धिनिश्चयीत: मिभ्यानांत:सत्याचारितं मार्गाभासमु: उन्मार्गेन परित्यागी:ने, व्यवहारे पांचे
शुद्धिनिश्चयाने सकल:ज्ञानाहि शुद्धगुणोऽशुद्ध: अबकुङ्कक्षीत: सत्याचारितम् अने ( सत्याचारितम्
परम:) वैविश्विशवपु: जेणे प्रकाश: छे अण्व निष परमात्ममहं शूद्धत्वाबिनं विश्वाबिनं
सिद्धार्थमय: विश्वाबिनं, ( अर्थात् जे शुद्धिनिश्चय:सम्बन्धः चब: व्यवहारे अक्षधार्मिक: भूमिगुण:स्वरुप: मार्गाभासमु: अने निश्चय: शुद्ध: गुणोऽशुद्ध: शोभित: द्वार:सत्याचारितं
परमात्ममहं सिद्ध क्रे छे।) ते मुनि निश्चय प्रतिक्रियास्वरुप: कठवाय छे, कारशे के तेने परमतत्त्वां
(परमात्मतत्त्व साधे सत्व:अवस्थावां ) निश्चयप्रतिक्रिया: छे तेथी: जे तेने तपोधनः दु: कुणादि
अद्वैत:।
Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
 Shelby Niymasrār Aṭṭha 85 - 248

"व्यवहरे पांच महाप्राण" -- (अे) निष्ठवसम्यज्जिेने होय छे। जेणे आत्माणाआधानो स्वाद आध्यो छे, (अर्थात्) आत्मा अतीतज्ञ आधानी मूळ प्रत्ये जेणे शालिने जेणे जोड छे अने अनुप्रयो छे, तेने अधी शुद्धिश्रवसज्जीत निश्चिती करिने। समजावू डाँट?

भावानमाल्यामां अंकलिशत्थत बाँधी छे, अंकलो शालिनो पर्यत छे, शालिनो सारर छे, शालिनो पुंगर छे; अंकली जेणे शालिनो नमुनो स्वादमा दीवी छे, आध्या... बः! (�े शालिनो मार्ग!) अंका शालिना मार्गिय (विदुः) जेणे कप्पनाथी धर्म ने आ वस्त्र सहित मुमिरुङ्ग मनायुङ् छे अे पाण उमार्ग्छे। समजावू डाँट? आवो मार्ग छे!

अे बधा उमार्गने छोटी छाँटने-परित्यागीने, समस्त प्रकारे छीड़ने पांच महाप्राण, “पांच समिति, नश गुसि, (पांच) छ्नियस्नो निरोध, छ आयायत न्यायाधि अन्वयावी भूणेकुस्वर भवानोविदेय-परमेष्ठ-सर्वज-वीरारण नागर्मा स्थिर परिशाम करे छे।”

अणुण मिऩीने आठलो शुमभाव डाँटे छे। समजावू डाँट?

‘व्यवहरे’ ग्रीळुङ ने...! निष्ठवसम्यज्जिे छे ते, अलसी मिऩीने, अंका (अन्वयावी भूणेकुस्वर) शुमभावाणामा आध्यो छे। पाण जेणे (निष्ठव) सम्यज्जळ नाथी अने मणार्गतना परिशाम छे ते तो तहन मार्गावला (छे)। आवू छे, गृङ्गुङ कुङ, बापु! श्राम यामये मार्ग जुंडे छे!

“भवानोविदेय-परमेष्ठ-सर्वज-वीरारण नागर्मा (स्थिर परिशाम करे छे)” -- अन्नामां संमितसज्जित (शुमभाव) नी वात छे... बः! अंकलो अणुण मिऩीने मणार्गतना आये अणी अणुणां पाण नाथी। जेणे निष्ठवसम्यज्जळन, अनुप्रय, आधानो स्वाद आध्यो छे अने तेनी अंतर-कीर्तिता पाण छे अने आ अलसी मिऩीने शुम आवो छे अंकली व्यवहरे स्थिरता कदेवाणा आये छे।

“अने शुद्ध निष्ठयन्ते” सम्यज्जिेने आत्माणाआधानो अनुमव बोवा छता-मात्रे आध्युङ्क पाण ने... “व्यवहरे”- ते स्थिरता राभी न शेड त्यारे अने मणार्गतातिना शुमभाव क्षेत्र छे; छता अं छे बंधनुङ्क दाराद; पाण अे व्यवहरे क्षेत्र छे। पूण्य वीरारण न होय ते आत्मानुभवसज्जित (व्यवहरे) परमश्ामत आहिणा परिशाम वीरारणागािेनां क्षेत्र छे। अणे कडी ‘व्यवहरे क्षेत्र छे’ अंकलुङ सिद्ध प्रयुङुङ। पशु शुद्धनिष्ठयन्ते तो “सहजानालिदु स्वसुणोोत्थी अलंकृत” छे भगवान। आया.... बः! स्वामाविद बान, स्वामाविद आनंद, स्वामाविद दर्शन, स्वामाविद धीरी, अंका शुद्ध गुरुङधी अलंकृत छे, शोभित छे भगवान। अे शुभमार्गी शोभित नाथी; शुद्धशुणोोत्थी अलंकृत छे अं अनो अलंकार छे। आया.... बः! बान, आनंद, शालिन, दशा, दर्शन आहिगुरुङ्के ते अलंकृत छे। अंको जे आत्मा “सहज परम वैद्यसमावेय”-दोवो छे (आत्मा)? दे: स्वामाविद परम वैद्यसमावेय, (अंको) दर्शन “अन्ने (सहज परम) वैद्यविशेषुप जेनो प्रकाश,” (अंको) बान. (शुं कलुङ? दे:) स्वामाविद दर्शा अने स्वामाविद बाना, अंको अनो स्वाभाव छे। अने स्वसुणां पर तो नाथी; पाण परतरका वक्वाणो शुमभाव अं पाण अनो स्वसुणां नाथी। पाण जयारे (पूण्य) वीरारण नाथी अने सम्यज्जित छे; आत्मानुभवी ज्ञाप छे अने आत्मा वघंटा आवा।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
शुभभाव व्यवहारे वधे आये है, सरलतमः किंतू?

ज्यां सरलतमः नयि तेने तो महत्त्वादि अन बधा परिषामणी तो अर्थांग गणततीर ज

नयि. अने (तो) व्यवहार पथ के द्वारां आयतो नयि. (अर्थ हो जेने) अंतरं आत्माना आत्मने मृत्यु मृत्यु (टा) ते आत्मनम मृत्यु शकतो नयि अथि अनुभव छेदने शुभभाव आये छे अंदेली वात छे. -अो व्यवहार. सम्बद्धिने अो व्यवहार छे. मियाहिने तो व्यवहारे श्रेष्ठ ज नयि. आइँ... हाँ! भारे काम! रा अने पूलयी धर्म माननारे अो मियाहिने तो व्यवहारे श्रेष्ठ ज नयि. अो तो व्यवहारात्माई छे. आइँ... हाँ! (पस्तु) स्तुप छे.

शुभभाववने स्वामिक शान आक्षे शुभ शुभोति शोभेलो, परम शैतन्यसामान्य अने परम शैतन्यविशेषणे जेने प्राकाश छे (परम) दर्शन अने शान जेने प्राकाश छे. सूयना तेज जेन प्राकाश छे तेज ब्यवहारां शान अने दर्शन जेने तेज छे. आइँ... हाँ! "अता निक परमात्मायमः"-जेने शाता-दक्षा निक स्वामाव छे अता पोताना आत्मा-निक परमात्मायमः “शुभारिष्ठक प्रियरमाव करे हैः.”-हुँौ! अलोौ- 'वीरवासना भागिणी स्थिर परिषाम (शुभभाव) करे है, अे व्यवहार बनो अने आ ‘शुभ शारणम श्यरमाव करे हैः’ अे निश्चय. आइँ... हाँ! आत्मस्वपुंस अने अतीतमद शातनु मान-अनुभवे हेवा धाँजः जेने स्थिरता जेने आत्मो (आधावीश मृणालिका) भाव आवे, अे व्यवहार केलेवां. अने अे व्यवहार छेदीने अंदर स्तुपमां कहरी जय तेने निश्चय केलेवाभ. (आत्मा) मुनिनो (कः) अने मुनि केलेवाय.

आइँ... हाँ! अतंत आनंद अने अनंत अतंत शान जेनो स्वामाव छे, अता स्वामां मृणालिकी रहित धाँ-स्तुपमां (कः) वीरवासनाभे करे है ते निश्चयशारिण है. समजांबु कांश? व्यवहारारित्र (कः) कहुँ परतु ते पदेला ‘शुभ निश्चयस्वामाव (खप)’ अम कहुँ, (तो अे वात) सम्बद्धि माते (नी है). पदेलो व्यवहार अने अस्ती निश्चय धाँ, अम अर्थांगे अ आये. समजांबु कांश? प्रथम शैतन्य आक्षे विकक्रिणी अपेशा छेदी धाँ, निरेन्द्रपोषे जेले आत्मानो आत्म-अनुभव-प्रतिति धाँ है अता (सम्बद्धि) जेने, चूह मियाहया धाँ नयि अथि धाँ अथि अथि पंथमा आत्मां परिषामाने आवे है, अे व्यवहारहे, अे बंधनां धाँ नयि. निश्चयकी तो तेनाथे (तेवा व्यवहारही) रहित धाँने समताना भावां कहे है (टा) शाति... शाति... शाति... शाति... शाति-वीरवागी शाति वधी जय छे, तेने निश्चयशारिण कहे है!

हाँ! आवै वातो है!! अलो (व्यवहाराना पश्चवाणा) राहु पारे है. (पशु) बापु! माएं तो ‘आ’ है, भाँह! निश्चयस्वामु दर्शन विना व्यवहार य श्रेष्ठ है नयि. अंदे हो तो अर्थांगे इंदेली वात हो इंदी: “शुभनिश्चयस्वामु दर्शन.” -अंदे कहुँ ने...? अो (समबद्धी) व्यवहारे पांच महतत, सन्मिति, गृहि, छिन्द्रपोष्णे निरोधे, छ आपस्क, आधारीश मृणालिके आक्षे महतत वधे व्यवहारमां श्रेष्ठे है. पशु जयारे अने रागणे छेदी, ब्यवहार आत्महां मियर धाँ है, स्थिरताकी हे निरेन्द्रपश्च हेतरहे अंदरमां ज्येश्थ धाँ है, तेने सत्य-निश्चय आरित केलेकारणे आवे है. अो पोतानु आरित.

आमां (लाहो) पांचा उडावे-व्यवहारी (निश्चय) धाँ! निमित्ती (उपाधनां कर्म) धाँ! (पशु) ‘व्यवहारे श्रेष्ठ है’ अम हो कहुँ. पशु धाँ है त्यारे व्यवहारे छेदीने (अत्मां)
अभ्यास: के सहिष्णुसंघुषण है, निश्चयनयण पक्षवाणी छ तेनी कर कोटि छ?

समाधान: तेनी अर्ध वात नथी. अर्ध क सम्यकः भाव सवने सावृ मुनिपाय क्षेत्र छ.
संवबो अनो व्यवहार आयो क्षेत्र छ, (अे वात छ). अे तो पछि अने समझवानु
रहू. समिक्षणगुण बढ़ तो मिथ्यासु छे ने... अे अनेन वात नथी. अर्ध क शक्ति
सम्यकः वात दीधी छ. तेनी दीधु ने! “शुद्धिधार्यसम्यकः ज्ञप.” (अर्ध) पावेको वात छ.
पामगे अह भि. आ तो पाये के अन प्रथम अभ्यस्त दृढ़ीने शुभवा पनि व्यवहार तथा
वात छ. तो अने निश्चयसम्यकः अभेखान व्यवहार केहाको आयो छे. पछि अने छरीने,
स्वरूपमा सनिविदक जामी जाय छ अने निश्चयवादित कर्ते छे. आख्र... झा! वस्तु
आम छ-अनेवो फेरवा झामा नलितो तो करे! वस्तुवी निश्चय ज जा रीते छे।

चवासाना एक बात भर्जन करता-“ओक दिन जायू छ निर्वाणी, कती ले ने आत्मनी
अभिज्ञानी, अे टोड़े भि पामगा भवावना.” आझा... झा! बाँकी बुधो थोड़ा छे.

(अर्धां करे छ:) “स्वरवाव करे छ.” झयू? दिस्मा लीं: “(अे
शुद्धिधार्यसम्यकः ज्ञप व्यवहार अक्षराशी भृगुकेलक भागमा अने निश्चये शुद्ध
शुभोधी रोलोत्त व्यवहारकाल भवावनामा व्यवहार करे छे,) ते मुनि निश्चय
प्रतिक्षणस्वरूप केहाको छे.” -स्वरूप. सव प्रतिक्षण अने झरीने. “कार्य के तेने
परमतत्वत्व (तथा संबंधवाणु) निश्चयप्रतिक्षण छे”-परमतत्व-व्यवहार-
गत, अना संबंधवाणु, भवना संबंधवाणु नथी, आनंदक कृषित्ता संवहना-संवहनाळ
निश्चयप्रतिक्षण छे “तेथी ज ते तपोधन सवा शुद्ध छे.” -अ झरोे ते मुनि सवा
शुद्ध छे. आझा... झा!

... विशेष केहाको.

* * *

प्रवचन: तारा २५-२-१९७२

[ [ अवी रीते श्री प्रवचनसारी (अमृतमयोपेत्वकु तत्त्वदीर्घा नामसी) बेडेमा (९वमा झोकः द्वारा) कहुँ छ हे-]

चुकत प्रवचनसारविश्वायायचे-

(शांतिलिंगकोनी)

“इत्यक्षेत चरण पुरुषपुरुशेजून विश्वाप्रज्ञात्वेल-  
रत्नसाधनपवादत्वः विविधः सिद्धार्थ्रात्वः  
आक्रम्य क्रमतो निवृत्तिमनुसारूणा कृत्वा यत्िः  
सर्वत्रांसात्मानाविशेषावकास्यानिनिजतः करोतु रित्तिचित्तम्।”

“[झोकः:-] अभी के विशेष आहारणी पुरुष पुरुषेण सेवे, उत्तरण अने
अर्थात द्वारा वाली पृथुवी पृथुवी ब्रह्माक्रोम्यां व्यापुः के कर्त्या (-वार्थ) तेने यत्ि प्रास

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
र्पर – प्रवचन नवनीत: भाग-२
dरीन, क्रमः अतुल निवृत्ति दरीन, वैत-यसामान्य अने वैत-यविशेषत्र जेनो प्रकाश छे
एवा निष्काम्य सर्वां चित्तरि करो.” ] ]

जीर्णी वात क्र. वैत्यधन अनंत आंद्र, अतीतिन्य आनंदनी मूर्ति प्रभु आलमा छे.
अने जे शुममवाभ हेमाय छे ते भवा हुङ्कहुङ्क छे. अंकुङ्कहुङ्क भाववी भेद्दहाँ करीने
(आनंदमूर्तिनी हृदि करवी अं ध्वस.) अने जो पुलु-पापना भाव, शादे शुममवाभ हेमे तोपण,
छ ते जे अधिम. (केम्डे) अंदर आलमा अतीतिन्य आनंदनी मूर्ति छ जीर्णी अ भाव विचुङ्क
छे. अंक पदेदी शादमाते मूळ अने अरुममावाथी (भेद्दहाँ करीने) आनंदस्वरूप
शायकनी दृष्टि करीने, अनुसार हृद्मामा करवे अं प्रथम धर्मनी शाक्तात्त. जीर्णी वात क्र.
शुम्भी शूद थयो अंक नदी, अंक के. शुम्भी करीने (शूद थयाय छे). जेने शुम्राग-थ्या,
ध्व, प्रताक्ष शुम्राग आवे छ अंक जेने प्रम छ तेने विद्वानळ वार्तवन पृष्ठांत शाक्तस्वरूप
प्रथम हेत क्र. जीर्णी वात क्र, बाह! आ वात आत्मरे तो (संस्कृतयो वमालित नदी पल
आ) परस्त हेत वात क्र. आहः... बाह! आनंदसन्न क्रे ने...! “द्वेष अतरेय भाव.”

आलमा अतीतिन्य आनंद अने अतीतिन्य शायनी मूर्ति (छे). जेम शेडियामा रस भयों
छ (तेम आलमामा अकेलो अतीतिन्य रस भयो)। समाजाँनु छांटें? वात (कोट्थी) बुढ़ेरे
(वापै) क्र, बाह! अंदर आंदकट प्रभु, सति विकानन्त- ‘सति’ अर्थात शायन-सनातन,
‘स्वं’ अर्थात शायन अने आंकड़-ना पृष्ठांत भयो पर्यो छे; अनो-निर्विकल्पवायनो
अनुष्ठाप, पुलु अने पापना विकम्पती सिन्न वहने, पदेदी करवो; त्यस्ती धर्मनी प्रथम
शुमात्त (थाय छे) अंक पदेदी सीटी क्र. आहः... बाह! जीर्णी वात क्र, बाह!

लोको तो वर्षाकी (ध्वस) मारीने बक्ती छे. अंक अनंतरादश वायू गयो. अनंतावर रनी-दुःसाय छोया. अनंतावर भाऊनामाथी थयो. अने अनंतावर अंतममात्र-आर्तिङ, सति,
ध्व, अरतर्वर भाव-दीघा, पढ़ जे तो राग छे, बाह! तने भवार नदी. (जेम) ऊँ रो वीत नींत
पैचा, वल्ल अंकाता वाक्तूकी नी तोड़क्र आवे? तेम अंक शुममवाभ करतां करतां धर्मनी
शोकर करवे? नजा कामानी नदी. बुढ़ी जीर्णी वात क्र. बाह! प्रभु! तारो वार्ग (अलीकट
छे)! तारी प्रसुता ओटेवी अंदर क्र! अंक तो अंतर आंदर अने अंतर वैत्यचतुर्वनी बाहः. भालमाथी जेम रतन नीके तेम अंदरमाथी शायत अने अंतर नीके अंकी भाषा-निधान
आलमामा छे.

अंकीं पदेदी अंक छह, जुहोः “अंक प्रवचन विशिष्ट आक्षराना पुराणपुसोने
खेलेनु” –आ शब्दो नदी अंक पात्रन-अंतर भाव भयो छे. जेम ‘साकर’ शब्द छ ने...? तो ‘साकर’ शब्दमा एक ‘साकर’ पस्तु नदी. ‘सा कर’ –अंक गल अक्षर छे. तो अंक$जा अक्षरमा ‘साकर’ छे? अने ‘साकर’ जो एक गल अक्षर छे? अंक गल अक्षर, अंक तो साकर
पदर्थी रे नदी. ‘साकर’ अंक शब्द थयो, अंक शब्दमा साकर पस्तु नदी. अंक साकर पस्तुमा,
अंक साकर अंक पात्र अक्षर नदी. करशर क्र? वोलिक (न्याय) भी छे. अंक भावानालमा!
– ‘आलमा’ जे तो शब्द छे; पढ़ अने वापस वस्तु छे जे ते तो अतीतिन्य आनंद अने
अनंत शायनी बाहः छे-अं वापस छे. आलमा वापक-शब्द छे अने अंक वापस छे. अंक वापसा
वापक-शब्द नदी अने आलमा शब्द छे अंक वापस-वस्तु नदी. न्याय (छे ने...!)
अंकी अंक के चे क्रे: प्रभु आलमा अंदर वैत्यचतुर्वन (छे). आ भमुदीप, बपण समुद्र
श्री निन्मसार गाथा ८५ - २४३
अहिन्ने छेदे जे स्वयंभूमस समुद्र छे, तेनी नीँ (तलिक्ये) रेती नथी, रत छे. (आ मध्यलोकमा) असंख्य समुद्र अने दीप पता अल्ला छे. (पढ़ेका) आ जम्मुदीप अंक लागे योजनानी, (पढ़ी) अँ दान योजनानी लवला समुद्र छे. (पढ़ी) बार दान योजनानी धातीङ्गीप (पढ़ी आँ दान योजनानी समुद्र. अभ अधिकी बीजे बमडा, अभ अंकणीय दीप-समुद्र. पढ़ी) छेदे असंख्य योजनानी स्वयंभूमस समुद्र पाठीनी छे अभ नीँ (तलिक्ये) रेती नथी, (अंकला रत छे). आँख... छे! अँ दे आँख माने? आ तो सव्वस्थी लिंत युँ. (श्रोता:) त्यां पनीमारे देखा दिवसे? (उत्तर:) त्यां पनीमारे देखा? अंकीलीप बस्तर माध्यर जठ शके नथी. त्यां आँगण अंडर (स्वयंभूमससमुद्रसतलिक्ये) रत बर्या छे. अने तो अधिकी अभ हुँदत अँष्निद्रा छ्याए. अभ मुँडणार स्वयंभू! (अ) अंकण आँगण अने अंकण शानादि सुकल्यालो बन्धक छे. अभ अंकराम पुरुष-पापनामाप (उँ) रेती छे नथी. आँख... छे! समकाळी छाडे? शानमूर्ति प्रलुप, आँगणकी पाप, स्र्वक्ता अने प्रतुसतनी मोटरथी भयों पड़ो छे. अनी आँगण पुरुष अने पाप तो रेती समान, मेल समान, अने हुँच छे.

जिखासा: पढ़ेका पाप छोटे के पढ़ेका पुरुष छोटे?

साधान: पाप अने पुरुष बेय पाप छे. (‘योगसार’ गाथा-७५मा कह ने...!) "पापुपने पाप तो जांग जग सुद्री; पुरुष-पाप पाप छे, कहे अनुबंधी बुढ़ी छिड़ी." - हिंसा-नृशिध्दिने पाप तो छोटी कहे छे. पशु घरीघर-अनुबंधी-आत्माना शान अने अन्नाने वेदवाणा (तो) अभ शुभवाम-पुरुषने पाप पाप को कहे छे. अंतर अंकरास्तुपामाई बड़ी जँड अने रागाना आयवुँ, अने तो जेसा आयवुँ छे. आँख... छे! आँकरी वातो छे, बापा! बौद्धों सांभणणी नथी अने अनायार आयामी य नथी. (श्रोता:) पाप-पुरुष भने (मित्र तत्व)? (उत्तर:) बेय (मित्र छे). अने तो कहुँ बिंट ने...! अंतर अंकरामपाब बित्र छे. पुरुष-पाप पाप बित्र शीश छे. अने बित्रसतानु भान आयामीबृह जँड ज नथी. अने ध्या, ध्यान, हतागिनो संतोष-वानिज्याल धनात्मिनाम अभ्या, अने लाखनु मंडिर बनाव्युँ-खड गयो धर्म! धूमणाय धर्म नथी. सांभण तो परे? अने शुम-अनुबंधी बित्र, पूर्ण शुद्ध बैत-प्रह; अनी हिंत दरबारी प्रथम अतीश्य आँतनानो थोके स्वाद आवे छे. अने धर्मनी शुल्क तथा छे.

अर्घियो अने वात कहे छे: “अने प्रमाणी विश्विश्व आदर्शारण पुरुषपुरुषे”-अन्नान अन्नान आत्मानो धर गया, पुरुषपुरुषे. अभमो [“सेयलुँ”] -सेयलुँ “आदी” नो अर्थ: बर्णो; सावधानी; प्रथम; बुढ्मान. नीती नोचे छे. बृह दे छे? अने अंतर पुरुष-अंकरामपामान सावधानी थर, ज्ञानों पोतानो प्रथम पुरुषात्मा बुढी मोग अने पुरुष-पाप-रागानु बुढ्मान छोडीने जेने अंतरस्तुतुँ बुढ्मान आयवुँ तेने प्रथम सम्बद्धन, सम्बद्धन अने अर्घियो तो विशेष आर्थिनी वाती छे. मुनि केह छे, साता मुनि बो! (अनी वात कहे).

आता मुनि मो तो नन्द बोसे छे. अने वतनेनौ ट्रकी पवित्र होय नथी. अने साता मुनि मो अंतरस्तुँ अर्धीसा, सत्य, दत्तहिना-परम्बोधनाना परिशिष्ट आवे छे तेने पवित्र राग जाँडीने, दुःख जाँडीने छोडी छेदे छे. आँख... छे! अने मुनि मो अंतर अतीश्य आँतना स्वादिष्टा छे. जेने (बौद्ध) अने राक्ष ले छे ने...! अने आँकरी पूर्णे छे ने...! तेने सम्बद्ध-स्वादिष्टि (धल) राजार भिँत रहने, (जेने) अंतर अंकरास्तु प्रलुषे छे अने आँतने पूर्णे छे. आँख...
रहें। अपने इतिहास के लिए भाग-2
कहें। ये संबंधित चीजें हैं, जो नयी शीर्षक छत्र हैं, तब भगवान-आत्माओं आनंद अने शाली है जो रहें। अपने पूजा अने पाप शुभनाम भाव हैं ते थुक्का छै। तो अपने पीलीमा निम्म करें। शहीदों रहें शाहीमा होम तो थुक्का छूटा पार्दीने कहें छ (तेम )।

अपने हक्तां पवेंला आपूंड़ूने ने आ दरुं आ पीयुं ने आ छीदर (सांकवां)। ने रणवुं ने उधारुं आशा। आशा। आ दु्शद जालसने में आपुं छूटूं दे। आ रन-50 दे 60-70 वर्ष आयुष्यां केवल आूं दे हैं आतानुं? डूंढ मे भे दुई जवाब वती नहीं। अं डूंढ डूंढ नामना मचारिया। बिहारा आपूं है कमवां अने अंगों अनूर जवि। डूंढः आ दु्शद केवल दे के आ 50 थांब, चात। वर्ष थांब, अर्थ 8 थांब-कोने? तो तेलिने (शोतः) आतानी उंधे डूंढ़ी? (उन्तः) आतामा तो अग्निलांबन है, अक्रिनाश है, अं गों उंधे शी।

अभी शी (आतम) मां अंगर अतीतिय आनंदनी सारकों मीसा, अर्ज्ञिय आनंद परहों है, अर्ज्ञिय अमूल्य गाथ बरेदो है। (अनो) पवेंला है पवेंला, शुभमाध्य्य भिन्न धरणे, अनुपव-समर्थ्य धरुं। ते उपानंत हृदयां हार छ। फकी ज्यारे मुनि वाह हैं तो नजन भोड़े है। भस्तनो टुड़के पवे नहीं अने अंगरने अतीतिय आनंद (ना धोध परे है।) जे समुद्रे बड़े भरती आरे है अपने आतामां जयरे सारू कुरि पहुंड हैं (तेन) तो भावहाना आतामां अन्तर्भुप स्वप्नेन करिने पवांम अर्थात तर्तामान दशामा-पोताने बड़े अतीतिय आनंदनी भरती आरे हैं। आणा। आ जा! आणा।जा!

अपी वात!! कोई दी' (सांकवां नहीं)। हृदियानी-आ डूंढरना ने पक्विवानां-भक्तार अने बढ़ूं दुक्हान है। हो पाडे छवील दरे ने लोडी बढ़ूं जजफाई। पवे अने ज्ञान तो बढ़ूं दुक्हान (छ )। जयं भगवान आतानो नाथ प्रभु है। आनूं ज्ञान थुंड नहीं तो बढ़ूं बढर बढ़ूं शान दुक्हान है। जे ध्यामा ध्वंसार पोतांना मां से आ ध्वंसार शा कामनुं? अन्ते जे परुं ज्ञान छे अने तो आतामाँ तुदशान केक्पावां है। अवे! अस्तरमध्य भगवानआतमा सतबिधान्य प्रभु। अनी अंतर्भुप धरणे ज्ञान करे तो अने ज्ञाना अतीतिय आनंदो स्वाद रची आरे है। तो अर्थी आतायर करे हैं जे अनेना (आतमाः) स्वाधमां लील थुंड अने आर्टिनी निरुषत्तसास है। आत्रिन्य अंघतां भरूं। भरूं अर्थत ज्ञापनी हृदे जे बढ़े हैं, ज्ञापनुं ज्ञान थुंड हैं, अने स्ववमा भरूं, भरू अने ज्ञान, अंघर आतानो जसी हैं अनूं नाम आर्टिन। है। (शोतः) साक्षार? (उतः) अने आर्टिरा अनायार है! अने अपी (अथा-तपमा ) आपी गयुं नें। लोडी जेंतवा साक्षार करे हैं ते बढ़ूं अनायार हैं। (शोतः) अवे वाता पोटी? (उतः) हृदिया बोदी है! आणा। आणा। पोटानी निर्जीतनी शुं किंमत है अने किंमत न करीने आरी हृदियानी किमत करे हैं!! "पवांम भारेक भोलीं, परवांम देम-कुकरुं" अरे
श्री निर्मसार गाथा २६ - रापप बधाने परण्या, पणा आ 'पोते कोश छे' अनें परिश्रेणी नयी! समझादुं कार्क?

अजीया कदूं हे? के: मुख्यवुपुरसो-विषिष्ट अर्थात पास आत्मवाणी पुराणपुरसो. आत्म शेमा? जेणे शुद्धवद्धत्वामा आहेत बने, प्रभान बने, सावधानी बने. अे (पुरुसो) ठेवले-ठेवले “उत्सर्ग अने अपवाद.”

-शुं कदूं हे? आ तो अध्यामभाषा छे. आ ‘प्रवनसार’ नो (श्लोक) छे. ‘उत्सर्ग’ नो अर्थ शुं? के: मूळ धरणे (जे) पोताना अतीतिय आतंकां लीन रके छे ते अनें निश्चय-उत्सर्ग अर्थात मूळ मार्ग छे. पणा अभि (स्वर) न रकी शकें, अतेके-आकाः छे ‘डु शुद्ध झान छुं, आनंद छुं’ (अने) अेंणे लड़ते हे; पणा अभि लीन न रकी शकें त्यासे शुद्धभाव आवेणे छे. अर्धसाहित्य आधि पंतमक्खत्र अे सुपुरबाने असरी अपवादमार्ग कदूं हे. अनें अंतरां लीन रके अनें निश्चय-उत्सर्ग मार्ग कदूं हे. आका... शा! भाषा भीज. भाव भीज. आ तो लोकतंत्र वात हे, भाक!

“पुरुसो सेवेलुं, उत्सर्ग अने अपवाद द्वरा धक्य पृथक पृथक मूलिकाओंमा व्यापुणे के वरज़ (-शारित)” -आ शारित... शा! स्वर-आतंकां शरणुं, रामुं, जामुं.

दृश्य शेक हे अनें नीये अभि मृके तो दृष्टां वीभरो आवे हे. तो (शुं) दृश्य वेच हे? (नयीं. आ तो) पोलाङ्ग. (पणा) अेंणे आतंकां नयीं, अभि कदूं हे. आतंकां यागात्मिन्य लयावशी अनें वर्तमान दशामा आतंकी भरात भरती आवे हे, अतीतिय आतंकी भरात भरती आवे हे, गाद भरती आवे हे. अे दृष्टाना पोलाङ्गां जें मयी. दृष्टाना वीभराना हूँ अक दृष्टां व वाल्मुं नयीं आवे हे. अे आ बालामा धैर्य धैर्य ने बालरामा झान-अने वीभरो हे, अे पोले वीभरो हे. समझाणुं कार्क?

आ आतंका...! जया तिधात-कैप्टियर्टाकल भर्स हे, प्रभु! त्या आत्मा हृदि ड्रीने लीन रके अने शारित. अने शारित विधा धैर्य संकट हे. अध्या अतीती हृदि नयीं अनें गेम तेला शिकांक केरे ते भमा वर्ष (छे), वार गातिमा रणवावाग्ना छे. समझाणुं कार्क?

मोहना अर्थ शुं? अर्ध दुखारी आत्मित मुक्त रके. मोक्ष अटेरे मुक्तवर छे नें! रागाकडुं हूँ छे अनेंथरी मुक्त रके अनें अनें स्थाने पृथक अतीतिय आतंकां उत्पत रके अेंणा नाम मोक्ष हे. समझाणुं कार्क? -शुं कहुं? आतंकां अतीतिय आतंके जें शक्तिवेष (ते पर्यायं म्हणते छे). जें लोकपोपरी शेक हे अनें वेश घुंटू हे, तो योऽकपोपरी तीनांश प्राध्य पाण हे. अं योऽकपोपरी अटोरे सोण आना अटोरे दुःसोण अटोरे पृथक तीनांश अंतरां भरी हे अने लीला रंग अंतर पृथक भर्स हे तो वृत्तावधी, छे ते प्राध्य पाण हे, अेंणा छे ते प्राध्य पाण हे. शो वृत्तावधी आवे तो दैलाना ने लाकीरी न घुंटू? छे त्या अंतर, ते आवे? अेंणा लोकपोपरीमा योऽकपोपरी तीनांश भरी हे अने लीला रंग पृथक भरेलो हे (तो ते बढदर आवे हे). तेम आ भक्तवित्त्तामां सोण आना अटोरे योऽक पेशा अतीतिय आतंक अने अतीतिय झान पृथक भरेलुं हे; -जें अने (लोकपोपरे जे) घुंटू हे तेम अतीया अंदर धाव हे अेंणा नाम वृंदुं-अेंणा अंदर धावळी जे अंदर शक्तिवेष पृथक-पृथक झान हे ते अनें दशामां प्राध्य पाण हे. आका... शा! आ धर्म!

वाते वाते हेर. आप्ली आप्ली वाता. लोके कदूं हे हेडासर बनावो, बठक दरो, पृथक दरो,
रान्द्र - प्रयथम नव-नीत: भाग-२
प्रत क्षण, शरीरीक अभावध्य बायो! (पण अथी करू नै क) सांगण ने...! अे बधु तो अन्तत्वार करू छ रान्द्र, पण अभावध्य आत्ले बधु अधीत थ्रासा अन्तस्वप्न-अन्तस्वप्न बघवान; अर्थ अर्थात अंदर रवित; अे अतिदिन्य आनंदमां रवित अे अभावध्य छ रान्द्रीयक अभावध्य पायां अन्त तो शुबराग-पुल्लू छ, अंत कध धम्म नभी. (श्रीता:) अं अभावध्य छ? (उत्तर:) निर्दिष्ठी तो ते अभावध्य ज छ. सरीतु सेवन न करू-नैयो शुभ भाव, शुभराग छ. निर्दिष्ठी अभावध्य छ. अे आनंदीय अभावध्य नभी. (आमां) अभूतनॅ अंदर अंदर उके छ. प्रलु अभूतनॅ छोड़ेका भरी छ. अंगमा अंद्राह धनरे, पुक्कना परिशामाली भिन्न धनरे, श्रीति हन आनंद धारां छ ते साक्ष धम्म अने सारी मार्ग छ. बाही बधु अंद्राह पनराना मौूं छ. पडुलां अन्तत्वार अंगमा पृथक मक्खन पायां बंता, अन्तत्वार स्रोतां गणा, अंगमा श्रीति तो अन्तरे छ ज नभी; तोप्पल उपाये आत्माने प्रास करू नभी: कारण के आत्मा अं कियांकनारा राजगी अंदर निर्मल छ. तो राजगी नेत्र पादि, पूर्णांकना नात्मां अंदरां रवित-रमवु के जेनाथी अतिदिन्य आनंदनो न्याय अने येंन आवे अनं नाम धर्म छ. (श्रीता:) आमाणाना चीलका धनी होने अनो रस पीवो! (उत्तर:) अे आ आनंदीय रस धारीने रस पीवो! अंगमा अं गें हो छ. बघवान आनंदीय नाथ प्रलु अंदर छ, अंगमा अंद्राह धनरे शुभो! अं आमाणाना रस करता अंमा भूमधनाली पार नभी, अं तो जरना रस छ. अं वात (सीवे) कप्प छ, भाह? (धर्मने नामेशु पुराण रुखूं ने... दुमानियारे) सीवे करा आपू विद्वंदना नपार संज्ञा-२०१३, २०१५, अने २०२३मां शोें छ. दश दश जरां मालाब नपार कर्म छी.भोपालमा पंख्रवालुक बुतुि त्यां सामान्या ४० जरां मालाब, पण अभू व्याप्यान तो अ (च धारा) छ. अंगमा आण्ये (परमाण्य महत्तु) उद्वाहान धर्ू र जरां मालाब बुतुि नात्माद गणा त्यां १५ जरां मालाब. वात अं अभू व्याप्यान तो अ, आपू अं वात (सीवे जनम-सपर-नामाने अं अं ते तेम हो छ. बाही तो मतुम् मरीणे घरे-पुपु, श्रीता, क्रांता, कण्यावाग अन्तत्वार बव कर्म, प्रलु! मिथावाद ते संसार छ. -अे आयु छ ने...! बिपृत्त अचार्या अं ज संसार-महाउमण छ. राजगी धर्म शरी होने अने मने राजगी कप्पा धर्म-अं महा मिथावादाल्य, महापाप (छ). अं नापना गर्ममा अन्तत्वानुन रबर्वु पुक्कु छ. जेम जनीता पायां बाण आवे छ ने...! तेम मिथावादा-पुपर्यी धर्म शरी होने. अं शुभ धर्मतां करतां धर्म शरी होने, अं मिथावादा-ना पेटमा अन्तत्वा भन्ना गर्म पुक्का छ. आहारा... हारा! आवी वातु छ! अंग्रीयहां अं गें हो छ: मुनियों अंबु शारित करतुं के अंजर वस्तुला लीन थाँ, स्वसंवेदनना अतिदिन्य आनंदना स्वामां रखें. -अं निस्हयाचर्थिं छ. अने अंतमा (स्थिर) रही न शंके तो कर न करवी. त्यारे (जे) शुभमाय आवे छ तो ते अपवाद छ. अपवाद आते अं दहित त्यां (अंजर वस्तु पर) छ, आत्माका स्वायत् उपर छ, पण निविद्या-स्थिर न थाँ शंके तो शुभमाय आवे छ तेने अपवाद करू छ. उत्तरमा अने अपवादी अं व्याप्या हो अं तो शञ्चालनी थान्य्या लुमी छ, बाही! आहार... हारा! मुनियों अंजर आनंदना स्वामां रखें. अंमा रही न शंके तो (पण) दहित तो त्यां विजिणे शुद्ध शैतन्य ध्रुव भगवान उपर छ. पण ध्रुपमा रही शंके नभी त्याये अने शुभमायें-था, धन, प्रत्ता परिशाम-अपवादार्य आवे छ.
वर्णन च: अलंकृत निवृति करने । -कमे के वाक्य न भोग अते तत्त्व निवृति-अनंतमां रत्नेवं। जयं प्राणु पूर्ण-नाक्षर विराजमान है तयं जगती अतुल अर्थात् उपामा न भोग अते निवृति करने। भूतिविशेष वात है ने।

गृहस्थालमां समस्तस्मृत जाते। जगतो मन्त्र वोटानो अनुतम जाते। पदा चारिता गृहस्थालमां कौतुकः नवी। चारिता तो (भूतियो) अंतरमां स्वपनमाता जाकारी, आणि गृहस्थालम छोड़ीने वेप्पार-वंशो छोड़ीने, अे महाकल्यनो शुभमाय आवे। पदा अने पदा (तेऊ) अपवादांग जाते। अपवाद अटे (सामान्य नियममां वाच अर्थात्) होष। अरे! (अवी) वात! अनुज्वरीते हृदि अंतरमां होणा छतां पदा स्वामांव चिंत न रत्न रत्न नहीं। पदा अपव आवे हूँ! पदा अपवाद आवे। करुणे रत्ने नवी। (आवामां) वाच हृदि! हृदि तयं हूँ। ध्रुव उपर ध्येय हूँ। (पदा पुरुषार्थी क्राश्चने वीचि) अंतरमां निर्दिष्टा-सिखर छाट रत्ने। (अते अपवादांगां आवे।)

ध्रुवाने तारे भोग हूँ! ने। अने वाले वर्णनात्ता (रत्ने) आवे। ध्रुव के ध्रुव तारे भोग हूँ। तत्त्व सिवाने बरुङ्ग भोग हूँ। तत्त्व तत्त्वशाली अभर रहे। अमें पहुँच मृत्यु; अनु बख़्तर अपे ध्रुवाने धीरे रायवृं। समस्तां धृतामः?

अरे! पदा आह कर जतुः (आचार्य)। भीदर नजुः लागे। हरी अभ्यास करो नवी।
२५८ - प्रवचन नव-चतुर्थ: भाग-२

आम ने आम हृदयामां हृदयामां दोनों करने भरी गयी अेम ने अेम। वांड़के भगवान् स्थर-“ जनो असरहताण... जनो सिद्धाण...” क्षण, (तो) अे शुभराग छे, अे काँटे धर्म नथी।

पण अही तो करे छे दे: धर्म प्रगट थयो छे। जातिदाश अंदर वच छे। पण अंदर निर्दिष्ट अनुदाममा विशेष स्थितता न रक्खी शके तो अनेक (मुखिये) शुभराग आये छे। अनेक शुभराग वचने पण दृष्टी तो ल्या राजनी के आ (शुभ) छरियन त्या अंदरमा जहु पणे। समझायुक्त कांटे? अेम अतुल निवृति करने “ वैद्य-सामान्य ”-रस्तिनातु। छे अे वैद्य-विशेषकुट् - जहुनाने स्वभाव छे ते वैद्य-सामान्य छे। “अने वैद्य-विशेषकुट्”- जहुनाने स्वभाव छे ते वैद्यनाथ विशेष छे, भेद छे। इवनु अे सामान्य छे अने जहु पणे विशेष छे। अे सामान्य अने विशेषकुट् भगवाननाला छे।

आखा... छ! आधी अक्षरी (अधात्मकी) वातो। आखा... छ! अंतरक्षण जनमलय। तो (कर्वा) आयु। अनाधि थोर्शीना अवतारणा अनंतक्षण अनंत हुण्णा दिवसो गया छे। अरे। अरी जौड़ सन्तुलणा भोगे त्या अेम दर जाम के आखा। अने जौड़ वधी गया ने। पांवयास लाम मयो... ज्ञां छौकराने क्षीक थाम ने भेंबांक लामनी पेदास महिलानी कृष्ण... अने सुरू छिमो। -थ्रूषय नथी। साबण ने व्यापे। (श्रोता:) शया जेवानी हर्दि केर छे। (अनेके) त्या सुजि लांगे। (छे:) (उतरा:) त्या घूसि लांगे, माने छे। आखा... छ! इव अने राजनी अक्षतवहिका जारे इवे छुटे त्यारे पिलायो, आयु। जेम तल वालीमा पिलाय छे तम जैने आ शुभराग अने एकमां अक्षतवहिक (ते) अे हुण्णी पिलादने इवे छिमो। अने भयब्रमणमा जशी।

पण जैने माणी वीज राजनी विभिन्न छे, अेमो अनुभव क्षण, तो मृत्यु वचने पणू ‘हँ’ तो राजदी अने एकमां दिवायी विलय छू’ अेमी हस्तिनो अनुभव लाकने, (कछ) जे थोडे रणै फाकी श्रेष्ठ अने जावालानो रहे छे। पण अने राजदी सवनैक बोलो। पण अे सवर्ग मयो अेमा सुन न नाले।

सवर्गमा देव छे। सागरप्रमणु मोटू अलयुष्य। आग+उपम=सागरप्रमण। दरियो छे, अेमा पतीनी लिङ्कू उपमा असंर्ग छे; अेम हेवनु आलयुष्य असंर्ग अभिज वर्षतु। छे। आ तमारी थोडी थोडी भागाने कहीमो छीमो, शास्त्रभाषा बदू आकरी छे। सागरप्रमण-सागरनी उपमा जैनी आयुष्यनी, एकलु मोटू अलयुष्य। पण अे पण आत्मना बाण विना अण्झिका करिने सवर्गमा गयो, त्यानी मयो घूसमा-श्वामा जशे। आखा... छ!

अने घरमचामो आ जे उसर्मा ने अवपाल (भारी छे); अेमा (उसर्मा) जे अंदर रक्खी शके नयी,(त्या) जे (अवपाल) रण आयो (तो) पुवयास बह जशे, सवर्गमा बंध बह जशे, फन्जामा जशे; त्या पणू ‘हँ’ रण अने पदकुस्ती विलय छू’ अेमं अनुभव तो साधे लाकने जाम छे। त्या आयो-कहोके घन-घनजालीनी (होय पणू) द्वायु सूफुबुढ़ नथी। घरमिछने परमां उपायु सूफुबुढ़ नथी। सुन तो अंदर आत्मामा, अन्तर्निर्देश अनंतमा (छे) त्या सूफुबुढ़ छे। पण अेमा स्थार रक्खी शके नयी तो आ अपवादार्ग आयो, पण अेमा सूफुबुढ़ नथी।

आखा... छ! जबे आयु (सत्वस्तरु) ज्ञान वचरे समजे ने उचरे (प्रयोगमा मूढे?) आखा... छ! जेटली बाज जाम छे... लिङ्कू आधी जाम छे। अे एकमां स्थिती पूरी थयानो निधित
श्री निम्नसार गाथा ४५ – ४५८

राजेश ने आमने आमने आमने। हमें इतना आश्चर्य है। हमें इतना आश्चर्य है।

(अन्य वस्तु निर्देश से) “अतुल निर्वित करने, चैतन्यसामाय अनेक चैतन्यविशेषकार
“जनो प्रकाश है अयो निजधर्ममाय” –निज ध्रव अलें वस्तु। ध्रव अलें आ तमारा खेला
नई। निजधर्म वस्तु भक्तिवान, अशिष्ट-अशिष्टी अनानं्त अनेक शीर्ष छ। ‘छ’ तेनी
उच्चता यानि? ‘छ’ तेनी नाम शो? ‘छ’ तेना स्वभावनो अभाव शो? स्वभाव अंकर निति
पढ़ो। समाजुँ दुःख? जनो प्रकाश? –जनो दर्शन अने जान प्रकाश छ, अयो निजधर्ममाय
“सर्वं: स्थिति करो.” –दर्शन अने जान प्रकाशस्वरूप अयो भक्तिवान-आत्मा, अयो निजधर्मधर्ममाय स्थिति करो। प्रलु! तमारे मुक्त जोड़ती बोध तो त्या रेपर थाणो। प्रभावनी
भाव अने परममुक्तनो अभाव, अयो जो कर्वुँ होई तो आ करो। नदितर तो रहो। श्री,
रामो। समाजुँ दुःख?

आयुर्भीणी पने जूँ ते तेलती ज रखनो... जूँ! वाक उपाय करे तो दुःख? उपाय करे, तो
आयुष्य शिशुष्ण वर्ष गयू। –बधी जूँ काल। आयुष्य निर्वित छै तेलतु ज त्या रेखनी
योजना आत्मानी है।

खिसासा: तेलता भास अवानी बोध तेलता वे। धीमी वे तो पढ़रे पवन जने?

समाधन: अंे तोगी वाल। अंे बधी तोगी वाल। (अंे तू) लादीमां हैं दुःख। वहाँ वर्ष खेलनी, संतं १२८जनी वाल। (अंे दू) धूप कला। धीमी धीमी खाले। अंे में
पूर्ण हे शरीर तो नोरण छै तो अ केम अंे खाले छै। धीमी धीमी खालवारी भास बठु ने
लेखा पड़े तो आयुर्भीणी जान। (श्रीता:) उटटर बठु कड़े छ। (उतर:) उटटरो य भा
ग गर मारे। (श्रीता:) अराम लेखनु तो कड़े छै ने...? (उतर:) तो शु अराम अंकर छै हे
बढ़ार छै। हुदानी विकुँद छै ने... भाप। हुदानी बधी बढ़र छै, भाप। अंे जिंदगी
अम (निवृत्तमाय) कही।। प्रवृत्ती थोड़ी। पांच वर्ष-पत्रकारी असयत-पालवनमा दुस्सन चलावी
कटिं।। भस। पछी छोटी दीई बढ़ु। तेने फलस्वर वर्ष धाया। (अत्यन्त) दुस्सन भोटी खाले हे।
नीसपाणी खास पुपिया। अंे वर्ष नाजुकार लाखनी पेड़क। अमारा भागीदारनो
छोड़ करे। -पूर्णमाय य उपाय नथी। (श्रीता:) पेला वाणाल करे छ। तमे कड़े छै धूप।
(उतर:) पूर्णमाय... देशन बढ़ने भागी। अंे तो (कड़े छै श्ले) पूर्णमाय आवे हे अने
(श्ले) अंे मोड़ तो देशन बढ़ने हुवी थाए। आवा... जा। अंे पूर्णमाय जे ने सत्यकर करे,
अंे हुम मने। विकल्प छै, राज छै, विकार छ।

आखा... जा। अनेथी (पूर्णमायी) मित्र भक्तिवान-भक्तिवान पोतानुं स्वरूप हूँ।
निजधर्मलीड़ी ने...। -निजधर्ममाय सर्वतः ध्येय जातुँ-स्थिति करो। त्याे मुक्ति भणे। त्ये
अतिन्द्र आनंदनो वाल थे। अने अंत्य हुवी मुक्ति भणे। समाजों दुःख?

* Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री निध्वंससार श्लोक १९४ - २५१
तेम आत्मानी शांति प्रगट करने मस्त वह जाय चै। अनेन हृदयानी कांट परि नरी। आख्रे... खाति आनहित धार चै। अने आत्मनायाम भूत चै।
“गुरुप्रवी मिलियोना समुदायाभियुक्त चै”-वर्गवणात्मकामां अन्तर्गुण पडत्या चै। संपवभागे गुण अन्तर्गुण चै। वस्तु अक्ष. जीवी धारांत! जेम साकर अक्ष; पढ़ सहेड़ा, मैक्स, सनूपर्य आदि अनेनी शांति चै। अम वस्तु अक्ष; पढ़ धारां, धर्म अन्तर्गुण चै। आख्रे... खाति आनहित धारचै। अने गुरुप्रवी मिलियोना समुदायाभियुक्त चै।” जेनी हृद्मां गुरुणुक्त आत्माचै। अनेन, अनेनिगुण भागवणां आदेत, चै। अम कहीने शुं कहूँ? जुनी! गुरुप्रवी मिलियोना अर्शावित, अंदर्गुरुप्रवी मिलियोना अर्शावित, अंदर्गुरुप्रवी मिलियोना-धारां, अन्तर्गुण, सत्यसत्या, प्रमुंखां, कुद्रीत, करीत, क्षरी, संप्रभां, धारां, धारां, वीर्य अवानी अन्तर्गुरुप्रवी मिलियोना अंदर-पुस्तां चै। गुरुप्रवी मिलियोनी साधित चै। आख्रे... खाति आनहित धारचै।
“अने सर्व संक्योंची मुक्त चै” -पर्नी अक्षात्सुलिखी जे संक्य-विक्य धार चै (अंधी मुक्त चै)। अप्रवी व्याख्या चै हरी। संक्यांचा पर्नी अक्षात्सुलिखी विक्यांमा अस्थिरत। - अने अंधी मुक्त चै। ‘सातासार’ म्हो उपमा पाने (कणश-१०) आवे चै नेन। जान अने पर्नी अक्षात्सुलिखी, अंदर संक्यांत अस्थिरताच्या भावात अन्तर्गुणांती, अंदर विक्यें। हरेत्तीने अर्थ कर्त्या जहांने तो जीवीं पेंड। (सर्व) संक्य-विक्य धारचै। ‘हु आन्तर्गुण हुं’ अने विक्य पण जेने अंतर्गुण छूटी गयो चै। छूटी धारां चै ते करे चै। अने अतीत अन्तर्गुण अन्तर्गुण चै। आख्रे... खाति आनहित धारचै।
“तेनाचू मुक्तसुंदरीनाचे वध्य नाथ चै?” आख्रे... खाति आनहित धारचै। अनेन जुने आत्मा आन्तर्गुण, अन्तर्गुण मिलियोनी साधित चै; अनुं (जेने) धारण चै, धारण अने स्थिरता चै ते तो, मुक्तसुंदरी-सुंदरी-धारा, पूर्णानंदग्राहित धारा अं मुक्तसुंदरी, अं मुक्तसुंदरी-” (नो वध्य धारयो.).
पाखमा ‘स्त्री’ खुश चै नेन। “कथमृताद्वृतद्वृद्वारां न स्पर्ते।” वधू अंतर्गुणात्मका, (अवानी) अनेन मुक्ती जेने मृती ने धार्मने रस्माता जीवी गाय चै ते मुक्तसुंदरी सुंदरीनां वध्य देव न धारचै? आख्रे... खाति आनहित धारचै। मुक्तसुंदरी-सुंदरी-धारा, पूर्णानंदग्राहित धारा अं मुक्तसुंदरी, अं मुक्तसुंदरी-” (अं वध्य धारयो.).
पाखमा ‘वधू’ खुश चै नेन। “कथमृताद्वृतद्वृद्वारां न स्पर्ते।” वधू अंतर्गुणात्मका, (अवानी) अनेन मुक्ती जेने मृती ने धार्मने रस्माता जीवी गाय चै ते मुक्तसुंदरी सुंदरीनां वध्य देव न धारचै? आख्रे... खाति आनहित धारचै। मुक्तसुंदरी-सुंदरी-धारा, पूर्णानंदग्राहित धारा अं मुक्तसुंदरी, अं मुक्तसुंदरी-” (अं वध्य धारयो.).
“अने अंदर अंदर अंदर अंदर करत ्या जीवी खाति आनहित धारचै। अने हृदयानी कांट परि नरी। आख्रे... खाति आनहित धारचै।
“धर्मी जबे सबज तत्त्व ऊपर हृदि दीवी है तेने ते धीरीगतातातुं वर छ. धीरीगमूर्तिंधी धीरीगतां आचे छ. जेना दर्मां राज नथी पछ समतांधी लहें घर छ. तेना ऊपर हृदि देतां तेमांधी समता प्राप्त है. आतामां तो आंदकी धीरीगता अधी है. तेमां जेने नजर कडी है, तेने तो ते धीरीगतातातुं वर छ. तेमांधी तेने-सम्प्रजुहीसे समता प्राप्त है.”

-श्री ‘परमाजगमसार’ / ५२८
श्रीमद्वृजपतं भुद्युक्तायायदिव्यप्रसंगीत
श्री नियमसारः गाथा ८७
श्री पञ्चप्रभामर्गदाइवविवरण संस्कृत टीका

[ परमार्थ-प्रतिक्रिया अविकार ]

मोचूण सहभावं गृहसाहे जो दु साहु परिणमदि।
सो पदिकर्मण उच्चि पदिकर्मणो हवे जमहा। ८७।।

मुक्तवा शाक्ष्यानि नि:शाल्ये यस्तु साहुः परिणमित।
स प्रतिक्रियामुच्यते प्रतिक्रियामयो भवेद्वस्मात्। ८७।।

इह हि नि:शल्यभावपरिणतमहातपोधन एव निर्शयप्रतिक्रियाममुवरूप इत्युक्तः।

निश्चयतो नि:शल्यस्वरूपस्य परमात्मनस्तावद व्यवहारप्रयोगेन
कर्मकंकुत्त्वतात् निदानमायिनित्याशत्यात्मनं विद्यत इत्युपचारः। अत एव शल्यत्रयं
परिणय परमि:शल्यस्वरूपे तिष्ठति यो हि परम्योगी स निर्शयप्रतिक्रियाममुवरूप
इत्युक्ते, यसमात् स्वरूपगतवास्तवप्रतिक्रियाममस्त्येवति।

शुकराती अनुभाग

जे साहु छोड़ी शब्दं नि:शल्यभावे परिणमे,
ते प्रतिक्रिया केवलां छे प्रतिक्रियामयता कार्ये। ८७।।

अन्वयार्थ:— [ यः तु साहुः ] जे साहुः [ शल्यभावं ] शल्यभावं [ मुक्तवा ] छोड़ीसे
[ नि:शाल्ये ] नि:शल्यभावे [ परिणमितं ] परिणमे हे, [ सः ] ते ( साहुः ) [ प्रतिक्रियामम्बः ]
प्रति क्रिया [ उच्चि ] केवलां हे, [ यसमात् ] कार्ये हे ते [ प्रतिक्रियामय: भवेत् ]
प्रतिक्रियामये हे।

टीका:—अद्वैत नि:शल्यभावे परिषदं भवतापोधनं ज निर्शयप्रतिक्रियामस्वरूप केवले
हे।

प्रथम तो, निस्मयधी नि:शल्यस्वरूप परमात्माने, व्यवहारन्या जने कर्मपंक्ती
युक्तपणु शेषाने दीवे ( -व्यवहारन्या कर्मपंक्ती शेष साधे स्वरूपं शेषाने दीवे ) ‘तेने
निश्चय, मात्र अने मिल्यात्वं गज शल्यों वत्ते हे’ अभे उपायज्ञी केवलां हे। अभे
शेषाने ज गज शल्यों परिणामिने जे परम योगी परम नि:शल्य स्वरूपमां रठें हे तेने
निश्चयप्रतिक्रियामस्वरूप केवलां आश्रे हे, कार्ये हे तेने स्वरूपजतं ( -निश्चय साधे
संबंधपात्वं ) पावतीक प्रतिक्रिया हे जः।
श्री नियमसार गाथा ८७ - २८

पढ़ें तो अनेण हरिया दे ज़िल शाल्यकेले पयाकीमा वर्ष छ। ‘वर्ष है’ तेने छोड़त छ। अन्न शाल्यकेले परिपा? के-खे्। व्यक्तनेचे विकसक्षा ते-खे्। अन्न रात्रिया शाहा् वहा् वहा् कह। तरंग से तक्षक्षक, व्यक्तनेचे विकसक्षा अन्न ते-खेव नतुन निर्देश-पवित्र छे। पण अपने अन्न ज पोटे पोतानु सुव्र भूली अगे पयाकीमा मिथिया-वस्तु, भागमत, निजलक्ष, (अट) पयाकीमा परिखा वाहा है। समज छौं दक्ष? (शोता:) अपने अन्न भागमत वहा् वहा् कह। कय़पुँ अन्न दिर विन्याल है। (छेआ) "अन्न दक्ष वहा् वहा् कह। अन्न भागमत है। धर्मनी, कोर परीजायमा, पोतानी शेषी अविधा अने विशेषता न्याय भाषी नती। समज छे दक्ष? धर्मनी पोताना अन्नायान अन्नपुरुणा विशेषता-व्यक्तकरिक भास्म भास्म हे तेनी (तेने) कोर बाल वधार-शरीर सुंदर, धरी वभारी, कोरे हिंसणा भोटा बागवला-नी विस्मय-आध्यात्मक देखाती नती। अन्न दक्ष है। छत्रनामा छन्नामन वेहे तोपना समर्थीमा (तेनामा) आदर्शता-विश्वस्था दागाती नती।

(अन्नायाने) अने ज़िल शाहा् (वर्ष है) "अन्न उपवायरी के्वयाम छे।" -शु सेु? भजवानात्मा परमात्मकरुघ, नुें; अन्नाते अने ज़िल शाहा् नती। पण पयाक, भर्माना संगे-भर्माना संयुक्तप्रणाले कर्ते-नज़ील शाल्यले हे्। अने व्यक्तनेचे उपवायरी के्वयामामा आवे्। उपवायरी अंतरे द्रव्यमा नती पण पयाकिमा छे, माने उपवायर छे। समज छे दक्ष? व्यक्तनेचे कर्ते उपवायरी कर्ते अने ज़िल शाल्यले वर्ष है। वर्ष है (अर्थात्) अने अन्न ज़िल शाल्यमा वर्ष है। पयाकिमा ज़िल शाल्य (छे)। छात्यामा सुखदुः, पुण्या भावान कितुहुँदुः, पापिता परिशिक्षामा आनेन्-सुनुन् भास्म-अने धरी मिथिया-वस्तु; अने भावान ज़िल व्यक्तनेचे वर्ष है। (शोता:) उपवायर दर्शो अंतरे? (उतर:) अने पयाकिमा छे, अने ज़िल उपवायर। वस्तुमा नती अने पयाकिमा छे अने व्यक्त दर्शो ज़िल उपवायर दर्शो (अर्थात् छे)। पयाकिमा ज़िल शाल्यपुँ, अने अन्न-दक्ष-ज़िल-वस्तु तो निर्माताता है। निर्माता अंतरे दर्शो नती। पयाक उपालधिकृत पोतामा ज़िल शाल्यपुँ वर्ष है।

‘मन सय अने ज़िल मिथिया’ अंतरे दे ज़िल नती तेने होश पयाकिमा नती (-अने नती)। परम सय प्रत्युमा होश नती; पण अनेनी पयाकिमा होश नती-अंवु (वस्तु) सुव्र नती। जो होश न होश तो अने अद्वित आनेनबो अनुमान तोहे।

कहे कहे के: अने ज़िल शाल्यमा भावसहित वर्ष है। वर्ष है, अने कुंडु। कर्ने दहाने वर्ष है अने नती। पोटे पोताने भूलीने (अने), कर्नुं संयुक्तपुँ-संबंध छे.. वस! आका् बा् दिंद दिंद दिंद दिंद पण रागा अंशना भागिथी (भने) वाम वर्ष-अंवु जे मिथिया-शाल्य है, अने मा
राहू - प्रवचन नव-नौ: भाग-२

व्यवहारने अे छज वर्तम ५६. अंगे उपवारे कवेयामा आवे छ।

अङ पश्च वर्तम ५६, अंग गीतु नये... होश वैदित्यनी पवयिमा नथी, अंग नथी। तेम कर्ने बनणे (होश) छ, अंग (पश्च) नथी। तेम ते (होश) छ भाले ते निद्रयथि छ, अंग पश्च नथी। अथुदनिद्रयथि अंगे कवेयामा; पश्च अथुदनिद्रय अे व्यवहार ज छ। समाज छ छाँ? परमाज छ ते तो निद्रय्यथि छ। अहाल... छा! अहारे! होश छ तेमे पश्च वजगान-वज्य तो निद्रय्यथि छ। अंगे (होश) अंगाधि (वैदित्यनी पवयिमा) भाले अंगे अग्नाधि (दर्शि) भाले नथी। (श्रोता:) पवयिमा छ पश्च छोटी जय माते? (उत्तर:) छ, व्यवहार छ, तो छोटी जय छ। निद्रयथि जे (होश) अंगे सवावमा श्रेष्ठ तो छोटे नथी। (उमड़े) अे (होश) तो अंगे वस्तु?वध धर गयु।

अङ तो मूलिपतिया दशा निशावपपेदे वर्तम छ, अंगुन धर्मन छ। अंगे तेमे (मूलिने) सायुं प्रितकलण श्रेष्ठ छ। अं श्रेष्ठ पाछी बकयो छ। प्रितकलण छ ने...! व्यवहारे जे शल्य छ तेनाधि ते धर्मी व्यवहारे पाछी बकयो छ। त्यारे तेमे निशावपमण पवयिमा-अतीतिय आनंदनी वजनपपमण पवयिमापे-शाय छ। तेमे अडिया व्यय-निशावप प्रितकलण बढीने, प्रितकलणमय अे छय छ।-निशावपिमणसविभ ज अे छय छ।

“अंगे उपवारे श्रेष्ठ कवेयामा छ...” छै! “आम पुरीवाधी ज” अंगे (के) वस्तु?वध वैदित्यनी पवयिमामा तो, प्रवचनस्वड़पमा तो, अंग श्रेष्ठ माध्यमी अंकैव पश्च छ ज नथी; पश्च पवयिमा ज्ञान शर्च पश्च पर्याये वर्तम छ-अथि, ‘आम पुरीवाधी ज’ “ज्ञान शर्च परिवारक्रमे” (अर्थतः) छ तेमे छोटे ने ने...! वजगामाला प्रवचनस्वड़प, निशावपस्वड़प; अंग अधीन वह अने ज्ञान स्थिरता शाय छ त्यारे (अं) ज्ञान शर्च छोटी जय छ। अंगे ज्ञान शर्च नथी अने प्रायःधिन धरु, प्रितकलण धरु। “ज्ञान शर्च परिवारक्रमे”-अंगे ‘त्यागि’ श्रेष्ठ नथी दवः (पश्च) ‘परिवारक्रमे’ अंगे के समस्त प्रायः छोटे। अहाल... छा।

आनंदनी नाथ प्रजु अतीतिय अभूतत नागर! जेना स्वाध आगण छन्ताना छन्ताना (सेवा तरसा जेवा लाघे)। अन्हालोने स्वामी श्रेष्ठ अंगे अतीतिय छन्तानी-के (धारा) अा धारणा हःःःःः नथी, अंगे तो बहुते वर्ष छन्तांनी अभूत उठे। अंगा (छन्ताना) भोग पश्च शाने तुःः छुःःः आने जःःः जेवा लाघे। उमड़े तेमे अतीतिय आनंदनी स्वाध आगण अे विषमभोणः रागोने स्वाध जःःः जेवो हःःःःःःःःःः लाघे। तेमी तेमे आनंदनी स्वाधुपमामा रमाता रमाता अंगे शवनो त्याग धर जय छ।

निधानः: आकुमलीज्ञेने शल्य धरु ने?

समाधानः: आकुमलीने जरीक विकल्प धरो। विश्वास्वधाम नबनुता। राग जरी धोः-अंगे धरो धरी गयो धरो। विकल्प पसातो नकसो। जरीक (राग) त्याने (मूलिने) धरी जय छ। (मुनिक) छेड-सातमे, छेड-सातमे (गुणसेवाने) रक्षा ज जड़े। सातमे जय तोपणा (अश्वदन्तवश) पाला छेडः आसा दृष्ट। (विकल्प) पछ्वाने अंधर (श्रेष्ठामा) जडः शक्य नती। अंगे जरी राग राग गेलो; शय नती; राग। व्यवहारे कवेयामा अंग जरी-अंग रागामा अंगकटो के: हुः छेरनी जरीकामा देखो उः। अंगे भरतेने हःःःः जःःःःः धरे? अं जे विकल्प, तेमे छेर आपे त्यारे, रक्षा ज धर्मी। सातमे जय ने पाछा छेडः आवे, (पश्च) अं विकल्प असे नती। अहार... छा! अं जय अंगे अंतर - अंतरमा धितायीं (त्यारी) अं विकल्पनो नाश धर गयो अने विशेष-उद्ध निर्निर्देश आनंदनी।
रूट - प्रवचन नव-तित: भाग-र
अन्यों से भविष्य शब्दों के लिए ऐसा करें तो घर परर. त्यारे छूट निमित कहेंगा आप के छो.
अर्थातः कहे के, "इस शब्दों परिवारगीने" -समस्त प्रकारे छोरी ने, अन्य समस्त प्रकारे पूर्णान्त नातांत अवलंबन लाने, सर्व भारती भविष्यनां आश्रयमां आयाने.
'प्रवचन-सार' मां 'आसन' कहुं ने...! मुख्य आसन अरे छे. अरे आसनांत आत्मा भने छे. सम्प्रदाय-शान अरे अंदर आसन छे. त्यां तने आनंदेन धाम-भविष्यन मारे छे. जेम अरे मोटा मक्खाना जश्न तो तने धज्ञ त्यां वायु ते मुझे अम आ (आत्मा) ना आत्मन सम्प्रदाय-शान; त्यां जा तो तने भविष्यनात्मा मुहुः. आता... जा!
अरे नज़र शब्दों परिवारगीने “जे परम योगी” जुनो! आ योगी-योगी गुज़राने मुहुः शत्रूं पश्चि योगी-कङ्का छे. पोटे बेटियों निर्मित याङ्कने दृश्य साथ घोरे छे ते तेटबुं योगनु आधन-योगी छे. अने जे रागना साधने घोरे छे ते योगी धज्ञ, योगनो-विज्ञानो भोजन-भोजन प्राणी छे. अरे जेनी भोजन जुदी जात छे.
अर्थातः कहे के; “जे परम योगी”-अंके योगी शक्ति वापयो नसी. गेमें शोधे गुज़राने पश्चि योगी तो कङ्का छे. आपणे कहुं कङ्का ने...! मोखारी सीदांत बो अम सेवो. संस्कृतंत छे. मुहुः अंके योगी, हें योगी छे. अर्थातः तो समकाली शक्ति वापयो त्यारी तने योगनु जोड़ जवान सतत-तर कधु अंके तने योगी कहेंगा आयाने. अने मुनि तो परम योगी छे. शक्ति पायो छे ने...? आता... जा!
जेंगे माया, निमां अने मित्र-शायम छोयो छे. (श्रेयसः) व्यवहारने वर्ति छे! (उत्तरः) वर्ति छे ने...! अथानी नेपालमां मित्र-शायम वर्ति छे. (अथानी) नेपालमां मित्र-शायम छे के नसी? वस्तुमा नसी. नेपालमां मित्र-शायम छे, निमां के (अने माया शल्य) छे; अने पर्यायमां छोरी, निर्मितः याङ्कने प्राक दे. -अने तो वात आसी गाय ने...! मित्र-शायम, निमां अने माया, अरे पर्यायमां वर्ति छे, अनी शल्यमां वर्ति छे; कर्ममां वर्ति छे अम नसी. (श्रेयसः) अरे मित्र-शायमी वात छे? (उत्तरः) ब. मित्र-शायमी वात छे. अरे मित्र-शायमी गाय त्यारे पश्चि मित्र-शायम वर्ति नसी; पल्ला अंदर अभारित रणासकिंद्र भेंज छे. पल्ला अंदर तो उद्धर वात अंके भेंजी नुमिनी (वात) देवी छे ने...! मुनि तो नाना शल्यशिष्ट अंके आनंदी दशा (वर्ति छे). आता... जा! गें तेला परिष्ठ अने उपसर्ग आवे तोपला तेमा अरे (नुमि) गणनाय नसी, अरे (तो) उद्धर आनंदम जोकस्त वात (छे), आनंदम स्वात लेवा अरे अंके व्यस्ती जय छे-जय आतिनिष्ठ आनंदो अंदर जगलो पायो छे!
शिरासः अपी वात कङ्का कङ्का तो (आत्मा) गयो उघा? अम के भविष्यात! कङ्का वाप्प्लाशक देवी छी: आत्मा आयो छे ने आयो छे! तो अरे वोयेल मुहुः जेंगे योगो-निर्मित आत्मा ते गयो उघा? अम अंके भाव करेला.
समाधानः गयो उघायो नसी! पल्ला तने भवन नसी अंके तेने हेंगावो नसी. आता... जा! अंदर भविष्यन पूर्णान्ती नल, धीयेल मुहुः जेंगे योगो पहयो छे!
अर्थातः कहे कहुं ने...! अरे अरे निशालशद्दुप परमाशाला छे. अना द्वृतिमां तो शुभ-शिव गंग नसी. आता... जा! द्रवु... द्रवु... द्रवुना द्रवुने धीयोत्मां लिहे जेंगे आत्माना अनुभव
श्री नियमसार गाथा 87 – 88

क्रांम्यं अनेन त्रां श्रवणशिष्ट ् त्या तथा अं परम योगी कृत्याय छ। ओला अन्यमतिना योगी बात कृत्याय, अने नहीं... हौ। आ तो स्वप्न परमान्त्यो नाथ-हीम, अतीनिधि आयान्तो तीम-हेंगलो, मा आत्मी स्मारां पद्यो हौ; अमां जेठे जोगाल जेठी हीतुषः -रागमां जे जोगार जंतुं ते छुटीने, स्वप्नमां जोगार जंतुं छ हौ अने ते पृष्ठ उपाये जंतुं छ-तेथि ते संतों परम योगी कृत्यामां आवे छ। आहा... हौ! आ संतों-नी स्वपनाहा दा!।

आहा... हौ! (आ खेल) मांर मांर निगोदकांडी नीकडी, अंकेनिन्द्रां नीकडी, बेहंदिन्द्र-बिनंद्रिन्द्र योंद्रिन्द्र-पंद्रिन्द्र, अमाथी मामला अर्थात पंद्रिन्द्रां भाषा थिः, आहा... हौ! (अति हुर्वलं छ, लाफळ! अहे,) अमां पुल सार्थकं, अमां उत्तम जंतुर्णों जुण मणु-आहा... हौ! अमां पुल वीतारणीणी वाणी मार्चार सामान्या मणुः, -आहा... हौ! (उत्तेजन हुर्वलं होइ छे). आहा... हौ! (कये) आवी हुर्वलं शीर्ष मणुः; अने लेगे लगाऑ उपारे कृत्यायः के-अने राजाभे मित्र भगवानस्वप्नी प्रस्तुती हस्त अने (अनो) अनुज्यत करो तो मनुष्यपणे लेगे लगाऑ कृत्यायः।

अरी कृत्यामां आवे छे के: (जे) परम योगी “परम निश्लव्यस्तुमां रटे हौ”-हों? पंकठां मित्रतां आदिमां वतातो ततो अने जेथारे त्यांशी छूटिने स्वप्नमां-आन्तमां आयो त्याचे निश्लव्यस्तुमां रटे हौ। पंकठां शल्यपणे रटवतो ततो। (अर्) वात पथावनी हौ। वस्तु तो (निहण) निश्लव्यस्तुः। भागमां छः।

थेतांद्रमां तिरुपुणो, पलिकमणां, उँदुः, बोळसा, नमोतुण्यां ओही सात पात आवे छः। अने पलिकमणां-सामाजिक करे छे ने संदाने घों? पलिकमणां आह ही दुः ज करवतो। आह ही बधा बेगा थाय, पलिकमणामों दरें। सांख्यों बधा। -धर्म तर गयो, ब्यो! आहा... हौ! अने अने घोळों (गोळेश) करतो। अने शुभमाव अने अमां पाणी धर्म मायो। (अर्) मित्रताशल्य घसुः।

अरीयां तो करे छे: (जे परम योगी परम) “निश्लव्यस्तुमां रटे हौ”-भाषा जेथी! अनाविभी मित्रताशल्यां रलें। को-अने मित्रतां, निदान अने काट (माया) ना भावने चही, शुभ कैतंश्यांना निश्लव्यस्तुमां परिष्माणे हौ, तने संत अने परम योगी अने प्रतिक्रियामय कृत्यामां आवे हौ। ते आत्मा प्रतिक्रियाशतु जं हौ। आहा... हौ! सम्बजाणुं दांधः।

“तेने निश्लव्यप्रतिक्रियाशतु कृत्यामां आवे हौ”-हों! जे परम योगी निश्लव्यस्तुमां रटे हौ। तेने सावृं प्रतिक्रियाशतु, सत्य प्रतिक्रियाशतु-परेंद्रे जेथांशी घसुः हौ ते कटो छे अने स्वप्नमां आयो छ ताके तेने सावृं प्रतिक्रियाशतु कृत्यामां आवे हौ। “हराण जे तेने स्वप्नकरण”-ओलो (जे) रजनो संबंध कतो ते छूटीने के स्वप्ननां संबंध थयो हौ। नै... स्वप्न सावे संबंध (अंते के) घोळे शायक ने अतिनिधि आयान्तों जुण प्रस्तुती सावे जेने संबंध थयो हौ। अनाविभी तो रजनो पृथु-पापनां भावनां सावे संबंध कतो अने ‘ते मारें हौ’ अने मातीने मित्रतामां करो। अमाथी छूडतो हौ! निश्लव्यस्तुमां निश्लव्यस्तुमां रटे हौ। “तेने स्वप्नकरण”-अने स्वप्नमां रटे हौ। घोळे स्वप्न सावे संबंध थयो हौ। रजनो संबंध छूटीने स्वप्ननां संबंध करो हौ। आहा... हौ।

ध्यान करलो तो अने आपरे हौ। सम्बजाणुः। पुला आराध्याचन अने रीक्ष्यान। अंद्र भाव कतो। धीरांना वजन परस्परे जलयो गयो। अने पोते अंकांतमां पद्यो विशार करतो कतो। अंकारे
Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

270 - प्रवचन नवनीत: भाग-२
कवाक सूरी विख्यातीसंगत: अंतरों बढ़ी मश्खूल वह गया, के आने माटे शुं करुं अने केम करुं?
वर्षों के वसौ गयो बजरमां. पोते दारे कोटों बागों अनेन तंत्रों बुझामां बेंका विख्यात दरता
अने कंक बनर नशी के अने वर्षों क्रिया गयो? जुगो! ध्यान करता आएह छे. बढ़ु मूलीने
ध्यान तो करता आएह छे. पण गिनूं! तो जेम ध्यान आम (गिनूं) आवर्ध छे अम आम
(सीं) करता आवर्ध छे.

आहा... बा! (परम योजनी) “निष्ठ स्वघ साधे संबंधवाणू”-अनाहिंतुं तो राहुँ
अने बिखर साधे संबंधवाणूयाने ध्यान भंं, अनेन्तिकृत भंं. अने ‘आ’ निष्ठस्वघ साधे
संबंधवाणू “वास्तविक प्रतिकृत्तां छे ज.” -परेजह तेने वास्तविक-यथार्थ प्रतिकृत्त श्वेताव्य छे.
आहा... बा!

अर्थी (संप्रदायां) तो सांजे जकने पटिकृत्त धूं अने वह राहुं (कर्त्य), य्यो! डूंड़
न समजे अर्थने. न समजे भावने. पटिकृत्त श्वेताव्य सरङ-सांजे ने पार करी. अरे, भाग़! प्रतिकृत्त तो
‘अने’ डूंड़ी. डूंड़ ने...! तेने वास्तविक प्रतिकृत्त छे ज. रागने छौँ. व्यङ्गने आर्थी, व्यङ्ग्यने आर्थी,
सिंध ध्यान छे तेने ज वास्तविक प्रतिकृत्त छे ज. आहा... बा! आवी
प्रतिकृत्तानी व्यङ्ग्या!

* 
[ अरे आ राज्यी गाढारी तीका पूर्ण करता तीकाकार मुनिरो ने स्कोक करे छे: ]
(अनुष्ठाम)
शल्यन्त्रण परित्यज्य निश:शल्ये परमालमनौ।
सिरिचा विहानसदा शुद्धमलामान्य भावयेतस्तुम्भ्। १९६।।
[स्कोर्ड:– ] गणि शल्यने परित्यज्याणि, निश:शल्य परमालमां स्थित रदी,
विहाने सदा शुद्ध आतमाने सुकृतपने भाववो। १९६।।

बढ़ु मूली धूम अने (अभ्यास) कयाे धूम अने विख्यात नहीं. अर्थांत तो “अल्प
शल्यने परित्यज्याणि”, (क्रीणे), “निश:शल्य परमालमां स्थित” (रके) तेने विख्यात क्रीणे,
(अभ्यास) करे छे. आहा... बा! अनवे धूं? के: पेटिया राहुं क्रोङ्ग-नीराणी आत्मा, निश:शल्य
परमालमां हे! अने निश:शल्य परमालमां स्थित “रदी विखाने”-दर्माणाने, शानीयांने “सदा
शुद्ध आतमाने”-तिखान भागवान परमालमां सुकृतपने [“सुकृतपने”] प्रगटपने “भाववो.”
आहा... बा! परियांना तेनी भावना करवी. पर्या तो पर्या छे जः पण प्रगटपने तेनी भावना
करवी. (अतेवा के:) अत्तिरिक्त आत्मान्तिक्षुपमां प्रगटपने ते आत्मानी भावना करवी. (अर्थांत)
परियांना आत्मानुपरिभाष तिन्दुं, अने प्रतिकृत्त कडेयांना आवर्ध छे.

चे ने...! आतमाने-शुद्ध आतमाने अनेवे तिखान, ते सदा. विखाने-दर्माणे जे सदा शुद्ध
आतमाने (प्रगटपने भाववो). सांज-सांवे प्रतिकृत्त करुं, अभ्यास नहीं (पणा) अर्थी तो करे
छे: सदा शुद्ध आतमाने भाववो. अने गोविरसे किवाक प्रतिकृत्त छे. आोल-मान्तिक्षुपमां सांजे-
सांवे प्रतिकृत्त करे ने...? आहा... बा! अर्थी तो करे छे: सदा. शानीय सदा शुद्ध आतमाने
प्रगटपने-प्रतिकृत्तपने भाववो.

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री नियमसार श्लोक ११६-११७ - २०१

आँख... भ्रमण के नाते ही तो भरी ने...! अशावय नथी, कर्म (श्रेय) व अन्य, पुरुषाधिकार मात्र बोझो पुरुषाधिकार माने छे. जजना कारारी पद कही अनेक निश्चय परमात्माकुमार करवे अंगा कोषी पुरुषाधिकार छे? अंगेणी अध्यायमिता, अंग व्यवहार थये.

'परमात्माधिकार' भी आये के ने...! अजनानी अध्यायमना व्यवहारणी पदा भिकार नथी. आँख... भ्रमण अध्याय अंगे: के: निःत्तम वस्तु छे अंग निश्चय, अनेक तत्व अहंकारी वीतरागी-निर्मितिकार अंग अध्यायमना व्यवहार छे अंगेणी व्यवहार ने. राजन्य अंगे तो मनुष्यव्यवहार, बौद्धव्यवहार, युद्धार्थव्यवहार छे. अंग ('व्रतशासन') गाथा-८काल कहु छे. अंग ही कहे छे.

(अजनानी) केवला विशेषणो वापर्य छे-जुगो ने...! निश्चय परमात्मायाय स्थित रत्री, शुद्ध शैतंयमन भवनाय अंगे नेऩ तत्री, बिचाने अंगेणी घनी, बानी अंगा स्तर-योगीसे उठाक (अंग शुद्ध अहामाने भावयो).

जेशो (श्रव्य) छोड़य छे, अंग (श्रव्य) तोपीसे उठाक अंदर छोड़ेणु ज पर्यु छे! (संज्ञायायलों) सांत-सवार परिक्षण केर अंगेर (द्वारा छः छोड़ेणु छे). अंग अंग श्रुतीमय छे, अंग अंगणु अर्ध छे: माने के 'मे धर्म अन्यो' (तो तो मिश्रव्यवहार छे).

"स्तुतिपो भावयें" - 'भावो' अंगेणी पयः धर्म प्राप्त पयःपणी (भावो). शिक्षितउपे तो भवनाय पृथिवी निश्चय छे; पदा पयःपण्या निश्चयपो भावयो, पश्चिमायुं, पश्चिमायुं, अंगुं नाम यथार्थ प्रियक्षण छे. अंगेण प्रियक्षण छे जं. आँख... भ्रमण के ने...! ११५ श्लोक थये.

(पुष्वी)
कषायकलिपिन्तं त्यजतु विचमुखेर्वावनम्
भव्यश्रमकारण स्मरशरागिनियं मुहः।
स्वभावस्यतं सुखे विषवाक्षादनासदितं
भज त्वमलिन्यं यतं प्रबलसंस्तेभीतितम्।। ११७।।

[श्लोकार्थे-] ई ईत! ई (विन्तं) भवश्चरणं दार्श अंगे वांतवार
कामदशि अनिद्धिदी दण्ड एव-एवा कामदशकलेश्वी रंगाचेला नित्ते तु अत्यंत छोड; ई (विन्तं)
विधिश्यते (-कर्मावस्थाने लीले) अप्राप्त एवा निर्मन व्यक्ताविषु तु अत्यंत संसारानी बोधिणी दुर्ली नवं जन. ११७।।

आँख... भ्रमण के ने...! आ तो मूर्धनी वात छे. "ई ईत!" अंग (अंगहयां) जरिथ थाथ छे ते नथी... नथी! स्तुतिपो जाता कर्मारे, तजन कर्मारे, वस्तु ओंदी छे तेई तने हस-शानमा रामनारे, तेई अजनानी यति कर्त्तुमा आवे छे. आँख... भ्रमण के ने...! ई ईत! "ई ईतं" अंगेणी अध्यायकार-विचारकार "भवश्चरणं दार्श छे." -ई (विन्तं) भवश्चरणं दार्श छे, स्तुतिपो नित्ते अंगे भवश्चरणं दार्श छे. आवे तो शुभ्रायुण्या नित्ते ई ईतं तोधणे तु संसार छे. अतने तेती तने अंगभावस्थक कहो छे. शुभ्रायुण्या शुभ्रायुण्या प्राप्त पश्चिमायुं (अर्धस्तु) आपस्यक्रो नथी. अवश्य अंग उछालत रासो कर दार्श छे तेती तने नथी.

ई ईत! ई विन्तं भवश्चरणं दार्श छे "अंगे वांतवार कामदशि अनिद्धिदी दण्ड
## आकार्य विषयक वित्तीय जानकारी

- http://www.AtmaDharma.com

## आवेदन

- rajesh@AtmaDharma.com
चता अगुरुभावं तिगुरुचरो हवेज हो साहू।
सो पदिकमणं उचइ पदिकमणमां हवे जम्हा।।
त्यक्ता अगुरुभावं त्रिगुरुसुलो भवेचं: साधुः।
स प्रतिक्रमणमुच्च्यते प्रतिक्रमणमयो भवेदस्मात्।।

त्रिगुरुसुपलक्षणपरमतपोधनस्य निश्चयचारित्राख्यानमेतत॥

य: परमतपशरमसारसरसिरहाकरचंदरचंडरशिरस्मात्तासन्नभयो मुनिर्वरः
बाह्यप्रपंचरूपमु अगुरुभावं त्यक्ता त्रिगुरुसुपहनिर्बल्परमसमाध्विलक्षणलक्षितम्
अत्यपूर्वमात्मानं ध्यायति, यस्मात् प्रतिक्रमणमयः परमसंयमी अतएव स च
निश्चयप्रतिक्रमणस्वरूपं भवतीति॥

गुजराती अनुवादः

के साधु छोड़ी अगुरुभाव त्रिगुरुसुपपणे रक्षे,
ते प्रतिक्रमण केवलाय छे प्रतिक्रमणभवता कार्ते।।

अन्वयार्थः-[यः साधुः] के साधुः [अगुरुभावं] अगुरुभावं [त्यक्ता]
तज्ज्ञे [त्रिगुरुसुपमु: भवेत्] त्रिगुरुसुप २४ मे, [सः] ते (साधुः) [प्रतिक्रमणम्]
प्रतिक्रमण् [उच्चाये] केवलाय छे, [यस्मात्] कार्ता के ते [प्रतिक्रमणमयः भवेत्]
प्रतिक्रमणाय छे।

टीका:-त्रिगुरुसुपपणः (-अष्ट गुसि वेदु गुस्मणः) हेतु लक्षणं छे अतः परम
tपोधनने निश्चयचारित्रेन शेषायुं आ ध्वनि छे।

परम तपश्रर्दार्यी सरोवरनमु क्रमसमृद्ध मात्र प्रचंद सूर्य समान अतेः के
जित-आस्मानमु मुनीश्वर बालक प्रसंघापुरुष अगुरुभावान्तजेन, त्रिगुरुसुप-निर्विकल्प-परमसमाधिलक्षणाय लक्षित जित-अपूर्व आत्माने ध्वनि छे, ते मुनीश्वर
प्रतिक्रमणाय परमसंयमी केवलाय ज निश्चयप्रतिक्रमणाय छे।
प्रवचन: तार. २३-२१५७८

(‘संयमरा’ गाथा ८८नी) टीका:- “निगुसि (गुसि) पणु (–श्रेष्ठ गुसि परे शुमपणु)।” (अदेते के:) मन, व्यथा अने त्यात कोर रसिने श्रेष्ठ गुसि (गुसि) (अर्थात्) अंतरमां गुस थवुं. आह्या... द्र! पापना भाविः तो पसी जळुं पण मन-व्यथा-व्यथामा हे व्यथाकार-समतोप-गुसिंग विकल्प-रा (छे) तेनाथि पसी जळुं, अंतर गुसि कर्विः. आ तो इयुदु वात छे. पण शारु (श्या) पडेत्या सम्पर्कसन्तर्थ पणा, अं शील (आम्मा) वैतन्ययन्यन्यक भजनामा-द्रिःस्त्री असे, ड्रॅक पण (सर्व) प्रकारना राजना भाविः पसी-शुद्ध आनंदस्यमा गुस थवुं (याध छे); तो अने प्रथम सम्यकवर्तन श्रव् छे. पण पशी पण मन, व्यथा, काया संबंधी राज-पापना, ड्रॅक गुस्चना विकल्पे तो श्रव् छे. परंतु मृतिः तो अं राजने छोड्दीने (विशेष ध्यानसम्पर्क था) छे.

अर्थी तो परमात्मा अम के छे द्र-अन्न तरत्य लक्ष करीष तो तने राग थरे. अडिढा उपांती बहशा? तुं अडिढा उपांती बहशा? राज आचे, श्रेष्ठ, पण अं पापनो-गुसि नो विकल्प छे अं सुररुप छे.

अर्थीया तो जने न्त्रु गुसि गुस थवुं छे (अर्थात्) मन, व्यथा अने त्यात करकर व्यथानी जे विकल्प छे, राज (छे), अनेनाधी छुट्टीने अंतर गुस थवुं छे. मृतिः वात छे ने...! साधु नुक्त्रु वात छे. अने पंतभावनत्तानां परित्याग छे अं पण छाट गुसि नथी; अगुसि छे.

भजनान्य (आम्मा) वैतन्ययन्यक, अडिढा आंरां आधि रानुळी भरेलो भजनान्य छे. आह्या... द्र! अने निरिकल्प कराने माण अं विकल्पन जत श्रव् श्रव् द्रे अशुम श्रव्-श्रव्य छुट्टीने, अंतरमां अडिराव थवुं अने गुसि कररामामा आचे छे. शुनारुपयोग अं अगुसि छे अनेनाधी छोड्दीने, अंतरमां शुनारुपयोग कररो (अं गुसि छे).

‘सम्यकवन्दी’ (विशुल) तुं (त्यांमा) श्रव् श्रव् हतुं ने...? (आचे!) अं तो (त्यां) बीजः अपेशाने कर्दे छे. अं बीजः अपेशा छे. पाप तो स्वस्ती कोर के परस्त्री कोर (अंतरमां छे). परस्त्री (सेवन) मा तो महापाप (छे). अने स्वस्तीमाय श्रव् श्रव्य अं निरिकल्पनी पाप तो अं निरिकल्पनी पाप छे अं पाप (छे). अनेनाधी पण छूटुं छे. (तो) अं (बोझ) करिणे छुट्टाय? (अम न कोर!) आवो भाष्य छे!

आह्या... द्र! अगधी बसिने अं वैतन्ययन्यक भजनान्य, पूर्णांनंदस्यम; अंतमां गुस थवुं छे. अं पदेला-सम्यकवर्तनमां पण भेंडी द्रेढ अने राज-वाणी द्रेढ छोडी, अमेदस्यम भजनान्य पूर्णांनंद प्रमुखां द्रेढ वाणविः त्यारे पण अदेलो तो अं श्रव्य-वाणी गुस थवुं छे; परस्त्री गुस थयो छे.

आह्या... द्र! अर्थीया तो अं प्रतिकर्षण अदेले आतिजनो अदिवारा छे. आतिजनो आतिजनो पेटालेमां प्रतिकर्षण, प्रतिपर्यवेदना, आलोचना, समाचार, विकित आदि अं बधा अनेनां बेड छे. पण अं बधा निरिकल्प-दीरा परीक्षणाना बेड छे. जुडा जुडा प्रकरणी पसंदुं पठे छे ने...? अं प्रकाररुं लक्ष दरकरे छोड्दी प्रतिकर्षण श्रव्, छोड्दी परिपर्यवेदना द्रव्य, छोड्दी समाचार, छोड्दी भाजित (कही).
श्री नियमसार गाथा 88 – 27

अंशियां कठे छे के: निश्चयसमपूण “अंकुं वकला छे अंथा परम तथोधने” आखा...

आखा... बहु दशा! मुनिदाशा! अं विना मुनित नाथी. शारिरिक मुक्ति छे. आरितानु करण सम्पूर्ण-शान श्रेय तो पहल आरित आने. अरे! भोगीस्वीना अवतारामां प्राणी कुणी छे. रांडार आंडारे पाने विसरा कुणी (छे).

अंशियां कठे छे: अंथा जे परम तथोधन. अं (मुनि) परम तथोधन छे. अंखे अमुतनो सागर उठयापू छे अं परम तथोधन छे. अंकी पाने तपस्यी वकल छे. आखा... बहु! अंकी पाने वैराग्य-निरिक्ष समाधि, राज विनानु निरिक्ष आरित, परम तपस्यी धन छे. आखा... बहु! अं (वां) करोड़ी-अनजीवीति श्रेय छत्र अं तो बहा रंका ने विज्ञान छे. (अंखे) वराह दछा छे. आखा... बहु! अं (पोतानु सूप) पर पालेय साखे (तेथी) मामा छे भाग्य छे. अंकी. अं आ (जे) तथोधन (मुनि) छे ते आरित छे. अंके तपस्यी धन-वकल अंक उपस्थपू छे. आखा... बहु! अंखे अतीतिरिक्ष अंथा स्वात्म, अंथा पुर अंकात थां, पर्यायमा-अवस्थामा अतीतिरिक्ष अंथानी भरती उठयापू माखे छे, तथा परम तथोधन बहु.

आतुर आंरित अंथा अं मुनिपूण! बहु अवतार छे ने... आखा... बहु! अंखे बहुमुष्यपूण पामी, दरवार दर्ष तो अंखुं ते दर्ष्युं. हुलियामां गधाय न गधाय अंथानी छंद वात (डिमत) नथी. पोते अंक भंकमारमां गधायो (अंथामा) बबुं आकी गयुं. (अं तो) परमांक-अनानु-शान्ति... शान्ति... शान्ति (मा इकी करे छे)

सायामां कठुं बजुं ने... “बेलिक्षण जयो जिन्देले घट, सीतुल विस्त बयो जिब बंदन.” आखा... बहु! परम सम्भारमां पप बेलिक्षण जयो जिन्देले घट’. सायामो विलिक बाबे तो शुम बेप्य [के पप (अशुम); छही सितितुमो तो तया पप नथी पप अं विलिक जे पुराद्ध शुम छे] तेनायी बेलिक्षण दुरारी, आखा... बहु! ‘बेलिक्षण जयो जिन्देले घट, सीतुल विस्त बयो जिब बंदन’ -बंदन जम शीतल (छे, तेम) अंथानी पर्यायमा शीतलता-शान्ति-अक्यावभा (टुप) शान्ति प्राणी. अं अंशियां तो (मुनिने) उब शान्ति प्राणी (छे) अंखे पर्यायप्रत्य विलिक छे तेनायी पप बसीने अंक (आत्मामा) गुसे थां, अंथा तथोधनो निश्चया आरितानु आ धथन छे.” अं प्रतिक्षणांशी बधा आरितना भेजे छे ने... सायाम आरित आंतुं आ धथन छे.

“परम तपस्याशारु परोङ्गाना कुमारमूर्ध माते” आखा... बहु! अतीतिरिक्ष अंथाकुं कुमार अंखे अंकायी पील्युं छे. आखा... बहु! परम तपस्याशारु-आनंदपू परोङ्गाना कुमारमूर्ध माते-अंथमी प्राण-विलिकसहितने माते “प्राणं सूर्य समान अथवा जे अतिज्ञानतलय मुनिलय” आखा... बहु! कठे छे के, परम अतीतिरिक्ष अंथाकुं परोङ्गाना, (अंथमा) जे कुमानो समूद्रुं छे तेने (माते) प्राणं सूर्य समान (अथवा जे) अतिज्ञानतलय, अर्थात् जमी संसार अंकों थां गयो छे, अतिनिक्त (बत्य), जमी निकट वद्या-योग्यता प्रास थां छे अंथवा मुनिलय “आस प्राणपुरुष अगुसळव तजुने” आखा... बहु! अं शुभमाव पप प्राणपुरुष अगुसळव छे.

आखा... बहु! करी जयां शुभमावी पप वान नथी तया वानी आ धपाना, भोगा, वासनाना पपः पप वान बान, निर्विकल्प बान ?? जनवीशां पुस्तक छे अंथमा अंकुं युष्मुं छे-संभोगथी समाधि बान छे! अरर... र! आ ते देयुं (वमाण)!! आ शुं दर्जनी बान र पप सेवता मुक्ति बान? पप करीने पपः निर्विकल्प बान? भोग कोने ने वासना न
रज्जु - प्रथम नवरीत: भाग-२
क्यों, तो क्याँ? ते भमें गाथा मार्ग (शेयर)? अरे! अेंषा (पानी पात) आ उपकारह-लाइडिक आर्थ गर्मियाँ (पृष्ठ) न शेयर!
अर्धः तो कड़े: जेने रागधी बिनथ, समक्षण थयू (अेंने) पृष्ठ क्याँ रंगवाल्मेकः विकल्प शेयर छे त्यारे अगुस्थ छे, अेंम कड़े छे. (ते) त्यारी जसीने अंडर शृंग थाय छे. (उमड़े) अें (पंथमकार्त्तादिनो) शुल्कारागो भाव पृष्ठ अंडर विकल्पार्टी छे. (अंतर) अन्तर्गतिंद्र आंतरनुं सरोकार, अेंना क्रमण समुद्र-हकळा पत्ता छे. अें अंतरपुण्यां विकल्प-अंडर आंतरनी क्रम अने अंतर शान्तनी क्रम बीलवानो-विकल्प-नो समुद्र, अेंवो छे मुनी, अें शृंग समान छे. जेम शृंग दिगे अने क्रमण बीले तेम अप आत्मानो (मुनिनो) क्या प्रथम-पृष्ठयार्थ छे अेनाती अंतरपुण्यां क्रमण पीौली जय छे.
आळो... दा! आपी अपूर्व वातु छे, भार! अें बालवी, क्यों व्यवहारी ने आनाथी ने आनाथी करोने (अंटले) बिन्याशलेखी भरी गयो.
अेंनो (अत्मानो) स्वभाव वैतनय भगवान! अेंना स्वभावांना जे अंतरच्छन्नबाबुळपी सरोकार; अेमुं जे अंतरपुण्यां क्रमण; अेंना समुंडने बीलवान माटे मुनिराज, वीतरागीशां, ते क्रमणने बीलये छे. आळो... दा! गुलाबनी काी जेम सूर्य दिगे ने गौली जय छे तेम अंतरपुण्यां क्रमसमुद्रूप गूळे ते, अंडर वीतरागीशां (प्रारं) करता गौली जय छे.
आळो... दा! आपी मार्ग छे! जेम जे व्यवसाय करता करता (निश्चय) थाय; रग करता करता निर्विकल्प थाय (तो); तेम वात कया रही?
(अर्धः कड़े छे:) “अेंषा (जें...) मुनिशार भाव प्रथमूर्व अगुस्मिन व्यक्त करणे”
आळो... दा! अर्टिऩा, सत्य सत्य, अर्टितथ्यसिद्धो भाव जे शृंग छे ए अगुस्मिन प्रपंछ छे. आळो... दा! अें (शुभभाव) भाव छे. अें अंतरस्तु नथी. पंथमबङ्तना भाव, रण मृणालणां भाव अें विकल्पी जय, भाव प्रपंछ छे. भाव प्रथमूर्व अगुस्मिन; अें अगुस्मिन तरण. (अर्धः) अें शुभभाव (माटे) पृष्ठ भाव, प्रपंछ अें अगुस्मिन, (अेंम) रण रण भाव पार्वत्य छे. मुनिने छ्छ (गुणस्थान) ने लाम्य आत्माशङ्क प्रारं छे; (पृष्ठ) अेंनी योग्यता प्रमाण, अेंनो (पंथमकार्त्तादिनो) शुभभाव शेयर छे छ्छात्रो अें भाव प्रपंछ (वृष) अगुस्मिन.
आळो... दा! आ अंदरनां कम नथी, भार! आ तो वीर्यां कम छे. अें कंट वाते वातां भाव अेंवुं नथी. अंदर भगवानगित्यात, पृष्ठी गीजों शान्तनां भास था पाली पृष्ठ जेटूली शुभविकालनी जय वर्त अें भड़ी आत्माबाबु छे, प्रपंछ छे, अगुस्मिन छे. (तो) अें अगुस्मिनार्थी अंदरमां जयाय, निर्विकल्प थाय? (अेंम नथी. पृष्ठ) अेंने छ्छीनी थाय! आवुं (वस्तुकृपूर्व) छै!!! अेंक गुण-गुणवे भनौ विकल्प पृष्ठ जय छां हुँच छे. आळो... दा! अंदर गुण-गुणवे बेक दरबो (अर्थत्) अबेमा भेक दरबो अें पृष्ठ अेंक विकल्प अपने हुँच छे. छे तो अें शृंग (भाव), पृष्ठ छे तो हुँच, छे तो भाल प्रपंछ. (तेनी) अंतरमां जयानां दार्शनां अें कार्य नथी. अेंने तरण अंतरमां जयाय छे. “तरण” दीवुं नेन!! भाल प्रथमूर्व अगुस्मिन-अगुस्मिनांना अें विशेषण: भाल ने प्रपंछ; (अेंने) -तरणे, “अगुस्मिन-निर्विकल्प-पृष्ठ-समाजविज्ञानी विकल्प”–गुणि ‘गुणशुमा’ (अर्थत्) मन, पयँथ, भाय तरणा विकल्पी छूटीने, (गुण पाल्मा जे) विकल्प-रग लतो तेने तरणे, छूटीने, निर्विकल्पसमाज-निर्विकल्प
श्री नियमसार गाथा ५८ – २७७
परमशांतिलक्षणी विविधत, परम शांतिना लक्षणी विविधत (आत्माने ध्याये छे.) आळ... दा!
(गुणिनो) शुभभवनाम भाव अन बाळ प्रपंडङ्गु अगुणिन-अशांति कर्ती, अन बाळ विद्वध बतो,
अन अशांति कर्ती. अने छौट्ठौ निर्दिष्कप-परमसामाजिकलक्षणी विविधत “अति अपूर्व आत्माने
ध्याये छे.” आळ... दा... दा!

सम्यकदलि (आत्माने) तो ध्याये छे. पर आ तो मूलि! अति अपूर्व आत्माने ध्याये
छे. आळ... दा! अंतर दीन बर गया छे. भगवाननां आनंदामां, आनंदमूर्धिकाम दीन
बर गया छे. जैनी नजरोमा अबेद वहने अंतर दीन ध्या छे. अने सायू प्रतिक्रमण अने
सायू आर्थिक खेय छे.

आयी धाऱ्य छे! पखेला जेंवूं छे अंगुं अंसू-स्वभावनु ब्राह तो करे. पोतानी कथनाथी
माने के आम (मोक्ष) धारी, अने व्यवसारी आम धारी, (देश खियारी) आम धारी. पण
(बरेवर तो) व्यवसायो अनवाह करने (मोक्ष) धारी; व्यवसायी न धार. गुमिपुणू अने तो
भाल प्राप्त अगुणि छे. अनाथी अंतरमा स्वर्तच-रणसतासुमाव धार. ? ( न ज धार ).
आळ... दा! भदू आकुं धाम छे. आ बधी भानी क्याब्याबतिनी अतमां वाल जय छे (तो)
अने अम क्हे छे के, क्याब्याबन अथांत छे तने छौट्ठौ स्वारमा करे छे तने शांतिना कमणो
भ्यं पीवी जय छे. आळ... दा! शांततुंगी सरोवर, बीतरागपुरी सरोवर, अंमा अनंतशुल्कपुरी
कमणो, अंमा, राजी भिन्न पहिये करे छे त्याेे ते अनंत कमणो बीवी जय छे. गुणो
विद्वान, पर्याप्तमा जय छे. तने अंगकाय आर्थिने प्रतिक्रमण निष्कासनी कडेबाय छे.

प्रश्न: अने भदू पण पखेलं अंसू दाहन शुं?

अनाधार: साहन ज अने छे. प्रख्यातीजी साहन न कहें? राजिय भिप्प पडीने अनुतुम (डरीयो)
अने ज साहन छे. भीवुं साहन (ज) नवी. ध्ययने वकडी अने विनिर्दिष्क सम्यक्षरण-
शान-आर्थिक प्राक्ट करबाॅ अन साहन (छे). सायय ओटेलो मोक्ष. अने मोक्षप्री साहनुं साहन अने
छे. आळ... दा! ‘नियमसार’ मातो अत अगण कहूँ छे: दे मूलि! तु क्याब्यार (आर्थिक) पाणी
न शेवे तोपणा श्राब्दां हेतुक करीश नवी के, अलानी (व्यवसायी) पण (निर्धार) धारी, अमे
श्राब्दा न दरिशा. श्राब्दा तो बरकार रांगेरे के राजी रक्त बांधने स्वार्मा अनुतुम करीने करुँ
अने ज ताँद असाध (पणूं) छे. श्राब्दां बाँधे बेरे पडे तो मिश्राइप पने अथानण छे. आळ... दा!
पांडूमो आरो कॉए छे माटे अंसू माहन एंटे व्यासु एंटे। नेते...? व्यासु क्हे के उचा करो के
खेय ते करो ते आ छे. आळ... दा! पूर्ण चैतनय अन्तपञ्जिकी कमाही बरेली प्रभु; अने
पिकावारा माटे, बीववारा माटे, राजी भिन्न पडीने अक्षय थुँ अने ज अननी बीववाराणी
कमणा अने डीक (अथीज) “अति अपूर्व आत्माने ध्याये छे.” अति अपूर्व (अथानि)
पूर्ण नबी ध्यान डेेंदुं-ध्यायेंदुं. अने अपूर्व भगवानआभाने ते ध्ययनमा बरने ध्ययो नवी. अने
राजने बबमा बरने राजना आवर्जामा पडे (छे) अने तो अनामानु साहन छे. (अने
आत्मसाधक नवी).

(अंगकाया क्हे छे:) आवा अपूर्व आत्माने ध्याये छे, “ते मूर्ति”– मुनिओमां उद्यय- 
प्रतिक्रमणपरमसंबंधी ध्यायेंदुं”–प्रति-साधक बसी गया छे राजगी, तनी अंतरा
अतिविम्य आनंदांमा रबी रखो छे. जेम भागामूल भर्यां खेय अने (तनी) सुगंध वे तम अने

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
रजस्तान - प्रवचन नवमीत: भाग-२
तो अनंत आनंदी सुगंधिमां दीन पड़े छ, अनेक साथु प्रतिक्षण अने चिराणे एक्ष छ.
आख्या! आपी आरितानी व्याख्या!! अनेक साधारण कडी नायकी अ तो भड़ो (सत्त्यागर्गो) विवेक छ. “परमसंयमी व्यवस्था ज”-अंगे छ ने...? त्रिगुमिकाम-निर्विकाम-परमसंयमी व्यवस्थाती व्यवस्था (अति आपूर्व अवलोन तयारे छ, ते) मुनिश्च विश्वतिक्षण अंगुल्मी व्यवस्था “ज निषेधप्रतिद्वंद्वबाहुछ.” -के (रवीन्द्र) रागश्री केन्द्र, स्वरूपमा स्वरत्वप्रदानी, सत्य प्रतिद्वंद्वबाहुछ ज अ ते. प्रतिक्षण करनार ने प्रतिक्षणाणी अंगे नही (झरू) अ तो प्रतिद्वंद्वबाहुछ बढ़ गयो छ. वृत्तान्ती अनंत शास्त्रधामों जनी दीनता (छ), (-के अंगे) गुम थयो छ, ते मुनिश्च विश्वतिक्षण बढ़ ज छे.
पढेलां अंगली तो झुँक उठा पाल! पश्चात अंगे ने पढेली दशानी वात देम प्राप्त थाम? अंगे खड़ी दशानी वात तो पढेला शुद्धमाव (अधिकार) मं डुरी गया. के: पवायमात्र नाशवान छे माते हेय छ. ध्या-हानो विकल्प मो हेय छ पश्चात शन्त-शाननी पर्याय प्रकटी छे ते पश्चात हेय छ. नय तत्त अली गयान ने...! "जीवाद्विधिहिंस इक्षियम्"-अवन्ती अंगे सत्यास संस्कर-निर्भरावारी पर्याय, अंगे समयनी राग ने पुत्रपवारी पर्याय (नाशवान छे). तैं तो केवलाहन (पश्चात नाथवंत झुँक छे. (ढंके) (केवलाहन) अंगे समय रहेतारुं (छे). अंगे शीत (आमा) तो अंगो ने अंगी अनादिकी पक्षी छे. आख्या! शैतंनां रनोधी भेदेलो भगवान अनादिकी अंगो ने अंगो रक्षो अंगो पड़े छ. अंगी अपेक्षे अंगे केवलाहन पश्चात नाशवान तत्त छे. सर्वोपरि-अविवाही तत्त तो झुँक छे.

*  
[ क्ये आ ८८मी गाधानी ठीक पूर्ण दर्तां ठीकार शुद्धवान श्लोक हदेछे: ]  
(हरिणी)
अथ तनुमना वाचाच्या त्यक्त्या सदा विकृल्मतु मुनि:
सहजपरायां गुस्ति संज्ञानुपुंजमयीमम्।
भज्जव परायां भव्यं: शुद्धालभावनय वाम मम
भवति विशारं शीलं तत्त्र त्रिगुमिकस्मय स्तम्। १९८।।
[श्लोकार्थ:- ] मन-वचन-कालयी विकृतिते सदा तजनाने, भव्य मुनि
सम्भवानां शुद्धमयी अ तेकजह रबु मुलिने शुद्धमावी भावना सावित
उद्देश्यानां बजाने. त्रिगुमित्व मेवा ते मुलिनु ते चारित्न निर्मित छे। ९९८।।

श्रेष्ठ अंगे हड़ हेय छ. लोग-संबोध दक्षामां जे अनाद आणे हेय छे ते आत्मा आनंदो अन्त छे. अंगली... प्रभु! (अंगे) हेय हेय! रागणु अंजर! अंगे तो निर्विकल्पमूत्रने था (भारी) नाखे. आख्या! ब्रह्म! अंगे हड़ हेय छे: पन्ने तो विध्वंस छे अंगे तो छिड़। पश्चात पुरुषो- 
णत्वत्तानिको, समिति, गुस्ति-व्यवहारपनो-विकल्प, अंगे पश्चात हेय; करणा हेय, अंगे पश्चात छिड़ छे। अंगे पश्चात अशांतिदृश छे, भार! तारी शानि तेनाथी भिन्न छे. आख्या...

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री निम्नमार्ग स्वीकृत नाॅक १९८ - २०८

क्र! अें (तूं तो) शालिनी सरेवर छे। वज्वावन (आल्मा) तो शालि-अध्यास्फुप- आर्जस्फुप (छे)। लें ज्यालस्फुप आल्मा, अें अें अर्जित-अध्यास्फुप आल्मा (छे)। अें (अर्जित) तो शालि... शालि... अध्यास्फुपवाली बरेली (अें) पूर्ण शालि छे। अें शालिनी पामवा गारे “मन-वन-दयानी विद्वृत्तिने सदा तज” (दे)। रंगे मारे मननो विकल्प रिखे अें छो! 

“मन-वन-दयानी विद्वृत्ति” अें तरकनु पल्ला, अें ज विद्वृत्ति छे, अेंने सदा त्त्व डारे (अटने मे) सदाय छोड़ डारने “बत्तु मुनि” अें बत्तु मुनि छे। अें मोह जताने वाक्य धर गयो छे। जयां प्रमाणवाली प्रास, अतीतिम्य आनंदना कहाला बत्तु छे, अें मूर्थ बत्तु छे। 

बत्तु मुनि “सम्ज्यानना पुरुषभी आ सदय परम सुझने” रेतुअ परदगा तो ‘गुसिः’ विशेषाणला वजादूः-सम्ज्यानना पुरुषभी आ सदय परम सुझने। आला... छ! अें शालनो पुज हप्रु; पढ़ अेंओ अठार धया अें पढ़ शालनो पुज छे, (अेंमो) कढ़े छे। जेमो शालनो पुज हप्रु छे, अेंवि ज पर्यायऽ मो शालनो पुज जेनः-राग्यी हत्त तुः-प्रणाल हवो छे। आला... छ! बत्तु मुनि (अें) सम्ज्यानना पुरुषभी आ सदय परम गुसी ‘पुरुषभी’ छो-तोयुः। सम्ज्याननो पुज तो प्रणाल हवो; पढ़ अेंओ दीन धया अें सम्ज्याननो पुज छे, (अेंमो) कढ़े छे। अेंने अें शालिनी कालो प्रणाल हवो छे। रवा (गोवणी बाबी) ने दूर्द (ना घरण) अरे अने फारो घोड़े; अेंमो वज्वावन (आल्मा) आनंदनो रवो छे अेंमो अठार धया छे त्यांरे (अेंमोवी) अतीतिम्य आनंदजर रवे छे, अें पढ़ शालनो पुज हप्रु, (अेंमो) कढ़े छे। जेमो जामो मणिंदक हत्त तुः; अें राग्यी भालले ज्यालस्फुपमा अठार धया, अें अठारता पढ़ शालनो पुज छे। कढ़े छे दे: पर्यायऽ मो शालनो पुज, अेंनी रमतु आवी! आला... छ! सम्ज्याणु धर? आवी बाबा!! आ बलु जुड़ी जतनुः (विशेषन)!

(‘सम्ज्यार’) आवीपा आधामा कहुः छे ने...! के ववारत्रो (उपदेश हर शाय छे। तो त्या (लेटलाक बोड़े अें जहोनी) पकड़ा मे जुः-ववारत्री परमार्थ श्वायें छे के नरी! अे ते दी’ अर्थि कहुः बलु ने...। लीलीपाया विद्वाला, २०००मा मंडिर हतुः बलु त्यां त्यां आवी कता त्यां अते अते बलुः के, जुः! आवी (‘सम्ज्यार’ मां) कहुः छे के-ववारत्री परमर्थने समजवाव हवा! पढ़ श्रमजवाव छे अें तो एवही समजवा छे; पढ़ ववारत्री हीबत धया छे अमुः आवी? अनेनी श्रंक वेदानती तत्री। जननी श्रंक! -जेन डोइ संप्रेक्षण नथरी। “जो तज अंतर जिन बसे, जो तज अंतर जैन.” राग्यी अठारा तोड़ीने, वज्वावनमा-विद्वानिग्युप्ती वज्वावनआलमा अठारा धयी ते जेन छे। अे (जिनना अठारे) जैन वड़ गयो। जिनस्फुपी भज्वावनने आडाहो त्या जैन धयो। जागने अञ्चलो ब्रो त्या सुझी अठार धयो। अें सालबादः लवट्टु छे के: अर्थीयां (सोगामा) बढ़ा भोजा छे, तेबिय बढ़ा धर छाँ? अर्थी राम्यलाञ्च भोजा ढरी? बेन (रोजन्त्री बांबांवेन) हजारा आल्मा भोजा ढरी अटने धर वाहता ढड़ी अमृ?

क्वार! भाग्य तो आवी हछे, भापु! सत्य अने सत्यवस्तुने लिखी राब्य। श्रावाम परागर न दर। (विष्णुक्षारित्र) पाणी न शक्य मारा अनेनारी (ववारत्री) धया अमु न दर। श्रावाम जो देर धयो तो मिथ्याहृत् हतुः, मूढ़ छे। अेंने संसारनो मोटो गर्व पह्लो छे। मिथ्यामो अनंत संसारनो गर्व पह्लो छे। आला... छ! अरे! क्वाँ जरी? क्वां जरी? क्वां जरी? क्वां जरी? उपां योरांविना अवतार... क्वांव
मैं न कह सकता हूँ कि इस में कौन सी गलतियाँ हैं। कृपया राजेश से संपर्क करें rajesh@AtmaDharma.com
श्री निम्नसार श्लोक १११ – २८१
शान-शारिर) नी करी अटेरे द्विनी भक्ति अभाष्य वेद (गा.) (तो कहूं) आनी भक्ति करो. रागनी जे भक्ति करे छ अरे हठाले आनी करो अटेरे द्विः उपर दिशा (अर्धांत) अभाष्य विशेष आश्रय (यथा.) अरे! आवी पातु।! मार्ग तो डीअरे अभाष्य रहे, बापु! आा... श्रो!

वीतरागस्वरूप परमात्मा; मर्मा शानना पुंजयी गुसि, –आ पर्ववन है! अने शुद्धमानी भावना, अनाथी भगवानने भजो! आा... श्रो! निः भगवानने भजो! शुद्धमाने अटेरे निःशान्ता। भजो-भजन अन पयार छे।

“निःशुद्धम अवाया ते मूनिनुं ते शारिर निम्नन छे।” ते बदेया शारिर भोले छे पढ़। द्रव राग छे (माटे) ते मलिन छे, अव भद्दे छे। सराण शारिर छ। शारिर तो छे; (ते) अटेरे भाज (छे) अटेरे तो वीतराग पढ़े। पढ़ा द्रव रागनो ब्राह्मण छे तेथे तेने वीतरागी शारिर जे घोड़े ते नरी। “निःशुद्धम अवाया ते मूनिनुं ते शारिर निम्नन छे।” मन्वी पढ़ा विकरे छरी हो अंगरे जे ते मूनिनुं शारिर निम्नन छे।

आा... श्रो! अकड़ द्वारकां द्वारक भाभा अने द्वारक जीवी जीवी वात। बापु! आ तो जन्म-मर्यादित भवानो मार्ग (छे)। द्वारकां विषय विन्द्र वात आवे। या अटेरे रहे? याहां अटेरे या राजवनां के: ‘वस्तुतस्वरूप पूर्ण छे तेना तरकानी स्थिरता करवी’ –अटेरे या राजवृं। पढ़ी अना विशेष मरे तेत्ती आयो (ते सङ्क्षण य आमाना विषय छे।)

आा... श्रो! ‘उद्दलप्पो भजो’ अभाष्य ने...! (श्लोकम जीवी पढ़ू) छे: “भजतु परमां भवा:” परम परम परम परम (उद्दल भजन कर)। –मो २८ गाथा (पूरी) तरा।

( ... शेषांश पृ. २८४)

“(सर्व तत्त्व) अंतर पाया विवा, कर्मना विवा, सर्व विवा विवा, रागना विवा विवा निरंतर सुवाम छे। सर्व तत्त्वमा सतत अत्यांसे दुःखम छे। भगवानाकामा चैतन्य प्रकाशतु पुरे छ। अहानी आवी मधिमावत शीलजो मधिमा वाचीने अंतर। विततो नधी ने भडारनी शीलमा अटवाँ गयो छे।”

-श्री ‘परमागमसार’ / पर.8.

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
“मुनिराज कहे छे, ए अमे आने संसारकिंनत भायोमां नथी। ले–पुज–पेसो–
दंधी छोड़ो माटे संसार छोड़ो छे अमे नथी।
पर्यायमा जे संसारकिंनत सुष–दुःखाड़ि बाज
तेनाथी हूर नात तेना संसार छोड़ो छे। जे बीज
प्रत्यक्ष छे, प्रगट छे, मोक्ष छे; जेनु असिअता
पर्यायमा नथी अने द्वृवां जेनु आस्तात। छे;
तेमां जे निष्ठु (श्रद्धालू) नथी ते आत्मानी
अष्ट शेवाली बविसाता छे।”

-श्री ‘परमाज्ञामसार’ / परम.
श्रीमद्भगवतःकुकुटनाथयात्मवैदिकपूज्यत
श्री नियमसारः गाथा ८८
श्री पवित्रभद्राधिश्वनिश्चित संस्कृत टिका
[ परमार्थ-प्रतिक्रमण अधिकार ]

मोतूण अहरूद्द ज्ञान जो झादि धम्मसुक्का वा।
सो पालिकमण उत्चह जिनवरणिदिनदुसुक्तेसु।।८९।।
मुक्तवार्तीर्द्रे ध्यानं यो ध्यायति धर्मशुलक वा।
स प्रतिक्रमणमुच्यते जिनवरनिदिनसूक्तेः।।८९।।

ध्यानिविकलयवर्तुःबायानमेतत्।
स्वदेश्यागतः क्र्यनाशातः मित्रजनविदेशमग्नात् कमनीयकामनीचिकित्वोगात्
अनिष्टंयोगात् समुपजातमार्थयानम्, चौरजाराशात्रजनवधंधवननबन्धबद्धेवाजनित-
रीढा ध्यानं च, एटदिक्षतः अपरिमितस्वर्गवर्जवयतिष्कं संसारं:खूमूलतासि-रविक्षेषण
त्यक्या, स्वर्गपितानं-सीमसुखभुसुरस्वामालक्षिति-निश्चित्यपरस्मयमेयानम्,
ध्यानिध्यविधिकलयित्वहितान्तुपुखाकारकसङ्करकणग्रामातीतिनिमिन्दपरम्परकलासनाथी
नक्षत्रशुक्लेयानं च ध्यात्वा यः परमभावावनारिणिः: भव्यवरुप्तिरीकः
निश्चित्यप्रतिक्रमण-स्वरुपः भवति, परमजिज्ञेयन्वदार्चित-विनिगतित्वायुः विदितमिति।
ध्यानेषु च चतुर्द्व हेयमायं ध्यानिकित्यं, त्रित्यं तावुद्यादेयं, सर्वदोपातेः च चतुर्थिमिति।

शुक्लाती अनुवादः

तस्त आर्त तें ज रोहङ्गे, ध्यावे धर्माने, शुकलने,
ते प्रतिक्रमण कर्यां छे जिनजरक्षित सूत्रो विशेष्य ८८।

अ-वार्तः-[वः] जे (शः) [आर्तीष्ट्र] ध्यानं] आर्त अने शैव ध्यानं [मुक्ता]
छोिने [धर्मशुलक वा] धर्म अथवा शृदुष्ट ध्यानाने [ध्ययति] ध्यावे, [सः] तें (शः)
[जिनवरनिदिनसूक्तेः] जिनजरक्षित सूत्रो म [प्रतिक्रमण] प्रतिक्रमण [उच्चाते] कर्यां छे।

दीक्षा: आ, ध्यानना बेदोना स्वरुपाः ध्यानं कर्षणे ।।

(१) स्वपेन्द्रा त्याज्ञाथि, क्र्यना नानाथि, मित्रजनना विदेशगमनति, कमनीय (धृतृ,
सुनिक) अमीनीय विपरौशार्थ अथवा अपरिमित संस्कृति विगतं के आर्तिन्यानं, तथा (२)
श्रेष्ठार्षाणानमात्रं वध-वधन साधनी मझ वेदी विगतं के ईशविनानं, तें अने ध्याने
स्वर्ग अने मोक्षर अपरिमित सूक्ष्मी त्यं तें आर्तिन्यानं संसरं:पनाः मूलाः ज्ञाना दीक्षा दीक्षा
(स्वर्था) छोिने, (३) स्वर्ग अने मोक्षर निशिम के बेदकः सुरमुः मूलाः अेक्कुः के
स्वामित्वतः निश्चित परममद्ययानं, तथा (४) ध्यान ते ध्येयना विपविविक्षा रन्दीत,
* अतुथिनकार, (१) (-अतुथु जेने आदार अधानां स्वर्ग छे अेक्कुः) विनति
ईंछिनारणा समुखती अति (ःसंस्कृत वर्जिततत) अने तिरष्ट परम तकः सकित अेक्कुः के
निश्चित सूक्ष्मलकान, तेंमें ध्यावने, जे भव्यवरुप्ती नाथम (नाथम) परममद्यः
(पारिशालिक) भावानुसः परिष्कायो छे, ते निश्चित प्रतिक्रमतः स्वर्ग छे-अेक अंश
जिनेन्त्रा मुहाराजिकृती नीकजतो वर्जितता श्लोकाः कहुः।।

आर ध्यानो मोहिन्या वे ध्यान हेय्छे, नीति प्रथम तो उपेक्षा हेय छे अने ओहुः सर्वाधिक उपेक्षा हेय छे।
জিৎকথা বঙ্গবন্ধু জিন্দগীর নাথ ওঃ কি সূর্য কিছু অন্য আপ কি কথা বলুয়া নয়। স্বাক্ষরিত আমের প্রথমতান্ত্রিক নাম শাহিদ অনে তেমনি নাম প্রতিক্রিয়া ছিল। অমে জিৎকথা বঙ্গবন্ধু করেনা আজকামান্ত্রিক ও তা কিছু ছিল। (তঃ কেন কিছু ছিল তো যুক্তি ছে তে ক্যাম করো? —যে তো আজকা লাইক ছিল যুক্তির ছে তে আজকা লাইক ছিল; আলবা লাইক নদী। অন্য কিছু আলবা লাইকা তো ‘ঝামানি বঙ্গবন্ধু অন্তর কিছু অর্থ শ্রেষ্ঠ থাকে’, অমে জিৎকথা অন্তর্মান্ত্রিক ও যুক্তির মান আলু ছিল।

ল্যান্ড অমে আলু ‘যুক্তি’। (সমস্তার’ গাথা-১৯৫২ মাতে আথেল) “আপেসসনত্মজ্ঞান” এক পর্যন্ত জৈন মুনি) করো ছিল কে আপেনা অল্প অন্তর কোরো। পাড় আলু। ‘আপেসসনত্মজ্ঞান’ তো অর্থ অমে নদী। অন্য তো আর যুক্তির মান ল্যান্ড ছিল কে: আপেনা অল্প কোরো। ভাঙ্গান্ন নাতি কিছু অন্যের অর্থে-অন্যের তো ‘জ্ঞানশাস্ত্র’ ছিল। —অন্য বীরা নাতি কিছু অন্যের অর্থে বীরা যুক্তির ল্যান্ড তে কোরো নদী অন্যের (টিডাকার অল্পর্নে) কিছু সমস্তান্ত্রী নদী। এরে... এরে পাল্লা! অন্য (কিছু) করেনা জোড়া বলো যুক্তির মান ছিল যে পাল মূলী হীরী; যুক্তির ‘আ’ ছিল অন্যের জোড়া। (জলি) বীরা অল্প ছিল যে এনের তো যুক্তি। এখান... এর! এরে প্রস্তুত পালের কর্ণস্ত মাতে শাস্ত্র অর্থের কিছু করো করেনা করেন। অন্য নায়! ভালো পাল ‘আলু’ ছিল অন্যের জোড়া। (জলি) বীরা অল্প ছিল যে এক্ষেত্রে তো যুক্তির মান। এরে প্রস্তুত পালের কর্ণস্ত মাতে শাস্ত্র অর্থের কিছু করো করেনা করেন। অন্য নায়! ভালো পাল ‘আলু’ ছিল অন্যের জোড়া। (জলি) বীরা অল্প ছিল যে এক্ষেত্রে তো যুক্তির মান।

(‘ঝিংজীত’ পাশেন পূ. ২৮২ পর আপনারা আগল ছিল) অন্যের (গাথারা) অন্যের আলু জিজ্ঞাসার রিয়াদিদুষ্ঠেসু ‘জিজ্ঞাসারিবিষ্ট’ ‘জিজ্ঞাসারিবিষ্ট’ —জিজ্ঞাসা করো করেনা বলো। তারে ‘আপেসসনত্মজ্ঞান’ মানে আলু অল্পরে...! (বিষগলিতই অল্প অর্থ না কোরো।)

টি: ‘আলু ভিজনার বেলোনা স্বর্ণপুর কথন ছিল।’

“স্বীকারা ত্যাগী” বিজ্ঞাত আল্লাহরা। স্বীকারা বাল্যের জন্য নভী কুটুন, নভী কুটুনী অনে বেলো বাল্য জুরু-আর রঞ্জনা মাতে জুরু ছিল নে আল্লাহরা নে আল্লাহরা (বাল্যর্কেরা)। করেনা কুটুন কুটুনেরী মুক্তি বাল্য (আল্লাহরা জুরু ছিল)। পঞ্চাই তে ত্যাং মচাঙ থাক নে বেলী কুটুন মেঠুর থাক। (পঞ্চায় করেনা জুরু আল্লাহরা। মেঠুর কিছু বাল্য এক্ষেত্র অল্লাহরা... একে একে একে জুরু বাল্য করা তে) আল্লাহরা (ছিল) অল্পরে।! অল্পরে! একে ভিজনার বেলোনা মানে একে শ্রেষ্ঠ থাক তে (তে) আল্লাহরা (ছিল)।
श्री नियमसार गाथा ८८ - २८

“व्रण मानी” आर्त्थिक थाय. अं पैसो... अं पैसो... अं पैसो घटी जाय के नाश थाय (तो) अं चिता वधने अंदर. आपने आटला केडेवालाने न करे व्यभिचार घटी गळ-अं चिता. अं आर्त्थिक.

अंने छोटीने करे केडेवुं छे के आर्त्थिक छोटीने आत्मानु व्याख्यान कर! कर्णे के अं (आर्त्थिक) तो कर्णे छे, (अंब) कर्णे छे.

“मिन्नाना विषेशमणकी”-कर्णे कर्ण जाय, संग-वाला-हुल्लीगो (कर्ण जाय अंने आ) अं धेमां अंकां रेतो थोय, अंप्रांथी अंने आर्त्थिक थाय. अंदरे! कर्णे म्होळे! (अंमोळ) आणेला वत्तनी वाण कोटी छे (पाप) बसे तो अंरोपणांना ने क्वाकां वडी ज्ञाने छे. आंधेक छ क्वाकां मुळी ज्ञाने! (उत्तर) पाप छ क्वाक अंकां थोय तेमांढी अंने कुटक थुळ थोय... थोय! थोय! कर्णे न म्होळे...? अं आर्त्थिक छे.

“कर्मनीय कामीनी विविधागी”-वाळी-सुंदरी सली जें कर्मनीय अंटवे उपाणी (थोय) अं मरी जाय, अंमां अंधू क्वातु थोय सुङ ने क्वाना अंमां अंतो विविधाग थाय-मरी जाय, तो अंना विविधागी (आर्त्थिक दिशेने). (अंमोळ) छुट्टठाय ल्यो, अं पाप विविध? (उत्तर) छुट्टठाय ने पाती शुळ करे? बाह्यने पालवतं ने थोय तो छुट्टठाय करे. अंदमीने य न पालवतं थोय तो छुट्टठाय करे. गोटाणा वन्या थोय तो पाही ओरमां लट करे. कुळारे गोटाणा थोय पाही अंना लट करे. अं अंधू (आर्त्थिक छे).

“अथ अनिमण वीणेग हिन्भु (आर्त्थिक)”-प्रतिभाग संपोष, रोग आवे ने हुसन आवे, अंतो विप्रहुं आर्त्थिक. -अं आर्त्थिकानी व्याख्या करी. अंने छोटीने, स्वप्नगुं व्याख्यान कर्णे अंकम केडेवुं छे.

... विशेष कर्णे.

* * *

प्रबन्ध: ता. २८-२१८८

'नियमसार गाथा-८८. ध्याने प्रकार कर्णे छे. आर्त्थिकानी वाण आवी गळ. अंने: स्वर्गेशना व्याख्या मा आर्त्थिक. व्रण नाश, (अंरांत्र) लभीतो नाश थाय, अंप्रांथी थातु आर्त्थिक. भित्रनाना विकेशगभनी थातु पाप (अंत्र) ध्यान. कर्मनीय (छं अंने सुंदर) कामीनीविविधागी अथवा अनिमण वीणेग हिन्भु (आर्त्थिक) करे आर्त्थिक. -अंने आर्त्थिक-पापध्यान कर्णे छे. अंप्रांथी संसारान दुःसमां रक्षकव जाय. पापां अंकाता छे ने....! मासे ध्यान. आ रक्षकां ने आवी-पीवां ने अनुकूलांतांत अंकाता छे ने....! अं रक्ष-ध्याने छे. दुःऱ्र, ध्यानाना, ध्यानां (अंत्रा) रक्षां अंकाता वाण जाय छे के आम कुटकुं छे ने आम कुटकुं छे ने हुसन आम कुटकुं छे. अंने सा मित्रानी विविध वाण जाय, परदेश शाल्वा जाय, अं गरे वातावरण स्वास्थ्य से नहीं अंटले आर्त्थिक वाण जाय. अं आर्त्थिकानी व्याख्या करी.

बङ्के, रोद्ध्याना. अंध्य भुंडुं ध्याने छे. (२) “अंरांत्र (व्यविधी) -क्षेत्रां नंदन संबंधी”-अंकेच शोरी, अंकेच (पर) स्त्रीला भोजाडी, शस्त्रांत्यां वध (अंटले) शस्त्रांनून आवीने वध करे, बाल्ये बाबां, मारे (अंत्रा) (वध) -वधान संबंधी “भज्ञेस्वरी विपक्षुं (जे) रोद्ध्यान”
रत्न - प्रवचन नव-नीति: भाग-2
आखा... शृ! आ योहानोको आवे ने...! पेलो (धर्मवाणी) सूतो कोष तेने पढेवा दहरेकी बाटो बाइंको अनेक पहल (कदेक) लाव मालनी हुंडी क्याँ छ तारी?
माथे बहिन रापने हिमा कोष. हुणो! आ तने बाघो छ्र पछ अबी बहिन जो... राख पारी तो...! अए वाङ्गटे अनेक अन्दरथि अनेक हस्त वच जय-रौद्रधामन। ब्रह्मचय! अनेक (चोरे) माती नापु के दु कुरु?
पछ साधन कीर्ते रे नहीं।आखा... शृ!
“ते बने ध्यानो स्वर्ग अने भोक्ता अपरिमित सुन्धरि”-जुलो: अटटी तो पूर्ण शुभ्रभाव भोक्तार्थमा होम छ। अपरिमित अर्थात वहृण सुन्धर छने ने...! सागरोपनु. सागरोपन: अद पल्टोपमा असंत्याता अज्ञ पर्व जय अने अधे अधे धार्मिको पल्टोपमनु अद सागरोपन. अधे अधे ३३-३३ सागर सार्वसिद्धना। अदीयो अपरिमित अटेले विदा आन्तुन सुन्धर। अने भोक्तुन अपरिमित सुन्धर-बेस भेदुः। मोक्तांतु सुन्धर वास्तविक हो। अने स्वर्गनु (सुन्धर)
अने राजनी मंडलीः कठ तरीके आवे अने ते तो पछ अन्युवात कर्ण। अर दिएक "प्रतििनश"-स्वर्ग अने भोक्ता अपरिमित सुन्धरि प्रतिहन "संसारातुनामूल बोदानार्थ लिंधि" आखा... शृ! आत्मध्यन अने रौद्रधामन (अने) संसारातुनामूल बोदन हो। “ते बनेरे निर्धारिको (सर्वत्र) छोडीने।”-अज्ञ तपाअि आ दिवशे रौद्रधामने छोडीने अने (उ) “स्वर्ग अने भोक्ता निःसीम सुपुर्ण मूल”अटेले अपरिमित-बेडेक (सुपुर्ण मूल) “अष्टु के स्वात्मातिरित निध्य (परम) धर्मध्यन।”-निध्यधरम-ध्यान तो भगवान आत्माना आधरमे धार्मम हु। अने जान तो प्रविष्क छ। पछ वयमा प्रवालित धर्मिेने जे रा रही जय छ। पूर्ण ध्यान नाथी तेधी रा रही छ; तेना जान तरिके स्वर्ग छ। अटेले अटटी भेद (स्वर्ग अने भोक्तानु) लिधि। आत्माना आधरे निध्यधरमध्यन अनेिे पूर्णता नाथी, अदी (जेटोला) आधर (आत्मानो) लिधि तेई तो पविष्किा (ते) मोक्तांटु दार्श। अने जेटोला अंदर भाक्तातहिन राजनाम बाँकी रहौ छे तेना जान तरिके स्वर्ग आवे छ। निध्य अने अव्यक्त भेद लिधि। स्वात्मातिरि हु ते निध्य छ। अने पूर्ण आधरमे निध्य तेई, अंदर रा उा, हुा, प्रत, भक्त आहिनो आवे छ अने जान तरिके अने (साधकन) स्वर्ग हु। समेधसिद्ध भनुष अलिट ज्ञेय (अने) अंदर उपासनातिस्त्रात अदटिता नाथी। तेनी तेनी अने अष्टु आधर छ। क्रयो जेटोला आधर छ अभेडी तो पतिष्किा हु। अने पूर्ण तो भोक्त ज छ। पछ अनी पधी रेतेलो (जे) शुभ्यान छे (ते) पूर्ण धर्मध्यन नाथी। धर्मध्यनाति पूर्णता तो शुभ्यामा धोल्ने हु। तेधी अने निःसीम सुपुर्णं लाक्ष स्वात्मातिरित निध्यधरमध्यन (छे)। कहे, (जे) उपासना: “ध्यम ने ध्येयना विविध विकल्पो रक्षित”-ध्येय-आत्मानु ध्यान दुः कु आवे जे भेक पदा छ विकार-राम, अनेक-विविधतो रक्षित-“ध्यान ने ध्येयना विविध विकल्पो रक्षित” “अंतिमध्यन”-अंतिमध्यन जेनु युक्त छे। अंतिमध्यन छे, अने देखेल। अोलामा (धर्मध्यनमा) ‘स्वात्मातिरि’ लिधि जो ना पछ त्या हु मूल अंतिमध्यन नकसदो। समझेल हार्द! आखा... शृ! भगवान परमानंद, बिपन्ध वतु, जिनस्तु, वीर राव परमाधिक आत्मा; अने आधर लिधि अदेकु त्या धर्मध्यन दुः। अने अभेडु छ त्या शुभ्यान (आवे) अने व्यक्ताधर्मध्यन; अनु पूर्ण स्वर्ग हु। अदी तो (जे) तहन्त ‘अंतिमध्यन’ दुः (अने) दुः धर्मध्यन तो अंतिमध्यनस्तु छे। (अभेड़) आत्मानो तहन-पूर्ण आधर लिधि हु। आखा... शृ! छे ने... नीचे (ईनतनोमा) -अंतिमध्यन (अटेला) अंतिमध्यन जेनु आधर अर्धित।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री नियमसार गाथा ८८ - ८९

स्वरुप है अंतः, अंतःस्वरुप है।
“सष्ठ छठिण्याना समूहाठी अतीत (सभी सातवीता)” -त्या तोष कह धर्म छठिण्यानु लक्ष नाथी. अतीतदिन आनंदना ध्यानमां कोष कठिण्यानु लक्ष कोषु नाथी. त्या शुल्कध्यानां अंतु अतीतदिन आनंदनु ध्यान है. आज... जाइ!

“अनेक निर्देश”-अंतु भेंट नाथी. धर्मध्यानां तो तोषे घरमाग पड़ी है, भेंट पड़े छ. स्वतः धर्महर छ तेंतो निर्देश छ अने जेटो राग है अंतें भेंट पड़े छ. आ (शुल्कध्यान) तो तहन निर्देश (छ).

“परम का सक्ति”-धर्मध्यानानें पे अंती परम का सक्ति (छ). शुल्कध्यान (अंती) स्वभावार्थवेंतिने विकासवाटे परम का छे. आज... जाइ!

“अंतों के निर्देश शुल्कध्यान, तेमने धार्मिक”-अंती तो ध्यानने धार्मिक दीघु है. ध्यानमां धर्म तो आजमा है. पड़ ध्यानने धार्मिक, अंती अंतों कहुं छे न...! याज ध्यान कहुं छे ने...? भे ध्यान (आर्न ने रीड) ने छेंटीने, भे ध्यान (धर्म ने शुल्क) ने ध्यानमां. आज... जाइ!

जिशासा: ध्यानने धावू. पड़ ध्यानना विश्वजने न धावू?

समाधित: अंती तो धर्मिकवां धेंधवां है: “सामान्यानामाज जो भट्टि” (नि. सा. गाथा-१३४) -बांधने तो ध्वनी है. पड़ अंती धर्मित के अंती वेंतिने विभाजित परम ध्यानहै. सम्भवनासंघार्थिनी (अंती) धर्मित के, अंती धेंधवां. समाधित छंड?

अंती कहुं नें...! धर्मध्यान (अंती शुल्कध्यान) ने धार्मिक, “जे व्यावसायिक (व्यवसायिक) परमवाणी (परिपेक्षितवाणी) वाणामणुजे परिपेक्षित छे”-धर्मध्यानमां कहुं परमवाणी पूःण भावना नहोंतिः तेच राग बंधू, ते स्वर्गीय करण (कहुं,). (पड़) अंतीयां तो परम (भाव) -परिपेक्षितवाणी (स्वरुप) आणो भगवान, पूःण शुल्क स्वभाव; अंती भावना (अर्थत) परमवाणी भावना (हुः परिपेक्षित है) . अंतिम कालिकी ने प्रयोगने ध्यानना ने लेने. तेसां ध्वनी है: (धर्म ने शुल्क) ध्यानने धावू. ध्यान तो कालिकी ने धार्मिकवां है. अंती कहुं ध्वनी है: परमपरिपेक्षितवाणी धार्मिक, भावना कहुं जें. पूःणमां सत्रुत आतमा, परमपरिपेक्षितवाणी, संबंध परिपेक्षित (अंती भावनामणुे परिपेक्षित है)।

‘पंजास्तिकाय’ संस्कृतीत आंटामा आिये है नें...! “परिपेक्षित भव: पारणामित:”-संस्कृतभिः धैन्य. अंती कहुं कर्मना तिरितीने अपेक्षा नती. तिरितीना अभावानी अपेक्षा नती. कारिक, श्योपसमां तो कहुं तिरितीना अभावानी अपेक्षा छे. अंतीयां रागना उठवनी अपेक्षा (छे). पड़ संबंध स्वूप परिपेक्षित ध्रुवाज है; तेमने तो तिरितीना अभावानी अपेक्षां ने तिरितीना सावेकताना भावनां अपेक्षा नती. आज... जाइ!

अंती के परमपरिपेक्षितस्वरुप, परमस्वरुपविभाव तिराकृती श्रूप; अंती भावना. अंती ते कारिक, श्योपशार्मिक आहें परिपेक्षित ध्रुवाज है; अंती भावना. परमस्वरुपविभाव भावना, अंती ते अंतीकृती अंती परिपेक्षित है, पर्याप्त है. परमपरिपेक्षितस्वरुप है अंत कहे, वस्तु छे. अंती भावना है ते पर्याप्त है. परमपरिपेक्षित, परमस्वरुप-अंत कहुं छे नें...! परमस्वरुप; अंती भावना. अंती भावा है. छाँं तो स्वप्त कहुं. परिपेक्षितवाणी अंती


Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
२८० - प्रवचन नव-सीत: भाग-२
प्राक्तन्यो है; अनेके जेने राज आये अनेके आरोप करने व्यक्तित्वत्त्व दवो। (परंतु) परमेश से व्यक्तित्वत्त्व वस्तु (साध्य) नदी। अने अर्जिताजी बुलाओ दरी नाप्नो। भावुक! अने व्यक्तित्वत्त्वनातो भाव स्वर्गनु आराध्य है, पुलमु आराध्य है, स्वर्ग मयो; समक्षित है न...! अनेके अने तो पुष्पमायं स्वर्ग मयो। अने अने बोधे-पौर्णमी (मुंगस्थानमां) पानमाय (पाल) आये, अने आर्तिक्या होय, वीरिक्या होय, विशिष्टीया पावना जड़ी अस्विता होय; धातु अने स्वर्गनु आयुष्य बंधानवरं है अनेके मनराधे शुभभाव आये त्यारा ज आयुष्य बंधावो। अने (अनुभुम शाने) बापिवर्णन आयुष्य नदी बंधावो। अने निधिन्यनु अने नामस्तु (पाल आयुष्य) नदी बंधावो। अने तो स्वर्गनु ज बंधावो। वैमानिको हेव धारी; हेवी नदी। अने अपेक्षा धातुकनु हठूँ छै। : जेने निष्क्रियामुर्जनेन-शान-वारिक छै, पाल धर्मणयु छै, अनेके देख प्रवृत्त आस्थाय है, अने परलो आश्वास्त-व्यवहार रक्षा गयो है, अ व्यक्तित्वनु जः स्वर्ग है। पाल अने सुप मे अ तो बेकड़ अने अपेक्षित है, अभु लडेवुँ छै। भाव हिसो छै ने... अने अपेक्षा। भारी परवरजे अने (सुन्दर जाँ) दु:डू है त्यां।

'प्रवचनसार' (गाढ़ा-शिवमां) दुः है ने... ["तो पुल दुः पापणी शेम, दुः मनु साधन है अभ शवित थयु।"] पाप अने पुलमायं काह केर मानतो हीसे अभ मनके कीणे के पापना कमामा नर्दरनु दु अने पुलमायं कमामां पाल त्यां रागरी दु:डू ज है। ज्यारे जेना कमामा हुँग है तो अो शुभभाव सारो अने अशुभभाव भरान ओऽवा बे भेद क्याथी आया? आखा... बः! (स्वर्गनु) जः दु:डू ज है। अभ्री तो जरी बीजा, नर्द ने निधिन्यनु हुँग करता जरीक शातावेंनीया आहिनु सुम है, अ भाषी-व्यवहारशी वात करी है। बाकी शुभभाव है अनुं जः स्वर्गनु सुम है, अ सुम भोजवानाना जरी तो अनो भाव पाप है। स्वर्गामा सुपृ तरक वात जर्दने के राज धारी है अ तो अशुभ-पाप है। कह कह अपेक्षाओं क्षेम, अने न समझे ने अकंत ताड़ (अभ न क्षेम)। अ तो प्रकृतो स्वाध्यमार्ग है।

आखा... बः! (अभ्री) छै ने... "परस्म (भावनी) पारिश्वाकेन्द्रीय भावनावरु विपक्ष्यो है।" वात धारी राणी है दे धर्मणयु आयी ने शुल्कद्वार आयी ने, अभ नहीं; अभ लड़े है। अ उपे दशा घर है। आनंदनो नाथ वजयनाथ, प्रलु अनंदिवज आनंदकुँवना आत्र मयो है, अवेले परिणत हर छै अवेले के पीलरीणीया, आनंदकुँवना परम्या प्राग्र घर है; ओऽवा जवने अधुरु धर्मणयु है, पृढ़ नहीं; तेथी अनो शुभभावना व्यवहारने (उवायरी) धर्मणयु गदीने अभ लीला है: धर्मणयुवी स्वर्ग अने मोहक सुप मयो (छै)। अने आफमा तो पाठी अदुन्दु लीला है स्वास्मारित निश्चित धर्मणयु। परावरित राज है अबो (तेनाथी) स्वर्गनु है अभ (स्वढ़) नदी दील है। पाल परावरितमायावी स्वर्ग है अ वात त्या गोङ राणी दीली। स्वास्मारित धाम्रामाती अनो भाग बाकी रक्षा घर है अ वात गोङ राणी। अने है अने स्वर्ग है। पाषमा अभ नदी लीलु-जुलो: "स्वर्ग अने मोक्षनानी निस्तीम सुवनु मृण स्वास्मारित निश्चित धर्मणयु।" स्वर्गनु पाल अर्ध (निश्चित धर्मणयु, अभ नदी)। (श्रोता:) अघे गरित वात पोडी दीली। (उनतः:) तो घ (शु) स्वातात्दमा अने स्वर्ग मयो? पाठी अभ्री अधुरु है अवेदन स्वास्मारित है, अवेले निधिन्यनु है छै, पाल अधुरु धर्मणयु है, शुल्कद्वारनी द्वार घड़ुँ नदी; माटे त्या राज देख है अनुं है अने स्वर्ग है। आखा... बः! पाल दोने? शे, जेने स्वास्मारित दशा बर्ब है अने। आखा... बः! Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री नियमसार गाथा ८८ – २८१
अधिवार वाहु हैं!
अर्थे! आ जगतरी संस्कृत बनाई। अत्यधिक अन्तर्विष्ट ने रीढ़ियानी कोश्चि छ। आ रथ्या ने दामाण ने आ दथा ने... आ बनी मोहु छ। राजवानी अभि संस्कृत बनाई। पैसा मच्छा, करौड़ दुर्दित रथ्या ने अर करौड़ दुर्दित रथ्या ने रांग करौड़ दुर्दित रथ्या अरादा दामाण। शून्य छ आ दहुँ? दामाण छ का पोट गर्छ छ। आकष्... बा। करो आको तो शुरुमाना लाक्ष्या, लापसी राखो, आज रांग लाप्ष पेडा रथ्या। शून्य छ आ? अन्तर्विष्ट ने रीढ़ियाने भाषा। भाषा। (शारणाम) आवे हैं: "बसीनुं पारंपार वित्तवन अन्तर्विष्ट हैं।" अजानही वापस। परिहार्रतृ उन वित्तवन अन्तर्विष्ट हैं। तोना जन तर्को तो संसारना हुण छ। त्यारे वही शुमानाना सुण है अम क्रूः।

'प्रवचनसार' भा: अम क्षुद्रु हैं: तेना (शुमानाना) क्षमा पछ्या (स्वैर्गम) दुहाँ ज छ। पूतिंधु। त्या तो अम क्षुद्र दुहाँ: शुमानाधी अशुमाना ज़ुड़ी कें पूछे? अशुभ ने शुभ ज़ुड़ी कें पूछे? बने अक ज़ट छ। कें अन्या क्षमामा पछ्या त्या दुहाँ ज छ। अकाक्ष आस्थी अने विस्तरणे भोगे छ, अहुँ दुहाँ, दुहाँ (भोगे छ। अने तमे बेंड पाइे के शुभमा आ जन अने अशुभमा आ (क्षमा)। अपना अक ज़ट ज़ना (दुहाँ ज छ।)। त्या अम क्षुद्रुः। अने बीजे आम क्षुद्रुः छ हैं, ज्या निर्देशन् आस्था छ त्या (अनो) विकलार अने परिपक्वा उद्धार छ। (अने अर्धिया क्षुद्रुः: धर्मावनामा) पूलिआस्था नाथी, तेही वामामा जाण आवे छो; तो अने विकलाराना राज आपो छ। अम गणने विकलार-दामान्याना स्वर्गा ने मोक्षामा जम छ। अम क्षुद्रुः छ। समाज़ू दांई आवा... द्दा। आ तो अधिकार आश्री तो गंगीर बढ़, भाषा?

"ते निश्चयप्रदेशप्रवृत्त प्रकृति हैं।" -त्या शुद्धाधी क्रृया। अक्षेंद्रो परम आश्री। भगवान-आस्था; जेनी परिवार-भावना दक्षमा जामी गाँण। जें बाल लक ज नाथी। दक्ष धर्मावनामा तो राज डाँड अंत्ये बाल लक डूं अथी अनें ज्या स्वर्गा क्षुद्र। अथी तो बाल लक (ज नाथी), अक्षेंद्र अन्तर्विष्टमा गुम धर गाझो छ। अथी निश्चयप्रदेशप्रवृत्त प्रकृति हैं।

"अम"-अपा जूगो पणी। बाणामा अम क्षुद्रुः: "जिज्ञासुणिहितस्वत्तृत्।" को आ अर्थ शु डूँ करे हैं: "अम" (अंते) आ धामनी व्याख्या क्रृया। अम "परम जिते-ज्ञाना पुण्यावियो धीरेन्द्रावना द्रव्यशुभमा क्षुद्रुः।"

आकष्... बा! भगवान सर्वत्रं वीरान वर्माना (वीराणो ज उपदेश आपे छ।) 'आत्मावली' भा: (गुरुअधियारमा) आपे छ ने...! ["वीराण वीराण जीवस्थ स्निज्जवरूपो वीराणा मुहुँड़ुः: गृहात्ति कथयति स पुरुष गृहात्ति स्थान भाषाति शोभते।"] मुनिया तो वीराणा ज उपदेश आपे छ। 'मुहुँड़ुः' अंते वार्षिक। अंते तो त्यात्माना आश्रथी-वीराणात्मा ज वार्षिक। परा क्षारतिकराणे ज्या भो प्या अवक्ष्यी तर्की तो वार्षिकतिकराणे जे वीराणाभव तर्की करे छ। आा... बा। (गुरु अनें क्रृया।)

तेही 'परमसत्कृप्त' भा: क्षुद्रुः ने...! के: जेने शुभराग उपाधि तर्की करे छ तेने भगवान आमा लेख तर्की करे। जेने आ दथा, दान, प्रति, वृति, आधिनो शुभमान आधिली अने उपाधि तर्की करे छ तेने भगवान-आमा लेख छ, अने आमा छाँदा लाक्ष बढ़ गाझो छ। आकष्... बा। जेने आमा उपाधि छ तेने राज लेख छ। चता राज आपे छ अम क्षुद्रुः के
Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
स्वप्न में मानस गा 28 – 283
श्री नित्यमात गाया २८ – २८३
विशद छ अने तेनो उभारुष छ-अहिं आमिर शुरुक ज छ ये जे ‘ज़’ छ. अने अहिं कारी नीड़े छ आे शंकाक ‘ज़’ छ. समाजुङ ज़ाङ प्रां. आल... जा! (‘शास्त्रीय’) जिनदेशजात... मा आले छ: “सो सत्तार शारदा तासु, भलेन उर आन; छठ मुखंगप्रायत्में, अहिं कड़ी भणान.” आल... जा! बनासीदासे जय सस लघु छ. ‘बनारसीविलास’ मा आले छ.
अर्जुनाः (“मुंगारविषीति”) कहु. (पताक प्राप्य) विरोध नदी! लोकने अवलोकाने आले अ शैलीधि यात काळ छ. समजुङ ज़ाङ?
बीज पता-“परम जिनेत्रता मुंगारविषीति.” ‘जिन’ तो योगे गुप्तसन्धान पता कटावाय छ. भारे गारसहर जिन कटावाय छ. आ तो ‘परम जिनें’ तेरि बृहिंदा, तेरिमु स्थिरो गुप्तसन्धा, अने मुंगारविषीति बोध ने... सिद्धे मुंगारविषीति जुङ छ? परमार्थत जिनेत्रिय, तरंज प्रलु; अनेना मुंगारविषी त्रज्ज-अर्जुनियत “नीकोलों द्रव्यत्तुत”. आल... जा! बीज भानों
के तो भगवाने देवलांब वर्ष्यें मा, श्रृंग ज़ वर्ष्यें छ. वाणीमा श्रृंगु ज़ वर्ष्यें छ.
अनेना वाणी श्रृंग वर्ष्यें. समजुङ ज़ाङ छे. केमने आमिराने मायरुत्तु (ते) निमित छे अनेना अर्जुन द्रव्यत वाणी ने कटावाय छे. भगवाने श्रृंग द्वारा उपेंद्र आयो, अम ‘ध्वनि’ मा आले छे. देवलांब उपेंद्र आयो, अम कहु नदी. देवलांब तो वस्तु छे. वाणीमा तो द्रव्यत आयुँ छे. अनेना वाणीमा मायरुत्ताने नीकोलों आ मत्स्यो छे; अम विनत द्वृंगु, ज्ञेयुँ!
अनेना, अनेना तीका अभिे करीमे हीने अ भा अभिे अमारी दलनाथी कीनी मा, अम कहुँ छे. अे केढ गारहरोरी अनेना तीकाने भाव बहुँ आले छे. अमे ते मंगलुँ दों ज्ञेयुँ हीने? आल... जा! पच्चनमुलवारिडेविने दिगंपर संत सं, जेनी वाणी! जे आ तीका तो गारहरेमी वाणी आले आलो छे परंपरा. अमे ते तीका कर्णारा ज्ञेयुँ छे. मारे बीजुँ कहुँ छे: अमे परंपरा अनेना आणी के ‘मुंगारविषीति नीकोलों’ अमे परंपराधि बहुँ आयुँ छे. समजुङ ज़ाङ?
आल... जा! शु ‘अनेना जंगीयता! शु अनेना विरोध पाता! आल... जा! वीरतागवाणी, ‘जे’ अवो आलो, तेने भातपनारी छे. अवो द्रव्यत्ताने कहुँ छे.
अे तो लाले कहुँ ज्ञेयुँ ने...! अपदसनसततमध्रः-शुः के “पाससदे जिनसातसान सवाह”-के कोटर आमणे आपत्तसुङ देयें, राच अने कर्मणा संवेंशव विनानो छे अमे देयें, सामान्य देयें, राजस्वस्विक देयें, विशैषवर्दित देयें, यवारशर्कित निश्चय (स्वः) देयें, असे-“पाससदे
जिनसातसान सवाह”-(सर्व) जिनसातसाने शेयुँ. तो जिनसातसाने अे भाव थयो त्यां; अने द्रव्यत्ताने पाह अमे कहुँ छे. अनेने-द्रव्यत्तानो अर्थ (गण्यके) न लीवी, अंतेले “अपदसनसततमध्रः”मां अभूताङ्कातुष्ठ बुझाळा बुझा, अमे नदी. त्यां अने (आणा) ‘भाव’ ना अर्जुनी जड़र कती अनेना अने भाव कहुँ (के) द्रव्यत्तामा आम कहुँ छे. द्रव्यत्तामा पाह मे ज़ कहुँ छे. “जो पाससदे अपाणानुपुलिता”-के (सुः) आमणे अवस्थुलुष देयें ते सम्बन्धितव सर्व जिनसातसाने देयें-अमे द्रव्यत्तामा कहुँ छे अने भावश्लुत ‘आ’ छे. जे अंदर आमणे अवस्थुलुष जाले ते भावश्लुत छे. अने भावश्लुत छे ते शुद्धायोग छे. अने शुद्धायोग छे ते जिनसातसाने छे. समजुङ ज़ाङ? आणी वात! ज्ञेयुँ ज्ञेयुँ ज्ञेयुँ. उपहार परमा!! आणीये!
परी कहाते: “शार ध्यानोंमां पक्षला (आर्थ अने रोद) बे ध्यान देय छे,” छोड़ा लाख छे. “श्रीवृंग ध्यान तो उपहारेण छे.” शूराज्ञात (धर्मध्यानाय) आत्मानो आधार्य छे तेही ते उपहारेण
क्षण न नव-नीति: बाग-रे छः; पूर्ण नभी छता ते उपाध्य छे। “अनु योधु सर्वदा उपाध्य छे।” पूर्ण आश्रय छे ते सर्वदा उपाध्य छे। समझौँ अंक? 

प्रश्न: अे व्यवाहरध्यान पड़ करवाय कोने?

समाधान: जेने निध्यवध्यान, आत्माना अवलंबने समाजर्दैन, जन, वीतराजी द्रष्टा प्रगट वरुः, जेने अत्तिडू आर्तना नमूना स्वाध्या आप्य छे; अना जपने जे राग ( बाडी रे ) तेने व्यवाह करवाय। अने व्यवाह करो।

पड़ अे व्यवाह करो छे अने अने अर्धस्वाध्यात्मा नभी क्षेरूः। अने ती द्वार अने भावश्रृण्मा तु अनलेपो ज्ञानो हैस्यो अने बन्धु हैस्युः। राग के वीतराजगान्त पुरे जस्ता उन्नत अनुष्ठान छे।-शुभ क्रिया? के: बागवानना भाग पड़ वीतराजगान्त छे; अने सारे अनुष्ठाने ताल्पर्व वीतराजगान्त छे; केवल बागवाने वीतराजगान्तो ज़ उपेशे आप्यो छे। अने बीजो उपेश करो ते जापा माते करो; पड़ आ तो आरधा माते वीतराजे आ ज़ उपेशा करो (छे)। समझौँ अंक?

“श्रींगु क्रम तो उपेश छे।” ‘प्रभाग’ अन्तर्दे शुरू? के: स्वाध्यानो आश्रय छे पड़ पूर्ण नभी अन्तर्दे अत्तैरे (ध्यान नादे) उपाध्य करवाय आप्य। अने “योधु सर्वदा उपाध्य छे”। (अभे रे)।

[तथा चौकतम–
अवला रीते (अनुष्ठ श्लोक द्वारा) कहुँ छे डे:–
(अनुष्ठान)

“निष्क्रिय करणातीत ध्यानध्येयविवर्जितम्।
अंतर्मुखुः तु युक्तानां तर्कवन्त्योगिनो विदुः॥”

“[श्लोकार्ध्य:–] जे ध्यान निष्क्रिय छे, उत्त्तर्यतिते छे, ध्यानध्येयविवर्जित ( अर्थात् ध्यान ने ध्येयना विकल्परविभित छे अने अंतर्मुख छे, ते ध्याने योगिनो शुद्धध्यान करे छे।”]

“जे ध्यान निष्क्रिय छे।” आखः जा निष्क्रिय अर्थात रागना संघंग बिनानुः। जेटलो विकल्प गिरे अने साहिय छे। अने शुद्धध्यान छे अने रागनी दिखा बिनानुः। निष्क्रिय छे। छे तो ध्यान-परिशिष्ट अने साहिय; पड़ रागने साहिय गँगीने रागरत्न परिशिष्ट ते निष्क्रिय छे; अभे क्रिया छे। समझौँ अंक?

अंकश्रीर कुल आगज केशरे के: परिशिष्ट-ध्यान अं कुल अंदर वस्तुना व्यक्तिमा नभी। अं ध्यान अने अनी बधी पातुः करे; पड़ अत वस्तुना व्यक्तिमा नभी। अभे के पयथी अंदर नभी। अर्नु भागवानना शासन उत्तरण बेहदुः छे।

“जे ध्यान निष्क्रिय छे”-कक अपेक्षामेछे? ध्यान छे तो परिशिष्ट। परिशिष्ट छे ते साहिय। द्रव्य छे ते निष्क्रिय छे। आखः जा शुद्धपरिशिष्टिने दिखा क्रिया छे नेह्! जर्नी दिखा निष्क्रिय। रागनी दिखा निष्क्रिय। अने शुद्धपरिशिष्टिनी दिखा निष्क्रिय। अभे ज्ञा परिशिष्ट लिखी छे। तो त्यं रागरत्न परिशिष्टने पड़ साहिय क्रिया छे। जे परिशिष्टमे छे ते साहिय छे। निष्क्रिय द्रव्य छे ते निष्क्रिय छे। पड़ अव्रीयां बीज अपेक्षा लेकर छे के: जूनु अने निष्क्रिय तत्क छे तेदी ज़ परिशिष्ट चढ़ छे तेदी ते परिशिष्टि राग बिना छे; माते रागनी दिखा रक्ष परिशिष्टने अर्नीयां निष्क्रिय।
श्री नियमसार स्लोक १५८ - २८५

क्यों छीने छीने। आखा... हा... हा।

आमा केटू याद रास्तुं? केटू वातूं के! भाग, बापु! (गड़न) छे। अनेक अन्याय छोड़ने। आ तो (अनेक) अन्तरालनो अन्याय नही। अनेक अन्याय, वारंवार रटना, वारंवार लक्ष, अनेक वारंवार लगनी लागवी जोड़ने! अगरे! ठुंडी ज्यो, बापु! क्या ज्यो तुं? आखा... हा। अन्तरालन भविष्याम् गणवो छे; केम्बुर अनेक अविनाशी तत्त्व छे। तो क्यों भविष्याम् अन्तरालन क्या ज्यो, भात? आ रागना ब्रम्हनी दुकामां पदों तो भिम्मात्माना तारो अन्तरालन भविष्याम् शेष अंदेल के हुम्बना गर्भामां ज्यो, भाता।

अनेक ज्यो रागनी रक्त मारुं स्वतः छैतन्य्युक्त भगवान तो निषिद्ध छे ज़; पश्चातसंरक्षण क्यों, अनेक पश्चात् अनुपात-रागनी दुक्का विनानी गणुं निषिद्धी बरी छे, अनेक तो मोक्षमां ज्य। अनेन जाने बाकी दांत राग रहो तो स्वर्गामां ज्य, पश्चात् मनुष्य यहने मोक्षी ज्यः।

आखा... हा! जुहो ने...! सांभी बे छीने के, नानी नानी उमर्नाने क्वादाने न्यूमनियो था (अनेक मरी गया!।) त्या जमनगरां अंदेल छीकरे क्वादा मरी गया। अवन वर्षों गुतान छीकरे बनाता बन्ने। अंदेल क्वाल न्यूमनियो था गया। डिस्तालां गोठे। आख श्य। अनेक बलास थर गया बापु! अनेक ठीकता पूरी याम त्याेरे तोड़ा रागं? अनेक ऊकटर ने दवा कुसा रागं? जुवान अवस्थाने आल्या ज्य छे। ठुंडी ज्यो ज्य छे। आखा... हा! (आभवित) हरवनां रूढी ज्य। ठुंडी दृष्ट, पश्चातत दृष्ट, पश्चात हृदय। ठुंडी जुलानी छे। क्या तो भाजी उलाने। रणी उलाने।-क्या ज्य, भाता?

अंदेल क्यों के: अंदेल लोकना नाथ शुद्धपरिनिष्ठितिने निषिद्ध कुँदे क्षे। कुँदे क्षे के: एंद्वात्मीत छे, ध्यानधेयविवर्तित (आर्थिक ध्यान ने ध्येना विकल्पो रक्त) छे अनेक अद्वैत छे, ते ध्याने योगीओ शुद्धध्यान कुँदे क्षे। “शुद्ध (ध्यान) आर्थिक धिगजु-पवित्र ध्यान। आखा... हा।

PDF

[ क्वे, आ ८८मी गाधानी दीक्ष पूर्ण करतां दीक्षकार मुनिराज ने स्लोक करे क्षे। ]
(वसंततिलका)
ध्यानावलीमपि च शुद्धनयो न वक्त
व्यक्तं सदासिष्यमयं परमाल्यतवः।
सास्तीयुवाच सततं व्यहरारमार्गः-
स्ततं जिनेन्द्र तदहो महदिन्द्रजालम्। ११९।।

[ स्लोकर्थ:- ] प्रणाप्ये सदासिष्यमयं (निरंतर क्यायाश्रम) अंदे
परमाल्यतवपने स्वतः ध्यानाली (ध्यानपंक्ति, ध्यानपरंपरा) देवानुं पशु शुद्धनय
क्षेती नत्यी। 'ते छे (अर्थित ध्यानाली आलामां छे)' अंव (मान) ध्यानालिनी सततं कुँदे क्षे। के जिनेंक! आयुं ते तत्त्व (ने नय द्वारा क्षेत्रुं वसीतव्युतः), क्षे! मक्खः इंद्रजाल क्षे ११८।।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री नियमसार ३००क १९२ – २८७
छ. अनेक ध्याननी पर्याय छ. (अ) स्वाशिर्त छ तो नित्य तथा करी भी नहीं। घर्मध्यान अने शुद्धध्यान भो तो स्वाशिर्त-निश्चय। अने पराशिर्त (छ ते) व्यवहार। अंत्तु सिद्ध करू। पशु भो जे निष्ठ्र छे ते पर्याय, परमज्ञन बुधनात्मकप्रयोगमां नथी।

आयी वात छी। आक भाज ‘प्रवर्तनसार’ ग्राह्या-१२८मा आम कर्दो दे: राग, हेव भाव (उप) विकार वाय छो असुद्ध्रर्तनु, निर्देशनन्तनु क्वन छ। अर्थात् “शुद्ध्रत्नु क्वन आक
d्व्यवहारित परिष्कारनी प्राप्तेको ज़ाङ्गुलु अने असुद्ध्रर्तनु क्वन आक द्वमां आरोपितमानी प्राप्तेको ज़ाङ्गुलु”]
जीवी वात, भाव। मारजाया अथा तो जीवी छै। शु ज़ाङ्गुलु। दे: वस्तुत छो अथा जे विकार-पृथिवी, पप्प, देवा, ढान, विद्यु, राग-हङ्गाम हो रे असुद्ध्रर्ती
कीको तो ते निष्ठ्र रहेको जे छ, निराकार थाप छ्न अने अथा छ। असुद्ध्रत्नी कीको तो
व्यवहार निर्मित छो अथा ज़ाङ्गुलु। असुद्ध्रत्नी त्यां बीमी: असुद्ध्रत्नी अने व्यवहार क्लो। आहा... भू! अर्थी कर्दो ने... दे: प्रभू। तारी निर्मित झरना जेई लागे हो। आहा... भू! सर्वनाथो धम्म!!

परमात्मा स्वरूप बुधनात्मा। भो सर्वनाथो परमात्मा अनंत आंदोल आकी भो तो पर्यायमा प्रारम्भ वाय। पशु वस्तुमा तो (अ निधिका भोक्तु) छ। वस्तु पूर्ण-प्रारम्भक्तपुरे
छ। आहा... भू! अथा सदभ विष (मथ) बुधनात्मा (सुधानी यथावती नथी।)

मारजाया जुका, भाल! आद्यात्मो, शुद्ध्रतना निरुपाली विकार अथा छ। आम कर्दो आक भाजो, सुधानी अन्तर्गत अन्तर्गत (अ) स्वाशिर्त भाव छो माते निर्मित छ। (अथा)
व्याप्ति त्यां ने त्यां अथा कर्दो दे, अ (निष्ठ्र) तो व्यवहारणी ज़ाङ्गुलु छ अने वस्तुमा नथी। आवो
मार्ग्य हो। “जयं त्यां दे दे योग्य छ, तयां समज्ञु तेंदू”-श्रीव्यामा (‘अत्मसिद्ध’ / ग्राह्या-मा) अथा
छ। अने अथा ज़ाङ्गुलु ने अथा ज़ाङ्गुलु जानो। (जो) आक-अव्यक्त पेनी (अर्थवाणि) कर्दो तो आपूण तत्त्व नाथ भर जर्ज़ा।

आहा... भू! आक भाज ‘प्रवर्तनसार’ ग्राह्या-१२८मा आम कर्दो दे, विकारो कि
रवेण भव ज़ाङ्गुलु। आवो छ। आवो ने...। “कर्ता, कर्ता, कर्म (अने कर्मज्ञ आमा छ।)” भरेबर
भव पोटे ज़ाङ्गुलु विकार दे, अनुष्ठ्र भव, अनुष्ठ्र साधन भव। अथा जे साधनमा निष्ठ्र विकार
छ। अने अनुष्ठ्र हङ्गापुर भाव पशु पोटे आमा। अने अनुष्ठ्र हङ्गापुर भाव पशु पोटे जे साधनमा
(अथा ज़ाङ्गुलु छ।) ’विचर अविचर्कार’ छन ने...। ‘विचर’ अथा आत्मकी क्वन व्यवस्थित शू पशु छ। (के) ते
पोटे ज़ाङ्गुलु, पोटे ज़ाङ्गुलु रूढ़ी रूढ़ी (उप) कर्ता, कर्ता, कर्ता (साधन) अने हङ्गाल
भव हु। जन्म रूढ़ी धर्ममा त्यां स्वरूप हु। (अर्थात्) अ धर्मी-मोक्षमागी पर्याप्तने
स्वरूपकर्दो दे ते कर्ता अने तारी ते तेनु हङ्गाल छ अने तारी ते तेनु साधन शू पशु छ अने तारी
ते तेनु सुपुष्पक हङ्गाल।

अर्थात् अथा जे धर्ममा ती निष्ठ्र भी। अथा शू के: अथा जे धर्ममा
(उप) प्राशिर्त (पशु) नथी। छता धर्ममामा ती स्वाशिर्त (पशु) वाहनने अना हङ्गामा ती
राज्य कर्दो कर्म अने मोक्ष भो कर्दामा। अथा जे धर्ममा ती स्वाशिर्त ही। पशु थोडी छ, तारी त्यां
व्यवहारो शुद्धराग हङ्गाल हो छ (तारी) अनुष्ठ्र हङ्गाल हो। अने जैसे जे स्वाशिर्त ही अने
सुपुष्पक हङ्गाल ही अने थोडी रूढ़ी रूढ़ी रहो छ। आवो हो। समझालू दा? अर्थात्
अथा जे निश्चितधर्ममा अने शुद्धध्यान कर्दामा। अथा जे जे निश्चित अने हो भरी छ। की बीजा
निष्ट्र भी। अर्थात् अंतः घो निद्रितधर्ममा अने शुद्धध्यान कर्दामा। अथा जे जे निश्चित अने हो भरी
की बीजा?
र२८ - प्रवचन नव-नीति: भाग-२
व्याख्या छ, परास्त्र नथी ओ अपेशावेन नियम कलुं. अने पाडं अरे! शुक्लद्वाणी अने
वर्ध्माणानं व्याख्या पारं नी तो शुद्धसे आलमामा नथी, ओम कडे छं. समाधः काणं?
आझ... ला! आयो मार्ग!! पोताने-ज्ञानारे ज्ञाना विंा अंिुं एणणा उत्तांही आळे?
आझ... ला! शुक्लद्वाणां तो त्या सुदी लीं (के ओ) अंतःनुकाव, अंतःमुस्वुक (छ).
शुक्लद्वाणे ने नियम अंतःमुस्वुक. अने अनु कडे छं, अे व्यक्त (छे.) कड
अपेशाये? के: वस्तु व्यवाण पृथवांते नाथ, अंतं अंतं पृष्ठ आनंदें वरेले व्यवाण
सदा वैभावण जी छं. जो वैभावण ने गोष्ठी तो पर्यायांमा उदारणांणु आवश् कसींी?
समाधः काणं? आयो मार्ग छं?
अंतःनुकाव अने पाले नियमशुक्लद्वाण कलुं. ८८मी आलानी टिकामा आलुं ने...!
अनुया कडे छं, ए ने नियमवर्ध्माण अने शुक्लद्वाण कलुं ओ इकत परास्त्राणु नथी, व्याख्या
छं मुो तेने नियम कलुं. छाीं जेनो आलानं छं आंमं ओ वस्तु-पर्याय-नथी. आझ... ला!
आयो मार्ग!!
'प्रवचनसार' गाधा-१२रमा आवे हे: "ज्ञानी करतो भाव ते (ज्ञानुं) भर्षे हे.
तेना सुभाग ए प्रस्तर हे; (१) निरुपालिक (स्वास्थ्य) शुचिभावुक भर्षे, अने (२)
अपालिक शुचिशुचिभावुक भर्षे. आ भर्षे वळे नीकृततु सुभाग अथवा दुःख ते वक्षिण हे. त्या,
व्यक्तभावुक उपाधिमा भेदपान नहीं भेदपान लीं ए ने निरुपालिक शुचिभावुक भर्षे धार्षे हे."
- जुझ! शुझ कडे हे? भाव मंगलामा सुभाग पञ्च गाधाना (शंको नथी). कडे छे ए: आ आला
ए निकतान सहाय्यमाये, परमानंद प्रलूं छे. पर्यावरणो परमानंद नथी. स्वास्थ्यो परमानंद. पुश
अन्यो परमाला; अने हे शुचिबाहुल भार चे-वर्ध्माण अने शुक्लद्वाण हे कलुं ओ शुचिबाहुल भार-ते कालां कम्ब-कार्य हे अने अंिुं ज्ञान सुभाग हे, अनादक ज्ञान सुभाग हे, ते आलामां
ज्ञान हे. अने पुष्प अने पापणो भाव धार्षे, अने ए अनादक बाहुल ज्ञान हे तेनो पञ्च कृता तो आलमा
छं हे अने तेनो ज्ञान पञ्च हुमनुङ्की आलमा जी छे. एक बालु (पुष्प-पापणे) पुष्प हुमा हे. अने
अक बालु कर्मो व्याप्य-व्यापक. -क्रज अनेपित हे? अनुया ('प्रवचनसार' मा) तो अंिुं
केयभषानुं असितां, जे हेक आलमा हे, अंिुं द्रव-गुण-पर्यायनुं असितां अंिुं हे, तेन सिद्ध
करवुं हे. समाधः काणं?
'पंशालिताढ़' गाधा-हरमा कलुं ने...! ए: विकुतवनी नियमवर्धी ज्ञानी छ्ये. तेने
कार्य-कर्म पोते ज्ञान हे. अंतवे पर्याय छे. त्या ती अंतवी पर्याय जे लेवी छे. तेने परनिनिताना
इक्रहनी अपेशा नथी. आज... ला! पोतानो व्यवाण अनादक अंतःवुकण; अने भूली ज्ञान
छं अने पर्यायमा विद्रूप अपस्ख-जेती मुक्त-अशुभम्ब (अर्धां) पाप-वासना के पुष्प-
वासना-उच्चरण कडे छे ए (बाह्य) भर्षे; अने पर्याय अने टेकड़रुपे परिभाषामें हे. 'पर्याये'
कार्य, कर्म, क्राश-ाध्यान, अपाह्यान, संप्राण अने अविकुत-अने, परनिनिताना इक्रहनी
अपेशा नथी. त्या ती अंिुं द्रव-गुण-पर्यायमा जे असितां हे अंिुं सिद्ध करवुं हे, पंशालिताढ़ छे ने!
'प्रवचनसार' मा पञ्च (त्या) केय अविकुत हे, अंिुं-केयभणं हेलं पोतानुं (असितां हे) ए सिद्ध करवुं हे.
अनुया आपहे मोक्षमान् (परमार्थनिर्विफलता) अविकुतारमा, 'मोक्षमान्' क्यो? -
भावान

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
श्री निर्माति श्रृंखला १९८ - २८८
पृष्ठांश, सदाशिवस्वपनी प्रभु; अंगे आपसे धतुः धर्मधान अने शुकद्वानन. पश्चि अर्द्री स्वानिधित धर्मधान करी, क्रमां स्वर्ग अने अने मोक्ष लोको. नम के अेमा (राख) राग भारी छे अने गोल गड़ीने धर्मधान (कदृश) पश्चि अने व्यवहारधमधान, अं राग (छे अने अे) तुं राग स्वर्ग छे. अर्द्रीपुष्प मोक्ष छे. शुकद्वानने पश्चि स्वानिधित-निधन अंतःमुख कदृश. आहा... ला! जे वस्तु सदाशिवधम छे अेमा अंतःमुख धरीने जे परिश्राम धया छे. आहा... ला! आपुं धया धार धारे? मार्गे अेवो धीरी, आपुः।

ब्याप्ता अंतर परमात्मास्वपन वस्तु पदी छे. (अेमा) अंतःमुख धरीने जे परिश्राम धया अपे शुकद्वानस्वपन केवलो मार्गे दे. अने ते शुकद्वानने मोक्षुः धरी. पश्चि अर्द्री तो अथी ध्वारे (विज्ञानी) दे. छे छे के प्रतुः! अं तो अमे वात धाले धरी, पश्चि अने बधा पर्यारणा-मोक्षमार्जना भेदो-ध्यानावली, मध्यो ध्रार्ज, अमेधा धारावली ध्यान पढ़े-अे वस्तुं मार्गे छे, अमेह शुकद्वान केरी तो. आहा... ला! समझुः का छे?

अेक्सिर (क्षे के) द्रव अने पर्याय माने आने समझुः छे. निरधारी द्रव अने पर्याय पोताना छे अमे मार्गे अमे समझुः छे. अर्द्री क्षे के दे, अने पर्याय (अने ध्याननी) जे क्षे अर्द्री अने अंबौ द्रमां नृदी. तथी बे (शीक) धरी छे ने...? द्रव अने पर्याय ने धया ने...? (तो अं) अपे अभाकुः-मानुः अने धार, समझुः छे. आहा... ला! पश्चि अमे अंपुः देह धया? के द्रमां पर्याय नृदी अने पर्यायमां द्रव नृदी. अं रीते निरधारी धार धया छे अं रीके जे धारनी पर्याय छे ते पश्चि सदाशिवधम धग्वाननात्मा (मां नृदी).

(वेक्सी) शंकरां सदाशिव क्षे के ने...! अं तो अधी क्षेत्राङ्गही छे. (अर्द्री) जा अने प्रतुः सदाशिवस्वपन जे छे. “प्रागतपो सदाशिवधम”... ला! धिबवाली अमे नृदी. आहा... ला! निर्द्वरो क्ष्याधम धग्वान प्रतुः छे. (पश्चि) प्रतुः! नादी धरी त्या गाँ नृदी. अं धरी पश्चि (अन्रेरज) धिबवाम-क्ष्याधमस्वपनाः नृदी. समझुः का छे?

आहा... ला! आपो भर्गजी!!! क्षे (जे) अेक्सिरि-बेनिफ्र शीव्या धोः, मिष्टा भि ठुकर (ना ठिया धोःता होः) तेने आ (सत्य समझुःनी छिज्ञासा न होः तो) क्षे के (सोनज्ञानाः) क्षे धया गाँ? क्षे धया थाय होः? आ ते वंक्रकतां कर्ज क्षे? (अे नृदी.) चेक्सी री पर्याय अने द्रव अने धुप, एके भेद धया? अं तो एक ज आला क्षे के. अं (प्रमाणे) वस्तु हवां छे नृदी.

अर्द्रीया क्षे के. अनु परमात्मात्वाः प्रागतपो सदाशिवधम एके परमाला (! (जेने) (सम्बसार) क्षे धारामा ‘साधकन्याः’ क्या, अनविरिम धारामा ‘भूतार्थी’ क्या, अने अर्द्रीया ‘सदाशिवम’ क्या. एके परमालात्त्रके विचे, एके सदाशिवधम धग्वाननात्मा (ने विचे ध्यानावली खेलनु पश्चि शुश्रुः केरी तो. अं रामे के आपशे तो धर्म क्षे; अने अनुवारामुः-अस्वामुः, भोगां, विपणमां जे प्रशासा सांबणीजने-जया भीजक वेदांयां; तेने, ‘आ धग्वान सदा आनंदम छे, क्ष्याधम छे’ एके बेसी?

बीछ भाषांशे क्षे के तो आ (आला) सदा आनंदमुःस्वपन जे छे. निगोमां पश्चि र्दो आला सदा अर्दप्रव स्वपन जे छे. एके जे आला, एके तपने विचे ध्यानावली, ध्यान+आवली.
(300) प्रथम नवनित: भार-2
= ध्यान-नी पंजिक, ध्यान-नी परंपरा, केवलुँ पण-राग नथी, संसार नथी, आ तो ठीक; पण आवी ध्यानवाली केवानुँ पण- (शृंदनय केतो नथी). समजानुँ दङह?

भगवान-भाल्मा अंदर पूर्णनिन्दो नाथ; सर्वज परमेशर-जिनेशरे कडो आवो आ अंदर आल्मा छ. -अभ तने अंदरमा भेळुँ जेगाभे. समजानुँ दङह? सम्युद्धन-नो विषय-घेख, आ आ परमात्मा-पूर्णनिन्दक प्रभृ छ. अनो (सम्युद्धन-नो) विषय, अशुद्धस्कृप तो नथी पण आ जे ध्याननी शुद्धस्कृप छ आ दण पण नथी, अभ कडे छ. “पण” कहुँ छ ने के “ध्यानवाली केवानुँ पण” -अभ. अने प्रसुभामा राग तो नथी, चिकर तो नथी, व्यवहारतत्त्वत्त्वा जे दिकियो तो नथी, (पण आ ध्यानवाली पण नथी)। तु प्रभृ छो, भाग! तने भक्ष नथी। तारी ‘प्रभृता’ तने भेलती नथी! अने तने अंदर पामरता बेड़ी छ (के) ‘राग ते तु ने पुष्प ते तु ने पाप ते तु ने...!’ समजानुँ दङह?

(अंगियां कहुँ के:) “ध्यानवाली केवानुँ पण”- (श्लोकमा) ‘च’ छ ने...!” ।
“ध्यानवालीमणि च”-अभ ध्यानवाली पण. ‘अपि’ शंक छ. आकळ... बा! भगवान पूर्णनिन्दक बडेलो, अतीतिया पूर्ण क्षत्रीय घटेलो; अभ ध्यानवाली पण (नथी). अभ तसार तो नथी, उद्दिष्ठ्थ भएतो नथी। जेने-उद्दिष्ठ्थकरे ‘तत्त्वर्द्धुः’ मा स्वतत्त्व कहुऱ... ल्यो, छ ने...? त्यारे अंगियां (कहुऱ के:) भुल जे भएते छ तेमाले अंदेय राग नथी; अभ राग अह तसार तो नथी पण आ आल्मा आश्रे प्रगट थयेलो मोक्षनी मार्ग, अंदरम ध्याननी तमाल भाषी अभी श्रेणि-ध्याननी पर्यय आल्मामा (केवानुँ) शृंदनय केतो नथी। आकळ... बा! शु पराधपने द्रव्ये निदर सिद्ध घर्नारी (शैली)!! “ध्यानवाली केवानुँ पण शृंदनय केतो नथी.” “शृंदनय” केवा छ अभ नथी, ‘केवा’ छ अभ लीनुऱे “शृंदनय केतो नथी.” छ ने...! “ध्यानवालीमणि च शृंदनयो न वकित”-पेदेला पढनो तेलो अर्थ थियो। । “वक्तान्तवशायनम्येपरमात्मत्त्वे”-अभ पेदेला अर्थ करऱः “प्रखयपछे सधारणमय अभ्य परमात्मतत्वने विषय”.

बैले कडे छ: “ते छ” तो जरो। अतिस्त तो छ। -ध्यानुऱ, मोक्षमार्गुऱ, सम्युद्धर-शान-यारितुऱ असित्य तो छ। “ते छ (अर्थत ‘ध्यानवाली आल्मामा छ’ ) अभ भाग व्यवस्थामयेश नतत कहुऱ छ।” आकळ... बा! अभ तो पर्ययमार्गने बतावयो (अभ) व्यवस्थामयेश छ। अने पर्यय आल्मामा छ अभ व्यवस्थामयेश नतत-निरंतर कहुऱ छ।

अने (अंगियानने) अभ थल गहुऱ छ के, हुऱ तो अंदर साधारण प्राणी हुऱ। हुऱ भास्मुऱ. हुऱ जावी हुऱ। हुऱ झोर हुऱ। अभे अना पशुमान शरीर ने अवतार देख्या छ पण अंदर मोटो भगवान छ अनी भक्ष न मो। आकळ... बा! हुऱ निर्भर हुऱ। हुऱ सवन हुऱ। हुऱ शुद्धकालाण हुऱ। हुऱ दरिया हुऱ। -अने भधुऱ (तुऱ) कहुऱ छ, प्रभृ ते पने भक्ष नथी। हुऱ तो मोटो घनाथ छ। तारा जेनो घनाथ! कटामा बीच केर रीव रधानी.

आकळ... बा! (अंगियां) “ते (ध्यानवाली) छ”-पर्यय छः (अभ) त्रयमा नथी, अभ सिद्ध कहुऱ। आल्मा तो, भाग! लगती लागी जॉकरमे, अनी वापट्ट छ। अने माठे गांडा तुऱ जोराने हृणियाथी। (ते ध्यानवाली) शृंदनये आल्मामा नथी। आल्मामा छ ते व्यवस्थामयेश छ। पर्यय ते व्यवस्थामयेश कलो। आकळ... बा! समजानुऱ दङह?

आवो मार्ग (बीजेक) क्या छ, भाग? प्रभृनुऱ तुऱ देखो मोटो छ। बैले, अने शुभभावनी
श्री निमयसार कृत्रिम १९८ - ३०१

(‘सम्यसार’ १९१६ आयामा) अभिकल्प ने... “जो पसंदि अपाणण”-जे (पुरुष) आचार्याने अन्नमुद्ध पुरे फे-जाणे-माणे ते जैनशासनने देणे छ. पाण (अभिकल्प) करे छ रे, जे जैनशासन-शुद्धमुद्ध वात; (अनेकी) शुद्धनय ना पारे छे रे-अने वृत्तमा नी. आख... छ। सम्यसार कंड?”

यारे अनुषोधनु तापस्ये वीरत्यागता छे. यारे अनुषोधनां कळवानी वातनु का

यारे अनुषोधनु तापस्ये वीरत्यागता छे. पाण अने वीरत्यागपुण्य पाण स्वामिणे वात भाते निःश्रय करु; छतां, ते वीरत्यागपुण्य वृत्तमा नी. अने तो परम वीरत्यागमूर्ति प्राप्त छे! यारे करे दे: छे ने!... पथःयः छे. ते व्यवस्थार्ग छे, अभिकल्प आयी.

इन्द्र, आंकोर ग्रामध्यान अने शुद्धध्याने निःश्रय करो. आंकोर व्यवस्था करो. ध्यान

इन्द्र, डीकोय ग्रामध्यान अने शुद्धध्याने निःश्रय करो. डीकोय व्यवस्था करो. ध्यान ने अंतर्मुक्ताक व्यवस्था निःश्रय करो. अने डीकोय करे छे, अने तो व्यवस्थार्ग छे. आख... छ! (पाठमा) अभिकल्प ने छे रे नी?

इन्द्र, लोकाने आ अभिकल्प मुख्य पडे. पोतानी दशार करे नी अने हुं (कडेिं), भाभा?

आ रीते वस्तु पूर्ण पुरा छे. आभिकल्प वाती. अभिकल्प जने वृत्त न वात तो तो तो

आ रीते वस्तु पूर्ण छुट छे. आभिकल्प वाती. अभिकल्प जने वृत्त न वात तो तो तो आभिकल्प व्यवस्था करो वाती. जे वस्तुमा मोक्षमार्गी-पार्श्व, ध्यानी पार्श्व पाण नी. अभिकल्प जे पूर्ण स्वामिने भविताणमा, अनो व्यवस्था पार्श्वमा वात; जे पार्श्व आभिकल्प नी; पाण पार्श्वमा अनो व्यवस्था वात; तारे तेने सम्यसार कळवाव. छतां, अने सम्यसार वाती. पाण पार्श्वमा नदी अनेकी करे छे. अने तो परम तत्त्व तिलकानात तिनेंत्रा मुण्डरिविद्या

अने तो परम तत्त्व तिलकानात तिनेंत्रा मुण्डरिविद्या नीतिकेला कहुँ छे। भाले (टीकामा) आकाल गया छुँ। “अभिकल्प परम तिञ्येन् नाम मुण्डरिविद्या नीतिकेला वृत्तमा कहुँ छे।”

भगवान भविताणमा, तिनेंत्रे, विश्वमा परमेत्र समंदर भविताण महाविद्या बिनाइजे

भगवान भविताणमा, तिनेंत्रे, विश्वमा परमेत्र समंदर भविताण महाविद्या बिनाइजे छे. (त्यो) कुडूङ्ख्यायर्थ गया बता. ते करे छे दे: भविताणमा मुण्डरिविद्या नीतिकेली आ वात ए क्रीह अने आ तो हुं मारी भाभना मात्र कहुँ छुँ.

इन्द्र, अभिकल्प (संप्रृदीमामा) तो कह तकिरः-व्यवस्था, ध्यान पूरा ने भक्ति ने पूर्ण वात

इन्द्र, अभिकल्प (संप्रृदीमामा) तो कह तकिरः-व्यवस्था, ध्यान पूरा ने भक्ति ने पूर्ण वात कर्त्तिया वात; नवरीते अभक्ति छे, अभिकल्प अभिकल्प. अररर! तु शु डे छे, भाभा? भगवान (लोका) ने धूलीने तु आ रंक (वात छे!) पाप अने पुल्ला ध्यान पाप छे. स्वरूपमाती पतित करे छे. अभिकल्प तने स्वामिनी प्राप्त वात? �ridorे बींगा-रतन ममे? शु डे छे तु आ? लोकोणो नीवमाळा ममे? अभिकल्प तिलकोना नाथ भगवान अभिकल्प मुण्डरिविद्या नीतिकेला वृत्तमा कहुँ छे. (न वात).

भाभा! अभिकल्प अभिकल्प भविताणमा, तिनेंत्रे, विश्वमा अभिकल्प तिनेंत्रे विना ताँतू जिनिकोंग (धारयुं) निर्माण छे. अने बधा (कहत-तप) कीए अन्तर्वार भरी गयो. वीरराजी विंग-शुद्धवात विना, अने तारा द्रव्यिंग वाता मौचा छे.

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
उरु – प्रकार नवनीत: भाग-र
पाहुँ ओम गुत (डेविय्यां) आयुं कंतु के: शुद्धबाव-वीतरागबाव भोग ओरी साथ राग अने नतपंपूँ-न्यायलिंग पण्ड भोग (तो ओ) वाव अने व्रैधिक (निश्र) पर्याय. (परतु वरेरेन्त तो) भगवान पुरुषांचं तत्वान्त्र जगते लालने जें वाव आयो शुद्ध-शुद्धस्यूंग थयो ओरी साथे जे व्यक्तर-राग ठाव; ए (साधने) भोग छ; पण्ड ओ व्यक्तरली निश्र ठाव छ, ओम नथी. सामतां कांठ? अर्थी तो निश्रमोक्षांनी पण्ड (वरेरेन्त) वस्तुं मानी (ओम मेल क्षण छ).
आखार... ला! अनित्य ते नित्यनी निश्रण केले, जे अनित्यपणूं वस्तुमां नथी. मोक्षांने अनित्य छे. डेविय्यां पण्ड अनित्य छे. आखार... ला! जे अनित्य छे ते नित्यनी निश्रण केले, अने स्वीकार (छे). आखार... ला! (‘समयसार’) उरत्मी गाथांमा ओ आवे छे ने! “ध्याता पुरुष धार्ये छे.”
अर्थींता तो कडे छे: “(ध्यानावाली शेवानु पण्ड) शुद्धनय केलं नथी.” ‘ते छे’ तो बदी. ओम (भात्र) व्यक्तरलेले ते ध्यानावाली आत्मांमा छे, व्यक्तरमार्ग छे. “उवाच” भे ने... श्रृंखळ पण्ड छे: “सात्त्विकशांत सतत व्यवहारमार्ग”– ‘स+असित+इतिविवाच’ –ते छे ते कडे छे धृष्ट-व्यक्तरमार्ग ‘सतत’.
आ भगवानाची बजित ने पूजा ने मंत्र ने... अते ते अनंतानी ठाव, पण्ड अनेक बजित आहिंतो भाव अने शुद्धबाव छे, धर्म नथी. आखार... ला!...
अर्थींता तो कडे छे वे जे शुद्धबाव छे (अते) परचा निमित्ते थयो नथी. (ते तो) शुद्धसंस्कारना आत्मी थेयले अंतरुपंचायार ते शृंखळ छे, पवित्र छे, आनंदां अनुभव छे, अतीर्थ मालको अनुमान छे. पण्ड अने अनुभव, ‘सदाधिकरणांमा छे नथी’ (ओम) शुद्धनय केले छे. आखार... ला! सामतां काँठ?
(श्रोता:) ध्रुवांना कडे छे छे, ध्रुवांना कडे नथी. (उत्तर:) बेद छे. ओम ज्ञायुं जैसे. हेंदया तो अंक जे छे पण्ड अनेक छेदा भे भोग के नथी? अंक ओरी कार ताजो ने अंक पांव भेके ती ध्रुवांनी (मापण भाव). पण्ड (छेदने) छोटी दे ती (मापण) भाव? (न भाव). ओम अने नय छे. जे नये छे ते रीते ते ठावुं जोटो भे. (पण्ड) अने ओरी पृथ्वी नयमां पत्ती नाने तो य मिथ्यात्य छे. अने छे ते ने नाना तोपण मिथ्यात्य छे. सामतां कांठ?
“ते छे ओम” पात्र भेक छे. ‘उवाच’ –ओम भेकुं. डेविय्यां. ओम छे ने...! आग्ने आपोळे ‘डेविय्यांमार व्यक्तर छे.’ ओ व्यक्तर रागनो... ढो! क्षण-१२. ओ बहे तो आपोळे छेदो ने...! “जे मोक्षां कंधण कठनमार (–डेविय्यां) करणे छे तेने गुण (आर्थित व्यक्तरलेले पण्ड) भवसागरांमा पृथ्वी भवसागरांमा (–व्यक्तरलेले) सांभरण छे अने आर्थित (–अभांत्यां मुखुं छे).” आखार... ला! देव-गुटी-शास्त्रीय श्रंभ अनुत्तरवर छरी छे. आखार... ला! व्यक्तरलेले डेविय्यांमार छे, ओ रूं वस्तु नथी. ओम छेदे छे. छरांय दंडुं छे अनुत्तरवर. अरे! अनेक उप्यो (अंक जे) अर्थींता (पण्ड) कडे छे छे, आ जे मोक्षांमा जे ध्यानावाली छे, ओ पण्ड कठनमार आत्मानो व्यक्तर छे. सामतां कांठ? छे ने...! “ओम (भात्र) व्यक्तरमार्ग सतत भेक छे.”
आखार... ला! मुनिराज मधुरप्रभुमधवासिंदेव दिगंबर संत जंगामा (वस्त्रांतर कडे छे:) के! जिन्द्र! आयुं ते तत्त्र (–ते नय द्वारा क्षेत्रां वस्त्रस्य जणाः),–शुद्धनय ना पावे, अने
श्री निश्चय कादक १९० - ३०३ व्यवहारकी छ. आज... छ! अंकड़ेर मोक्षनो मार्ग निश्चय छ हेम करे अने अंक पात्र कड़वूं डे अे तो व्यवहार छ, दृष्टी अपेक्षाअे. निश्चय तो, रागनो भाव नथी अने स्वभावनो आश्रय छ, माटे निश्चय छ. पड़णे अने पयान अने व्यवहार. निवादण दृष्टी अपेक्षाअे अने पड़णे व्यवहार छ. आज... छ! अंक पात्र रागने व्यवहारतत्त्व करेयो. अंकड़ेर निश्चयतत्त्वने व्यवहार करेयो!

आज... छ! (वस्तु स्वतं) समजना विना बढी झिंडगी बढी जय छ! पोताने छे करवानुं छे अे करवूं नथी अने (बालप्रसन्नती) धमाल... धमाल... धमाल. छुए कटट घम्म कटट छ्यूँ', अे भतायना बाजरना छट धी (डे) जुमो ने... अमे कटट डूंडूँ, अमे मूण वात रही गह.

अही झिंडेन्द! आपू ते तत्त; पाहू अेम करे छे: 'आपू ते तत्त'. अंकड़ेर परमात्मतत्त्वमा ध्यानावली नथी; अने अंकड़ेर (अे) व्यवहारमार्ज छ, अे पयालमा छ, दृष्टी नथी. -आपू ते तत्त, "अही! मझ छन्द्रण छे." जेम छद वस्तुने विभेद्य करे अने संकेत त्यापैं अंकडी धीम. प्रभु! तारा नयनो अविकार छन्द्रण जेने छे. आज... छ! अने न समें तो ईसान जय अेपुँ छे. समझणुं काँह?

अही! आपू मनुष्यपशुमा वीरराजीमार्ज छ अने आदर्दे ने यस्यो अे दृष्ट पन धन्य छे. बाड़ी तो बढ़ा धीसं छे. आज... छ! बाजरना वेमाव द्वार-प्रवेशासा वाण-करो बनाँ, मंडिरो बनात्या ने गरहर करावा ने-पड़ आई! तने निवृत, विस्तार करवा ( माटे ) न ममे अने अामाने ने आमाने रोकाल जय छ! दृष्टी मंडिरो बनात्या ने अंक अंकमा दृष्टी धुपणा माँ ने... (तोप्पा) त्या धर्म नथी. अे तो अंक शुभमाव छे. अे धर्म नथी अने धर्मतु काल्प धर्म नथी. आपी वात जगतने आदरी पैट.

अही तो व्यवहारतत्त्व निश्चयनु धार्ष्ट तो नथी अंकडेर व्यवहारतत्त्व तो दृष्टी नथी पड़ निश्चयतत्त्व पड़ अेमा नथी. अे पयां (उपर-उपर) पड़े छ, अंकडेर पेसती नथी. दृष्ट उपर पयां तरे छे. पयां दृष्टमा पेसती नथी. आज... छ! शु धाली!! दिगंबर संतलाणी पाली साधारण परमात्मानी पाली छे. अे धाली (बौँचे) द्वारा मने अेमी नथी. अने जेना बरमा छे अने यु खु भबु य न ममे.

“जे झिंडेण्ड! आपू ते तत्त ( - ते नय द्वारा कडे डूं पात्र स्वतं ) अही! मझ छन्द्रण छे.” अंकडी छन्द्रण न लीइँ... लीইँ! 'मझ छन्द्रण'. पाहामा छे: "स्ताय झिनेन्द्र तद्धो महदिन्द्रजालम" -अे मोही छन्द्रण छे. छद वाणो-करो भासो अंकडै विकिम (थी) बनाए छे ने...! (अने अने) संकेतने अंकडी लिजो रहे. अेम, व्यवहार अने निश्चयनी वातो दरे अंकडे. (अने) संकेत त्यापैं (खे के) माहना मार्जनी पयां पड़ा दृष्टी नथी, त्यां ताडी हस्त धीमी झेखों. अने ते हस्त गयम रखेयी लेख. आज... छ! आनी मार्ज!!

(खे,) बौँचे झेख १२०:-

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
आखा... श! "सम्बन्धनुआ आनूष्धक" पत्री देवी के, अंज परमात्मवर्ग (हें)। ते साथ आनूष्धक है, दीवार है। जानो दोनो भागवान है। अंज शेबमुं आनूष्धक है। आखा... श! भागवान बंदर आनंदनाथ नाथ, शेबमुं आनूष्धक है।

आखा... श! सम्बन्धनुआ आनूष्धक "अंज परमात्मवर्ग समस्त विकल्पसमूहको सर्व: मुक्त (सर्व तात्त्व रहित) हें। (अंज) सर्वनामसमूह संबंधी आ ग्रंथ परमात्मत्त्वमां नथी तो पत्री ते ध्यानवली आमं कह दिते कीपज (अर्थात् ध्यानवली आ परमात्मत्त्वमां कम्बोड शके) के कठे. १२०।

"(अंज) सर्वनामसमूह संबंधी आ प्रयंय"-पयाङ्गामा मोक्षमार्ग हें। अंज परमात्मत्त्वमां नथी। "आ प्रयंय" ऑर्टेन अंज परमात्मत्त्वमां नथी। आखा... श! शुभराज प्रयंय तो पत्री। पत्रा नयंत्र अनेक प्रकारना विकल्प प्रयंय हें। अंज तो, सर्वनामा समुद्र, अंज संबंधी आ प्रयंय, अंज लीविओ, शेवूं! अंज परमात्म भागवानआमा वस्तु छे ते...! अलित छे ते...! अतिनाथी छे ते...! अत्यंत अक्षर शीत छे ते...! ऑर्टेन जे भागवानआमा; अंजा नयंत्र प्रयंय नथी; (अंज) कठे छे।

आखा... श! ऑर्टेन व्यवहारनयंत्रा विकल्पो ते नथी, पत्रा निश्चितनयंत्रा निर्देशन पर्याय पत्रा शेवूं नथी। आखा... श! ऑर्टेन निश्चित कठेवो अनेक ऑर्टेन अनेन पाणी व्यवहार कठेवो। अंजु (वस्तु) स्वप्न छे!!

अंजु आ परमात्मत्त्व समस्त नयंसमूह संबंधी आ प्रयंय। जुझूँ! पठेवा अंज लीविओ बृंत तें... "सम्बन्धनुआ आनूष्धक अंजु आ परमात्मत्त्व।" आखा... श! शुं देवी? - "सर्वनामसमूह संबंधी आ प्रयंय।" शेवूं? डे: आ "परमात्मत्त्वमां।" अंजु आ प्रयंय "परमात्मत्त्वमां नथी।" ऑर्टेन जे भागवान बंदर शुद्ध शैतंयन, अनाही-अनाही-अनाही; अंजा आद्री नथी, अंत नथी, आजरला नथी, पर्याय नथी (अनेन जे) अपूर्ण नथी, अशुद्ध नथी।

आखा... श! आद्री अध्यामनी वाण लोकीने जीवी लागे ऑर्टेन पत्री निश्चितनयंत्रा देखीने दाँती नाथे। डे (डे) महाराज! अंमारे करेक भें शुं? पत्रा 'आ' करेक नथी? (शुं) बढार ने बढारमा राग।
श्री निर्मलसार श्लोक १२० - ३०५
करो अम्रे चे ने? -अंग पाठ मिथायत्वमें चे ने अम्रे परस्परतः ख्रो अने चे जय चा?
अंगी तो करवालत्व चे ने निर्मलप्रबंध अंग पाठ अम्रे नयी. आहां... श्रृ! आलमा
'कर्ता' अने निर्मलप्रबंध 'कर्म' -अंग पाठ उपाधार छ, (अम्रे कदे छे). समाजातः कांड? "तो
पक्षी ते धायावली आमां का रीते उपष"-भाषा शोत? "कथय सा कथमत्र जाता" -पाँख
अम्रे छे: आ देम उपपत्त वच! आ पाधाया, मोहामानी वातो बही क्षण (मात्र छे),
वस्तुमां निधी; (तो) उपपत्त क्षमात्ती वच- "आमां का रीते उपष." पक्षी अर्थ छः: "अर्थात्
धायावली आ परमात्मत्तमा केम कोड शें." उपष अंतेले पाठ्यमा निर्दिष्ट?
(धायावली) उपष ने!..! (अ) वस्तुमां क्षमा छे? आहां... श्रृ! भारे वात अवी छे!
आधार दोते कदे छे के मे भारी भावना मोते वनायु छे, भापा। "ग्यनभावनाणामितं
माँहे कद ग्यनसाररणामसुदं. आहां... श्रृ! हुनिया अहं, न अहं; अनेन न अनेन; मार्ग तो
'आ' छे, भापा! किन्तु पंचत् पंच तो 'आ' छे!
अं जिनं पंच जेहमाओ-ध्रमाने निधी. आहां... श्रृ! आ छे तो बरो ने? 'छे', अं
द्यवर्धर्मां छे. श्रृंधु नें!' उवाच' -वववार्थी देवावां आवे छे।
'प्रवचनसार' -८४३ गातां देयां करो चे ने... "आलम्यवधार." -निर्मलमोहामानी छे
अं आलम्यवधार छे. समाजातः कांड? अने 'परमार्थवक्षिनाता' मा क्षमा छे के: मोहामानी साधवो
अं तो वववार छे. वस्त्र तरीके धे छे अं तो निधर्म छे. अने निर्मलमोहामानी साधवो ते
वववार छे. आवे छे?
'निधर्म' करो ने वर्णी पाने वववार करो! वचनी अपेक्षाऎ निधर्म करो पण
द्यवर्धी अपेक्षाए तो (ते) वववार छे. समाजातः कांड?
ते (धायावली) परमात्मत्तमा केम केंड शें "ते करो"-अमां का रीते उपष? अम्रे कद्यु ने... "कथय सा कथमत्र जाता।" -केम अंगीया आ (उपष ते) करो. शुं करो? (भाध अवक्षय छे)
(..... आ शुं द्रयु).
**

“अत्मधान सिवायानु बीलुं बधुं घोर संसारस्य मूलं छे.
अंध कालस्वरुप प्रशुन्ने प्रद्यम्बनारीणे पद्म हरदुं अं सिवाय
बीलुं बधुं अंतों के शुभ ने अलम्यमान घोर संसारस्य मूलं छे.
पद्म-दास आदिना रागावी पद्म तिथि अलम्यानु पद्म-अं
सिवायप्रेरे घोर विवर्धने ते घोर संसारस्य मूलं छे.”

-श्री ग्रंथमसार / परां

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com
“अंक समयनी निर्माणपत्रों के सम्पर्कश्न-शान-शालित-नी पर्याव छे तेने रत्न यथा, दल्नु क्रा छे तो तेनु हा छे दिवंवशानन्तरोपिय ते मकरण छे अने शान-शुं-हो. अंक समयनी ते पर्याव ते मकरण छे तो तेवी अन्त अन्त पर्यावरणो घरनार शान-शुं-हो ते मकरण छे. अंक नान्ह-नाल्टक आधि अन्तराल एकोटेग मकरण रत्ननो घरनार आत्मद्रह्य रे तो महा रत्नोकि भरेको सागर। अन्त नान्हाबारुं हुं कहें? अहे! अन्त नान्हाबारुं वसनातीत छे. अंक अपार अपार नान्हाबारुं अनुमानबाथ हुं छे. अपार स्वभावनो विश्लेष ने हस्तिक दरेको गन्तर प्रे.”

—श्री ‘परमाजमसार’ /285
"आत्मा वस्तु शान्तिशूप छें. शाक्त छें ते अन्ततःदानो रिङु छें. अन्तु पूर्णत्व तिनाथी असिहु छें. अन्तु वस्तु, अन्तु सामर्थ्य अधान ने आध्यात्मकी छें. तेने समज तो आत्मानो महिमा-माध्यम आवे अने रागेनु माध्यम छूटी ज्ञान. आत्मवस्तु देवा असित्वाणी छें, देवा सामर्थ्याणी छें, अन्तु वस्तु वृत्पूर्ण अभ्यास हें तो अन्तु माध्यम आवे ते रागेनु ने अध्ययनात्म माध्यम छूटी ज्ञान. अंध कमणी वर्णांकानी पर्याय जागरण-जागरकने आध्यात्मिक सामर्थ्याणी छें ते वाक्प बांधे बांधे नवी नवी धाम छें तो तेने धर्तार तिनाथी व्यधिनु सामर्थ्य कितुं? अंग आत्माना आध्यात्मकी स्वभावने अभ्यास वर्त्तर हें तो आत्मानो महिमा आवे।"

—श्री ‘परमाजमसार’ /उन्न.
“अखो! जेतुं क्षेत्र भर्यते श्री जैन ज्ञानो अंत नहीं, जैन धर्मो अंत नहीं- अयं अनंत स्वभावी वैतन्तिकयोग्यति सदाय अेकरुप वैतन्तिकस्वरुप ज रहे छे. अत्यपस्तु ज अंबार धवलार छे. अयं अंभीरता भारे नझि त्या सूखी भरो महिमा आवे नहि. अयं अंभीरता भारती आत्माता अयं भिन्न महिमा आवे के अे महिमा आवतां आवतां अे महिमा विद्युत आयं जाय हे; विद्युति लोको पकलो नधि पठल तूटी जाय ने अतिनिशच अनंतजो स्वातुमार धाय.”

-श्री ‘परमात्मसार’ /360